अथ पद्मपुराणभाषा स्वर्गखण्डतृतीय का सूचीपत्र

अथ पद्मपुराणभाषा स्वर्गखण्डतृतीयका सूचीपत्र

इति ॥

पद्मपुराणभाषा स्वर्गखण्डतृतीय

पहिला अध्याय ॥

नैमिषारण्यमें शौनकादिक ऋषियों से सूतजी का पद्मपुराण प्रारम्भ करना ॥

लक्ष्मीजी से सदैव वन्दित उत्तम नाम वाले संसार के मनुष्यों के हृदयमें प्रविष्ट महाजनोंको एक स्थान रूप उत्तमोत्तम गोविन्द जी के चरण कमलों को हम नमस्कार करते हैं १ एक समय प्रकाशित अग्निके सदृश हिमवान् पर्वतके बसनेवाले वेदके पारगामी सब मुनि २ त्रिकालके जाननेवाले महात्मा अनेकप्रकार के पुण्यों के आश्रय और महेन्द्र पर्वत विन्ध्याचल पर्वत ३ अर्बुदारण्य पुष्कारण्य श्रीशैल कुरुक्षेत्र ४ धर्मारण्य दण्डकारण्य जम्बू और सत्य के बसनेवाले ५ ये और और भी बहुत शिष्यों समेत निर्मल मुनि उत्साहयुक्त शौनकजी के देखने के लिये नैमिषारण्यको प्राप्त होते भये ६ वहां पर विधिपूर्वक शौनकजीकी पूजाकर और उनसे आप सब पूजित होकर क्रमसे विचित्र बृसी आदिक ७ शौनक के दिये हुये आसनों में वे तपस्वी बैठकर पुण्यकारी कृष्णजीकी कथा कहते भये ८ तब भावितात्मा मुनियों की कथाके अन्तमें महातेजस्वी महादीप्तिवाले व्यासजी के शिष्य पुराण के जाननेवाले रोमहर्षण नाम सूतजी आतेभये और न्याय समेत मुनियों के प्रणामकर और उनसे आप भी पूजित होकर ९ । १० यथायोग्य बैठते भये तब

महाभाग तपस्वी शौनकादिक महर्षि सुखसे बैठेहुये व्यासजी के शिष्य रोमहर्षण सूतजी से पूछतेभये कि हे पुराणके जाननेवाले महाबुद्धिवाले अच्छे व्रतकरनेवाले रोमहर्षणजी ! ११ । १२ पूर्वकालमें आपसे महापुण्यवाली पुराण की कथा सुनी हैं अब इस समयमें भी हरिजीकी कथा में अवकाश समेत प्रवृत्तहैं १३ सोई पुरुषों का पर धर्म है जिससे भगवान् में भक्ति हो फिर भी भगवान् की वार्त्तायुक्त पुराण को कहिये १४ हे सूतजी ! भगवान् से और कथा श्मशानके सदृश है तीर्थस्वरूप से भगवान् आपही स्थित रहते हैं यह हमने सुनाहै १५ निश्चयकर पुण्यदाता तीर्थों के नाम कहिये किससे यह उत्पन्न किससे पालित १६ और किसमें यह चराचर संसार नाशको प्राप्त होताहै कौन पुण्यकारी क्षेत्रहैं कौन पर्वत पूज्यहैं १७ मनुष्यों के पाप नाशनेवाली शुभ कौन श्रेष्ठ पुण्यकारिणी नदियां हैं हे महाभाग ! यह सब क्रमसे कहिये १८ तब सूतजी बोले कि हे महाभाग्य वाले तपस्वियो ! आपलोगोंने अच्छा प्रश्नकिया तिनको प्रणामकर पद्मपुराण को कहताहूं १९ पराशरजी के पुत्र परम पुरुष संसार और वेदके एकयोनि विद्या के आधार सुन्दर मति के देनेवाले वेद और वेदान्तके जाननेवाले निरन्तर शान्त अपनी मति के विषय शुद्ध तेज सुन्दर विस्तृतयशवाले वेदव्यासजीको हम सदैव नमस्कार करते हैं २० तिन अमिततेजस्वी भगवान् व्यास के नमस्कार हैं जिनके प्रसाद से इस नारायणजीकी कथाको कहताहूं २१ और महापुण्यकारी पद्मपुराण को कहताहूं यह छः और खण्डों से युक्त पचपन सहस्रवाला है २२ पहले आदिखण्ड फिर भूमिखण्ड फिर ब्रह्मखण्ड फिर पातालखण्ड २३ फिर क्रियाखण्ड फिर अन्तिम उत्तरखण्ड है यह अद्भुत महापद्म है यन्मय संसार है २४ तिस वृत्तान्त के आश्रयहै तिससे पण्डितों करके पाद्म कहाजाता है यह निर्मल विष्णुमाहात्म्य उत्तम पुराणहै २५ जिसको देवदेव हरिजीने पूर्व समयमें ब्रह्माजी से कहा था ब्रह्माजीने नारदजी से नारदजीने हमारे गुरुजी के आगे कहाथा २६ व्यासजी इतिहास समेत सब पुराण संहिता अपने अत्यन्त प्यारे हमको पढ़ाते भये २७ तिस

अत्यन्त दुर्लभ पुराणको हम कहते हैं जिसको सुनकर मनुष्य ब्रह्म-हत्यादि पापों से छूट जाताहै २८ जो सुनताहै वह सब तीर्थ के अभिषेक को प्राप्त होताहै श्रेष्ठ भक्ति से श्रद्धा से सुननेही से मुक्ति का देनेवालाहै २९ विना श्रद्धासे जो सुनताहै वह भी पुण्यसमूह को प्राप्त होताहै तिससे सब यत्नसे पद्मपुराण को कानों का अतिथिकरो ३० तहाँ पुण्यकारी पाप नाशनेवाले आदिखण्ड को कहते हैं यहां पर स्थित शिष्यों समेत सब मुनि सुनो ३१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

ज्ञानेन्द्रिय पांच और कर्मेन्द्रिय पांचों की उत्पत्ति और उनके कर्मों का वर्णन और भूतों से सब सृष्टि की रचना का वर्णन ॥

हे द्विजोत्तमो ! हम पहले आदिसृष्टि को कहते हैं जिससे परमात्मा सनातन भगवान् जाने जाते हैं १ सृष्टियों में प्रलय से ऊपर कुछ नहीं होताभया सब करनेवाली ब्रह्मसंज्ञक एक ज्योति नित्यमाया रहित शान्तनिर्म्मल नित्यनिर्म्मल आनन्दसागर और स्वच्छ होती भई जिसको मोक्षकी इच्छा करनेवाले इच्छा करतेभये २। ३ वह ज्योति सब जाननेवाले ज्ञानरूपसे अनन्त अज अव्यय अविनाशी सदैव स्वच्छ अच्युत व्यापक महान् भई ४ सृष्टिकालके प्राप्तहोनेमें तिस को ज्ञानरूप और आत्मामें लीन विकार जानकर तिसके रचने को प्रारम्भ करतेभये ५ तिससे प्रधान उत्पन्नहुआ फिर महान् हुआ सात्त्विक राजस तामस यह तीनप्रकारका महान् हुआ ६ प्रधानसे आच्छादित त्वचा बीजकी नाईं आच्छादित हुआ वैकारिक तैजस भूतादि तामस ७ यह तीनप्रकारका अहंकार महत्तत्त्वसे उत्पन्नहुआ जैसे प्रधानसे महान् तैसे महान्से वह आच्छादित हुआ ८ हर्षित भूतादि शब्दतन्मात्रा को रचताभया शब्दतन्मात्रा से शब्दलक्षण आकाशहुआ ९ शब्दमात्र आकाशको भूतादि आच्छादित करता भया शब्दमात्र आकाश स्पर्शमात्र को रचता भया १० बलवान् वायुहुआ तिसका स्पर्श गुण हुआ आकाश शब्दमात्र स्पर्शमात्र

को आच्छादित करता भया ११ फिर हर्षित होकर वायु रूपमात्र को रचताभया वायुसे ज्योति उत्पन्नहुई वह तद्रूप गुण कहाई १२ स्पर्शमात्र वायु रूपमात्रको आच्छादित करताभया हर्षित ज्योति रसमात्रको रचताभया १३ फिर रसमात्र जल हुये रसमात्र जल रूप मात्रको आच्छादित करताभया १४ हर्षित जल गन्धमात्रको रचते भये तिससे सब भूतों से गुणमें अधिक यह पृथ्वी हुई १५ जिस से संघात समेतहै तिससे तिसका गन्धगुणहुआ तिस तिसमें तन्मात्रा से हुये तिससे तन्मात्रता कहाई १६ तन्मात्रा अविशेष हैं विशेष पर क्रमसे हैं यह भूत तन्मात्र सर्ग तामस अहंकारसे १७ संक्षेप से हे तपस्वी मुनिश्रेष्ठो! कहागया तैजस इन्द्रिय कहाई देव वैकारिकदशहुये १८ तत्त्वचिन्तकों से कहाहुआ ग्यारहवां मन हुआ पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय हैं १९ तिनको और तिनके कुल पवित्र कर्मोंको कहतेहैं कान त्वचा नेत्र जिह्वा और पांचवीं नासिका हुई २० शब्दादि ज्ञानसिद्धि के लिये ये पांचों बुद्धि युक्त भई गुदा लिंग हाथ पांव और पांचवीं वाणी हुई २१ गुदाका विष्ठा त्यागना लिङ्गका आनन्द देना हाथका ग्रहण करना पांवका चलना और वाणीका कहना कर्म हुआ आकाश वायु तेज जल पृथ्वी २२ हे ब्राह्मणो! शब्दादिक गुणों से क्रमसे संयुक्त हुये नाना प्रकार के वीर्यवाले अलग अलग समूह विना भये २३ सब विना मिले हुये प्रजा रचने में समर्थ न भये परस्पर आश्रय से परस्पर संयोग को प्राप्तहोकर २४ एक संघ लक्ष्य समेत सब से एकता पाकर पुरुषाधिष्ठितत्व और प्रधानके अनुग्रह से २५ महदादि और विशेषान्त अण्डको उत्पन्न करते भये वे क्रमसे जलके बुल्लेकी नाईं सदैव बढ़े २६ हे महाबुद्धिमानो! भूतों से जलमें शयन करता हुआ अण्ड बढ़ा जोकि ब्रह्मरूपका प्राकृत विष्णुका उत्तमस्थान भया २७ तहां पर अव्यक्त स्वरूप यह संसार के ईश्वर प्रभु विष्णु ब्रह्मरूप को धारणकर अपने आप स्थित हुये २८ तिस महदात्मा के स्वेदजापद जरायु पर्वत गर्भोदक समुद्र हुये २९ पर्वतों समेत द्वीप समुद्र ज्योति समेत लोकसंग्रह तिस अण्डमें सहित देवता असुर मनुष्यों

के सब होताभया ३० आदि और नाशरहित विष्णुजी की नाभिसे जो कमल उत्पन्न हुआ वह केशवजी की इच्छासे सुवर्ण का अण्ड हुआ ३१ तब आपही श्रेष्ठहरिजी रजोगुण को धारण कर ब्रह्माजी का रूपधार संसारके रचने में प्रवृत्त हुये ३२ फिर ब्रह्माजी की रचीहुई सृष्टिको युग युगमें कल्प पर्यन्त नृसिंहादि रूपसे श्रीभगवान् रक्षा करते भये और रुद्ररूप से संहार करते भये ३३ महात्मा भगवान् सब संसार को ब्रह्माका रूप धारणकर रचते भये रक्षाकरने की इच्छाकर रामादिकरूपोंको धारतेभये और संसार के नाशकरने को रुद्ररूप धारण करते भये ३४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

नदी पर्व्वत और खण्डादिकों के नामों का वर्णन ॥

शौनकादिक ऋषि सूतजीसे पूछतेभये कि हे प्रमाणके जाननेवाले! हे सज्जनों में श्रेष्ठ सूतजी ! नदी सब पर्वत और पृथ्वी के आश्रित और देशों के नाम और सब पृथ्वी और वनों का प्रमाण सम्पूर्ण कहिये १।२ तब सूतजी बोले कि हे महाप्राज्ञ शौनकजी !संग्रह से पांच महाभूत सब पृथ्वीमें स्थितहैं इनको बुद्धिमान् समान कहते हैं ३ पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश ये पाचों गुणोत्तरहैं तिनमें पृथ्वी प्रधानहै ४ तत्त्वके जाननेवाले ऋषियोंने शब्द स्पर्श रूप रस और पांचवांगन्ध ये पृथ्वीके गुणकहे ५ हे ब्राह्मणो! जलमें चार गुणहैं गन्ध नहीं है तेजके शब्द स्पर्श और रूप ये तीन गुणहैं ६ वायुके शब्द और स्पर्श गुणहैं आकाश में शब्दही गुणहै ये पांच गुण पाँचोंमहाभूतों में ७ सब लोकोंमें वर्तमानहैं जिनमें भूत स्थितहैं जब परस्पर नहीं वर्तते तब सब होते हैं ८ जब परस्पर विषम भावको प्रवेश करते हैं तब देहधारी देहोंसे जन्म धारते हैं और प्रकारसे नहीं ९ आनुपूर्वीसे नाश होतेहैं आनुपूर्वसे उत्पन्न होतेहैं ये सब प्रमाणरहित हैं इनका ईश्वरका रूपहै १० जहाँ जहाँ पांचभौतिक दिखाई देते और दौड़ते हैं तिनके मनुष्य तर्क से प्रमाण कहते हैं ११ निश्चयकर जे

चिन्तना करनेके योग्य भाव नहीं हैं तिनको तर्कसे नहीं साधन करते हैं मुनिश्रेष्ठ सुदर्शनद्वीपको कहते हैं १२ यह परिमंडलद्वीप चक्रमें स्थितहै नदी के जलसे परिच्छिन्नहै समुद्रके समान पर्वतों १३ अनेकप्रकारके आकारवाले सुन्दर पुर और देशोंसे युक्त पुष्प और फल युक्त वृक्षों से सम्पन्न धन धान्ययुक्त १४ और लवण समुद्र से चारों ओर घिराहुआहै जैसे पुरुष दर्पण में अपना मुख देखे १५ तैसेही चक्रमण्डल सुदर्शनद्वीप दिखाई देताहै तिसके दो भाग में पिप्पल और दो भाग में बड़ा शशहै १६ सब ओषधि को लेकर चारों ओर से घेरे हैं तिससे अन्य जल जानने योग्य हैं शेष संक्षेप कहाताहै १७ तब ऋषि बोले कि हे बुद्धियुक्त सूतजी! विधिपूर्वक आपने जिसका संक्षेपकहाहै तिसको विस्तार से हमसे कहिये क्योंकि आप तत्त्व के जानने वाले हैं १८ शश लक्षण में जितना यह पृथ्वी का अवकाश दिखाई देताहै तिसका प्रमाण कहिये फिर पिप्पल को कहिये १९ इस प्रकार निश्चयकर ऋषियोंके पूछनेपर सूतजी बोले कि हे बुद्धिमान् ऋषियो! छः ये रत्नपर्वत हैं २० दोनों ओर से अवगाढ़हैं पूर्व पश्चिम समुद्रहैं हिमवान् हिमकूट पर्वतों में उत्तम निषध २१ मूंगों से युक्त नीलपर्वत और चन्द्रमा के समान श्वेतपर्वत और सब धातुओं से युक्त शृंगवान् नाम पर्वत है २२ हे ब्राह्मणो! निश्चयकर ये पर्वत सिद्ध चारणों से सेवित हैं तिनके बीचमें अविष्कुम्भ सहस्र योजन काहै २३ तहां तिन खण्डों में पुण्यकारी देश हैं तिनमें अनेक प्रकारकी जातिके सबसे जीव बसते हैं २४ यह भारतवर्षहै तिससे पर हैमवतहै हेमकूटसे पर हरिवर्ष कहाताहै २५ हे महाभागो! नीलपर्वत के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर पूर्वओर विस्तृत माल्यवान् नाम पर्वत है २६ माल्यवान्के पर गन्धमादन पर्वतहै तिन दोनों पर्वतों के मध्य में परिमण्डल सुवर्णका मेरुपर्वत है २७ यह तरुण सूर्य और धुआं रहित अग्निकी नाईं प्रकाशित है चौरासी सहस्र योजनका ऊंचाहै २८ हे द्विजोत्तमो! नीचे भी चौरासी सहस्र योजन काहै ऊपर नीचे तिरछेलोकों को आच्छादित कर स्थितहै २९ तिसके समीपमें ये चारद्वीप स्थितहैं भद्राश्व केतु-

साल जम्बूद्वीप ३० और उत्तरकुरु इनमें पुण्यात्मा बसते हैं नि-श्चयकर सुपार्श्व का पुत्र विहंगसुमुख ३१ सुवर्ण के कौवोंको देख कर चिन्तना करनेलगा कि मेरु पर्वत उत्तम मध्यम और अधम पक्षियों का ३२ जिससे अविशेष करनेवाला है तिससे इसको हम त्याग करते हैं ज्योतिवालों में श्रेष्ठ सूर्यजी तिसके पीछे प्राप्त होते हैं ३३ नक्षत्रों समेत चन्द्रमा और वायु प्रदक्षिण हैं हे बुद्धिमानो! वह पर्वत सुन्दर पुष्पों से युक्तहै ३४ सब सुन्दर सुवर्ण के स्थानोंसे आच्छादितहै तिस पर्वतमें देवगण गन्धर्व असुर राक्षस ३५ अप्स-राओं समेत सदैव क्रीड़ा करते हैं और ब्रह्मा रुद्र और देवोंके ईश्वर इन्द्र ३६ मिलकर अनेक यज्ञों से अनेक दक्षिणाओं से देव पूजा करते हैं तुम्बुरु नारद विश्वावसु हाहा हूहू ३७ ये मिलकर इन्द्रकी अनेक स्तोत्रों से स्तुति करते हैं महात्मा सप्तर्षि और कश्यप प्रजापति ३८ तहां पर्व पर्व में सदैव जाते हैं हे ऋषियो! तुम्हारा क-ल्याण हो तिसके मस्तक में उशना शुक्रजी दैत्यों से पूजित होते हैं ३९ तिसके सुवर्ण रत्न हैं तिसीके ये रत्नपर्वत हैं तिससे कुबेर भगवान् चौथाई भाग ग्रहण करते हैं ४० तिससे द्रव्यका कलांश मनुष्योंको देते हैं पर्वतके अन्तर में सुन्दर सब ऋतुके फूलों से युक्त ४१ रम्य कर्णिकार वन शिलासमूहों से ऊंचाहै तहां पर साक्षात् पशुपतिजी दिव्य भूतों से युक्त ४२ भूतभावन उमा समेत भगवान् क्रीड़ा करते हैं चरणों तक लम्बी कर्णिकारमयी माला धारण करते हैं ४३ तीन नेत्रों से प्रकाश करते हैं मानों तीन सूर्य्य उदयहैं तिन शिवजीको उग्र तपस्यावाले अच्छे व्रत करनेहारे सत्य बोलनेवाले ४४ देखते हैं महेश्वरजी दुष्टों से देखने में समर्थ नहीं हैं हे द्विजोत्तमो! तिस पर्वतके शिखर से दुग्धकी धारा ४५ विश्वरूप से गिरी हुई भया-नक शब्द युक्त है पुण्यकारिणी अत्यन्त पुण्यात्माओं से सेवित गङ्गा कल्याणकारिणी भागीरथीजी ४६ वेगसे चन्द्रमा के शुभकुण्ड में गिरती हैं तिनसे उत्पन्न हुआ पुण्यकारी समुद्र के समान वह कुण्ड हुआ ४७ तिससमयमें पर्वतों सेभी दुःखसे धारण करनेवाली गङ्गाजी को शिवजी सैकड़ों हजार वर्षतक शिरसे धारण करते

भये ४८ हे द्विजोत्तमो! जम्बूखण्डमें मेरुपर्वत के पश्चिम पार्श्व में बड़े देशोंवाला केतुमाल नामहै ४९ अवस्था दशसहस्र वर्ष की मनुष्यों की है मनुष्य सुवर्ण के वर्णवाले हैं स्त्रियां अप्सराओं के समान हैं ५० मनुष्य रोग और शोकहीन नित्यही प्रसन्न मन वाले और तपायेहुये सुवर्ण के समान दीप्ति युक्तहैं ५१ गन्धमादनपर्वत के कँगूरों में राक्षसों समेत अप्सराओं के समूहों से युक्त गुह्यकों के स्वामी कुबेरजी आनन्द करते हैं ५२ गन्धमादनपर्वत के पर पार्श्व में पापरहित ग्यारह सहस्र वर्षों की अवस्थावाले ५३ तेज युक्त महाबली काले वर्णवाले मनुष्यहैं सब स्त्रियां कमल पत्र के समान दीप्ति युक्त अत्यन्त प्रियदर्शनवाली हैं ५४ नील कमलके धारण करनेवाले श्वेत श्वेत से सुवर्ण के समान रंग श्रेष्ठहै ऐरावत वर्ष अनेकदेशों से युक्तहै ५५ हे महाभागो! उसके दक्षिण उत्तरमें दोखण्ड हैं बीचमें इलावृत्तखण्डहै और पांचखण्ड ५६ इनसे उत्तरोत्तर गुणों से युक्तहैं आयुका प्रमाण आरोग्य धर्म काम अर्थ से युक्त प्राणी तिन सब खण्डों में हैं इसप्रकार पर्वतों से पृथ्वी युक्तहै ५७। ५८ अत्यन्त भारी हेमकूट! और कैलास नाम पर्वतहै वहां पर गुह्यकों समेत कुबेरजी आनन्द करते हैं ५९ कैलास पर्वतके उत्तर मैनाक पर्वत बड़ाभारी हिरण्य शृङ्ग और दिव्यमणिमय पर्वत है ६० तिस के पार्श्व में बहुत सुन्दर शुभ्रकांचन बालुकरम्य विष्णुसर नाम है जहां पर भगीरथ राजा ६१ भागीरथी गङ्गाजीको देखकर बहुत वर्ष बसतेभये वहां पर मणियों से जड़ेहुये यज्ञके खम्भ और सुवर्ण जड़े हुये चैत्रहैं ६२ तहांही महायशस्वी इन्द्रजी यज्ञकर सिद्धि को प्राप्त हुये हैं ये स्रष्टा प्राणियों के स्वामी सनातन सब लोकों से पूजितहैं ६३ और अत्यन्त तेजस्वी प्राणी चारोंओर उपासना करते हैं वहां ही नरनारायण ब्रह्मा मनु और पांचवें शिवजी भी रहते हैं ६४ तहां पर दिव्य गङ्गाजी प्रथम स्थितहैं ये ब्रह्मलोक से आई हैं और सात प्रकारसे हैं ६५ वटोदका नलिनी पार्वती सरस्वती जम्बूनदी सीता और सातवीं गङ्गा सिन्धु नामहै ६६ ये अचिन्त्य दिव्य संज्ञक और प्रभावों से युक्तहैं यहां पर सहस्रों युगमें यज्ञहुई हैं ६७ तहाँ तहाँ

पर सरस्वतीजी कहीं दिखलाई और कहीं नहीं दिखलाई देती हैं ये सातों दिव्य गङ्गा तीनों लोकों में प्रसिद्धहैं ६८ हिमवतीखण्ड में राक्षस हेमकूट में गुह्यक निषधमें सर्पनागहैं गोकर्ण तपोवनहै ६९ सब देवता असुरोंका श्वेत पर्वत कहाहै गन्धर्व नित्यही निषधमें हैं ब्रह्मर्षि नीलमें हैं ७० शृंगवान् देवताओं के आनेजानेका है ये सात खण्ड भागसे हैं ७१ यहाँ पर प्राणी बैठते और चलते हैं उनकी बहुत प्रकार की देवता और असुरों की सम्पदा दिखाई देती है ७२ जोकि गिनती करने में नहीं आसक्ती श्रद्धा और भूषणादिकों से युक्त है जिसको आप ब्राह्मणोंने पूंछा उस दिव्य शशाकृतिको कहा ७३ शशके पार्श्व में दक्षिण उत्तर जो दो खण्ड कहेगये हैं कर्ण में नाग द्वीप और काश्यपद्वीपहैं ७४ कर्णद्वीप शिल और श्रीमान् मलय पर्वत ये दोनों शशि में स्थित द्वीप दिखाई देते हैं ७५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

उत्तरकुरु और जम्बूद्वीप और माल्यवान्पर्वत का प्रमाण वर्णन ॥

ऋषि पूंछते हैं कि हे महाबुद्धियुक्त सूतजी ! मेरुपर्वत के उत्तर पश्चिम और पूर्वमाल्यवान् पर्वतको वर्णनकीजिये १ तब सूतजी बोले कि हे विप्रो ! नीलके दक्षिण और मेरुपर्वतके पार्श्व और उत्तर में पुण्यकारी सिद्धों से सेवित उत्तरकुरु हैं २ तहाँपर वृक्ष शहद के समान मीठेफलवाले नित्यही पुष्प और फलयुक्त हैं पुष्प सुगन्धित और फल रसयुक्त हैं ३ सब कामना देनेवाले फल और बहुतसे दूध देनेवाले वृक्ष हैं ४ दूधदेनेवाले सब वृक्ष सदैव अमृतके समान दूध चुवाते हैं वस्त्रोंको उत्पन्न करते और फलों में आभरणोंको उत्पन्न करते हैं ५ सूक्ष्मसुवर्ण के समान बालूवाली सब मणियुक्त पृथ्वी है यह सब ऋतुमें सुख देनेवाली है निष्कल तपस्वी हैं ६ सब मनुष्य वहां पर देवलोकसे च्युत उज्ज्वल बन्धुओं से युक्त और अत्यन्त प्रियदर्शनवाले हैं ७ अप्सराओं के समान स्त्रियां जोड़ा उत्पन्न करती हैं वे दूधवाले वृक्षों के अमृत समान दूधको पीते हैं ८ समय

पाकर जोड़ाही उत्पन्न होता है फिर बढ़जाता है समान रूप गुण और वेष होते हैं ९ चकई चकवे के समान एकही के सदृश होते हैं वे मनुष्य रोगहीन और नित्यही प्रसन्नमन होते हैं १० हे महाभागो! वे ग्यारह सहस्र वर्ष तक जीते हैं परस्पर त्याग नहीं देते हैं ११ जब मृतक होजाते हैं तो महाबलवान् तीक्ष्ण चोंचवाले भारुड नाम पक्षी उनको उठाकर कन्दराओं में फेंक देते हैं १२ हे विप्रो! उत्तरकुरु आपलोगों से संक्षेपसे कहा अब मेरुके पार्श्व को पहले यथातथ्य कहते हैं १३ हे तपस्वियो! तिस भद्राश्व के मस्तक का अभिषेक हुआहै जहां पर भद्रशालवन और कालाम्र बड़े वृक्ष हैं १४ कालाम्र नित्यही शुभ पुष्प और फल युक्त रहते हैं योजन पर्यन्त विस्तृत हैं सिद्ध चारणोंसे सेवित हैं १५ तहाँपर वे पुरुष श्वेत तेज युक्त महाबली हैं स्त्रियां कुमुदके वर्णवाली सुन्दरी प्रियदर्शन युक्त १६ चन्द्रमाके समान वर्णवाली हैं चारोंवर्ण पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाले चन्द्रमा के समान शीतल देहवाले नृत्य और गीतमें निपुणहैं १७हे द्विजश्रेष्ठो! दशसहस्र वर्ष की उनकी आयुहै और कालाम्रका रस पीकर वे नित्यही युवावस्थामें स्थित रहते हैं १८ नील के दक्षिण और निषध के उत्तर सनातन बड़ाभारी सुदर्शन नाम जामुन का वृक्षहै १९ यह सब काम फल देनेवाला पुण्यकारी सिद्ध चारणोंसे सेवितहै तिसी के नाम से सनातन जम्बूद्वीप प्रसिद्धहै २० यह ग्यारह सौ योजनहै माल्यवान् के पूर्वशृङ्ग में यमराज के अनुचरहैं २१ हे द्विजो! माल्यवान् पचास सहस्र योजनहै तहाँ के मनुष्य चाँदी के समान उज्ज्वल होते हैं २२ सब ब्रह्मलोकसे च्युत और वेद पढ़नेवाले दिव्य तप करते और ऊर्ध्वरेता होते हैं २३ और प्राणियों की रक्षा के लिये सूर्य में प्रवेश करते हैं छांछठ सहस्र २४ सूर्य को छोड़कर अरुणके आगे जाते हैं छांछठ सहस्र वर्ष २५ सूर्य की तापसे तप्त होकर चन्द्रमण्डलमें प्रवेशकर जाते हैं २६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

खण्डों के नाम और पर्वतों के नामों का वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सज्जनों में श्रेष्ठ सूतजी ! खण्डों और पर्वतों के नाम और पर्वतवासियों को हमसे तत्त्वसे कहिये १ तब सूतजी बोले कि श्वेत के दक्षिण और निषध के उत्तर रमणक नाम खण्ड है वहां पर मनुष्य उत्पन्न होते हैं २ जोकि उज्ज्वल बन्धुओं से युक्त सब प्रियदर्शनवाले और शत्रुओं से रहित होते हैं ३ वे महाभाग नित्यही आनन्दयुक्त मन होकर ग्यारह सहस्र पांचसौ वर्षतक जीते हैं ४ नीलके दक्षिण और निषधके उत्तर हिरण्मय नाम खण्ड है जहां हैरण्वती नदीहै ५ हे महाबुद्धिमानो ! जहां पक्षियों में उत्तम गरुड़जी रहते हैं और यज्ञके करनेवाले ब्राह्मणों में श्रेष्ठ धनुष धारण करनेवाले प्रियदर्शनवाले ६ महाबली प्रसन्नमन होते हैं और वे तपस्वी बारह सहस्र पांचसौ वर्षतक जीते हैं हे द्विजश्रेष्ठो ! तीन पवित्र वहाँपर कँगूरे हैं ७ । ८ एक मणियों से जड़ाहुआ है दूसरा अद्भुत सुवर्ण जड़ाहै तीसरा सब रत्नों से जड़ाहै और उत्तम स्थानों से शोभित है ९ शृङ्ग के उत्तर समुद्र के अन्त में शण्डिनी स्वयंप्रभा देवी नित्यही बसती हैं १० तिस शृङ्गवान् से पर ऐरावत नाम खण्ड है वहांपर सूर्यकी गति नहीं है और मनुष्य जीर्ण नहीं होते हैं ११ नक्षत्रोंसमेत चन्द्रमा ज्योतिर्भूत की नाईं आच्छादित है कमल की समान दीप्तिवाले कमल के वर्णवाले कमलपत्र के समान नेत्रवाले १२ कमलके पत्रके समान सुगन्धित वहाँपर मनुष्य उत्पन्न होते हैं और अनिष्पन्न गन्धहीन आहाररहित जितेन्द्रिय १३ देवलोकसे च्युत सब रजोगुणहीन ब्राह्मण हैं और तेरह सहस्र वर्ष १४ धर्मात्माओं में श्रेष्ठ मनुष्य जीते हैं क्षीरसमुद्र के उत्तर प्रभु १५ वैकुण्ठहरि सुवर्णके रथमें स्थित होते हैं उनका रथ आठ पहियेवाला प्राणियों समेत मनके समान वेगवाला है १६ और अग्नि के समान वर्णवाला महातेजस्वी सुवर्ण से भूषित है और सब प्राणियों के प्रभु विभुजी १७ संक्षेप और विस्तार में कर्त्ता

और करानेवाले हैं पृथ्वी जल आकाश वायु तेजों के पति हैं १८ सब प्राणियों के यज्ञहैं और तिनका मुख अग्नि है १९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादे पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

भारतवर्ष के कुलपर्वतों नदियों और देशों का वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी ! जो यह पुण्यकारी पुण्यविधायक भारतवर्ष है वह सब हम से कहिये क्योंकि आप बुद्धिमान् हैं १ तब सूतजी बोले कि यहां तुम से उत्तम भारतवर्ष को कहते हैं जो कि देव प्रियमित्र वैवस्वत मनु २ पृथु बुद्धिमान् वैन्य महात्मा इक्ष्वाकु ययाति अम्बरीष मान्धाता नहुष ३ मुचुकुन्द कुबेर उशीनर ऋषभ ऐल राजानृग ४ राजर्षि कुशिक महात्मा गाधि राजर्षि सोम और दिलीप ५ और अन्य भी बलवान् क्षत्रियों और सब प्राणियों को उत्तम प्रियहै ६ हे द्विजो ! अब वर्ष को कहते हैं जैसा कि सुनाहै महेन्द्र मलय सह्य शुक्तिमान् ऋक्षवान् ७ विन्ध्य पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं और तिनके सहस्रों पर्वत तुम्हारे समीप ८ सारयुक्त विपुल चित्र विचित्र सानुवाले नहीं जानेगयेहैं और अन्य जे जाने गये हैं वे ह्रस्व और ह्रस्वों के जीविका देने वाले हैं ९ आर्य म्लेच्छों को धर्मयुक्त करनेवाले हैं वे मिश्र पुरुष निर्मल गंगा नदी सिन्धु सरस्वती १० गोदावरी नर्मदा बहूदा महानदी सतलज चन्द्रभागा यमुना महानदी ११ दृषद्वती वितस्ता विपापा स्वच्छबालुका वेत्रवतीनदी कृष्णा वेणीनदी १२ इरावती वितस्ता पयोष्णी देविका वेदस्मृति वेदशिरा त्रिदिवा सिन्धुलाकृमि १३ करीषिणी चित्रवहा त्रिसेनानदी पाप नाश करनेवाली गोमती चन्दना महानदी १४ कौशिकी त्रिदिवा हच्या नाचिता रोहितारणी रहस्या शतकुम्भा सरयू १५ चर्मण्वती वेत्रवती हस्तिसोमा दिश शरावती पयोष्णी भीमा भीमरथी १६ कावेरी चुलुका तापी शतमला नीवारा महिता सुप्रयोगानदी १७ पवित्रा कृष्णला सिन्धुवाजिनी पुरमालिनी पूर्वाभिरामा वीरा भीमा मालावती १८ पलाशिनी पापहरा

महेन्द्रा पटलावती करीषिणी असिक्की कुशचीरी महानदी १९ मरु-
ता प्रवरा मेना हेमा घृतवती अनावती अनुष्णा सेव्याकापी २०
सदावीरा अधृष्या कुशचीरा महानदी रथचित्रा ज्योतिरथा विश्वा-
मित्रा कपिंजला २१ चन्द्रा बहफली कुचीरा अम्बुवाहिनी वैनदी
पिङ्गलावेणा तुङ्गवेगा महानदी २२ विदिशा कृष्णवेणा ताम्रा कपि-
ला धेनु सकामा वेदस्वा हविःस्रावा महापथा २३ शिप्रा पिच्छला
भरद्वाजीनदी कौशिकी नदी शोणा बाहुदा चन्द्रमा २४ दुर्गा अंतः-
शिला ब्रह्ममेध्या दृषद्वती परोक्षा अथरोही जम्बूनदी २५ सुनासा
तमसा दासी सामान्या वरणा असि नीला धृतिकरी पर्णाशा महा-
नदी २६ मानवी वृषभा भासा ब्रह्ममेध्या और दृषद्वतीनदीको जल
पीते हैं हे द्विजश्रेष्ठो ! ये और बहुत महानदियां और भी हैं २७
सदैव निरामया कृष्णा मंदगा मन्दवाहिनी ब्राह्मणी महागौरी दुर्गा
२८ चित्रोत्पला चित्ररथा अतुला रोहिणी मन्दाकिनी वैतरणी को-
कामहानदी २९ शुक्तिमती अनंगा वृषसाह्वया लोहित्या करतोया
वृषकाल्वया ३० कुमारी ऋषितुल्या मारिषा सरस्वती मन्दाकिनी
सुपुण्या और सब गङ्गा ३१ ये सब संसार की माता हैं और सब
महाफल देनेवाली हैं तैसेही अच्छे प्रकाशवाली सैकड़ों सहस्रों
नदियां हैं ३२ हे विप्रो ! जैसी स्मृति है उसके अनुसार ये नदियां
कहीं इसके उपरान्त देशों को हमारे कहते हुये जानिये ३३ कुरु
पांचाल शाल्व मात्रेय जांगल शूरसेन पुलिन्द बौध माल ३४
मत्स्य कुशट्ट सौगंध्य कुत्सप काशि कोशल चेदि मत्स्य करूष भोज
सिंधु पुलिन्दक ३५ उत्तम दशार्ण उत्कलों समेत मेकल पञ्चाल
कोशल नैकपृष्ठ युगन्धर ३६ बोध मद्र कलिङ्ग काशि परकाशि
जठर कुकुर सुदशार्ण सुसत्तम ३७ कुन्ति अवन्ति अपरकुन्ति गो-
मन्त मल्लक पुंड्र विदर्भ नृपवाहिक ३८ अश्मक सोत्तर गोपराष्ट्र
कनीयस अधिराज्यकुशट्ट मल्लराष्ट्र केरल ३९ मालव उपवास्य चक्र
वक्रालय शक विदेह मगध सह्म मलज विजय ४० अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग
यकृल्लोमा मल्ल सुदेष्ण प्रह्लाद महिष शशक ४१ बाह्लिक वाटधान
आभीर कालतोयक अपरान्त परान्त पङ्कल चर्मचण्डिक ४२ अट-

वीशेखर मेरुभूत उपावृत अनुपावृत सुराष्ट्र केकय ४३ कुट्टापरान्त माहेय कक्ष सामुद्र निष्कुट अन्ध अन्तर्गिर्य ४४ बहिर्गिर्य अङ्ग मलद मगध मालवार्जट सत्वतर प्रावृषेय भार्गव ४५ पुंड्र भार्ग किरात सुदेष्ण भासुर शक निषाद निषध आनर्त नैर्ऋत ४६ पूरालि पूतिमत्स्य कुन्तल कुशक तरिग्रह शूरसेन ईजिक कल्पकारण ४७ तिलभाग मसार मधुमत्त ककुंदक काश्मीर सिन्धु सौवीर गांधार दर्शक ४८ अभीसार कुद्रुत सौरिल बाह्लिक दर्वी मालव दर्व वातजाम रथोरग ४९ बलरट्ट सुदामा सुमल्लिक बन्ध करीकष कुलिन्द गंधिक ५० वनायु दश पार्श्वरोमा कुशबिन्दु काच्छ गोपालकच्छ जांगल कुरुवर्णक ५१ किरात बर्बर सिद्ध वैदेह ताम्र लिप्तिक सैरिंद्र समेत औड़ म्लेच्छ पार्वतीय ५२ हे मुनिश्रेष्ठो! और देशों को दक्षिण जानिये द्रविड केरल प्राच्य मूषिक बालमूषिक ५३ कर्णाटक माहिषक विकन्ध मूषिक झल्लिक कुन्तल सौहृदानलकानन ५४ कौक्कुटक बोल कोंकण मणिबालक समंग कनक कुंकुरांगारमारिष ५५ ध्वजिन्युत्सव संकेत त्रिवर्ग माल्यसेनि व्यूढक कोरक प्रोष्ठ संगवेगधर ५६ विंधचूलिक बल्वलोंसमेत पुलिन्द मालवामलर अपरवर्तक ५७ कुलिन्द कालद चण्डक कुरट मुशल तनवाल सतीर्थ पूतिसृंजय ५८ अनिदाय शिवाट तपन सूतप ऋषिके विदर्भ स्तंगना परतंगक ५९ हेमुनिश्रेष्ठो! उत्तर और म्लेच्छ मनुष्यहैं कांबोजों समेत यवन दारुण म्लेच्छ जाति हैं ६० सक्र गृह कुलत्थ पारसिक समेत हूण रमण अंध्र दशमालिक ६१ क्षत्रियों और वैश्य शूद्रों के कुलों के रहनेवाले हैं शूराभीर दरद पशुओं समेत काश्मीर ६२ खाण्डीक तुषार पह्लग गिरिगह्वर आद्रेय सभिरादाज स्तनपोषक ६३ द्रोषक कालिंग इनमें किरातों की जातिहैं तोमर हन्यमान करभंजक ६४ ये और देश पूर्व और उत्तरहैं हे ब्राह्मणो! उद्देशमात्रसे मैंने वर्णन किये हैं जैसे गुण बलहै यह धर्म अर्थ काम के महाफल देनेवाले हैं ६५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय ॥

भारतवर्ष की चारों युगकी आयु का प्रमाण शुभाशुभ बल और मनुष्यों के गुणों का वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी ! इस भारतवर्ष और हैमवतकी आयु का प्रमाण और शुभअशुभ बल १ भविष्य भूत और वर्तमान हम से विस्तार से कहिये और हरिवर्ष को भी तैसेही कहिये २ तब सूत जी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठो ! भारतवर्ष में चार युगहैं सतयुग त्रेता द्वापर और कलियुग हैं ३ पहले सतयुग फिर त्रेता तिस पीछे द्वापर और फिर कलियुग वर्तमान होताहै ४ हे मुनिश्रेष्ठो तपस्वियो! सत-युगमें चार सहस्र वर्षों की आयु संख्या कहीहुई है ५ त्रेता में तीन सहस्र आयु जानिये द्वापर में दोसहस्र वर्ष पृथ्वी में स्थित मनुष्य रहते हैं ६ कलियुगमें दोही सहस्र वर्षों की स्थितिहै गर्भ में स्थितही मरजाते हैं और उत्पन्न हुये भी मरजाते हैं ७ महाबली महासत्त्व युक्त बुद्धि और गुण संयुक्त सैकड़ों सहस्रों उत्पन्न होते हैं ८ सत-युगमें ब्राह्मण बली प्रियदर्शनवाले उत्पन्न होते हैं और मुनि तपस्वी ९ बड़े उत्साह युक्त महात्मा धर्मात्मा सत्य बोलनेवाले प्रियदर्शन वाले उत्तम देह युक्त महावीर्य्य युक्त धनुषधारण करनेवाले होते हैं १० क्षत्रिय रणभूमि में वीरशूरों के सम्मत होते हैं त्रेतायुगमें सब क्षत्रिय चक्रवर्त्ती होते हैं ११ द्वापर युगमें सदैव सब वर्ण बड़े उ-त्साहवाले वीर्यवान् परस्पर वधकी इच्छा करनेवाले १२ अन्धतेज संयुक्त क्रोधी पुरुष निश्चय होते हैं कलियुगमें लोभी झूठ बोलने वाले उत्पन्न होते हैं १३ ईर्ष्या मान क्रोध माया निन्दा कलियुगमें प्राणियों के होती हैं और राग लोभभी होते हैं १४ द्वापर युगमें संक्षेप वर्तमान होताहै हैमवत गुणोत्तरहै तिससे पर हरिवर्षहै १५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय ॥

विष्कम्भ और समुद्र के प्रमाण और शाकद्वीप का विस्तार समेत वर्णन ॥

ऋषि बोले कि हे सूतजी! आपने श्रेष्ठ जम्बूखण्ड यथावत् कहा

अब विष्कम्भके प्रमाण को तत्त्व से कहिये १ समुद्र के प्रमाण को अच्छेप्रकार से कहिये शाकद्वीप धार्मिक कुशद्वीप २ शाल्मल और क्रौंचद्वीपको तत्त्वसे कहिये तब सूतजी बोले कि हे द्विजश्रेष्ठो! बहुत द्वीपहैं जिनसे यह संसार निरन्तर है अब सात द्वीपोंको कहते हैं सुनिये ३ अठारह सहस्र छःसौ पूर्ण योजनका विष्कम्भ जम्बुपर्वत है ४ लवण समुद्रका विष्कम्भ दूनाहै अनेक प्रकार के देशों से युक्त मणि और मूंगोंसे चित्रितहै ५ अनेकप्रकार की धातुओं से विचित्र पर्वतोंसे उपशोभितहै सिद्ध और चारणोंसे युक्तहै परिमण्डल समुद्र है ६ हे श्रेष्ठ धर्मात्माओ! यथावत् शाकद्वीपको कहते हैं हमारे कहते हुये जैसा न्यायहै तैसेही इस समय में सुनिये ७ जम्बुद्वीपके प्रमाण से शाकद्वीप दुगुनाहै विष्कम्भसे क्षीरोद समुद्र विभागसे ८ युक्तहै तहां पर पुण्यकारी देशहैं और मनुष्य मरता नहीं है ९ फिर दुर्भिक्ष कैसेहो वहां के मनुष्य क्षमा और तेजयुक्त हैं हे मुनिश्रेष्ठो! शाकद्वीप का संक्षेप यथावत् कहा अब और क्या तुमलोगों से कहें १० तब ऋषिबोले कि हे धार्मिक महाप्राज्ञ सूतजी! शाकद्वीपका संक्षेप यथा-वत् आपने कहा अब तत्त्वसे विस्तार समेत कहिये ११ तब सूतजी बोले कि हे विप्रो! तैसेही साल पर्वत मणिपर्वत समुद्र नदियां तिन के नामों को हम वर्णन करते हैं १२ हे धर्मात्माओ! अत्यन्त गुण युक्त सब तत्त्व को पूंछाहै देवर्षि गन्धर्वों से युक्त पहला मेरु पर्वत क-हाताहै १३ पूर्वविस्तृत मलय नाम पर्वतहै तहां मेघ वर्तमान होते और सब ओर होते हैं १४ तिसके परसे जलधार महापर्व्वत है तिससे नित्यही इन्द्र श्रेष्ठ जलको ग्रहण करतेहैं १५ तिसी से वर्षा कालमें वर्षा होतीहै ऊंचा रैवतक पर्वत जहाँ नित्यही प्रतिष्ठितहै १६ आकाशमें रेवती नक्षत्रहै ब्रह्माकी कीहुई विधिहै उत्तरसे श्यामनाम महापर्वतहै १७ जोकि नवीन मेघकी दीप्तिवाला ऊंचा श्रीमान् उज्ज्वल देहवालाहै जिससे श्यामताके भावको प्राप्त प्रजा प्रसन्नमन हैं १८ तब ऋषि बोले कि हे सूतजी! यह हमारे बड़ा संशयहै जो कि आपने प्रजाओंको श्याम भावमें प्राप्त श्याम पर्वत से कहाहै सो प्रजा कैसे अच्छेप्रकार श्यामताको यहां प्राप्त हुये हैं १९ तब सूतजी

बोले कि हे मुनि श्रेष्ठो ! हे महा बुद्धिमानों ! सब द्वीपों में गौर कृष्ण पतगहैं तिनके वर्ण के अन्तर में २० श्याम जिससे प्रवृत्त है तिससे श्याम गिरि कहाहै तिससे पर दुर्ग शैल बड़े उदय वाला है २१ केशरी केशर युक्तहै जहां से वायु प्रवृत्तहै तिनके योजन भर विष्कम्भ विभागसे दूनाहै २२ तिनमें बुद्धिमानोंने वर्ष कहे हैं महामेरु महाकाश जलद कुमुदोत्तर २३ जलधार महा प्राज्ञ सुकुमार ये वर्ष हैं रैवतके कौमार श्याम मणिकांचन हैं २४ केशरके मौदाकी है परसे महान् पुरुष परिवार्य है दीर्घ और ह्रस्व भी २५ जम्बूद्वीपसे प्रसिद्ध है तिसके बीचमें शाकनाम बड़ा वृक्षहै तिसके प्रजा नौकरों समेत महाबुद्धिमान्हैं २६ तहां पुण्यकारी देशहैं तहांहीं महादेवजी पूजे जाते हैं तहां पर सिद्धचारण और देवता जाते हैं २७ सब प्रजा धर्मात्माहैं चारोंवर्ण मत्सरहीन अपने अपने कर्ममें निरतहैं चोर कोई नहीं दिखाई देता २८ दीर्घ आयुवाले महाबुद्धिमान् बुढ़ापा और मृत्युसे हीन प्रजा इसप्रकार बढ़ते हैं जैसे वर्षा में नदियां बढ़ती हैं २९ तहाँ पुण्यकारी जल वाली नदियाँ हैं और गङ्गा बहुत तरह से हैं सुकुमारी कुमारी शीता शीतोदका ३० महानदी मणिजलानदी इक्षुवर्द्धनिका ये सात गंगाहैं ३१ तहां से पुण्यकारी जल वाली परम सुन्दर सैकड़ों सहस्रों नदियां प्रवृत्त हैं जहां से इन्द्र बर्षते हैं ३२ तिनके नाम स्मरण और गिनती में नहीं आसक्ते हैं वे पुण्यकारी श्रेष्ठ नदियां हैं ३३ तहां पर पुण्यकारी चार देशलोकमें प्रसिद्ध हैं मृग मशक मानस और मल्लक नामहैं ३४ मृगदेशमें वेदके जानने वाले अपने कर्म में निरत ब्राह्मणहैं मशकदेशमें धर्मात्मा सब कामना देनेवाले क्षत्रियहैं ३५ मानसदेशमें महाभाग वैश्य धर्मसे जीविका करनेवाले सब कामनाओंमे युक्त शूर धर्म अर्थ में निश्चित वैश्यहैं ३६ मल्लकदेशमें नित्यही शूद्र पुरुष धर्मात्माहैं हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठो ! तहांपर राजा नहीं है न दण्डहै न दण्ड देनेवाले पुरुषहैं ३७ धर्मके जाननेवाले अपने धर्महीं से परस्पर रक्षा करते हैं इतनाहीं महापराक्रमी तिस शाकद्वीपमें कहनेको समर्थ हैं और इतनाहीं सुननेयोग्य है ३८।३९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नववाँ अध्याय॥

उत्तर के द्वीपों का वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे महाभाग ऋषियो! उत्तर द्वीपोंकी कथा हमसे सुनिये १ घृततोय समुद्र दधिमण्डोदक सुरोदसागर और दुग्ध सागर २ ये सब द्वीप परस्पर से द्विगुणहैं पर्वत समुद्रोंसे घिरेहुये हैं ३ मध्यम द्वीपमें गौरवर्ण बड़ाभारी मनःशिल पर्वतहै पश्चिम में कृष्णवर्ण नारायण सख पर्वतहै ४ तहाँ पर प्रसन्न केशवजी दिव्य रत्नों की आपही रक्षा करते और प्रजाओंके सुखको देते हैं ५ देशके बीच शरद्वीपमें कुशस्तंबहै शाल्मलिद्वीपमें शाल्मलि पूजाजाताहै ६ क्रौंचद्वीपमें रत्न समूहोंकी खानि महा क्रौंचपर्वत चारों वर्ण से नित्य-ही पूजितहै ७ वड़ाभारी सब धातुओं का उत्पन्न कर्त्ता गोमंतपर्व्वत है जहां पर नित्यही श्रीमान् कमलनयन मोक्षकी इच्छा करनेवालों से युक्त प्रभु नारायण हरिजी बसते हैं कुशद्वीपमें मूंगोंसे जड़ा हुआ पर्वतहै ८। ९ अत्यन्त दुर्धर्षसुनामा पहला पर्वत है दूसरा हेमका पर्वत द्युतिमान् नाम है तीसरा कुमुद पर्वतहै १० चौथा पुष्पवान् नाम है पांचवाँ कुशेशयहै छठां हरिगिरि नाम है ये छः उत्तम पर्वत हैं ११ तिनके बीचमें विष्कम्भ पूर्वभाग से दुगुनाहै पहले वर्ष का औद्भिदनाम दूसरे का रेणुमण्डल १२ तीसरे का सुरथ चौथे का लम्बन पांचवेंका धृतिमत छठवेंका प्रभाकर १३ और सातवें वर्षका कापिलनामहै ये सात वर्षलंबकहैं इनमें देवता गन्धर्व प्रजा आनन्द युक्त विहार और रमण करते हैं तिनमें कोई जन मरता नहीं है १४ न चोर और म्लेच्छ जाति कोई है सब जन गौरवर्ण और सुकुमार हैं १५ हे महा बुद्धिमान् द्विज श्रेष्ठो! शेष सब द्वीपों में जैसा सुनाहै तैसाही कहते हैं सुनिये १६ क्रौंचद्वीपमें क्रौंचनाम महा पर्वतहै क्रौंचसे पर वामनक वामनकसे पर अन्धकारक १७ अन्धकारक से पर पर्वतों में उत्तम मैनाक पर्वतहै मैनाकसे पर उत्तम गोविन्द पर्वत है १८ गोविन्दसे पर पुण्डरीक महापर्वतहै पुण्डरीक से पर दुन्दुभि स्वन कहाताहै १९ तिनके आगे दुगुना विष्कम्भ पर्वतहै अब तहां

के देशोंको कहते हैं कहतेहुये मुझसे सुनिये २० क्रौंचका कुशल देश वामनका मनोनुग मनोनुगसे पर उष्णनाम देशहै २१ उष्णसे पर प्रावरक प्रावरक से अन्धकारक अन्धकारक देशसे पर मुनि देश २२ और मुनि देशसे पर दुन्दुभिस्वन कहाताहै जो कि सिद्ध चारणों से युक्तहै और बहुधा गौरवर्ण वहां के जनहैं २३ ये देव गन्धर्वों से सेवित देश कहेगये पुष्करमें मणिरत्न युक्त पुष्कर नाम पर्वतहै २४ तहां पर प्रजापति देव नित्यही आप रहते हैं देवता और सब महर्षि तिनकी उपासना करते हैं २५ और द्विजोत्तम मन के अनुकूल वाणियोंसे पूजा करते हैं जम्बूद्वीपसे अनेकप्रकारके रत्न पैदा होते हैं २६ तिन सब द्वीपों में ब्राह्मण प्रजाओं की ब्रह्मचर्य सत्य और दमसे २७आरोग्य आयुके प्रमाणसे दुगुनी दुगुनीहै तिन द्वीपों में ये देश २८ कहेगये हैं जिनमें एक धर्मही वर्तमानहै और प्रजापति ईश्वर आपही दण्ड लेकर २९ इनद्वीपों की रक्षा करते हुये सदैव स्थितरहते हैं और वहां के राजा पिता पितामह शिवजी ही हैं ३० हे द्विज श्रेष्ठ द्विजोंमें पण्डित विप्रोंमें श्रेष्ठो! शिवजी प्रजाओं की रक्षा करते और प्रजा आपही उपस्थित भोजन ३१ पके-हुये को नित्यही भोजन करते हैं तिससे परलोककी संस्थिति महा शैल दिखाई देताहै ३२ जोकि चौगोल महा बुद्धिमान् सबसे परि-मण्डलहै तहां परलोक सम्मत चार दिग्गज स्थित रहते हैं वामन ऐरावत अंजन और सुप्रतीक जिनके नामहैं ३३ । ३४ तिस महाशैलके प्रमाण की संख्या हम नहीं करसके नित्यही तिरछा ऊपर और नीचे प्रमाण रहितहै ३५ तहां पर सब दिशाओंसे वायु चलती है सम्बन्धहीन मुनि श्रेष्ठ ब्राह्मण तिनको ग्रहण करते हैं ३६ कमलकी समान महादीप्ति वाले पुष्करों से सैकड़ों प्रकार से खींचते हैं और नित्यही शीघ्र तिनको छोड़देते हैं मुख और नासि-कासे श्वास लेतेहुये दिग्गजों से पवन जैसे छोड़ी जाती है तैसेही छोड़ते हैं तहां पर प्रजा आती और स्थित होती हैं ३७ । ३८ यह निर्माण समेत यथोद्दिष्ट संसार मैंने वर्णन किया इस पुण्य देनेवाले मनके अनुग पृथ्वी के मानको सुनकर ३९ श्रीमान् सिद्ध अर्थवाले

साधुओं को संमत तर जाता है और तिसकी आयु बल यश और तेज बढ़ताहै ४० जो व्रत धारणकर पर्व में इसके कहने को सुनता है तिसके पितृ पितामह प्रसन्न होते हैं ४१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

राजायुधिष्ठिर के पास वनमें नारदमुनि का आगमन और राजासे वशिष्ठ मुनि और दिलीप का संवाद कथन॥

ऋषि बोले कि हेमहाभाग सूतजी! पृथ्वीका प्रमाण और नदियों की संस्थान आपसे सुनकर अमृतहीपान किया १ तिस भूमिमें पवित्र तीर्थ हमने सुने हैं तिन सबको जैसे फल करनेवालेहों कहिये हे महाप्राज्ञ! विशेष समेत आपसे सुनना चाहते हैं २ तब सूतजी बोले कि हे तपस्वियो! धन्य पुण्यकारी बड़े आख्यान को तुमलोगों ने पूंछा तिस पुराने आख्यान को यथायोग जैसा सुना है अपनी बुद्धिके अनुसार कहते हैं हे द्विजश्रेष्ठो! देवर्षि नारद और युधिष्ठिर के संवाद को सुनिये ३।४ राज्य हरजाने में महारथी पाण्डुके पुत्र महाभाग पाण्डव द्रौपदी समेत तिस वनमें बसते थे ५ तब महात्माब्राह्मी लक्ष्मी से प्रकाशित अग्निके समान तेजस्वी देवर्षिनारद जीको पाण्डव देखते भये ६ तिन भाइयों से युक्त श्रीमान् युधिष्ठिर जी इस प्रकार शोभित होते थे जैसे स्वर्ग में प्रकाशित तेजवाले इन्द्र देवताओं से शोभित होते हैं ७ जैसे सावित्री देवोंको नहीं छोड़ती और सूर्यकी दीप्ति मेरु पर्वतको नहींत्यागती तैसेही द्रौपदी जी धर्मसे पाण्डव पतियों को नहीं त्यागती भई ८ भगवान् नारद ऋषि युधिष्ठिर की पूजाको ग्रहण कर युक्तरूप प्रिय से धर्म्म पुत्र महात्मा धर्मराज युधिष्ठिर को समझाकर बोले कि हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ! कहिये क्या इच्छा है वह तुमको देवें ९।१० तब धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत हाथ जोड़कर प्रणामकर देव सम्मित नारदजी से बोले ११ कि हे महाभाग! हे अच्छेव्रत करने वाले सबलोकों से पूजित! आपके प्रसन्न होनेमें आपके प्रसाद से

कृतार्थ मानते हैं १२ जो भाइयों समेत हमारे ऊपर आपने कृपा किया हे पापरहित मुनि श्रेष्ठ! हमारे हृदय के सन्देह के काटने के योग्य आप हैं १३ हे ब्रह्मन्! जो तीर्थ में तत्पर पृथिवी की प्रदक्षिणा करता है तिसको क्या फल होता है सम्पूर्ण आप कहने के योग्यहैं १४ तब नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! एकाग्रचित्त होकर सुनिये यह सब पूर्वसमयमें दिलीपने वशिष्ठजीसे सुनाहै १५ पूर्वकाल में राजाओं में श्रेष्ठ दिलीप गङ्गाजी के किनारे मुनि की नाईं धर्मके व्रत में स्थितहोकर बसते भये १६ हे महाराज! शुभ देश पुण्यकारी देवर्षियों से पूजित देवगन्धर्वों से सेवित गङ्गाद्वार में महातेजस्वी १७ परम दीप्तिवाले दिलीप पितृदेव और ऋषियों को विधिदृष्ट कर्मसे तर्पण करते भये १८ और महामन राजा किसी कालमें जपकरतेहुये भूतोंके समान उत्तम ऋषि वशिष्ठजीको देखते भये १९ तब लक्ष्मी से प्रकाशित पुरोहितजी को देखकर दिलीप अतुलहर्षको प्राप्तहो परम विस्मयको प्राप्तहोतेभये २० हे युधिष्ठिर महाराज धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ! दिलीप उपस्थित वशिष्ठजीको विधिदृष्टकर्मसे पूजनकरतेभये २१ और पवित्र प्रयतमनहो शिरसे अर्घ्य ले तिन ब्रह्मर्षिश्रेष्ठसे नाम कहतेभये २२ कि हे अच्छेव्रत करनेवाले वशिष्ठजी! मैं आपका दास दिलीपहूं आपका कल्याणहो आपके दर्शनसे सब पापों से मैं छूटगया हूं २३ हे महाराज युधिष्ठिर! इसप्रकार मनुष्योंमें श्रेष्ठ सत्यबोलनेवाले दिलीप कहकर हाथजोड़ कर चुपहोजातेभये २४ तब वशिष्ठमुनि स्वाध्यायसे कर्षित राजाओं में श्रेष्ठ दिलीप को नियम से देखकर प्रसन्नमन होजातेभये २५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

पुष्कर तीर्थका माहात्म्य वर्णन ॥

वशिष्ठजी बोले कि हे धर्म जाननेवाले महाभाग दिलीप! तुम्हारी इस प्रश्रयदम और सत्य से तुम्हारे ऊपर सब प्रकार से प्र-

सन्नहूं १ हे पापरहित पुत्र! जिस तुम्हारा इस प्रकारका यह धर्महै तुमने पितर तार दिये तिसीसे मुझको देखतेहो हमारे यजमानहो २ हे पापरहित राजन्! तुम्हारे ऊपर इस समय हमारी प्रीति बढ़ती है कहिये तुम्हारा क्याकरें जो कहो तिसके दाता हमहैं ३ तब दिलीप बोले कि हे वेदवेदाङ्ग के तत्त्वके जाननेवाले! हे सब लोकों से पूजित! जो मैंने प्रभु आपको देखा तो कियाहुआ मानताहूं ४ हे धर्म धारियों में श्रेष्ठ! जो आपने मेरे ऊपर कृपाकीहै तो हृदयके स्थित सन्देहको पूछताहूं वह मुझसे आप कहने के योग्यहैं ५ हे भगवन्! कुछ तीर्थ में जो मेरे धर्म संशयहै वह मैं अलग संकीर्तन आपसे सुनने की इच्छा करताहूं ६ हे द्विजसत्तम! हे विप्रर्षे! हे तपोधन! जो पृथिवी की प्रदक्षिणा करता है तिसको क्या फलहै वह हमसे कहिये ७ तब वसिष्ठजी बोले कि हे तात! तिन ऋषियों और मेरे परायण को मैं कहताहूं एकाग्र मन होकर तीर्थोंमें जो फलहै तिस को सुनिये ८ जिसके हाथ पांव मन अत्यन्त संयत हैं विद्या तप और यशहै वह तीर्थके फलको भोगताहै ९ दान लेनेसे हीन संतुष्ट नियत पवित्र और अहंकार से निवृत्तहो वह तीर्थके फलको भोगता है १० लड़ाई से रहित निराहार आहार न प्राप्त होनेवाला जितेन्द्रिय और जो सब दोषों से विमुक्तहो वह तीर्थके फलको भोगता है ११ हे राजेन्द्र क्रोधरहित सत्य शील दृढ़ व्रतवाला और प्राणियोंको अपने समान जानताहो वह तीर्थके फलको भोगता है १२ ऋषियोंने देवताओं से यथा क्रम यज्ञ कहीहैं और यथा तत्त्व मरने के पीछे वा इसीलोक में फल कहाहै १३ हे राजन्! वे यज्ञ दरिद्र से नहीं प्राप्त होसक्ते यज्ञोंमें बहुत उपकरण हैं अनेकप्रकार की सामग्रियोंका विस्तार है १४ ये राजाओं से वा धनवान् मनुष्यों से कहीं प्राप्त होसक्ती हैं एकात्मावाले साधन रहित धन हीन मनुष्य समूहों से नहीं प्राप्त होसक्ती हैं १५ हे जनोंके ईश्वर! हे पृथ्वी के स्वामी! जो दरिद्रों से प्राप्त होने में विधि समर्थ है और पुण्यकारी यज्ञोंके फलके समान है तिसको समझिये १६ हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ! यह ऋषियों को परमगुह्य है तीर्थों के जानेका पुण्य यज्ञों से

भी विशेष है १७ तीर्थ के गमन से तीन रात्र व्रतकर सोना और गऊ न देकर दरिद्र मनुष्यको १८ अग्निष्टोमादि बहुत दक्षिणावाली यज्ञोंको कर वह फल नहीं मिलता है जो तीर्थ के जानेसे मिलता है १९ मनुष्य लोकमें देवलोकके तीर्थ त्रैलोक्य में प्रसिद्ध पुष्कर को प्राप्त होकर देव देव समान होजाता है २० हे सूर्यवंश में उत्पन्न राजन्! जिन दश करोड़ सहस्र तीर्थोंका तीनों सन्ध्याओं में पुष्कर में सान्निध्य है २१ आदित्य वसु रुद्र साध्य मरुद्गण गन्धर्व और अप्सरा तहांपर प्राप्तहैं २२ हे द्विजो ! हे महाराज ! जहां देवता दैत्य और ब्रह्मर्षि तपकर बड़े पुण्य से दिव्ययोगको प्राप्त होगये २३ पुष्कर में मनसे भी जानेकी बुद्धिमान् मनुष्य इच्छाकरै तो सब पाप नाश होजाते हैं और स्वर्ग में पूजा जाताहै २४ हे महाभाग ! इस तीर्थमें नित्यही परम प्रसन्न देव और दानवोंके सम्मत ब्रह्माजी बसते हैं २५ पुष्करों में देवता और ऋषि बड़े पुण्य से मुक्त परम सिद्धिको प्राप्त हुयेहैं २६ तहांपर जो पितृ और देवोंके पूजन में रत अभिषेक करता है उसको बुद्धिमान् अश्वमेध यज्ञसे दश गुणा कहते हैं २७ पुष्करारण्य में आश्रित होकर जो एक भी ब्राह्मण को भोजन करावे तो ब्रह्माके स्थान में स्थित पूजित लोकोंको वह प्राप्त होवे २८ हे राजन् ! सन्ध्या और प्रातःकाल में जो हाथ जोड़कर पुष्करों को स्मरणकरै तिसने सब तीर्थोंमें स्पर्श किया २९ स्त्री वा पुरुषका जन्म पर्यन्त का जो पापहै वह पुष्कर में जानेही से सब नाश होजाता है ३० जैसे सब देवों के आदि मधुसूदन भगवान् हैं तैसेही तीर्थों में आदि पुष्कर कहाता है ३१ पुष्कर में नियत पवित्र होकर बारह वर्ष बसकर सब यज्ञों को प्राप्त होता है और ब्रह्मलोक को जाता है ३२ जो सौ वर्ष पूरे अग्निहोत्रकरै वा पुष्करमें एक कार्तिकी बसै तो दोनों का फल समान है ३३ पुष्कर में जानाही दुष्कर है पुष्कर में तपस्या दुष्कर है पुष्कर में दान दुष्कर है और पुष्कर में वास दुष्कर है ३४ तीन सुन्दर कँगूड़े हैं तीन झरने हैं पुष्कर आदि तीर्थ हैं तिसका कारण हम नहीं जानते हैं ३५ जो नियत और नियत भोजनकर बारह वर्ष बासकरै

वह सब पापों से छूटकर सब यज्ञों के फलको प्राप्त होवे ३६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपुष्करतीर्थमाहात्म्यवर्णनं नामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय॥

जम्बू मार्ग तुलिकाश्रम अगस्त्याश्रम कन्याश्रम ययातिपतन महाकाल भद्रवट और गाणपत्य तीर्थका वर्णन॥

वशिष्ठजी बोले कि हे राजन्! दिलीप प्रदक्षिण वर्त्तमान होकर जम्बू मार्गमें प्रवेशकरै पितृदेवर्षि पूजित जम्बू मार्गमें प्रवेश करने से १ अश्वमेध यज्ञके फलको पाता और विष्णुलोक को जाता है तहां कालमें पांच वा छः रात्रि बसकर २ दुर्गति को नहीं प्राप्त होता और अत्युत्तम सिद्धिको प्राप्त होताहै जम्बू मार्गसे उपावृत्त होकर तुलिकाश्रम को जावे ३ तो दुर्गति को नहीं प्राप्त होवे और स्वर्ग लोकमें पूजित होवे पितृ और देवतों के पूजन में रत मनुष्य अगस्त्यके स्थानमें प्राप्तहो ४ तीन रात्रि बसकर अग्निष्टोम यज्ञके फल को प्राप्त होताहै साग वा फल खाकर श्रेष्ठ कौमार को प्राप्त होवे ५ फिर कन्याश्रम को प्राप्त होकर लोकमें पूजित श्री पुष्टको जावे फिर पुण्यकारी आद्यधर्मारण्य को जावे ६ हे विप्र! जहां प्रवेशमात्रही से निश्चय पापोंसे छूटजाता है फिर प्रयत नियत भोजनकर पितृदेवों को पूजनकर ७ सब काम समृद्ध यज्ञके फलको पाताहै फिर प्रदक्षिणाकर ययातिपतन को जावे ८ तहांपर निश्चय अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होवे फिर नियत नियतही भोजनकर महा काल को जावे ९ फिर कोटि तीर्थको स्पर्शकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होवे हे धर्म जाननेवाले! तिस पीछे महादेवजीके तीर्थ स्थान को जावे १० जिसका भद्रवट नामहै और तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध है तहां महादेवजीको प्राप्तहोकर सहस्र गौवोंके फलको प्राप्तहोवे ११ हे राजन्! महादेवजीके प्रसादसे समृद्धशत्रुरहित लक्ष्मीयुक्त गाणपत्यको प्राप्तहोवे १२ फिर तीनों लोकमें प्रसिद्ध नर्मदा नदी को प्राप्त होकर पितृ और देवोंको तर्पणकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहोवे १३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवाँ अध्याय ॥

नर्मदाजी का विस्तार पूर्वक माहात्म्यवर्णन ॥

युधिष्ठिर जी बोले हे द्विजों में उत्तम नारदजी! वशिष्ठजी ने राजा दिलीप से उत्तम तीर्थ पापरूपी पर्वत के नाश करनेवाले नर्मदानामसे प्रसिद्धको कहाहै अब फिर वशिष्ठजी के कहेहुये नर्मदा जी के माहात्म्य को सुननेकी इच्छा है सो हमसे कहिये १। २ कैसे यह महापुण्यकारिणी सब ओर प्रसिद्ध नर्मदानाम से प्रसिद्ध नदी है तिस को हमसे कहिये ३ तब नारदजी बोले कि नदियों में श्रेष्ठ सब पापों के नाशकरनेवाली नर्मदा नदीहै यह स्थावर जंगम सब प्राणियों को तारती है ४ हे महाराज युधिष्ठिर! वशिष्ठजी के कहे हुये नर्मदाजी के माहात्म्य को मैंने सुना है तिस सबको तुमसे कहताहूं ५ कनखल में पुण्यकारिणी गङ्गाजी हैं कुरुक्षेत्र में सरस्वती हैं गांव वा वन में सब जगह पुण्यकारिणी नर्मदाजी हैं ६ तीन दिन में सरस्वती का जल सात दिनमें यमुना का जल पवित्र करता है गङ्गाजी का जल शीघ्रही पवित्र करताहै और नर्मदाजी का जल दर्शनही से पवित्र करताहै ७ कलिंग देशके पश्चिम आधेमें अमरकण्टक पर्वतपर तीनों लोकमें पुण्यकारिणी रमणीय मनोरम नर्मदा जीहैं ८ देवता असुर गन्धर्व तपस्वी ऋषि तपकर परम सिद्धिको प्राप्तहुये हैं ९ तहाँ नियम में स्थित जितेन्द्रिय मनुष्य स्नानकर एक रात्रि बसकर सौ पीढ़ियों को तारदेता है १० जनेश्वर में मनुष्य स्नानकर यथाविधि पिण्डदेवे तो तिसके पितर प्रलय पर्यन्त तृप्त रहते हैं ११ पर्वतके चारों ओर रुद्र कोटि प्रतिष्ठित है तहाँ जो मनुष्य स्नानकर चन्दन और माला चढ़ाता है १२ तिसके ऊपर सब रुद्र कोटि निस्सन्देह प्रसन्न होजाते हैं पश्चिम के अन्त पर्वत में आपही महेश्वर देवहैं १३ तहाँ स्नानकर पवित्र होकर ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय विधिदृष्ट कर्मसे श्राद्धकरै १४ और तिल जल से तहाँहीं पितृ देवताओं को तर्पणकरै तो सातपीढ़ी तिसके स्वर्ग में रहें १५ और करनेवाला साठ सहस्रवर्ष अप्सराओं समेत दिव्य

स्त्रियों से युक्त सुन्दर चन्दन लगाये सुन्दर गहनों से भूषित स्वर्ग लोकमें रहे फिर स्वर्ग से भ्रष्ट होकर सुन्दर कुलमें उत्पन्नहोवे १६। १७ धनवान् दानी और धर्मात्मा होवे और फिर तिसतीर्थ को स्मरणकर तहाँ गमनकरै १८ तो सौ पीढ़ियों को तारकर शिवलोकको जावे उत्तम नदी सौ योजनकी सुनी है १९ और दो योजनकी चौड़ीहै साठसहस्र तीर्थ और साठकरोड़ तीर्थ २० पर्वतके चारोंओर अमर कण्टकमें स्थितहैं ब्रह्मचारी पवित्र होकर क्रोधरहित जितेन्द्रिय २१ सब हिंसाओं से निवृत्त और सब प्राणियों के कल्याण में रत और अच्छे आचारयुक्त होकर क्षेत्रपालोंको जावे २२ हे राजन् पाण्डव युधिष्ठिर! तिसके पुण्यफलको एकाग्रचित्त होकर मुझसे सुनिये सौ सहस्र वर्ष स्वर्ग में आनन्द करै २३ अप्सराओं के समूहों से युक्त दिव्यस्त्रियोंसे सेवित देवलोकमें दिव्यचन्दन लगाकर सुन्दर गहनों से भूषित होकर २४ क्रीड़ाकरै और देवताओंसमेत आनन्दकरै फिर स्वर्ग से भ्रष्ट होकर वीर्यवान् राजा होवे २५ और अनेकप्रकार के रत्नों से विभूषित स्थानको प्राप्त होवे स्थान में दिव्यमणि जड़े हुये हीरा और मूंगाओं से भूषित खम्भेहों २६ चित्रकारी सहित दिव्य दासी और दास युक्तहों मतवारे हाथियों के शब्द और घोड़ों के शब्दों से २७ इन्द्रके स्थान की नाईं तिसका द्वार क्षोभयुक्तहो राज राजेश्वर श्रीमान् सब स्त्रियों का प्यारा २८ क्रीड़ा भोगयुक्त सब रोगों से हीन तिस स्थान में बसकर सौ वर्ष जीवे २९ जो अमरकण्टक में मरताहै तिसके भी इसी प्रकारका भोग होताहै अग्निके प्रवेश जल और विना भोजनके भी कष्ट नहीं पावे पर्वत और आकाश में जो कूदता है वह मनुष्य मनुष्यों का स्वामी होताहै ३०। ३१ तीन सहस्र कन्या एक वा और तिसके दूसरे स्थान में स्थित हों और प्रेषणको मांगें ३२ दिव्यभोगसे युक्त नाश रहित कालतक वह मनुष्य क्रीड़ाकरै समुद्र पर्यन्त पृथिवी में ऐसा नहीं होता ३३ जैसा अमर कण्टक पर्वत में होताहै पर्वतके पश्चिम में करोड़ तीर्थ जानने चाहिये ३४ तीनों लोकों में प्रसिद्ध जालेश्वर नाम रुद्रहैं तिनके पिण्ड देने और सन्ध्योपासन कर्मसे ३५ पितृ दश वर्षतक

तृप्त रहते हैं नर्मदा के दक्षिण में कपिला नाम महानदी है ३६ सरल और अर्जुन वृक्षों से आच्छादित समीपही स्थितहै पुण्यकारिणी महाभागा तीनों लोकमें प्रसिद्धहै ३७ हे राजन् युधिष्ठिर! तहां पर सौकरोड़ तीर्थ हैं यह पुराणमें सुनाहै सब कोटि गुणा होताहै ३८ तिसके किनारे जे वृक्ष कालके विपर्यय से गिरते हैं ते नर्मदाके जल से संयुक्त होकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होते हैं ३९ हे महाभाग! दूसरी शुभ विशल्यकरणा है तिसके किनारे मनुष्य स्नानकर क्षण मात्र में विशल्य होजाताहै ४० तहां सब देव समूह किन्नर बड़े सर्पों समेत यक्ष राक्षस गन्धर्व तपस्वी ऋषि ४१ तिस अमरकण्टक पर्वत में सब आते हैं तिन सब तपस्वी मुनियों से मिलकर ४२ पुण्यकारिणी नर्मदा संश्रित हुई और विशल्यानामनामही से महाभागा सब पापों के नाश करनेवाली उत्पन्न हुई ४३ हे राजन्! तहां मनुष्य स्नानकर ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय होकर एक रात्रि बसकर सौ पीढ़ियों को तार देताहै ४४ कपिला और विशल्याको ईश्वरने लोकों के हित की कामनासे पुराणमें कहा है यह हमने सुनाहै ४५ तहां स्नानकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त होताहै और तिस तीर्थमें जो अनशन व्रत करताहै ४६ वह सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर इन्द्र लोकको जाताहै नर्मदामें पुराणमें जो मैंने सुनाहै ४७ तहां तहां स्नानकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै जे उत्तर किनारे बसते हैं वे इन्द्र लोकमें बसतेहैं ४८ हे युधिष्ठिर! सरस्वती गङ्गा और नर्मदामें दान और स्नान समानहैं जैसे मुझसे महादेवजीने कहाहै ४९ जो अमर कण्टक पर्वतमें प्राणोंको छोड़ताहै वह सौ करोड़ वर्ष इन्द्रलोकमें रहताहै ५० नर्मदा का जल पुण्यकारी फेना और लहरियों से अलंकृत पवित्र और शिर से वन्दना करने के योग्यहै सब पापों से मनुष्य छूटजाताहै ५१ नर्मदा सब पुण्य करनेवाली ब्रह्महत्याके नाश करनेवाली है मनुष्य एक दिन रात्रि के बसने से ब्रह्म हत्या से छूटजाता है ५२ इसप्रकार पुण्यकारिणी रमणीय नर्मदाहै यह महानदी तीनों लोकोंको पवित्र करती है ५३ महापुण्यकारी वटेश्वर और तपोवन गंगाद्वारमें इन सब स्थानों में

जे अर्दित और व्रत करते हैं उनसे दशगुणा पुण्य नर्मदाके संगममें सुना है ५४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

बाणासुर के त्रिपुरसे व्याकुल देवों का शिवजी की स्तुति करना और शिव जी का उनको समझाकर नारद मुनिको बाणासुर के पास भेजना ॥

नारदजी बोले कि हे पाण्डव युधिष्ठिर ! नर्मदानदी श्रेष्ठ पुण्य कारिणी तीनों में अत्यन्त पुण्ययुक्त महाभाग धर्म्म की कांक्षा करने वालों से विभक्तहै यज्ञोपवीत मात्रही त्रिभक्त हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ ! तिनमें स्नानकर सब पापों से छूटजाताहै १ । २ हे पाण्डु के पुत्र ! जलेश्वर जो तीर्थ तीनों लोकमें प्रसिद्ध है तिसकी उत्पत्ति कहताहूं सुनिये ३ पूर्वसमयमें सब मुनि समूह और इन्द्र समेत सब देव समूह महात्मा देवदेव महेश्वरजीकी स्तुति करतेभये ४ और स्तुति करतेहुये जहां महेश्वर देवहैं तहां प्राप्त हुये और इन्द्र समेत देव समूह देवेशसे कहते भये कि हे प्रभो ! हे विरूपाक्ष शिवजी ! भयसे उद्विग्न हमलोगों की रक्षा कीजिये ५ तब महादेवजी बोले कि हे मुनि श्रेष्ठो ! तुमलोगों का अच्छा आना हुआ किस लिये यहां पर आयेहो क्या दुःख कौन संताप और कहां से भय प्राप्त हुआ है ६ हे महाभागो ! कहो यह हम जानने की इच्छा करते हैं जब रुद्रजी ने इसप्रकार कहा तो ऋषि कहतेभये ७ कि निश्चय घोर महावीर्य-वान् दानव बलसे दर्पित बाण नाम प्रसिद्ध है जिसके त्रिपुर पुरहैं ८ वे पुर दिव्यहैं आकाशमें बसते और तिसके तेजसे घूमते हैं हे शिव जी ! तिससे डरहुये आपकी शरण में प्राप्तहैं ९ हे देवदेवेश ! बड़े दुःखसे रक्षा कीजिये आपही श्रेष्ठ गति हैं इसप्रकार सब को प्रसन्न करनेको योग्यहैं १० हे शङ्कर ! हे प्रभो ! जिससे देवता अत्यन्तप्रसन्न सुखको प्राप्त हों और श्रेष्ठ निर्वृत्ति को प्राप्तहों वह करने के योग्यहो ११ तब महादेवजी बोले कि यह सब करेंगे क्लेशमतकरो थोड़ेही काल में तुमलोगों को सुख युक्त करेंगे १२ हे युधिष्ठिर तिन सब को

समझाकर नर्मदाके किनारे स्थित महादेवजी त्रिपुरके मारने का चिन्तना करतेभये १३ कि कैसे किसप्रकार से मुझसे त्रिपुर मारने के योग्य है इसप्रकार महादेवजी चिन्तनाकर तिसी समयमें नारद जी को स्मरण करतेभये तो स्मरणही से नारदजी उपस्थित होजाते भये १४ और बोले कि हे देव महादेवजी ! कहिये किसलिये मुझको स्मरण कियाहै क्या कार्य हमको करना चाहिये वह मुझसे कहिये १५ तब महादेवजी बोले कि हे नारदजी ! तहां जाइये जहां दानवेन्द्र बाण का त्रिपुरपुर है शीघ्रही जाइये यह कीजिये १६ स्वामी देवताओं की दीप्तिवाले स्त्रियां अप्सराओं के समानहैं तिनके तेजसे त्रिपुर आकाशमें घूमताहै १७ हे विप्रेन्द्र ! तहां जाकर अन्य सलाह को प्रेरणा कीजिये महादेवजीके वचन सुनकर अत्यन्त पराक्रमी मुनि १८ स्त्रियों के हृदय नाशने के लिये तिसपुरमें प्रवेशकरतेभये जो कि शोभा युक्त दिव्य अनेकप्रकार के रत्नों से शोभित १९ सौ योजन के लम्बे दो सौ योजनके चौड़े हैं फिर तहांपर बलसे दर्पित बाणासुर को देखतेभये २० जोकि माला कुण्डल केयूर और मुकुट से विराजितहार और रत्नों से युक्त चन्द्रके समान कान्तिसे विभूषितहै २१ तिसकी स्त्रियां रत्नों से युक्त मनुष्य सुवर्ण से मण्डितहैं दानवेन्द्र महाबली नारदजी को देखकर उठकर २२ बोला कि हे द्विजश्रेष्ठ देवर्षि ! आप इससमयमें हमारे स्थानमें प्राप्त हुये हैं अर्घ पाद्य न्याय समेत कराइये २३ हे विप्र ! बहुत कालमें आयेहो इस आसन पर बैठिये इसप्रकार उपस्थित नारदजी की पूजा करतेभये तब बाणकी स्त्री महादेवी अनौपम्या नामवाली २४ बोली कि हे भगवन् ! मनुष्य लोकमें देवता किस व्रत नियम दान अथवा तपस्या से प्रसन्न होते हैं २५ तब नारदजी बोले कि जो वेदके पारगामी ब्राह्मणको तिलधेनु देताहै उसकी सागर समेत नवद्वीपवाली पृथ्वी दीहुई होजाती है २६ और सूर्य करोड़के समान प्रकाशित सब कामना देनेवाले विमानों से नाशरहित बहुत काल तक राज्य करता हुआ आनन्द करै २७ आँवरा कैथा केलेका वन कदम्ब चम्पक अशोक और अनेकप्रकार के वृक्ष २८ अष्टमी चतुर्थी दोनों द्वादशी

संक्रांति विषुवसंज्ञक संक्रांति दिन छिद्रमुख २९ ये सब पुण्यकारी हैं जो स्त्रियां इनमें व्रत करती हैं तिन धर्मयुक्तों का स्वर्ग में निस्सं-देह वास होताहै ३० कलिकाल से निर्मुक्त सब पापसेहीन व्रतमें रत स्त्रियां और तपस्वी नहीं प्राप्त होते हैं ३१ हे अच्छे कटिवाली! ऐसा सुनकर यथेष्ट करने को योग्यहौ तब नारदजी के वचन सुनकर रानी बोली ३२ कि हे विप्रेन्द्र! हे द्विजश्रेष्ठ! प्रसन्न होवो जो वा-ञ्छित हो वह दान ग्रहणकरो सोना मणि रत्न कपड़े और गहने और जो कुछ दुर्लभहो वह आपको मैं दूंगी ग्रहण कीजिये हरि और शिवजी प्रसन्नहों ३३।३४ तब नारदजी बोले कि हे भद्रे! और को दीजिये जो ब्राह्मण जीविका से क्षीणहो हम शील युक्तहैं और भक्तिही करते हैं ३५ हे राजन्! इसप्रकार तिन सब को मन हर वा उपदेशदे फिर नारदजी अपने स्थान को जाते भये ३६ और उन स्त्रियों का मन खिंच गया अन्य जगह मन होगया और महात्मा बाणासुर के पुरमें छिद्र उत्पन्न होगया ३७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

शिवजीका अत्यन्त प्रचण्ड अग्निकर त्रिपुरको जलाना और बाणासुर को वर देना और अमरकण्टक पर्वत का माहात्म्य वर्णन॥

नारदजीबोले कि हे युधिष्ठिर! जो हमसे पूंछतेहो वह समझकर सुनो इस अन्तरमें रुद्रजी नर्मदाजी के किनारे स्थितहुये १ हरेश्वर नाम तीनोंलोकमें प्रसिद्ध स्थानमें महादेवजी त्रैपुरके मारने की चि-न्तना करतेभये २ मन्दराचलको धनुष वासुकि को रस्सी वैशाख को स्थान और विष्णुजीको उत्तम बाणकर ३ आगे अग्नि स्थापित कर मुखमें वायु अर्पित करतेभये चारोंवेद घोड़े हुये सब देवमय रथ हुआ ४ पहिये में प्राप्त अश्विनीकुमार देव भये चक्रधारी भगवान् आपही अक्ष हुये इन्द्र आपही धनुष के अन्तमें हुये बाणमें कुबेरजी स्थित भये ५ यमराज दहिने हाथ में घोर काल बायें हाथ में हुये लोकमें प्रसिद्ध गन्धर्वोंको पहियों के आरों में लगाया ६ श्रेष्ठ रथमें

प्रजापति भये और ब्रह्माजी सारथिहुये इसप्रकार देवेशजी सर्वदेव-मयरथकर ७ स्थाणुभूत होकर सहस्र वर्षतक स्थितरहे जब तीनों पुर मिलकर आकाशमें गये ८ तब तीन बाणसे त्रैपुरको विदारण करतेभये जब रुद्रजीने त्रिपुरके बाण मारा ९ तो स्त्रियां तेजसे भ्रष्ट होगईं तिनका बल नाश होगया और तिस पुरमें सहस्रों उत्पात प्रकट हुये १० त्रिपुरके नाश के लिये काल रूप शिवजी तिससमय में हुये काष्ठमय रूप हँसते भये ११ और चित्रकर्म से पलकें भी खोलते मूंदते भये स्वप्नमें वहांके मनुष्य आत्माको लाल कपड़े से विभूषित देखते भये और विपरीतही इन उत्पातों को देखते भये १२।१३ तिनके बल और बुद्धि शिवजी के क्रोधसे नाशहोगये युगके अन्तके समान संवर्तक नाम वायु महान् चलनेलगा १४ श्रेष्ठ अग्नि उत्तम अंगों में बाधा देनेलगा वृक्ष तहांके जलनेलगे कँगूरेगिर-नेलगे १५ सब व्याकुल होगये हाहाकार होगया सब अचेत होगये सब टूटे हुये वन शीघ्रही जलतेभये १६ तिससे सब दीपित होगया शिखायुक्त बाणों से सब जलनेलगा वृक्ष बगीचों के खण्ड अनेक प्रकारके स्थान जलतेभये १७ यह प्रकाशित अग्नि दशदिशाओं में प्रवृत्त हुआ तब विभागसे दशोंदिशा शिलाओंको छोड़ती भईं १८ अत्यन्त घोर सहस्रों शिखायुक्त अग्नियों से जलनेलगीं सब टेसू के सदृश जलता हुआ पुर दिखाई देनेलगा १९ घरसे और घर में धुआंके मारे जाने को राक्षस समर्थ न हुये महादेवजी के कोपरूपी अग्निसे जलेहुये अत्यन्त दुःखित रोनेलगे २० सब दिशाओं में प्रदीप्त त्रिपुर पुर जलनेलगा महलों के शिखरों के अग्र सहस्रों गि-रतेभये २१ अनेकप्रकार के रत्नों से विचित्र अनेकप्रकारके विमान और रम्य स्थान प्रज्वलित अग्निसे जलतेभये २२ वृक्षों के खण्डों में जनों के स्थानमें बाधादेते भये सब देवताओंके स्थानोंको जलाते भये २३ अग्निसे स्पर्श हुये राक्षस कष्ट पातेभये और अनेकप्रकार के स्वरों से रोतेभये तहां पर अंगारों की राशि गिरिकूट के सदृश दिखाई पड़ी २४ तब देवदेवेशकी स्तुति करनेलगे कि हे प्रभो ! हमारी रक्षाकरो अग्निसे अत्यन्त पीड़ित परस्पर लपटकर २५

सैकड़ों सहस्रों दानव जलते भये हंस और चकई चकवों से युक्त कमल समेत कमलिनी भी जलती भईं २६ पुरके वन और बावलियां अग्निसे जलनेलगीं जो बावलियाँ म्लानतारहित कमलों से आच्छादित सैकड़ों योजनों में विस्तीर्ण हैं २७ तहां पर रत्नों से भूषित अग्निसे जलेहुये गिरिकूट के सदृश महल ऐसे गिरतेभये जैसे तोय रहित मेघ गिरतेहैं २८ महादेवजी के कोपसे प्रेरित दया रहित अग्नि सहित स्त्री बालक वृद्ध गऊ पक्षी और घोड़ोंको जलाताभया २९ स्त्रियों समेत बहुत जन सोतेही रहगये वे पुत्र को अत्यन्त लपटकर शिवजी से जलादियेगये ३० फिर प्रज्वलित तिस पुरमें अप्सराओं के समान स्त्रियाँ अग्निकी ज्वालासे हत पृथ्वी में गिरती भईं ३१ कोई सुन्दर नेत्रवाली स्त्री मोतियों की पंक्तियों से विभूषित धुयें से व्याकुल अग्निकी शिखासे पीड़ित जब चेतयुक्त हुई ३२ तब पुत्रकी चिन्तनाकर पृथ्वी में गिरपड़ी कोई सुवर्ण के वर्णके सदृश नीलवर्णके रत्नोंसे विभूषित ३३ धुयेंसे व्याकुल पृथ्वी में गिरपड़ी और स्त्री बालकोंका हाथ पकड़कर बालकों समेत जल गई ३४ फिर अग्निने और दिव्यरूप मद से विमोहित स्त्री देखी तब वह स्त्री शिरसे हाथ जोड़कर अग्नि से प्रार्थना करती भई ३५ कि जो तुम अपकारी पुरुषों में वैरकी इच्छा करतेहो तो घररूपी पंजर की कोकिलारूप स्त्रियां क्या अपराध करती हैं ३६ हे पाप! निर्दय निर्लज्ज स्त्रीके ऊपर कौन तुम्हारा कोपहै न निपुणता न लज्जा न सत्य है पवित्रता से हीनहो ३७ अनेकरूप वर्णों से युक्त उपलभ्य स्त्रियां हैं क्या तुमने नहीं सुनाहै कि संसारमें सब स्त्रियां मारने योग्य नहीं हैं ३८ हे अग्निजी! किन्तु तुममें यही गुण हैं कि स्त्रियोंको पीड़ाहो स्त्रियोंके ऊपर करुणा दया और दाक्षिण्य नहीं है ३९ म्लेच्छ भी स्त्रीको देखकर दया करते हैं तुम म्लेच्छों को भी कष्ट दुर्निवार्य और अचेतनहो ४० ये गुण नाश करने को हैं हे दुराचार! हम स्त्रियोंको क्या मारडालोगे ४१ हे दुष्ट! निर्घृण निर्लज्ज अग्नि मन्दभाग्यक दुराचार निर्दय तुम निराशहो और बालकों को भी जलातेहो ४२ इसप्रकार बहुत स्वर से बककर विलाप करती

भई और अत्यन्त क्रोधित बालकके शोकसे मोहित स्त्रियां रोतीभई कि दयाहीन अत्यन्त क्रुद्ध अग्नि सब शत्रुकी नाईं जलाता है तलैया में जलमें कुँवों में अग्नि है ४३ । ४४ हे म्लेच्छ ! हमको जलाकर तुम कौन गतिको प्राप्त होगे इसप्रकार तिन स्त्रियोंके प्रलाप करतेही अग्नि बोला ४५ कि अपने वश हम नहीं हैं विनाश करेंगे हम आज्ञाके करनेवाले हैं दया करनेवाले नहीं हैं ४६ यहांपर क्रोधयुक्त इच्छापूर्वक विचरते हैं तदनन्तर महातेजस्वी बाणासुर त्रिपुर को जलता हुआ देखकर ४७ आसन में स्थित होकर इसप्रकार बोला कि हम अल्प बलवाले दुराचारी देवोंसे नाश कियेगये हैं महादेव जीके निवेदित हैं ४८ महात्मा शंकरजीने विना परीक्षाकर हमको जलाया है महादेवजी को छोड़कर और शत्रु हमको मारने को नहीं है ४९ फिर उठकर त्रिभुवनके ईश्वरको लिंग बनाकर शिरसे प्रणा-मकर मित्रोंको त्यागकर आपही पुरके द्वारसे निकला ५० और अ-त्यन्त विचित्र रत्न अनेक प्रकारकी स्त्रियों को भी त्यागकर शिरसे लिंगको ग्रहणकर नगर मण्डल में स्थापित कर देताभया ५१ और देवदेवेश त्रैलोक्यके स्वामी शिवजीकी स्तुति करता भया कि हे हर! हे शंकर ! आपसे हम जलाये गये जो हम वधके योग्यहैं ५२ तो हे महादेवजी! आपके प्रसाद से हमारा लिंग नाशको न प्राप्तहो सदैव परम भक्तिसे लिंग पूजित है ५३ यद्यपि आपसे हम मारने के योग्यहैं तथापि हमारा लिंग न नाशहो यह प्राप्त होनेके योग्य हैं हम आपके चरणों को ग्रहण करते हैं ५४ जन्म जन्ममें आपके चरणों में निरत हैं फिर तोटकछन्द से परमेश्वर देव की स्तुति करने लगा ५५ कि हे शिव ! हे शंकर ! सब करनेवाले आपके नमस्कार हैं हे भव ! हे भीम ! हे महेश शिवजी ! आपके नमस्कार हैं हे काम की देहके नाश करनेवाले ! हे त्रिपुरके अन्त करनेवाले ! हे अंधकके चूर्ण करनेवाले ! ५६ हे स्त्रियोंके प्रिय ! हे कामके नाश करनेवाले ! आपके नमस्कारहैं सुर सिद्धगणों से नमस्कार कियेगये आपके न-मस्कार हैं घोड़े वानर सिंह और हाथियोंके समान मुखवाले अत्य-न्त छोटे और अत्यन्त बड़े मुखवाले गण ५७ असुरों से प्राप्त होने

को नहीं समर्थहो और बहुत सैकड़ों शरीरों से व्यथा युक्त नहींहो हे भगवन्! बहुत भक्तिमान् से प्रणतहो हे चलायमान चन्द्रमा की कला धारण करनेवाले! हे देव! आपके नमस्कार हैं ५८ सहित पुत्र स्त्री समूह धनोंसे निरन्तर जय दीजिये आपका स्मरण करते हैं और बहुत सैकड़ों शरीरों से व्यथा युक्तहूं और इस समय में महानरक की गतिको प्राप्तहूं ५९ जो हमारी पापगतिको नहीं निवृत्त करता विशुद्ध पवित्र कर्मको नहीं त्यागता दिशाओं में घूम घूम कर दया करता है यह भ्रम कुबुद्धि को निवारण करता है ६० जो मनुष्य दिव्य तोटक छन्दवाले स्तोत्र को प्रयत पवित्र मन होकर पढ़ता है तिसको यह स्तोत्र इसप्रकार वर देनेवाला होताहै जैसे बाणासुर को महादेवजी वरदाता हुये हैं ६१ इस महादिव्य स्तोत्र को सुनकर आपही देव महेश्वरजी तिससमय में तिसके ऊपर प्रसन्न होजाते हैं ६२ हे वत्स! हे दानव! तुम न डरो पुत्र पौत्र सपत्नियां स्त्री और भृत्यजनों समेत सुवर्णही में स्थितहो ६३ हे बाणासुर! आजसे लेकर तुम देवताओं से भी अवध्य होगे फिर देवदेव ने और वरदिया ६४ कि अक्षय और अव्यय और निर्भय होकर संसार में विचरो तिस पीछे महादेवजी ने अग्निको निवारण किया ६५ और महात्माजी ने बाणासुरको तृतीय रक्षित किया तो रुद्रजी के तेजके प्रभाव से नित्यही आकाश में घूमता भया ६६ इसप्रकार महात्मा शंकरजी ने ज्वालाकी मालासे प्रदीप्त त्रिपुरको जलाया तो वह पृथ्वी में गिरपड़ा ६७ तिसके एकको त्रिपुरांतक श्रीशैल में गिराया और अमरकण्टक पर्व्वत में द्वितीयको गिराया ६८ हे राजन्! त्रिपुरके जल जानेसे रुद्रकोटि प्रतिष्ठित रही और जलते हुये तहां गिराया तिससे ज्वालेश्वर कहाया ६९ तिसकी दिव्य ज्वाला ऊपर से स्वर्गको चलीगई तब देव असुर किन्नरोंने हाहाकार शब्द किया ७० तिस बाणको रुद्रजीने उत्तम माहेश्वर पुरमें रोका इसप्रकार जो तिस अमरकण्टक पर्व्वत में जाताहै वह १०३० सहस्र करोड़ वर्ष चौदहों भुवनोंको अच्छी प्रकार भोगकर ७१। ७२ फिर पृथ्वी में प्राप्त होकर धर्मात्मा राजा होताहै और एक छत्रसे पृथ्वी में राज्य

भोगताहै इसमें सन्देह नहींहै ७३ हे महाराज! यह अमरकण्टक सब ओर पुण्यकारी है चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहण में जो अमर कण्टक पर्वतको जाताहै ७४ उसको बुद्धिमान् अश्वमेधयज्ञ से दश गुणा फल कहते हैं तहांपर महेश्वरजी को देखकर स्वर्गलोक को मनुष्य जाताहै ७५ सूर्य ग्रहण में काशीमें जो फल होताहै वह सब पुण्य अमरकण्टक पर्वत में होता है ७६ और पुण्डरीक यज्ञके फल को मनुष्य प्राप्त होताहै तिस अमरकण्टक पर्वतमें ज्वालेश्वर नामहैं ७७ तहां स्नानकर मनुष्य स्वर्गको जातेहैं और जे वहां मरते हैं तिनका फिर जन्म नहीं होताहै ज्वालेश्वर में चन्द्रमा और सूर्यके ग्रहण में भक्तिसे प्राणोंको त्याग करता है तिसका फल सुनिये अमरकण्टक पर्वत में अमर नाम वे देव होतेहैं और प्रलय पर्यन्त शिवलोकको प्राप्त होतेहैं अमरेश्वर देवके पर्वतके जलके किनारे ७८। ८० अच्छे व्रत करनेवाले करोड़ों मुख्य ऋषि तपस्या करते हैं हे राजन्! अमरकण्टक क्षेत्र चारों ओर योजनभर है ८१ विना कामना वा कामनासहित नर्मदाके शुभ जलमें स्नानकर मनुष्य पापों से छूटकर शिवलोक को जाताहै ८२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

कावेरी और नर्मदा के संगमका माहात्म्य वर्णन ॥

ऋषि बोले कि वे महात्मा महाजन युधिष्ठिर पर सब तपस्वी ऋषि नारदजी से पूछतेभये १ कि हे भगवन्! कावेरी और नर्मदाके संगममें सत्य बड़े फलको मनुष्यों के कल्याण के लिये और हमारी वृद्धि के लिये कहिये २ जे पाप करनेवाले मनुष्य सदैव पाप में रत होते हैं वे सब पापों से छूटकर परमपद को जाते हैं यह हम जानने की इच्छा करते हैं आप कहने के योग्यहो ३ तब नारदजी बोले कि युधिष्ठिर सहित सब ऋषियो सुनो कावेरी और नर्मदा के संगममें सत्य पराक्रमी कुबेरजी महा यज्ञकर इस तीर्थ को पाकर साम्राज्यसे अधिक होगये ४ और हे महाराज! सिद्धिको प्राप्त हुये वह हमारे

कहते हुये सुनिये जहां पर संसार में प्रसिद्ध नर्मदा में कावेरी का संगमहै ५ तहां स्नानकर पवित्र होकर सत्य पराक्रमी यक्षोंमें श्रेष्ठ कुबेरजी दिव्य सौवर्ष बड़ी तपस्या करते भये ६ तब महादेवजी उत्तम वरदेते भये कि हे महासत्त्व! यक्ष कुबेरजो इच्छाहो वह वर मांगो यथेष्ट कार्य जो मन में वर्तमानहो कहो ७ तब कुबेरजी बोले कि हे देवेश शिवजी! यदि प्रसन्नहौ और जो मुझको वरदिया चाहते हौ तो सब यक्षोंका स्वामी आदि करनेवाला होऊं ८ कुबेरके वचन सुनकर महेश्वर देव प्रसन्नहोकर ऐसाहीहो यह कहकर तहांहीं अन्तर्द्धानहोगये ९ तब वरपाके यक्ष शीघ्रही यक्ष कुलको गये और सब यक्षोंमें श्रेष्ठोंसे अभिषेकको पाकर राजाहोगये १० कावेरीका संगम तहां पर सब पापोंका नाशकरनेवालाहै जे मनुष्य नहीं जानते हैं वे वंचितहैं इस में सन्देह नहीं है ११ तिससे सब यत्नसे मनुष्य तहां स्नान करै कावेरी और महानदी नर्मदा महापुण्य कारिणी हैं १२ हे राजेन्द्र! तहां स्नानकर शिवजी को पूजनकरै तो अश्वमेध यज्ञके फलको पाकर रुद्रलोकमें प्राप्तहोवे १३ और जो अग्नि में प्रवेशकर जाताहै और जो भोजन नहीं करता है तिसकी अनिवर्तिका गतिहोती है जैसे मुझसे महादेवजी ने कहा है १४ साठकरोड़ साठसहस्र वर्ष श्रेष्ठ स्त्रियों से सेवितहोकर स्वर्ग में शिवजी की नाईं आनन्द करै १५ और रुद्रलोक में स्थित होकर जहां जहां जावे वहां आनन्दकरै फिर पुण्यके नाशहोनेसे परिभ्रष्ट धर्मात्मा राजाहोवे १६ जो कि भोगवान् धर्म्मशील कुल में उत्पन्न महान् होवे तहाँ जलपानकर अच्छे प्रकार चान्द्रायण के फलको प्राप्तहोवे १७ जे मनुष्यशुभजलको पीते हैं वेस्वर्गकोजाते हैं मनुष्य गंगा और यमुना के संगम में जिसफलको प्राप्तहोते हैं १८ कावेरी के संगम में स्नानकर वह फल तिसको होता है हे राजेन्द्र! इस प्रकार कावेरी का संगम महान् पुण्यकारी बड़े फलका दाता और सब पापों का नाश करनेवालाहै १९ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवाँ अध्याय ॥

पत्रेश्वर, गर्जन, मेघराव, ब्रह्मावर्त, अंगारेश्वर, कपिला, कुण्डलेश्वर, पिप्पलेश्वर, विमलेश्वर, पुष्करिणी और नर्मदानदीकामहात्म्यवर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर ! उत्तर नर्मदानदी के किनारे योजनभरका लम्बा सब पाप हरनेवाला श्रेष्ठ पत्रेश्वर नाम से प्रसिद्धतीर्थ है १ तहाँ स्नानकर मनुष्य देवताओं समेत आनन्द करताहै पांचसहस्र वर्ष कामरूप धारण कर क्रीड़ा करताहै २ फिर गर्जनकोजावे जहां मेघ उपस्थितहै और तिस तीर्थ के प्रभाव से इन्द्रजित् नाम प्राप्तहुआहै ३ तदनन्तर मेघराव तीर्थ को जावे जहाँ मेघगर्जते हैं और मेघनादगण तहाँपर श्रेष्ठ सम्पन्नताको प्राप्तहुआहै ४ फिर ब्रह्मावर्त तीर्थकोजावे तहाँपर नित्यही ब्रह्माजी स्थितरहते हैं ५ तहाँ स्नानकर ब्रह्मलोकको मनुष्यजाता है तिस पीछे नियत नियतही भोजनकर अंगारेश्वर तीर्थकोजावे ६ तो सब पापों से विशुद्धआत्मा होकर रुद्रलोकको जावे तदनन्तर उत्तम कपिला तीर्थ को जावे ७ तहां स्नानकर मनुष्य गोदान के फलको प्राप्तहोताहै फिर देवर्षिगणों से सेवित काञ्चीतीर्थ कोजावे ८ तहां स्नानकर मनुष्य गोलोकको प्राप्तहोताहै तिसपीछे उत्तम कुण्डलेश्वरकोजावे ९ तहांपर पार्वती समेत महादेवजी स्थितरहते हैं तहाँ स्नानकर देवताओं से भी अवध्यहोताहै १० तदनन्तर सब पापनाशकरनेवाले पिप्पलेश्वरकोजावे तहाँजाने से शिवलोक को प्राप्त होताहै ११ फिर निर्मल विमलेश्वरको जावे तहाँपर रम्य देवशिखा ईश्वर से निपातितहै १२ तहाँप्राणोंको त्यागकर शिवलोककोप्राप्त होताहै तदनन्तर पुष्करिणी को जावे और तहाँस्नान करै १३ तो स्नानमात्रही में मनुष्य इन्द्र के आधे आसनको प्राप्तहोताहै नदियों में श्रेष्ठ नर्मदा जी शिवजी के देहसे निकली हैं १४ और स्थावर जंगम सब प्राणियों को तारती हैं सब देवों के अतिदेव ईश्वर महात्माने १५ ऋषिसमूहों और विशेषकर हमसे कहाहै यह मुनियोंसे स्तुतिकीगई श्रेष्ठ नर्मदानदीहै १६ और लोकों के कल्याण

की कामना से शिवजी के देह से निकली हैं नित्यही सब पापों के नाश करनेवाली और सब प्राणियों से नमस्कार कीगई हैं १७ देवता गंधर्व और अप्सराओं से स्तुतिकीगई हैं पुण्यकारी जलवाली आद्य और समुद्रगामिनी के नमस्कार हैं १८ महादेवजी के देहसे निकली ऋषिगणों से नमस्कार कीगई के नमस्कार हैं धर्म से युक्त श्रेष्ठ मुखवाली देवगणों से एक वन्दित के नमस्कारहैं १९ सब पवित्र पावनके नमस्कारहैं सब संसारके अत्यन्तपूजितके नमस्कारहैं जो मनुष्य नित्यही शुद्धहोकर इस स्तोत्रको पढ़ताहै २० तो ब्राह्मण वेदको प्राप्तहोताहै क्षत्रिय विजयपाता है वैश्य लाभ को प्राप्तहोताहै और शूद्र शुभगतिको प्राप्तहोताहै २१ नित्यही स्मरण करने से अन्नकी इच्छा करनेवाला अन्नको प्राप्तहोता है महेश्वरदेव आपही नित्य नर्मदाजीको सेवन करते हैं तिससे ब्रह्महत्या के नाश करनेवाली पुण्यकारीनदी जानने योग्य हैं २२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवाँ अध्याय॥

शूलभेद, भीमेश्वर, नर्मदेश्वर, आदित्येश्वर, मल्लिकेश्वर, वरुणेश्वर, नीराजेश्वरऔर कोटितीर्थादिकों का वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! काम क्रोधसे वर्जित ब्रह्मादिक देवता और तपस्वी ऋषि नर्मदाजीको सेवनकरते हैं १ तिसमें देवका शूल पृथ्वी में गिराहुआ देखकर तिसका पुण्य महात्मा शंकरजीने कहाहै २ शूलभेद नाम करके प्रसिद्ध बड़ा पुण्यकारी तीर्थहै तहां स्नानकर सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहोवे ३ और जो तिस तीर्थ में त्रिरात्र करताहै और महादेवजी को पूजन करता है तिसका फिर जन्म नहीं होताहै ४ फिर भीमेश्वरको जावे तिस पीछे उत्तम नर्मदेश्वरको जावे फिर महापुण्यकारी आदित्येश्वरको जावे वहां घी और शहदसे मल्लिकेश्वर को पूजकर जन्मके फलको प्राप्तहोवे फिर वरुणेश्वर और उत्तमनीराजेश्वर को देखे ६ तो पञ्चायतन के दर्शन से तिसको सब तीर्थ का फल होवे तिस पीछे जहां

युद्ध साधितहुआ है तहां जावे ७ कोटि तीर्थ नाम प्रसिद्ध है जहां असुरोंने युद्धकियाहै जहां वे बलसे दर्पित दानव नाशभयेहैं ८ और मारेगये वे तिनके शिरोंको ग्रहण करतेहैं जब पहले आये तो उन्होंने देव शूलपाणि महादेवजी को स्थापित किया ९ तहांहीं कोटि का नाश हुआहै तिससे कोटीश्वर कहाये तिस तीर्थके दर्शन से देह समेत स्वर्ग को प्राप्त होवे १० तब इन्द्रने क्षुद्रभाव से वज्रकील से यंत्रित किया तबसे लेकर मनुष्योंका स्वर्ग में जाना निवारित हुआ ११ घृतसमेत नारियल देकर अन्त में प्रदक्षिणा देकर सब ओर देव को शिरमें लेकर धारणकरै तो सब कामना से पूर्ण राजा होवे १२ फिर मरकर रुद्रभाव को प्राप्त होवे यहां फिर नहीं उत्पन्न होवे और स्वर्गको जाकर तहां राज्यकर १३ मनुष्य त्रयोदशी में महादेवजीकी उपासनाकर स्नानमात्रही से तहां सब यज्ञके फलको प्राप्त होवे १४ फिर मनुष्यों के पापनाशने के लिये परमशोभन उत्तम अगस्त्येश्वर तीर्थको जावे १५ तहां स्नानकर मनुष्य ब्रह्महत्या से छूटजाता है कार्तिक महीनाके कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में १६ समाधि में स्थित जितेन्द्रियमनुष्य घी से देवको स्नान करावै तो इक्कीस पीढ़ी समेत ईश्वरके पदसे नहीं छूटताहै १७ गऊ जूता छतुरी कम्बल और ब्राह्मणोंको भोजनदेवे तो सबकोटि गुणा होवे १८ तदनन्तर अत्युत्तम रविस्तव तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य सिंहासनपर बैठताहै १९ नर्मदाजी के दक्षिण किनारे इन्द्रका प्रसिद्ध तीर्थ है तहां एक रात्रि व्रतकर स्नानकरै २० और यथा न्याय स्नानकर भगवान् को पूजनकरै तिसको सहस्र गऊके देनेका फल होताहै और विष्णुलोक को जाताहै २१ तदनन्तर मनुष्यों के सब पाप नाशनेवाले ऋषि तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होताहै २२ तहांहीं परम शोभन नारदजीका तीर्थहै मनुष्य स्नानकर सहस्रगऊ के फलको प्राप्त होताहै २३ फिर पूर्वकालके ब्रह्माके निर्मित देवतीर्थ को जावै तहां स्नानकर मनुष्य ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै २४ तदनन्तर पूर्वकालके देवों के स्थापित अमरकण्टक तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके फलको प्राप्त होताहै २५ फिर उत्तम

वामनेश्वर को जावे तहां वामन जी को देखकर ब्रह्महत्या से छूटजाता है २६ तदनन्तर पुरुष निश्चय ईशानेश ऋषि तीर्थको जावे और बटेश्वरको वहां देखकर जन्मके फलको प्राप्त होवे २७ फिर सब व्याधिके नाश करनेवाले भीमेश्वरको जावे तहां स्नानकर मनुष्य सब दुःखसे छूटजाता है २८ तिस पीछे उत्तम वारुणेश्वर को जावे तहां स्नानकर मनुष्य सब दुःखसे छूटजाता है २९ फिर सोमतीर्थ को जावे वहां उत्तम चन्द्रमा को देखकर तहां स्नानकर परम भक्ति से युक्त मनुष्य ३० तिसी क्षणसे दिव्य देहमें स्थित होकर बहुत कालतक महादेवजी की नाईं आनन्दकरै और साठ सहस्र वर्ष शिव लोकमें प्राप्तरहे ३१ फिर उत्तम पिंगलेश्वर को जावे वहां एक दिन रात्रिके व्रतसे त्रिरात्रके फलको प्राप्त होवे ३२ तिस तीर्थमें जो क-पिला गऊ देताहै तो जितने गऊ और बछड़े के रोम होतेहैं ३३ तितने सहस्र वर्ष शिवलोक में प्राप्त होताहै और जो तहांपर प्राणों को छोड़ता है ३४ तो जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहते हैं तबतक नाशरहित कालतक आनन्दित रहतेहैं नर्मदाजी केकिनारे जो मनु-ष्य स्थित रहते हैं ३५ वे मरकर पुण्यात्माओं की नाईं स्वर्गको प्राप्त होतेहैं फिर सुरभिकेश्वर, नारक और कोटिकेश्वर को जावे ३६ तहां गंगावतरण दिनमें निस्सन्देह पुण्य होताहै तदनन्तर नन्दि तीर्थको जाकर तहां स्नानकरै ३७ तिसके ऊपर नंदीशजी प्रसन्न होते हैं और चन्द्रलोक में प्राप्त होताहै फिर तपोवन द्वीपेश्वर व्यास तीर्थको जावे ३८ तहां पूर्वकाल में व्याससे डरी हुई और हुंकार करने से निवर्तित दक्षिण से चलीगई ३९ तिस तीर्थमें जो प्रकाशित प्रदक्षिणा करताहै तिसके ऊपर व्यासजी प्रसन्न होतेहैं और वाञ्छित फलको प्राप्त होताहै ४० जो वेदीसमेत देवको सूत्र से आच्छादित करता है तो जैसे शिवजी तैसेही स्नानकर वह मनुष्य नाशरहित कालतक क्रीड़ा करता है ३१ फिर उत्तम एरंडी तीर्थ को जावे वहां संगम में म-नुष्य सब पापों से छूटजाता है ४२ एरंडी पापके नाश करनेवाली तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध है अथवा कुवार महीनेकी शुक्लपक्षकी अष्टमी में ४३ व्रतमें परायण मनुष्य पवित्रहोकर स्नानकर ४४ एक ब्राह्मण

को भोजन करावै तो करोड़ ब्राह्मण भोजन का फल होजाता है एरंडी के संगम में भक्तिभाव से युक्त ४५ मिट्टीको शिरमें लगाकर नर्मदाके जलसे मिलेहुये जलमें स्नानकर सब पापोंसे छूटजाता है ४६ और जो तिस तीर्थमें प्रदक्षिणा करता है तिसने सातों द्वीपकी पृथ्वी प्रदक्षिणा करडाली ४७ फिर सुवर्ण तिलक तीर्थमें स्नानकर सोना देकर सोनेके विमान से शिवलोक में जाताहै ४८ फिर काल पाकर स्वर्ग से च्युत होकर वीर्यवान् राजा होताहै तदनन्तर इक्षु नदीके संगम में जावे ४९ जोकि त्रैलोक्य में प्रसिद्ध दिव्य है तहां पर शिवजी रहते हैं वहां स्नानकर मनुष्य गणेशजी के लोक को प्राप्त होताहै ५० फिर सब पापके नाश करनेवाले स्कन्द तीर्थ को जावे तो स्नान मात्रही से जन्म पर्यन्त के पाप नाश होजाते हैं ५१ तिस पीछे आंगिरस तीर्थको जावे और तहां स्नानकरै तो तिसको सहस्र गऊ देनेका फल होताहै और शिवलोक में प्राप्त होताहै ५२ फिर सब पापके नाश करनेवाले लांगल तीर्थको जावे तहां जाकर स्नानकरै तो ५३ सात जन्मके कियेहुये पापोंसे छूटजाता है इसमें संशय नहींहै तिस पीछे सर्वतीर्थ अत्युत्तम वटेश्वरको जावे ५४ तहां स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके देनेके फलको प्राप्त होताहै तदनन्तर सब पापके नाश करनेवाले श्रेष्ठ संगमेश्वर तीर्थ को जावे ५५ तहां स्नानकर मनुष्य निस्सन्देह राज्यको प्राप्त होताहै फिर भद्र तीर्थको प्राप्त होकर जो मनुष्य दान देताहै ५६ तिसके तीर्थके प्रभावसे सब कोटि गुणाहोताहै कोईस्त्री तहां स्नानकरै ५७ तो पार्वतीजीके समान वह निस्सन्देह इन्द्रको प्राप्त होवे फिर अंगारेश्वरको जावे और तहां स्नानकरै ५८ तो स्नान मात्रहीसे मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होताहै अंगारकी चौथि में तहां स्नानकरै ५९ तो भगवान् के कियेहुये शासनवाला मनुष्य नाशरहित कालतक आनन्दकरै और अयोनि संगम में स्नानकर योनिके स्थानको नहीं देखता है ६० फिर पाण्डवेश्वरक को जाकर तहां स्नान करै तो देवता असुरों से अवध्य होकर नाशरहितकालतक आनन्द करै ६१ फिर क्रीड़ाभोग से युक्त होकर विष्णुलोकको जाकर तहां महाभोगों को भोगकर मृत्यु

लोक में राजा होता है ६२ तिसपीछे कंबोतिकेश्वर को जाकर तहां स्नान करै उत्तरायण सूर्यांको प्राप्तहोकर जो इच्छाकरै तिसको वह प्राप्तहोवे ६३ फिर चन्द्रभागा को जाकर तहां स्नान करै तो स्नान मात्रही से मनुष्य चन्द्रलोक में प्राप्त होता है ६४ तदनन्तर इन्द्र से पूजित देवों से नमस्कार किये हुये इन्द्र के प्रसिद्ध तीर्थको जावे ६५ तहां स्नानकर मनुष्य सोनादान दे अथवा नीलवर्णकी दीप्ति- वाले बैलको जो छोड़े ६६ तो बैल और बछियों के जितनेरोम होते हैं तितने सहस्रवर्ष मनुष्य शिवपुर में बसता है ६७ फिर स्वर्ग से परिभ्रष्ट होकर वीर्यवान् राजा होता है और श्वेतवर्ण के सहस्रों घोड़ोंका ६८ मनुष्य लोकमें तिस तीर्थके प्रभाव से स्वामी होताहै तदनन्तर अत्युत्तम ब्रह्मावर्त को जावे ६९ तहां स्नानकर मनुष्य पितृ देवताओं को तर्प्पण करै और एक रात्रि बसकर विधिपूर्व्वक पिण्ड देवे ७० तो जैसे कन्याके सूर्य में नाशरहित इकट्ठा कियाहुआ पुण्य होताहै तैसाही पुण्य होवे फिर उत्तम कपिलातीर्थ को जावे ७१ तहां स्नानकर जो मनुष्य कपिलागऊ देता है वह सम्पूर्ण पृथिवी को देकर जो फल होताहै तिस फलको प्राप्त होताहै ७२ नर्मदेश्वर से श्रेष्ठतीर्थ न हुआ है न होगा तहां स्नान कर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ७३ तहां सब में प्राप्त पृथ्वी में सब लक्षण से पूर्ण सब व्याधि से वर्जित राजा होता है ७४ नर्मदा के उत्तर किनारे परमशोभन रम्य ईश्वर से भावित आदि- त्यायतनतीर्थ है ७५ तहां स्नानकर शक्ति से दान देवे तो तिस तीर्थ के प्रभाव से दान नाशरहित होताहै ७६ जो दरिद्री रोगयुक्त और पाप कर्म करनेवाले हैं वे सब पापों से छूटकर सूर्य लोकको जाते हैं ७७ माघमास के शुक्ल पक्षकी सप्तमी में जो जितेन्द्रिय अन्न रहित होकर स्थानमें बसताहै ७८ वह रोग युक्त कालमें अन्धा और बहरा नहीं होताहै सुभग रूप युक्त और स्त्रियों को प्यारा होताहै ७९ यह मार्कण्डेय मुनिसे भाषित महा पुण्यकारी तीर्थ है जे इस तीर्थमें नहीं जाते हैं वे निस्संदेहवंचितहैं ८० तदनन्तर मासेश्वर को जावे और तहां स्नान करै तो स्नान करनेही से मनुष्य स्वर्गलोकको प्राप्त

होवे ८१ और सब लोकमें स्थित होकर जब तक चौदहों इन्द्रहैं तब तक आनन्द करै फिर समीपसे नागेश्वर तपोवनमें स्थित होकर ८२ तहां स्नानकर पवित्र होकर एकाग्र चित्त होवे तो बहुत नाग कन्याओं से नाश रहित काल तक क्रीड़ा करै ८३ फिर कुबेर भवनको जावे जहां कुबेर स्थित हैं कालेश्वर श्रेष्ठ तीर्थहै जहाँ कुबेरजी प्रसन्न किये गये हैं ८४ जहां स्नानकर सब सम्पदाओं को प्राप्त होता है फिर पश्चिममें उत्तम मरुतालयको जावे ८५ और तहां स्नानकर पवित्र होकर एकाग्र चित्त हो बुद्धिमान् सोना और शक्तिके अनुसार अन्न देवे ८६ तो पुष्पक विमान पर चढ़कर वायु लोकको जावे फिर हे युधिष्ठिर ! माघ मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में हमारे तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै फिर रात्रि में भोजन करै तो योनि के संकट को न प्राप्त होवे ८७ । ८८ फिर अहल्या तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै तो स्नानमात्रही करने से मनुष्य अप्सराओं समेत आनन्द करताहै ८९ पारमेश्वरमें तपकर अहल्या मुक्ति को प्राप्त हुई है चैत्रमास के शुक्लपक्षकी त्रयोदशी में ९० तिस कामदेवके दिनमें अहल्याको पूजै तो जहां मनुष्य उत्पन्न होवे तहां प्यारा होवे ९१ स्त्री को प्यारा लक्ष्मी युक्त दूसरे कामदेवकी नाईं सुन्दर हो फिर इन्द्रके प्रसिद्ध तीर्थ अयोध्याजीको प्राप्तहोकर ९२ मनुष्य स्नान मात्रही करने से सहस्र गऊके फल को प्राप्त होता है तिस पीछे सोमतीर्थ को जावे और स्नानमात्रही करै ९३ तो स्नानही करने से मनुष्य सब पापों से छूटजाताहै सोमग्रहमें पापका नाश करनेवाला ९४ तीनोंलोकमें प्रसिद्ध महा फल देनेवाला सोमतीर्थ है जो तिस तीर्थ में चान्द्रायण व्रत करताहै ९५ वह सब पापों से शुद्ध आत्मा होकर चन्द्रलोकको जाताहै अग्निके प्रवेशमें जल में अथवा विना भोजन में ९६ सोमतीर्थ में जो मरता है वह मनुष्य लोकमें नहीं उत्पन्न होता है फिर स्तम्भ तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै ९७ तो स्नान मात्रही करने से मनुष्य चन्द्रलोकमें प्राप्त होताहै तदनन्तर अत्युत्तम विष्णुतीर्थको जावे ९८ जो कि योधनी पुरनाम से प्रसिद्ध है तहां भगवान् ने करोड़ों असुरों से युद्ध किया

है ९९ और तहां पर तीर्थ उत्पन्न हुआहै यहां विष्णुजी प्रसन्न होते हैं दिन रात्रि के बसने से ब्रह्महत्या को दूर करते हैं १०० तिस पीछे उत्तम तापसेश्वरको जावे जो कि अमोहक नाम से प्रसिद्धहै तहांपर जो पितरों को तर्पण करै १०१ और पौर्णमासी अमावास्यामें विधि-पूर्वक श्राद्धकरै तहां स्नानकर मनुष्य पितरोंको पिण्डदेवे १०२ तहां पर हाथी के समान शिला जलमें स्थितहैं तिसमें पिण्ड देवे और वैशाखमें विशेषकर देवे १०३ तो पितर तबतक तृप्त रहते हैं जब तक पृथ्वी स्थित रहती है फिर अत्युत्तम सिद्धेश्वर को जावे १०४ तहां जानेसे गणेशजी के समीप प्राप्त होताहै तिस पीछे जहां जनार्दनलिङ्गहै तहां जावे १०५ तहां स्नानकर विष्णुलोकमें प्राप्त होता है नर्मदा के दक्षिण किनारे परम शोभनतीर्थ है १०६ तहां पर महान् काम देव आपही तपस्या करते भये दिव्य सहस्रवर्ष महादेवजीकी उपासना करतेभये १०७ फिर महात्मा शङ्करजीने समाधि से जगकर जलादिया श्वेत पर्वोपम और शुक्ल पर्व में हुताश १०८ ये सब कुसुमेश्वर में स्थित जलाये गये फिर दिव्य सहस्र वर्ष से पार्वती समेत महादेवजी तिनके ऊपर प्रसन्न हुये जो कि वर के दाता हैं फिर नर्मदाजी के किनारे स्थित तिन सब को मोक्ष देकर १०९। ११० तिस तीर्थ के प्रभाव से फिर देव भावको प्राप्त हुये आप के प्रसाद से हे महादेवजी! तीर्थ उत्तम होवे १११ दिशाओं में चारों-ओर आधा योजन विस्तृत होवे तिस तीर्थमें व्रतमें परायण मनुष्य स्नानकर ११२ काम देवके रूप से शिवलोकमें प्राप्त होता है यमराजसे अग्निमें और कामदेव से वायुके लिये ११३ तपस्याकर तहां हीं पूर्वकालमें प्राप्त भये अन्धोन तीर्थ के समीप ११४ स्नान दान भोजन और पिण्डदान अग्निवेश जल अथवा अनाशनमें करै ११५ और अर्द्ध योधनमें जो मरै तिसकी अनिवर्तिका गति होती है श्रेष्ठ मनुष्य त्रैयंबक जलसे स्नानकरै ११६ और अंधोन मूलमें विधि-पूर्वक पिण्ड देवे तो तिसके पितर जबतक चन्द्रमा और सूर्य रहते हैं तबतक तृप्त रहते हैं ११७ उत्तरायण सूर्य के प्राप्त होने में तहां जो स्नान करताहै पुरुष वा स्त्री जो हो पवित्र होकर स्थानमें बसता

है ११८ और सिद्धेश्वर देवजीको पूजन प्रातःकाल में करताहै वह सज्जनों की गति को प्राप्त होताहै जितना कि सब महायज्ञोंसे फल नहीं होता तितना होताहै ११९ जब तीर्थ काल से रूपवान् सुभग वह मनुष्य होताहै तब समुद्रान्त मृत्युलोकमें राजा होताहै १२० क्षेत्रपाल दण्डपाल महाबल और कर्णकुण्डल को विना देखे तिस मनुष्य की वृथा यात्रा होती है १२१ यह तीर्थ का फल जानकर सब देवता प्राप्त हुये फूलों की वर्षा करनेलगे और कुसुमेश्वरजीकी स्तुति करनेलगे १२२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

भार्गवेश और शुक्लतीर्थ का माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि फिर भक्तिसे भार्गवेशको जावे जहाँपर विष्णु देवसे हुङ्कारितदानव प्रलय को प्राप्तहुयेहैं १ हे पाण्डुनन्दन राजाओंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर! तहां स्नानकर सब पापों से छूटजाता है अब शुक्लतीर्थ की उत्पत्ति सुनिये २ रम्य अनेक प्रकार की धातुओं से विचित्रित तरुण सूर्यके समान प्रकाशित तप्त सोनेके समान हीरा और स्फटिकमणिकी सीढ़ीवाले चित्रपट्ट शिलातल वाले सुवर्णमय दिव्य अनेक प्रकार के कमलों से शोभायमान हिमवान् के शिखर में ३ । ४ बैठेहुये सब जाननेवाले प्रभु नाश रहित लोकोंके ऊपर दया करनेवाले शान्तगण समूहों से युक्त स्कन्दनन्दी महाकाल और वीरभद्र समेत पार्वती सहित देव महादेवजी से मार्कण्डजी पूछतेभये ५ । ६ कि हे देवदेव महादेव! हे इन्द्र! कामादिकों से स्तुति कियेगये संसार के डरसे डरेहुये हम से सुखका उपाय कहिये ७ हे भगवन्! हे भूतकाल! और भविष्यकाल के स्वामी हे महेश्वरजी! सब पाप नाश करनेवाले तीर्थों के परमतीर्थको कहिये ८ तब महादेवजी बोले कि हे विप्र! हे महाभाग! हे सब शास्त्रों में निपुण! ऋषिसमूहों से युक्त स्नानादि करके आप जाइये ९ मनु अत्रि याज्ञवल्क्य काश्यप अंगिरा यम आपस्तम्ब संवर्त कात्यायन बृह-

स्पति १० नारद और गौतमजी में धर्मकी कांक्षा करनेवाले पूछते हैं पुण्यकारिणी गंगा कनखल में हैं प्रयाग पुष्कर गया ११ और कुरुक्षेत्र ये सूर्यग्रहण में पुण्यकारी हैं दिन वा रात्रि में शुक्लतीर्थ महाफल देनेवाला है १२ दर्शन स्पर्शन स्नान ध्यान तपस्या होम और व्रतसे शुक्लतीर्थ बड़ेफल देनेवाला है १३ शुक्ल-तीर्थ महापुण्यकारी है और नदीमें स्थित है चाणिक्यनाम राजर्षि तहांपर सिद्धिको प्राप्तहुये हैं १४ यह क्षेत्र योजन भरमें स्थित उत्पन्न है शुक्लतीर्थ महापुण्यकारी और सब पाप नाश करनेवाला है १५ वृक्षके अग्रसे देखने से ब्रह्महत्या को दूर करता है हे ऋषियों में श्रेष्ठ! हम यहां पार्वती समेत स्थित हैं १६ निर्मल वैशाख महीने के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में कैलास से हम निकलकर तहां स्थितहुयेहैं १७ देवता किन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्याधर गण अप्सरा नाग सब देवता प्राप्त हुयेहैं १८ सब कामना देनेवाले विमानों से आकाश में स्थित धर्मकी कांक्षा करनेवाले शुक्लतीर्थमें आयेहैं १९ जैसे धोबीसे जलसे कपड़ा सफ़ेद होजाता है तैसेही जन्मपर्य्यन्त का इकट्ठा कियाहुआ पाप शुक्लतीर्थ में नाश होजाता है २० हे ऋषि श्रेष्ठ मार्कण्डजी! स्नान और दान महापुण्यकारी हैं शुक्लतीर्थसे श्रेष्ठ तीर्थ न हुआ है और न होगा २१ मनुष्य पूर्व अवस्था में पाप कर्मोंको कर शुक्लतीर्थ में दिन रात्रिके व्रतसे पापोंको दूर करता है २२ तपस्या ब्रह्मचर्य यज्ञ वा दानसे पाप नाश होजाते हैं दान से जो पुष्टि होती है वह सैकड़ों यज्ञोंसे नहीं होती है २३ कार्त्तिक महीना के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में व्रतकर घीसे देव परमेश्वर को स्नान करावै २४ तो इक्कीस पीढ़ीसे युक्त महादेवजी के पदसे नहीं गिरता है ऋषि और सिद्धों से सेवित शुक्लतीर्थ श्रेष्ठतीर्थ है २५ तहां स्नानकर फिर जन्म नहीं होताहै शुक्लतीर्थ में स्नानकर शिव जीको पूजन करै २६ नाच गानआदि मंगलों से तहां जागरण करावै प्रातःकाल शुक्लतीर्थ में स्नान और देवताओं का पूजन करै २७ और पीछेसे शिवजी के व्रतमें परायण पवित्र होकर आचार्य्य को भोजन करावै भोजन यथाशक्ति से करावै वित्तशाठ्य न करै २८

फिर प्रदक्षिणा कर धीरेधीरे देवजी के समीप जावै इस प्रकार जो करता है तिसके पुण्यफल को सुनिये २९ सुन्दर विमान पर चढ़ कर अप्सरा समूहों से स्तुति को प्राप्त शिवजीके समान बलसेयुक्त होकर प्रलय पर्यन्त स्थिर रहे ३० शुक्लतीर्थ में जो स्त्री शुभ सुवर्ण को देतीहै घीसे देवको स्नान कराती वा कुमार की पूजन करती है ३१ इस प्रकार जो भक्तिसे करतीहै तिसके पुण्यफल को सुनिये देवलोक में स्थित जबतक चौदहों इन्द्र रहते हैं तबतक आनन्द करै ३२ अयन वा चतुर्दशी संक्रान्ति विषुवसंज्ञक संक्रान्तिमें स्नान कर व्रत समेत आत्मा को जीतकर एकाग्रचित्त होकर ३३ यथा शक्तिसे दानदेवे तो हरि और शिवजी प्रसन्न होतेहैं शुक्लतीर्थ के प्रभाव से सब नाशरहित होता है ३४ अनाथ दुर्गत ब्राह्मण वा स्वामी सहित को जो तीर्थमें विवाह करादेता है तिसके पुण्यफल सुनिये ३५ जितनी जिसके रोमोंकी गिनती होती है और तिसके उत्पन्न कुलोंमें जितने रोम होतेहैं तितने सहस्र वर्ष शिवलोक में प्राप्त होता है ३६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऊनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

नरकतीर्थ गोतीर्थ कपिलातीर्थ ऋषितीर्थ
गणेश्वर और गंगावदनादि तीर्थों का वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे पांडुनन्दन राजेंद्र युधिष्ठिर! फिर नरकतीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै तो स्नानमात्रहीसे मनुष्य तहां नरकको देखता है इसतीर्थ का माहात्म्य तुम सुनो तिसतीर्थ में जितनीहड्डियां छोड़ताहै १।२ सबनाश होजाती हैं और रूपवान् मनुष्यहोताहै तिसपीछे गोतीर्थ को जावे और देखे तो पापसे छूटजाताहै ३ तदनन्तर उत्तम कपिलातीर्थ को जावे और तहांस्नानकर मनुष्य सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहोवे ४ ज्येष्ठमासकी चतुर्दशी प्राप्तहोने में विशेष कर तहां व्रतकर मनुष्य भक्ति से जो कपिलागऊ देता है ५ घी से दीपजलाकर घीसे शिवजी को स्नानकरावे और घी समेत

नारियलदेकर अन्तमें प्रदक्षिणाकर ६ घंटा और गहनासमेत जो कपिलाको देताहै वह शिवजी के समान मनुष्य होकर फिर यहां नहीं उत्पन्नहोताहै ७ अंगारक चतुर्थीका दिन प्राप्तहोने में विशेष कर भक्ति से शिवजीको स्नानकराकर ब्राह्मणों को भोजन देवे ८ अंगारकनवमी में और अमावास्या में यत्न से स्नानकरावै तो रूपवान् और सुभग होवे ९ घीसे लिंग को स्नानकराकर भक्ति से ब्राह्मणों को पूजनकरै तो पुष्पक विमान से सहस्रों से युक्तहोकर १० शिवजीके पदको प्राप्तहोवे यहां न प्राप्तहोवे और महादेवजीकी नाईं नाशरहित कालतक आनन्दकरै ११ जबकर्म संयोग से मनुष्यलोक में प्राप्त होतो धर्मात्मारूपवान् और बलवान्राजाहोवे १२ तदनन्तर अत्युत्तम ऋषितीर्थ को जावे जहां तृण बिन्दु ऋषिशाप से जलकर स्थितहैं १३ तिसतीर्थ केप्रभावसे ब्राह्मणपाप से छूटजाता है तिसपीछे अत्युत्तम गणेश्वर को जावे १४ श्रावण महीना के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी के प्राप्तहोने में तहां स्नानमात्र कर मनुष्य शिवलोकमें प्राप्त होताहै १५ पितरों को तर्पणकर तीनों ऋण से छूट जाताहै गणेश्वर जीके समीपमें उत्तम गंगावदनतीर्थहै १६ तहां कामनारहित वा कामना सहित मनुष्य स्नानकर जन्मभर के किये हुये पापोंसे निस्संदेह छूटजाताहै १७ सदैव पर्वदिनमें तहां स्नान करै और पितरों को तर्पण करै तो तीनों ऋण से छूटजावै १८ प्रयागमें जो फल महात्मा शंकर जीने देखाहै वह सब पुण्य गंगाजीमें सूर्य ग्रहणमें होता है १९ तिसके समीपही दूरनहीं पश्चिम स्थानमें तीनोंलोक में प्रसिद्ध दशाश्वमेधिक नाम तीर्थ है २० भाद्रपद महीने की अमावास्या में एकरात्रि रहकर मनुष्य स्नानकर जहां शंकरजी रहते हैं तहांजाताहै २१ सदैव पर्व के दिनमें तहांस्नानकरै और पितरों को तर्पणकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे २२ दशाश्वमेध से पश्चिम ब्राह्मणों में श्रेष्ठ भृगुजी दिव्य सहस्र वर्ष ईश्वरजी की उपासना करते भये २३ और बांबीमें स्थित रहे दक्षिण स्थानरहा तब पार्वती जी और महादेवजीको बड़ा आश्चर्यहुआ २४ पार्वती जी महादेवजी से पूंछती भईं कि यहां कौन स्थित हैं

देवता वा दानवहैं हे महेश्वर जी! कहिये २५ तब महादेवजी बोले कि हे प्रिये! द्विजोमें श्रेष्ठ ऋषियों में श्रेष्ठ भृगुनाम मुनि समाधिमें स्थित होकर हमारा ध्यानकरतेहैं और वरमांगते हैं २६ तब हँस करपार्वती जी महादेवजी से बोलीं कि धूमावर्त शिखा होगई है अबतक आपप्रसन्ननहीं हैं तिसीसे आपदुराराध्य हैं इसमें संदेह न करनाचाहिये २७ तब महादेवजी बोले कि हेमहादेवि! नहीं जाना जाताहै यह क्रोध से चेष्टित है यथा तथ्य दिखलावेंगे तुम्हारा प्रियकरतेहैं २८ तबमहादेवजी ने धर्मरूप बैलको स्मरण किया स्मरण करने से नंदी जी शीघ्रही उपस्थित हुये २९ और मनुष्य की वाणी बोले कि हे प्रभो! आज्ञा दीजिये तब महादेवजीने कहा कि बांबियों से ब्राह्मण आच्छादित है इसको पृथ्वी में गिराइये ३० तब योगमें स्थित और ध्यान करते हुये मुनिजी को नन्दीने गिरादिया तो उसी क्षणसे क्रोधसे संतप्त होकर मुनिजी ने हाथ उठाया ३१ और इस प्रकार बोले कि हे नन्दी! तुम कहां जातेहो हे बैल! तुझ पापी को हम प्रत्यक्षही मारते हैं ३२ तब ब्राह्मण धर्षित हुये और नन्दी जी आकाशमें प्राप्तहुये हे राजन्! नन्दीजी आकाश में दिखाई दिये यह उत्तम अद्भुतहै ३३ तदनन्तर महादेवजी हँसे और ऋषि आगे स्थित हुये और शिवजी का तीसरा नेत्र देखकर वैलक्ष्यसे पृथ्वी में गिरे ३४ और पृथ्वीहीमें दण्डवत् प्रणामकर शिवजीकी स्तुति करने लगे कि हे भुवनों के स्वामी भूतों के नाथ संसार के उत्पन्न करने वाले! दिव्यरूपभूत आपके नमस्कार कर कुछ विज्ञापित करते हैं ३५ हे नाथ! आपके गुण समूहों के कहने को कौन मनुष्य समर्थ होता है कदाचित् वासुकि जिसके सहस्र मुखहों वह समर्थ होसके ३६ हे भुवनों के स्वामी! हे वंदना करने के योग्य भगवन्! हे शङ्कर जी! आपकी भक्तिसे आपकी स्तुति में परायण हूं और आपके चरणों में गिरा हुआ हूं क्षमाकर मेरे ऊपर प्रसन्न हूजिये ३७ हे देव! हे भुवनों के पति! हे भुवनों के ईश्वर! पालन उत्पत्ति और नाश में सत्त्व रज और तम आपही हैं आपको छोड़कर कोई और देवता नहीं है ३८ यम नियम यज्ञ दान वेदके अभ्यासके अवधारण के

उद्योग से आपकी भक्तिके सब यह कलाके सहस्र अंशसे योग्य नहीं है ३९ उत्कृष्ट रस रसायन खड्ग अंजन पादुकादि सिद्धि आपके प्रणतों के चिह्न इस जन्म सें प्रकट दिखाई देते हैं ४० हे देव! हे नाथ! शठता केभावसे नमते हौ यद्यपि धर्मकी इच्छा करने वालों को तुम देतेहो संसारके नाश करनेवाली भक्ति मोक्षके लिये रची है ४१ पराई स्त्री और पराये द्रव्यमें रत अनादर दुःख और शोकसे संतप्त पराये सुखके देखने में परायण मेरी हे परमेश्वर! रक्षा कीजिये ४२ हे देव! हे देवोंके स्वामी! अलीक अभिमान से दग्ध क्षणभंगी विभव से विलसित क्रूर कुपथ के अभिमुख गिरे हुये मेरी रक्षाकीजिये ४३ हे शङ्करजी! दीन इन्द्रियगण सार्थ बन्धुजनों से आशा पूरित है तिसपर भी तुच्छ है क्या मुझ मूर्ख की आप विडम्बना करते हैं ४४ हे महादेवजी! शीघ्रही तृष्णाको हरिये नित्य रहनेवाली हृदय में बसनेवाली लक्ष्मी को मुझेदीजिये मद मोह पाशों को काटिये और मुझे तारिये ४५ इस सिद्धि के देने वाले दिव्यकरुणाभ्युदयनाम स्तोत्रको जो भक्तियुक्त होकर पढ़ता है तिसके ऊपर इसप्रकार प्रसन्नहोते हैं जैसे भृगुजी के ऊपर शिव जी प्रसन्नहुयेहैं ४६ तब महादेवजी बोले कि हे विप्र भृगुजी! हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहैं मनोवाञ्छित वरमांगिये पार्वती समेत महादेवजी भृगुजी के वरदेने में तत्परहुये ४७ तब भृगुजी बोले कि हे देवों के स्वामी! यदि आपप्रसन्नहैं और मुझे वरदेना चाहतेहैं तो इसी प्रकारसे रुद्रवेदी होवे यह मुझे दीजिये ४८ तब महादेवजी बोले कि हे विप्रों में श्रेष्ठ भृगुजी! ऐसाही होवे क्रोध स्थान होगा पिता और पुत्रका एक वाक्य नहीं होगा ४९ तबसे लेकर किन्नरों समेत ब्रह्मादिक सब देवता भृगुजी के तीर्थ की उपासना करने लगे जहां पर महादेवजी प्रसन्न हुये हैं ५० तिस तीर्थ के दर्शन से शीघ्रही मनुष्य पापसे छूटजाताहै पराये वश या अपने वश जो प्राणी वहां पर मरते हैं ५१ तिनकी गुह्य अतिगुह्य की गति निस्संशय होती है यह क्षेत्र अत्यन्त भारी और सब पाप नाशकरने वाला है ५२ तहां स्नानकर स्वर्ग को जातेहैं और जो मरतेहैं उनका फिर जन्म

नहीं होता है जूता छतुरी अन्न सोना ५३ और यथाशक्ति से भोजन ब्राह्मणों को देना चाहिये देनेवाले का नाशरहित फल होता है जो मनुष्य इच्छासे सूर्यग्रहण में दान देता है ५४ और तीर्थ में स्नान और दान करता है वह तिसका नाश रहितहोता है और चन्द्रमा और सूर्य्य के ग्रहण में अत्युत्तम वृषोत्सर्ग को करता है वह भी नाशरहित होता है ५५ हे राजन् ! विष्णुजी की माया से मोहित मूर्ख मनुष्य नर्मदाजी में स्थित दिव्य वृषतीर्थ को नहीं जानते हैं ५६ जो मनुष्य भृगुतीर्थ के माहात्म्य को एकबार सुनता है वह सब पापों से छूटकर शिवलोक को जाता है ५७ फिर हे राजेन्द्र ! उत्तम गौतमेश्वर तीर्थ को जावे तहां व्रत में परायण मनुष्य स्नान कर ५८ सुवर्ण के विमान से ब्रह्मलोक को जाता है तिसपीछे वृष से धौत धौतपापतीर्थ को जावे ५९ जो कि नर्मदाजी में स्थित सब पापों का नाश करनेवाला है तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर ब्रह्म-हत्याको दूर करदेता है ६० हे महाराज ! तिस तीर्थ में जो प्राण त्याग करताहै वह चारभुजा और तीन नेत्रका होकर शिवजीके स-मान बलवाला होता है ६१ और दशहज़ार कल्पतक बसता है फिर बड़ेकाल से पृथ्वी में प्राप्त होकर पृथ्वी भरका एकही राजा होता है ६२ फिर हे राजेन्द्र ! उत्तम एरण्डी तीर्थ को जावे वहां मार्कण्डेय जीसे भाषित प्रयाग में जो फल देखा है ६३ वह फल स्नानही मात्र करने से मनुष्य पाताहै भाद्रपद महीने के शुक्लपक्ष की अष्टमी को ६४ एक रात्रि रहकर तहां स्नान करै तो यमराज के दूतों से न बाधित होकर इन्द्रलोक को जाता है ६५ फिर जहां जनार्दन सिद्ध हैं तहां जावे वह सब पापों का नाश करनेवाला हि-रण्यद्वीप नाम से प्रसिद्ध है ६६ हे राजन् ! हे राजेन्द्र ! तहां स्नान कर मनुष्य धनवान् और रूपवान् होता है फिर बड़ेभारी कनखल तीर्थ को जावे ६७ तिस तीर्थ में गरुड़जी ने तपस्या की है सब लोकों में प्रसिद्ध है योगिनी तहाँहीं स्थित है ६८ योगियोंके साथ क्रीड़ा करती है और शिवजी समेत नाच करती है तहां स्नानकर मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होता है ६९ तदनन्तर अत्युत्तम ईश

तीर्थ को जावे तहांपर ईशजी विनिर्मुक्त होकर निस्संशय ऊर्ध्व को प्राप्तहुये हैं ७० फिर जहां जनार्दन सिद्ध हैं तहां को जावे शूकर जीका रूप धारणकर अचिन्त्य परमेश्वर जहांपर स्थित हैं ७१ वराह तीर्थमें मनुष्य विशेषकर द्वादशी में स्नान कर विष्णुलोकको प्राप्त होताहै नरक को नहीं जाताहै ७२ तदनन्तर अत्युत्तम सोम तीर्थको जावे विशेषकर पौर्णमासी में तहां स्नान करै ७३ ईशानजी के नमस्कार करे तो बलिजी तिसके ऊपर प्रसन्न होते हैं फिर दिव्य अन्तरिक्ष में दिखाई देनेवाला हरिश्चन्द्र पुरहै ७४ जो कि चक्रध्वज समावृत्त में सुप्त नागरिके तनमें है और नर्मदाजीके जल के वेगसे रुरु कच्छों से सेवित है ७५ तिस तीर्थ में निवास करै विष्णुजी महादेवजी से कहते हैं कि द्वीपेश्वरमें मनुष्य स्नान कर बहुत सुवर्ण को प्राप्त होताहै ७६ फिर रुद्र कन्या संगम में जावे तहां स्नान मात्रही करने से मनुष्य देवीजी के स्थान को प्राप्त होताहै ७७ तिस पीछे सब देवोंसे नमस्कार कियेगये देवतीर्थ को जावे तहां स्नानकर देवताओं समेत आनन्द करताहै ७८ तदनन्तर अत्युत्तम शिखितीर्थ को जावे तहां दानदिया जाताहै तो सब करोड़गुणा होताहै ७९ अपर पक्ष अमावास्या में तहां स्नानकरै और एक ब्राह्मण को भोजन करावै तो करोड़ ब्राह्मण भोजन किये का फल होताहै ८० भृगुतीर्थ में तीर्थ कोटि स्थितहैं कामना रहित वा कामना सहित तहां मनुष्य स्नानकरै ८१ तो अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त होताहै और देवताओं समेत आनन्द करताहै मुनि श्रेष्ठ भृगुजी तहांही सिद्धिको प्राप्तहुये हैं और महात्मा महादेवजी ने अवतार धारण कियाहै ८२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेविंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

विंहगेश्वर नर्मदेश्वर अश्वतीर्थ पितामहतीर्थ सावित्रीतीर्थ और मनोहरादि तीर्थोंका वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिरजी फिर मनुष्य

उत्तम विहगेश्वर को जावे तिसके दर्शन से सब पापों से छूट जाता है १ फिर उत्तम नर्मदेश्वर को जावे तहां स्नानकर मनुष्य स्वर्ग लोकको जाता है २ तिस पीछे अश्वतीर्थ को जावे और तहां स्नान करै तो सुभग दर्शनीय और भोगवान् मनुष्य होवे ३ फिर पूर्व समय के ब्रह्माके रचेहुये पितामह तीर्थको जावे और तहां स्नान कर मनुष्य भक्तिसे पितरों को पिण्ड देवे ४ तिल और कुश मिला हुआ जल देवे तो तिस तीर्थके प्रभावसे सब नाश रहित होताहै ५ फिर सावित्री तीर्थको प्राप्त होकर जो स्नान करताहै वह सब पापों को दूरकर ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै ६ तहांहीं परम शोभन मनोहर तीर्थ है तहां स्नान कर मनुष्य पितृलोक में प्राप्त होताहै ७ फिर हे राजेन्द्र ! उत्तम मानस तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य शिवलोक में प्राप्त होताहै ८ तदनन्तर उत्तम क्रतु तीर्थको जावे जोकि सब लोकोंमें प्रसिद्ध और सब पाप नाश करने वालाहै ९ तहां स्नानकर जिन जिन पशुपुत्र धनोंकी इच्छा करै तिन सबको प्राप्त होवे १० फिर प्रसिद्ध त्रिदश ध्योतिको जावे तहांपर अच्छे व्रतकरनेवाली ऋषियोंकी कन्या तपस्याकरती थीं ११ कि ईश्वर प्रभु नाशरहित सबके स्वामी होवें तब प्रचण्डरूप धारण करनेवाले हर महादेवजी तिनके ऊपर प्रसन्न हुये १२ और विकृतमुख वीभत्स परमेश्वर शिवजी कन्याओं के वर देनेके लिये तिस तीर्थ में प्राप्त हुये १३ जो कन्या ऋद्धिको सेवता और कन्यादान को देता है और दश कन्या नामसे प्रसिद्ध तीर्थ १४ में स्नानकर देवजी को पूजता है वह सब पापों से छूट जाता है तिस पीछे स्वर्ग बिन्दु नाम से प्रसिद्ध तीर्थ को जावे १५ तहां स्नानकर मनुष्य दुर्गतिको नहीं देखता है फिर अप्सरेश तीर्थ को जावे और तहां स्नानकरै १६ तो नागलोक में स्थित होकर क्रीड़ाकरै और अप्सराओं समेत आनन्दकरै तदनन्तर उत्तम नरकतीर्थ को जावे १७ तहां स्नानकर देवजी को पूजनकरै तो नरकको न प्राप्तहोवे फिर व्रतमें परायण मनुष्य भारभूत तीर्थ को जावे १८ इस तीर्थको प्राप्तहोकर विरूपाक्ष महादेवजी के अवतार को पूजनकर शिवलोक में प्राप्तहोता है १९ महात्माके तिस

भारभूत तीर्थ में स्नानकर मनुष्य जहां तहां मरै तो निश्चय गणे-
श्वरीगति होतीहै २० कार्तिक महीने में महादेवजी के पूजनकरने
से बुद्धिमान् अश्वमेध यज्ञसे सौगुणा फल कहते हैं २१ घीसे भरे
हुये सौ दिये बनाकर देवै तो सूर्यके समान प्रकाशित विमानों से
जहां शंकरजी हैं तहां को जावै २२ जो शंख कोकाबेलि और
चन्द्रमाके सदृशवर्णवाले बैलको देताहै वह बैल युक्त विमान से
शिवलोकको प्राप्तहोताहै २३ और तिसीतीर्थमें एक चरु जो देताहै
शहद सहित खीर और अनेक प्रकारके भोजन २४ यथाशक्ति ब्रा-
ह्मणोंको भोजनकराकर दक्षिणा देताहै तो तिसतीर्थ के प्रभाव से सब
करोड़ गुणा फलहोताहै २५ नर्मदाजीके जलसे स्नानकर मनुष्य
शिवजीको पूजनकरैं तो तिसतीर्थ के प्रभाव से दुर्गति को नहीं
देखते हैं २६ इस तीर्थको प्राप्तहोकर जो प्राणों को छोड़ताहै वह
सब पापोंसे विशुद्ध आत्माहोकर जहां शंकरजी हैं तहांहीं प्राप्त
होताहै २७ और जो तिसतीर्थ में जलमें प्रवेश करजाताहै वह हंस
युक्त विमान से शिवलोकको जाताहै २८ और जब तक चन्द्रमा
सूर्य हिमवान् समुद्र और गंगादिक नदियां हैं तबतक स्वर्ग में
रहता है २९ और जो मनुष्य तिसतीर्थ में भोजन नहीं करता है
वह गर्भ में फिर नहीं आताहै ३० तिसपीछे उत्तम अटवी तीर्थ
को जावे तहां स्नानकर मनुष्य इन्द्रके आधे आसन को प्राप्त
होताहै ३१ फिर सब पापनाशकरनेवाले शृंगतीर्थ को जावे तहां
भी स्नानमात्र करनेवाले की निश्चय गणेश्वरीगति होतीहै ३२
एरण्डी और नर्मदाजी का संगम संसारमें प्रसिद्धहै तहां सब पा-
पनाशकरनेवाला महापुण्यकारी तीर्थहै ३३ तहां व्रतकर नित्यही
ब्रह्ममें परायण होकर स्नानकरनेसे ब्रह्महत्यासे छूटजाता है ३४ फिर
नर्मदा और समुद्र के संगम जमदग्निनामसे प्रसिद्धको जावे जहांजना-
र्दनजी सिद्धहुये हैं ३५ जहां बहुत यज्ञकर इन्द्र देवताओं के स्वामी
हुये हैं तिस नर्मदा और समुद्रके संगम में मनुष्य स्नानकर ३६
तिगुने अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै पश्चिमोदधि सायु-
ज्यनामतीर्थ मुक्तिका देनेवालाहै ३७ तहां देवता गन्धर्व ऋषि सिद्ध

और चारणतीनों सन्ध्याओं में देवोंके स्वामी विमलेश्वरजीकी आराधना करते हैं ३८ जो विमलेश्वर में स्नानकरताहै वह सब पापों से शुद्ध आत्माहोकर शिवलोक में प्राप्तहोताहै विमलेश्वरसे श्रेष्ठ तीर्थ न हुआ है और न होगा ३९ तहां व्रतकर जो विमलेश्वर को देखतेहैं वे सब पापोंसे विशुद्ध आत्माहोकर शिवलोकको जाते हैं ४० फिर मनुष्य उत्तम कोशिनी तीर्थको जावे तहां स्नानकर व्रतमें परायण होकर ४१ नियत और नियत भोजनकर एकरात्रि बसै तो तीर्थ के प्रभाव से ब्रह्महत्या से छूटजावे ४२ जो सब तीर्थों में अभिषेक और सागरेश्वरको देखताहै योजन भरके भीतरमें स्थितहोताहै आवर्तमें शिवजी स्थित हैं ४३ तिनको देखकर सब तीर्थोंको देखचुकताहै इस में संशयनहींहै और सबपापोंसे छूटकर जहां शिवजीहैं तहां जाता है ४४ नर्मदाजीका जितना संगमहै और अमरकण्टकका जितनाहै तिनके बीचमें तीर्थ कोटीजल में स्थित हैं ४५ तीर्थसे तीर्थमें जाना चर्याऋषि करोड़ों से सेवित दिव्य अंश अग्निहोत्रों और सब ज्ञान परायणों से ४६ सेवित तीर्थ कोटीहैं तिसीसे मनोवांछित अर्थके देनेवाली हैं जो भक्तिसे नित्यही इसको पढ़ता वा सुनता है ४७ तिसको सब तीर्थ अभिषेक करते हैं नर्मदाजी सदैव प्रसन्न होती हैं इसमें सन्देह नहींहै ४८ रुद्रजी और महामुनि मार्कण्डेयजी प्रसन्न होते हैं बांझ स्त्री पुत्रोंको पाती दुष्ट भाग्यवाली अच्छी भाग्य युक्त होती ४९ कुमारी कन्या स्वामी को पाती और जो जिस फलकी वाञ्छा करता वह सब पाता इसमें संशय न करना चाहिये ५० ब्राह्मण वेदको पाता क्षत्रिय विजय पाता वैश्य धान्यको प्राप्त होता शूद्र अच्छी गतिको प्राप्त होता ५१ मूर्ख विद्याको पाताहै जो मनुष्य तीनों संध्याओं में पढ़ता है वह नरकको नहीं देखता और योनि को नहीं प्राप्त होताहै ५२ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

नर्मदाजीके माहात्म्य में पांच कन्याओंका चरित्र वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे राजन्! युधिष्ठिर महाराज इस प्रकार तुम से उत्तम नर्मदा तीर्थको कहा पूर्व समय में गन्धर्व कन्याओं के शाप से उत्पन्न घोरभय नर्मदाजी के जलके कणकी अग्नि से नाश को प्राप्त हुआहै नर्मदाजीके जलके कणके स्पर्शसे मनुष्य मुक्त होजाता है १।२ तब युधिष्ठिर बोले कि हे भगवन्! नारदजी बहुत कन्याओंने कैसे कहांसे शाप पाया और किसकी कन्या थीं उनके नाम क्याथे कैसी अवस्था थी ३ कैसे नर्मदाजी के जलके स्पर्श से शापसे उत्पन्न विपाक से छूटगईं कहां उन्होंने स्नान कियेथे हे प्रभुजी! सब मुझ से कहिये ४ नर्मदा तीर्थका माहात्म्य चमत्कार करनेवाला है सुनने से भी पापोंके मलका नाश करनेहारा कहाताहै ५ नर्मदा नर्मदा शब्द जिसने कहा तिसकी शाश्वती मुक्ति जबतक चन्द्रमा और नक्षत्र रहते हैं तबतक होतीहै ६ हे साधो! आपने पहले उत्तम नर्मदाजी का माहात्म्य कहाहै तिसपर भी जो यह चरित है सो कहिये ७ उत्तम वार्ता बुद्धिमानोंके सेवन करनेके योग्यहै हे विप्रेन्द्र! हे विभो! इससे उत्तम नर्मदाजीका माहात्म्य पूंछते हैं कन्याओं के चरित से उज्ज्वल इतिहासको कहिये ८ तब नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! धर्म गर्भवाली श्रेष्ठकथा सुनिये जैसे अग्नि गर्भवाली अरणिहै तैसेही धर्म ब्रह्मसू की नाईंहै ९ शुक संगीति गन्धर्वकी कन्या प्रमोहिनी सुशील के सुशीला स्वर वेदीके सुस्वरा १० चन्द्रकांतके सुतारा सुप्रभ के चन्द्रिका ये तिन अप्सराओं के श्रेष्ठ नाम हैं ११ सब पांच कुमारी अवस्थासे सुभग हैं और वे सदैव परस्पर बहिनोंकी तरह बात कहती हैं १२ मानों चन्द्रमासे निकली हैं चन्द्रिकाकी नाईं उज्ज्वल हैं चन्द्रमा के समान मुखवालीहैं सुन्दर बालवाली हैं चन्द्रमाकी स्त्री कीनाईं उज्ज्वल हैं १३ देवताओंमें ये विलासिनी हैं नक्षत्रों में चन्द्रिका की नाईं हैं सुन्दरता के पिण्डसे उत्पन्नहैं दिव्यरूप मनोहर हैं १४ उद्भिन्न स्तन पद्मिनी हैं वैशाखमें केतकीकी नाईं हैं उत्पन्न यौवनों से नवीन

पल्लवों से लताकी नाईं शोभायमान हैं १५ सुवर्ण के समान गौर सुवर्ण के तुल्य दीप्तिवाली सुवर्णके गहनोंसे भूषितहैं सुवर्ण चम्पक के माला धारण किये और सुवर्णके छबिवाले सुन्दर कपड़ेवाली हैं १६ स्वरसमूहों की पंक्तियों अनेकप्रकार की मूर्च्छनाओं ताल बाजा के विनोदों वंशी और वीणाके बजाने में १७ मृदंगके शब्दसे संभिन्नलास्य मध्यलयों में चित्रादिक विनोदों में और कलाओं में निपुण हैं १८ इसप्रकार की वे कन्या श्रेष्ठ क्रीड़नों से मोहको प्राप्त हुईं और पिताओं से सब लालित कुबेरके स्थानमें घूमती भईं १६ एक समय वैशाख महीनेमें कौतुकसे पांचों कन्या मिलकर कल्पवृक्ष के फूलोंको वनसे वनमें ढूंढ़ती भईं २० देवोंकी कन्या पार्वती जी की आराधना करनेको किसी समय में अच्छोद सरोवर को जाती भईं फिर वे श्रेष्ठ कमलों समेत सुवर्ण के समान रंगवाले श्रेष्ठ कमल अच्छोद सरोवर से लेकर २१ मूंगा और शुद्ध स्फटिक प्रकुट्टिम में स्नानकर घट्टमें कपड़ाधर मौनसे स्थंडिल पिण्डिकामयी मूर्ति रचकर सुवर्ण और मोतियों के गहने पहनाती भईं २२ चन्दन गन्ध कुंकुमों से पूजनकर श्रेष्ठ कमलादिकों से भी पार्वतीजी की पूजा करती भईं फिर शुभ भक्तिसे भावयुक्त कुमारिका अनेक प्रकार की भेटें चढ़ाकर लास्य प्रयोगों से नाचती भईं २३ गान्धर्व श्रेष्ठस्वर आश्रयणकर वे कमलनयनी स्वभाव की ध्वनि से गानेके योग्य मूर्च्छना समेत मनोहर अक्षरवाले तारसे बढ़ेहुये गतियों से अच्छे स्वरवाले गीत गाती भईं २४ तिस अच्छे भावमें रसकी वर्षासे हर्ष कन्याओं को अत्यन्त हुआ निर्भर चित्तकी वृत्तियां होगईं तिस समय श्रेष्ठ अच्छोद तीर्थमें वेदनिधि मुनिका बड़ा पुत्र स्नान करने के लिये प्राप्त हुआ २५ जोकि रूपमें अधिक श्रेष्ठ मुखवाला फूलेहुये कमल के समान नेत्रवाला युवावस्था से युक्त चौड़े छातावाला सुन्दर भुजा युक्त श्याम छबिवाला दूसरे कामदेवकी नाईंथा २६ अच्छी शिखावाला दण्डसे युक्त धनुषसे कामदेवकी नाईं वह ब्रह्मचारी शोभित हुआ मृग चर्मधारे समुद्र धृग सुवर्णकी दीप्ति समान मौंजी और श्रेष्ठ मेखला करिहांव में धारणकिये था २७ तिस ब्राह्मण

को तिस सरोवर के किनारे कौतुक से युक्त कन्या देखकर प्रसन्न होती भईं कि यह हमारे अतिथि होंगे २८ गीत और नाच छोड़कर तिसके देखने में लालसा युक्त भईं और कामके बाणोंसे इसप्रकार विद्ध भईं जैसे हरिणी बहेलियासे विद्ध होतीहैं २९ देखो देखो ऐसा कहरही हैं पांचों संभ्रम समेत मुग्धा हैं तिस युवावस्थावाले श्रेष्ठ ब्राह्मण में कामदेवके भ्रमको प्राप्त होती भईं ३० और फिर फिर कमलरूपी नयनों से तिनको पूजनकर पीछेसे अप्सराओंने परस्पर विचार प्रारंभ किये ३१ कि जो यह कामदेव हैं तो रतिसे हीन कैसे हुये अथवा देव अश्विनीकुमार हैं तो दोनों साथही जाते हैं ३२ गन्धर्व वा किन्नर वा कामरूप धारण करनेवाले सिद्ध अथवा कोई ऋषिके पुत्र वा कोई मनुष्यों में उत्तम ३३ हैं वा किसीको ब्रह्माजी ने हमारे लिये रचाहै जैसे भाग्यवानों के अर्थमें पूर्व कर्मोंसे निधान रचा होताहै ३४ तैसेही हम कुमारियों को करुणा जलके कल्लोल से लब्ध आर्द्र कियेहुये चित्तवाली पार्वतीजीने उत्तम वर प्राप्त कियाहै ३५ मैंने बरा तूने बरा इसने बरा इसप्रकार पांचों कन्या कहती भईं ३६ तहांपर तिनके वचन सुनकर दो पहर की क्रियाकर बुद्धिमान् मुनिका पुत्र चिन्तना करने लगा कि क्या करने से पुण्य होगा ३७ विश्वामित्र पराशर आदिक कण्डु देवल इत्यादिक ब्राह्मण योगियों में बली लीला पूर्वकही स्त्रियों से विमोहित होगये यह अद्भुत है ३८ भौंहैं रूपलताओं में दृढ़ धनुष से निकलेहुये स्त्रियों के नयनरूपी तीक्ष्णबाणों से कामदेव धन्वीसेहत किसका हृस्वमृगनहीं गिरजाताहै ३९ तबतक नीतिकीबुद्धि विराजमान होती है तबतक जनसमूह का भयहोताहै तबतक अत्यन्त धृतचित्तताहोती है तब तक कुलकी गणनाहोती है ४० तबतक तपस्याकी प्रगल्भता होती है तबतक मनुष्यों का शम सेवनहोता है जबतक पुरुष शीघ्रमद करनेवाले स्त्रियों के नयन आसवों से मदयुक्त नहीं होताहै ४१ स्त्रियां अपने ललित मनोहरों से रागयुक्तको मोहित और मदयुक्त करती हैं और धर्म की रक्षामें परायण हमको भी ये स्त्रियां मोहित और मदयुक्त अपने गुणों से करतीहैं ४२ मांसरक्त मलमूत्रसे रची-

हुई निर्गुण अपवित्र स्त्रियोंकी देहमें कामी अत्यन्त मूढ़चित्तवाले पवित्रता कल्पितकर प्रवेश करते हैं ४३ निर्मलबुद्धिवाले पण्डित साधुओं ने स्त्री को काष्ठसे परिकीर्तित किया है जबतक ये समीप न आवेंगी तबतक हम घरको चलेजावेंगे ४४ श्रेष्ठ स्त्रियां जबतक तिसके समीप नहीं आईं तबतक वैष्णव प्रभाव से ब्राह्मण- अन्तर्द्धानहोगये ४५ तिससमय में वैष्णव ब्रह्मचारीको योगबल से अन्तर्द्धान होजाना यह अद्भुत कर्म देखकर ४६ स्त्रियांभय युक्त नेत्र वाली हरिणीकी नाईं कातरहुईं और नयनलगाकर दशोंदिशा शून्य देखनेलगीं ४७ और परस्पर यह बोलीं कि स्फुट इन्द्रजालको जानताहै वा मायाको जानताहै जो कि देखागया और फिर न दिखाई दिया ४८ तिससमय में विरहकी अग्निसे तिन स्त्रियों का हृदय व्याप्तहोगया जलतीहुई अग्निसे सब वन अत्यन्त स्निग्धहोगया ४९ हे कान्त! इन्द्रजालकी विद्याको त्यागकरो शीघ्रही दर्शनदो मक्षिका के समान आत्माको पहले ग्रास में तुम्हें युक्त नहीं है ५० किससे कष्टको दिखलाया ब्रह्माने तुम्हें कहांसे रचा हमने जाना कि बड़े संतापके हेतु रचेगये हो ५१ क्या तुम्हारा दयाहीनचित्त है क्या हमलोगों में बुद्धि नहीं है हे कांत! क्या तुम क्रूरहो क्या हम लोगों के मनको चुरातेहो ५२ क्या हमलोगों में प्रत्ययनहीं है क्या हमलोगों को परीक्षाकरतेहो क्या ममताहीनहो क्या माया में निपुणहो ५३ क्या चित्तमें प्रवेशकरने को विज्ञानलाघव जानतेहो फिर क्या निकलने का उपाय नहीं जानतेहो ५४ क्या विना अपराधही के हमलोगों पर कोप करतेहो क्या दूसरों के दुःखको नहीं जानतेहो ५५ हे हृदयके ईश्वर! इससमय में तुम्हारे दर्शनके विना हमलोग नष्टहुईजाती हैं नहीं जीवेंगी फिर आपके दर्शनकी आशा से जीरही हैं ५६ हमलोगों को तहांहीं शीघ्र लेचलिये जहां आप गये हैं आपके दर्शन के हरनेवाले ब्रह्मा ने आनन्द के अंकुरों को काटडाला है ५७ सर्वथा दर्शन दीजिये सर्वथा दयाको सेवन कीजिये सज्जन मनुष्य किसी के अन्तको नहीं देखते हैं ५८ इस प्रकार वे कन्या रोदनकर बहुत समयतक परखकर पिता के डरसे

घरजाने को शीघ्रही प्रारंभकरतीभईं ५९ तिसके प्रेमकी जंजीरों से बँधीहुईं विरहसे अत्यन्त व्याकुल बड़े कष्ट से धैर्य धारणकर अपने अपने घरको आतीभईं ६० और आकर सब माताओं के पास गिरपड़ीं तब माताओं ने पूछा क्याहै कहां इतना समयलगा ६१ तब कन्याओं ने कहा कि अच्छोदसरोवर में स्थित होकर किन्नरियों के साथ क्रीड़ाकरती थीं तिसी से दिन नहीं जानपड़ा ६२ हे मातः! हमलोग राहमें थकगईं हैं तिसी से हम लोगोंकी देहमें सन्ताप है बड़े मोह से कहने को कोई समर्थ नहीं है ६३ ऐसा कहकर कन्या तहांही मणिजटित पृथ्वी में लोटगईं और आकारको छिपाती हुई माताओं से बातें करतीभईं ६४ तिस समय में कोई क्रीड़ा के सुरैलेको आनन्द से न नचाती भई दूसरी कन्या कुतूहल से पींजरे में सुवे को न पढ़ाती भई ६५ तीसरी कन्या न्यौरेको न दुलराती भई चौथी कन्या सारिका से न बोलती भई पांचवीं अत्यन्तमुग्धा कन्या सारसों से न खेलतीभई ६६ सब कन्या विनोद को न सेवन करती भईं मन्दिर में क्रीड़ा नहीं करती भईं बांधवों से नहीं बोलती भईं वीणाको न बजाती भईं ६७ कल्पवृक्ष के जितने फूल थे सब अग्नि के समान भये कल्पवृक्ष के मीठे शहदको न पीतीभईं ६८ योगिनियोंकी नाईं वे कन्या नासिका के अग्र में नेत्रों को लगाती भईं उनका ध्यान नहीं दिखलाई पड़ा उत्तम पुरुष में मन होगये ६९ चन्द्रकांत मणिसे ढकेहुये चूते हुये जलवाले कन्दर में क्षणमात्र रह झरोखे में क्षणमात्र स्थितहो क्षणभर जलके यन्त्र के स्थान में रह ७० क्षणमात्र बावली के कमलिनी दलों से शय्या रचतीभईं और सखियां शीतल कमलिनी के दलों से पंखा करती भईं ७१ इस प्रकार वे श्रेष्ठ कन्या युगसमान रात्रिको प्राप्तभईं और बड़ेकष्टसे धारणकर ज्वर समेत कन्याओं की नाईं व्याकुल होगईं ७२ जब प्रातःकाल हुआ तो सूर्य्य नारायणजी को देखकर अपने जीवनको मानती भईं और अपनी अपनी माता से आज्ञालेकर पार्वती जी के पूजने को गईं ७३ तिस विधि से स्नानकर पुष्प धूपों से पार्वती जीका पूजनकर तहां स्थित

होकर गानेलगीं ७४ तो इसी अन्तर में वह ब्राह्मण पिता के आ-
श्रम से अच्छोद सरोवर में स्नान करने के लिये आया ७५ तब
रात्रिके अन्त में सूर्यजी को देखकर कमलिनी की नाईं कन्या तिस
ब्रह्मचारीको देखकर फूलेहुये नेत्रवाली होजाती भईं ७६ और तहां
ब्रह्मचारी के समीप जाकर बायें और दहने बन्धसे भुजोंकी फँसरी
करतीभईं ७७ और बोलीं कि हे प्रिय ! कल्ह चलेगये थे इस समय
में जाने न पावोगे निश्चय हमलोगों से तुम स्वीकार कियेगये हो
यहां तुम्हारा विचारणा नहीं है ७८ भुजाओंकी फँसरी में प्राप्त ब्राह्मण
जब इसप्रकार कहेगये तब हँसकर बोले कि तुमलोगों ने कल्याण-
कारी अनुकूल प्रियवचन कहे हैं ७९ प्रथम आश्रम में निष्ठ मेराव्रत
नाशहोजायगा और विद्या अभी गुरुदेवजी के यहां पढ़रहे हैं पढ़नहीं
चुकेहैं ८० हे कन्याओ ! जिस आश्रममें जो धर्म है वह अच्छे पण्डितों
से रक्षा करने के योग्य है इससे यह बिवाह हम धर्म नहीं मानते
हैं ८१ ब्राह्मणके वचन सुनकर वैशाख महीने में मनोहर ध्वनि में
उत्कण्ठा समेत कोकिलोंकी नाईं श्रेष्ठ कन्या ब्राह्मणसे बोलीं ८२ कि
धर्मसे अर्थ अर्थ से काम और काम से सुख फलका उदय होता है
इसप्रकार निश्चय जाननेवाले विद्वान् वर्णन करते हैं ८३ वह काम
धर्मकी अधिकता से तुम्हारे आगे उपस्थित हुआ है अनेकप्रकार
के भोगों से सेवन करो जिससे कि यह स्वच्छ भूमिहै ८४ तिन
कन्याओं के वचन सुनकर ब्राह्मण गम्भीर वाणी से बोले कि तुम
लोगों के वचन सत्यहैं और मेरा भी आवश्यक व्रतहै ८५ गुरुदेव
जी की आज्ञा पाकर बिवाह कर्म करेंगे अन्यथा नहीं करेंगे ऐसा
कहने पर वे कन्या फिर ब्राह्मण से बोलीं कि हे सुन्दर ! तुम स्फुट
मूर्खहो ८६ हे मुनिजी ! सिद्ध औषध ब्रह्मबुद्धिसे रसायन सिद्धिनिधि
साधु कुलकी श्रेष्ठ स्त्रियां मन्त्र और सिद्धरस ये प्राप्तहुये धर्म्म से
बुद्धिमान् को सेवने योग्यहैं ८७ दैवसे यदि सिद्धि को प्राप्त कार्यहो
तिसमें नीति के जाननेवाले उपेक्षाको नहीं प्राप्तहोते हैं जिससे
उपेक्षा फिर फलके देनेवाली नहीं है तिससे दीर्घीकरण श्रेष्ठ नहीं
८८ विषसे भी अमृत ग्रहण करने योग्यहै अपवित्र से भी सुवर्ण

ग्रहण करना चाहिये नीच से भी उत्तम विद्या पढ़नी चाहिये और स्त्रीरूप रत्न नीच कुलसेभी लेना योग्यहै ८९ सांद्र अनुराग युक्त कुल जन्म निर्मलवाली स्नेह से आर्द्रचित्त अच्छी वाणी वाली अपने आप स्वीकार करनेहारी निश्चय पवित्र युवावस्था युक्त अच्छे रूपवाली कन्या जिन मनुष्यों को प्राप्त होती हैं वे धन्यहैं और धन्य नहीं हैं ९० कहां हम लोग देवों की सुन्दरी हैं और कहां आप तपस्वी ब्रह्मचारी हैं दुर्घटके विधानसे हम मानती हैं कि ब्रह्मा ही पण्डितहैं ९१ तिससे इससमय में गांधर्व विवाहसे हमलोगों को स्वीकार करो आपका मंगल होवे अन्यथा जीवन न होगा ९२ कन्याओं के ये वचन सुनकर धर्म जाननेवालों में श्रेष्ठ ब्राह्मण बोला कि हे मृग समान नेत्रवालियो ! धर्मही धनवाले मनुष्यों को कैसे धर्म त्यागना योग्यहै ९३ धर्म अर्थ काम और मोक्ष ये चारों यथोक्त फल दाता जानने योग्यहैं विपरीत निष्फलहैं ९४ व्रत धारण करने वाले हम अकालमें विवाह न करेंगे जो क्रिया काल को नहीं जानताहै उसकी क्रिया फल को नहीं प्राप्त होती है ९५ जिससे इस धर्म विचार में हमारा मन लगा है तिससे हे कन्याओ ! सुनो हम स्वयम्बरकी इच्छा नहीं करते हैं ९६ इसप्रकार तिस ब्राह्मणका आशय जानकर परस्पर देखकर हाथ से हाथ छोड़कर प्रमोहिनी कन्याचरण ग्रहण करती भई ९७ सुशीला और सुस्वरा भुजों को पकड़ती भई सुतारा और चन्द्रिका मुखको चूंबती भई ९८ तिस पर भी विकार रहित प्रलयकी अग्निके सदृश क्रोधसे अत्यन्त मूर्च्छित ब्रह्मचारी तिन कन्याओंको शाप देते भये ९९ कि पिशाचिनी की नाईं हमको पकड़ेहो इससे पिशाचिनी होवो इसप्रकार शीघ्रही ब्राह्मण से शाप को प्राप्त कन्या ब्राह्मण को छोड़कर आगे स्थित होती भई १०० और बोलीं कि अपराध रहितमें तुमने पाप किया हमने तुम्हारा प्रिय किया और तुमने अप्रिय किया धर्म करनेवालों के अंत करने वाले तुमको धिक्कारहै १०१ अनुरक्त भक्तों और मित्रोंमें द्रोह करने वाले पुरुष को दोनों लोकों का सुखनाश को प्राप्त होताहै यह हमने सुनाहै १०२ तिससे तुम भी हमारे शाप से शीघ्रही पिशाच

हो ऐसा कहकर वे कन्या क्रोधसे व्याकुल श्वास लेती भईं १०३ परस्पर कोपसे तिस सरोवर में वे कन्या और ब्रह्मचारी ये सब पिशाच होगये १०४ वह पिशाच और वे पिशाचिनी अत्यन्त घोर शब्द कर रोते भये और पूर्व कर्म के विपाकों को भोगनेलगे १०५ अपने समयमें पूर्वजन्मके शुभअशुभ होतेही हैं जैसे देवताओं को अपनी छाया दुर्वार होती है तिन कन्याओं के पिता माता और भाई रोनेलगे कि दैव दुरतिक्रमहै १०६।१०७ तदनन्तर अत्यन्त दुःखित वे पिशाच आहार के लिये इधर उधर दौड़तेहुये सरोवरके किनारे बसते भये १०८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

लोमशजी के कहनेसे पिशाचिनी पिशाचका नर्मदाजीके जलके कण के स्पर्श से सुन्दर देह पाकर नर्मदाजी के किनारे विवाहकर नर्मदाजी के पूजन स्नानसे विष्णुलोक पाना ॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर ! इसप्रकार बहुतकाल बीतनेपर मुनियों में श्रेष्ठ लोमशमुनि महा भाग इच्छापूर्व्वक आते भये १ तिन ब्राह्मण को देखकर यूथमें वर्तमान क्षुधासे व्याकुल सब पिशाच खानेकी कामना से दौड़े २ और सब तीव्र लोमशजी के तेजसे जलने लगे आगे स्थित होने में असमर्थ हुये दूरही स्थित रहे ३ तहांपर पिशाच ब्राह्मण पूर्व्वसमय के कर्मके बलसे लोमश जीको देखकर साष्टांग प्रणामकर ४ शिरमें अंजलि बांधकर सत्य वचन बोले कि हे ब्राह्मण ! महाभाग्य के उदय में साधुओं की संगति होती है ५ गङ्गादिक पुण्यतीर्थों में जो मनुष्य सर्वथा स्नान करता है और जो साधुओंका संग करताहै तिनमें साधुओंका संगम श्रेष्ठहै ६ गुरुओं का संगम पृथ्वी में दृष्ट अदृष्ट फल स्वर्ग देनेवाला रोग हरनेहारा और अन्धकार का नाश करनेवालाहै ७ ऐसा कह कर अद्भुत पूर्वसमयके वृत्तान्त को कहतेभये कि ये गन्धर्वोंकी कन्या और हम ब्राह्मण के पुत्रहैं ८ हे मुनि श्रेष्ठ ! सब परस्पर शाप से

विमोहित दीन मुख वाले पिशाच रूपसे आपके आगे स्थित हैं ९ आपके दर्शनसे कन्याओं का और हमारा निस्तार होगा जैसे सूर्य के उदयमें अंधकार समूह नाश होजाताहै तैसेही पिशाचता हम लोगों की नाश होगी १० ये वचन सुनकर महातेजस्वी लोमश जी कृपासे आर्द्रमन कर दुःखित मुनिके पुत्र से बोले ११ कि हमारे प्रसादसे सबकी स्मृति शीघ्रहोवे धर्ममें वर्तमान होवो और परस्परका शाप नाशको प्राप्तहोवे १२ तब पिशाचबोला कि हे महर्षिजी! धर्म कहिये जिससे पाप से छूटजावें यह विलम्ब का काल नहीं है जिससे कि शापकी अग्नि दारुण है १३ तब लोमशजी बोले कि हमारेसाथ विधि से नर्मदाजीका स्नानकरो तुमलोगों को नर्मदाजी शाप से छुड़ादेंगी और प्रकारसे शाप नहीं छूटेगा १४ हे ब्राह्मण! एकाग्र चित्त होकर सुनो निश्चय मनुष्यों का पाप नाश नर्मदाजी के स्नानसे होता है यह हमारी बुद्धि निश्चित है १५ सातजन्मके कियेहुये पाप और वर्तमान पाप सबको नर्मदाजी का स्नान इस प्रकार भस्म करता है जैसे अग्नि रुई की राशिको भस्म करता है १६ हे पिशाच! जिसपाप में प्रायश्चित्त नहीं दिखाई पड़ते वे सब नर्मदाजी के जल में स्नानमात्रही से नाश होजाते हैं १७ नर्मदाजीका स्नान ज्ञान करने वाला है इससे नर्मदाजी मोक्षफल देनेवाली हैं हिमवत् पुण्यतीर्थ सब पाप नाश करनेवाले निश्चय हैं १८ और यह ब्रह्मवादियों ने रचा है कि नर्मदा जी इन्द्रलोक देनेवाली सब कामफल देनेहारी और मोक्ष देनेवाली १९ पापनाश करनेवाली पाप हरनेवाली और सब कामफल देनेवालीहै नर्मदा जीका आप्लाव विष्णुलोक देनेवाला और पाप नाश करनेवाला है २० यमुनाजीका आप्लाव उत्तम और सूर्यलोक देनेवाला है सरस्वती जी का आप्लाव पाप नाशकरनेवाला और ब्रह्मलोक फल का देनेवाला है २१ विशाला विशाल फलके देनेवाली कही है नर्मदाजी का आप्लाव पापरूपी इन्धनके जलाने को अग्निरूप है गर्भहेतु क्रिया का नाशकरनेवाला विष्णुलोक देने वाला मोक्ष देने हारा कहाहै सरयू गण्डकी सिन्धु चन्द्रभागा कौशिकी २२। २३

तापी गोदावरी भीमा पयोष्णी कृष्णवेणिका कावेरी तुंगभद्रा और और भी समुद्रगामिनी नदियां हैं २४ विष्णुलोक देनेवाली नर्मदानदी श्रेष्ठ कहीगईहै नर्मदाजी पूर्वजन्मके कियेहुये पुण्यों से प्राप्तहोती हैं हे मुनिपुत्र ! तहांपर स्नान मोक्षदेनेवाला है २५ स्वर्ग में स्थित देवता निरन्तर गाते हैं कि नर्मदा हमारी कब दृष्टि में प्राप्तहोगी जहां पर स्नानकर मनुष्य गर्भकी वेदनाको नहीं देखते और विष्णु जीके समीप स्थित होते हैं २६ जो बहुत पापी मनुष्य प्रतिदिन नर्मदाजीके जलमें स्नान करते हैं वे धर्म से नरकों में नहीं स्नान करते हैं पवित्रहोकर स्वर्ग में देवताओं के समान घूमते हैं २७ हे पिशाच ! पूर्वसमय में ब्रह्माजीने तीव्र व्रत दान तपस्या और यज्ञों के साथ तराजू में नर्मदाजीको तौला तो मोक्ष के साधन करनेवाली नर्मदाजी श्रेष्ठहुई २८ नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! तिन लोमशजीके वचन सुनकर पिशाच लोमशजीके साथ शीघ्रही नर्मदाजी के स्नानके हेतु जातेभये २९ तब नर्मदाजीके किनारे भाग्य से पवन उत्पन्न हुआ वह पवनप्रवाह स्पर्श करनेवाले तिनके देहमें जलके कणका देनेवाला हुआ ३० तो नर्मदाजीके जलके कण के स्पर्श से पिशाचभावसे वे छूटगये तिसी क्षण से सुन्दर देहवाले होकर नर्मदाजीकी प्रसंशा करनेलगे ३१ तदनन्तर लोमशजी के वाक्य से तिस ब्राह्मण ने नर्मदाजी के किनारे सुखपूर्वक तिन गन्धर्व कन्याओं के साथ विवाह किया ३२ और बहुत समय तक वास किया स्नान पान अवगाहनों से नर्मदाजीका पूजन कर वे विष्णु लोक को प्राप्तहोगये ३३ हे राजन् युधिष्ठिर ! इसप्रकार तुम से महापुण्यकारी सुनने से पाप नाशकरने वाला नर्मदाजी के गुणका आश्चर्यइतिहास कहा ३४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

दक्षिणसिन्धु, चर्मण्वती, अर्बुद, पिंगातीर्थ, प्रभास, सरस्वती सागरका संगम, सलिलराज, और वरदानादितीर्थोंका वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे नारदमुनि ! वशिष्ठजी के कहेहुये और

तीर्थों को मुझसे कहिये जिनको सुनकर पापनाशहोजाते हैं १ तब नारदजी बोले कि हे राजन्! युधिष्ठिर यहां पर वशिष्ठजी के कहेहुये तीर्थोंको सुनिये जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी दक्षिणसिन्धुको प्राप्त होकर २ अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहोता और विमान पर चढ़ता है नियत और नियत भोजनकर चर्मण्वती को प्राप्तहोकर ३ रन्तिदेवसे अनुज्ञात अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्तहोताहै हे धर्मज्ञ! फिर हिमवान् के पुत्र अर्बुद को जावे ४ जहां पर पृथ्वीके पहले छिद्रहुये हैं तहां पर तीनों लोकों में प्रसिद्ध वशिष्ठजी का स्थान है ५ तहां पर एक रात्रि बसकर सहस्र गौ के फलको प्राप्त होताहै फिर मनुष्यों का स्वामी ब्रह्मचारी पिङ्गतीर्थको स्पर्श कर ६ सौ कपिलाओं के फलको प्राप्तहोताहै हे धर्म जाननेवाले मनुष्यों में व्याघ्ररूप! फिर संसारमें प्रसिद्ध प्रभासको जावे ७ जहां पर नित्यही अपने आप अग्नि देवताओं का मुख पवन सारथी वाला वीर स्थित है ८ तिसश्रेष्ठतीर्थमें पवित्र प्रयतमन मनुष्य स्नानकर अग्निष्टोम अतिरात्रके फलको प्राप्तहोता है ९ तदनन्तर सरस्वती सागरके सङ्गम को जाकर सहस्र गौ के फलको प्राप्तहोकर स्वर्गलोगमें प्राप्त होताहै १० हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ! दीप्तिसे नित्यही अग्निके समान प्रकाशितहोता है फिर प्रयतमन होकर सलिलराज के तीर्थ में स्नानकर ११ तहां तीन रात्रि बस कर पितृ देवताओं को तर्पण करै तो चन्द्रमाकी नाईं प्रकाशितहो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे १२ तदनन्तर वरदानतीर्थको जावे जहां पर विष्णुजीको दुर्वासाजीने वरदिया है १३ वरदान तीर्थमें मनुष्य स्नानकर सहस्र गौके फलको प्राप्तहोताहै फिर नियत और नियत भोजनकर द्वारिकाको जावे १४ पिण्डारक में मनुष्य स्नानकर बहुत सुवर्ण को प्राप्तहोता है १५ हे शत्रुओं के दमन करनेवाले महाराज! तिसतीर्थमें पद्मलक्षणसे लक्षित मुद्रा अबतक दिखाई देते हैं यह अद्भुतहै १६ हे कुरुनन्दन! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! त्रिशूलके चिह्नवाले कमल दिखाई देते हैं तहांही महादेव जी का सान्निध्य है १७ हे भारतसागर! और सिन्धुके संगमको

प्राप्तहोकर सलिलराजके तीर्थ में स्नानकर प्रयतमन होकर १८ पितृदेव और ऋषियों को तर्पणकर अपने तेजसे प्रकाशित वरुण के लोकको प्राप्तहोवे १९ हे युधिष्ठिर ! शंकुकर्णेश्वर देवका पूजन करै जिसके फलको बुद्धिमान् अश्वमेध यज्ञसे दशगुणा कहते हैं २० हे कुरुवर ! श्रेष्ठ प्रदक्षिण प्राप्तहोकर तीनों लोक में प्रसिद्ध नामसे प्रसिद्ध सब पाप नाशकरनेवाले तीर्थको जावे जहां पर इन्द्रादिक देवता महादेवजीकी उपासना करते हैं २१।२२ तहां स्नानकर देवसमूहोंसे युक्त महादेवजीका पूजनकर मनुष्य जन्म पर्यन्त के कियेहुये पापोंको दूरकरताहै २३ हे नरश्रेष्ठ! यहां पर सब देवोंसे स्तुतिको प्राप्त तिमि तीर्थ है तहां स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता है २४ हे महाप्राज्ञ राजन्! तहां विष्णुजी ने दिति के नन्दन को जीतकर पूर्व समय में देवताओं के कण्टकों को मारकर शौच किया है २५ हे धर्मज्ञ! फिर स्तुति को प्राप्त वसुधाराको जावे तिसमें जानेही से अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे २६ हे कुरुवर! श्रेष्ठ प्रयतात्मा मनुष्य स्नानकर पितृ देवों को तर्पणकर विष्णुलोक में प्राप्तहोताहै २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! तहां पर वसुओं का श्रेष्ठ तीर्थ है तहां स्नानपानकर वसुओंके सम्मत होताहै २८ फिर सिन्धुतम नामसे प्रसिद्ध सब पाप नाशकरनेवाला तीर्थहै हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! तहां स्नानकर बहुत सुवर्णको प्राप्तहोताहै २९ तिसपीछे पवित्र प्रयत मन सुकृती रज रहित मनुष्य ब्रह्मतुंग को प्राप्तहोकर ब्रह्मलोकको प्राप्तहोताहै ३० फिर सिद्धोंसे सेवित इन्द्रकी कुमारिकाओंके तीर्थको जावे तहां स्नानकर इन्द्रलोक को प्राप्तहोवे ३१ तहांही देवोंसे सेवितरेणुकातीर्थहै तहां स्नानकर ब्राह्मण निर्मल चन्द्रमा के समान होता है ३२ तदनन्तर नियत नियत भोजनकर पञ्चनदतीर्थको जाकर जो क्रमसे कही हुई हैं उन पञ्च यज्ञोंको प्राप्तहोता है ३३ हे धर्म जाननेवाले हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! फिर उत्तम भीमाके स्थान को जावे तहां स्नानकर मनुष्य योनि में नहीं प्राप्त होताहै ३४ हे राजन् ! तहां पर कुण्डल देहमें धारण किये देवीका पुत्र होता है

और सौहज़ार गौवोंके बड़े फलको प्राप्त होताहै ३५ फिर तीनों लोक में प्रसिद्ध गिरिकुञ्जको प्राप्तहोकर ब्रह्माजी को नमस्कारकर सहस्र गौ के फलको प्राप्तहोता है ३६ हे धर्मज्ञ! तदनन्तर उत्तम विमल तीर्थको जावे जहां पर अबतक सोने और चांदीकी मछली दिखाई पड़ती हैं ३७ हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! तहां स्नानकर वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहोवे और सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्तहोवे ३८॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

पचीसवां अध्याय॥

वितस्ता मलय रुद्रास्पद मणिमन्त देविका कामतीर्थ और दीर्घसत्रादि तीर्थों का वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! वितस्ताको प्राप्त होकर पितृ देवताओं को तर्पण कर मनुष्य वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्त होता है १ काश्मीरों में तक्षक नागका स्थानहै वह सब पाप नाश करने वाला वितस्ता नामसे प्रसिद्ध है २ तहां स्नानकर मनुष्य निश्चय वाजपेय यज्ञ के फल को प्राप्त होता है और सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर श्रेष्ठ गतिको प्राप्त होता है ३ तदनन्तर तीनोंलोक में प्रसिद्ध मलयको जावे सायङ्काल की सन्ध्या विधिपूर्वक कर ४ अग्नि में यथाशक्ति चरु छोड़े इसको बुद्धिमान् पितरों का अक्षय दान कहते हैं ५ सौ सहस्रगौवें सौराजसूययज्ञ और सहस्र अश्वमेधयज्ञ से श्रेष्ठ सप्तार्चिष चरुहै ६ हे राजेन्द्र! तिससे निवृत्त होकर रुद्रास्पद को प्रवेश करै महादेवजीको प्राप्तहोकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोवे ७ हे राजन्! एकाग्रचित्तहोकर ब्रह्मचारी मणिमन्त को प्राप्त होकर एक रात्रि बसकर अग्निष्टोम यज्ञ के फलको प्राप्तहोवे ८ हे भरतवंशियों और राजाओं में श्रेष्ठ! फिर लोक में प्रसिद्ध देविकाको जावे जहांपर ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति सुनी-जाती है ९ जो तीनोंलोक में प्रसिद्ध शिवजी का स्थान है देविका में मनुष्य स्नाकर महादेवजी का पूजन कर १० यथाशक्ति

तहां दानकर सब काम से ऐश्वर्य्ययुक्त यज्ञके फलको प्राप्त होवे ११ तहांपर देवर्षियों के सम्मत शिवजी का काम नामतीर्थ है तहां स्नानकर मनुष्य शीघ्रही सिद्धिको प्राप्त होता है १२ जाकर ब्राह्मण का बालक यज्ञकरै यज्ञकरावै पुण्यन्यास स्पर्श कर फिर मरण को न शोचै १३ आधायोजन लम्बी पांचयोजन चौड़ी इतनी को मुनिलोग देविका कहते हैं यह पुण्यकारी और देवर्षियों के सम्मत है १४ हे धर्मजाननेवाले ! फिर क्रमसमेत दीर्घसत्रको जावै जहांपर ब्रह्मादिक देवता सिद्ध श्रेष्ठ ऋषि १५ दीक्षित नियतव्रत होकर दीर्घसत्रकी उपासना करते भये दीर्घसत्र में जानेही से १६ मनुष्य राजसूय और अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है फिर नियत नियत भोजनकर विनाशनको जावै १७ जहां मेरुपृष्ठ में सरस्वती अन्तर्द्धान होगई हैं जो कि चमस शिवोद्भेद और नागोद्भेद में दिखाई देती हैं १८ चमसोद्भेद में स्नानकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको मनुष्य पाता है शिवोद्भेद में स्नान कर सहस्र गौके फल को पाता है १९ नागोद्भेदमें मनुष्य स्नाकर नागलोकको प्राप्तहोता है हे राजेन्द्र! दुर्लभ शशयानतीर्थको प्राप्तहोवे २० जहांशश रूपसे पुष्करा आच्छादित हैं हे भरतवंशी ! हे महाभाग ! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप ! मनुष्य प्रत्येक वर्ष कार्त्तिकी में सदैव स्नान करते हैं तहां स्नानकर सदैव शिवजीके समान मनुष्य प्रकाशित होताहै २१ । २२ और सहस्र गौ के फलको प्राप्त होताहै हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! हे कुरुनन्दन ! नियत मनुष्य कुमार कोटि को प्राप्त होकर २३ पितृ और देवताओं के पूजन में रतहो तहां अभिषेक करै तो दश सहस्र गौवोंके फलको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है २४ हे धर्मज्ञान जानने वाले! हे महाराज! फिर एकाग्र चित्त होकर मनुष्य रुद्रकोटिको जावे जहांपर पूर्व समय में ऋषिकोटि स्थितहै २५ जो कि शिवजी के दर्शन की कांक्षा से वर्षभरसे प्रविष्ट हैं कि हम पहले हमपहले शिवजीको देखेंगी २६ हे भरतवंशी! हे राजन् ! इस प्रकार ऋषिभी प्रस्थान करते हैं तिस पीछे योगीश्वरने योगमें स्थितहो २७ भावितात्मा तिन ऋषियों के क्रोधशा-

न्ति के लिये रुद्रों और ऋषियों के आगे स्थित कोटि रची है २८ अलग अलग ऋषि यह मानतेहैं कि मैंने पहले शिवजीको देखाहै तिन उग्रतेज वाले ऋषियों के ऊपर महादेवजी प्रसन्न होतेहैं २९ हे राजन्! तिनकी परम भक्तिसे तिनको वरदेतेहैं कि इस समयसे लेकर तुम्हारी धर्मबुद्धिहोगी ३० हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! तिस रुद्रकोटि में मनुष्य स्नानकर पवित्र हो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै और कुलको उद्धार करताहै ३१ तदनन्तर हे राजा ओं में श्रेष्ठ! लोकमें प्रसिद्ध संगमको जावे सरस्वती में महापुण्य कारी जनार्द्दनजी की उपासना करै ३२ जहांपर ब्रह्मादिक देवता ऋषि सिद्ध चारण चैत्रके शुक्लपक्षकी चतुर्दशी को प्राप्त होतेहैं ३३ हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! तहां स्नानकर बहुत सुवर्णको प्राप्त होताहै और सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर शिवलोक को जाताहै ३४ हे मनुष्यों के स्वामी! जहांपर ऋषियों की यज्ञ समाप्त हुई हैं तहां अवसान को प्राप्त होकर सहस्र गौवोंके फलको प्राप्त होताहै ३५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपञ्चविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

कुरुक्षेत्र सतत पारिप्लव शालिकिनी सर्पनीवि और अतर्णक द्वारपालादि तीर्थों का वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर! फिर स्तुतिको प्राप्त हुये कुरुक्षेत्र को जावे तहां के गये हुये सब प्राणी पापों से छूट जाते हैं १ जो इस प्रकार निरन्तर कहताहै कि हम कुरुक्षेत्र जावेंगे कुरुक्षेत्र में बसैंगे वह सब पापों से छूट जाताहै २ तहां सरस्वती जी में धीर मनुष्य महीना भर बसे जहां ब्रह्मादिक देवता ब्रह्मर्षि चारण ३ गंधर्व अप्सरा यक्ष सर्प महा पुण्यकारी ब्रह्मक्षेत्र को जाते हैं ४ कुरुक्षेत्र में जो मनसे भी इच्छा करता है उसके पाप नाश होजाते हैं और ब्रह्म लोक को जाताहै ५ श्रद्धा युक्तहोकर कुरुक्षेत्र में जाकर मनुष्य वाजपेय और अश्वमेधयज्ञ के फल

को प्राप्त होताहै ६ हेराजन् ! फिर मत्तर्णक महाबली द्वारपाल के नमस्कार कर सहस्र गौवों के फल को प्राप्त होता है ७ हे धर्म जानने वाले राजेन्द्र ! तिस पीछे अत्युत्तम विष्णुजीके स्थान सतत नामको जावे जहां हरि जी स्थित रहते हैं ८ तहां स्नान कर तीनों लोक के उत्पन्न करने वाले हरि जी को देखकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होता और विष्णु लोक को जाताहै ९ तदनन्तर मनुष्य तीनों लोक में प्रसिद्ध पारिप्लव तीर्थको जावे तो अग्निष्टोम और अतिरात्र के फल को प्राप्त होवे १० पृथ्वी में तीर्थ को प्राप्त होकर सहस्रगौ के फलको प्राप्तहो हे राजन् ! तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य फिर शालिविकिनी को जाकर ११ दशाश्वमेधिक में स्नानकर तिसफल को प्राप्त होताहै और उत्तम नागों के तीर्थ सर्पनीवि को प्राप्तहोकर १२ अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्तहो और नागलोक को जावे हे धर्मज्ञ ! फिर अतर्णकद्वारपाल को जावे १३ तहां एकरात्रि वसकर सहस्रगौ के फलको प्राप्तहोवे तदनन्तर नियत और नियत भोजन करनेवाला मनुष्य पंचनद में जाकर १४ कोटितीर्थ को स्पर्शकर अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै अश्विनी तीर्थ में जाकर रूपवान् होता है १५ हे धर्मजाननेवाले! फिर उत्तम वाराह तीर्थको जावे जहां पूर्वसमय में विष्णुजी वाराहरूप से स्थित हुयेहैं १६ हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! तहां स्थितहोकर अग्निष्टोम के फलको प्राप्तहोताहै तदनन्तर हे राजेन्द्र! जयिनी में सोम तीर्थको प्रवेश करै १७ वहां स्नानकर मनुष्य राजसूय यज्ञके फलको प्राप्त होताहै एकहंसमें मनुष्य स्नानकर सहस्रगौ के फलको प्राप्त होताहै १८ फिर तीर्थ सेवन करने वाला मनुष्य कृत शौचको प्राप्त होकर पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्त होता और पवित्र होजाताहै १९ तिस पीछे बुद्धिमान् महादेवजी के मुञ्जावटनाम तीर्थ को जावे तहां एकरात्रि वसकर गणेश जी के लोकको प्राप्तहोताहै २० हेमहाराज हे राजेन्द्र! तहांही संसार में प्रसिद्धजयाको जाकर स्नानकर सबकाम को प्राप्तहोवे २१ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तीर्थ सेवनकरनेवाला मनुष्य प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र के द्वार को प्रदक्षिणकर २२ पुष्करों के सं-

स्मृत में स्नानकर पितृदेवताओं का पूजनकरे यह तीर्थ महात्मा जमदग्नि जी के पुत्र परशुराम का बुलाया हुआ है २३ हे मनुष्यों के स्वामी हे राजन्! मनुष्य कृतकृत्य होजाता है और अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है फिर तीर्थ सेवन करने वाला रामह्रद को जावे २४ जहां प्रकाशित तेज वाले परशुराम जीने पराक्रम से क्षत्रियों को मारकर पांचकुण्डों को रक्त से पूर्णकर सेवन कियाहै यह हमने सुना है २५ सब पितरतृप्त हुये हैं तैसेही प्रपितामह तृप्तहुये हैं हे राजन्! तब वे प्रसन्न पितर परशुराम जीसे बोले २६ कि हे राम हे राम हे महाभाग! हे भार्गव हे पाप रहित! तुम्हारे ऊपर हम इस पितृभक्ति और पराक्रम से प्रसन्न हैं २७ हे महाबुद्धि युक्त! हे राजेन्द्र! वरमांगो तुम्हारा कल्याणहो क्या इच्छा करते हो जबकहने वालों में श्रेष्ठ परशुराम जीसे इसप्रकार कहा २८ तब आकाश मे स्थित पितरों से हाथ जोड़कर वे बोले कि आपलोग जो मेरे ऊपर प्रसन्नहैं और हमपरकृपा किया चाहते हैं २९ तो पितरों के प्रसाद से यह इच्छाहै कि फिर तपकी वृद्धि हो और जो क्रोधयुक्त होकर मैंने क्षत्रियों को माराहै ३० तो आपके तेज से हम पापसेछूट जावें और पृथ्वी में प्रसिद्ध हमारे कुण्डतीर्थ होजावें ३१ ये परशुराम जीके शुभवचन सुनकर तिससमय में परम प्रसन्न तोषयुक्त पितर उनसे बोले ३२ कि पितृभक्ति से विशेष कर फिर तुम्हारा तप बढ़ेगा और जो क्रोधयुक्त होकर तुमने क्षत्रियों को माराहै ३३ तो पापसे तुम छूटगये और वे अपने कर्मसे मारेगये कुण्ड तुम्हारे निस्सन्देह तीर्थ भाव को प्राप्तहोंगे ३४ इन कुण्डोंमें जो स्नानकर पितरों को तर्पण करेगा तिस के ऊपर पितृप्रसन्न होकर पृथ्वी में दुर्लभ पदार्थ देंगे ३५ मनोवाञ्छित कामना होंगी और निरन्तर स्वर्गलोक होगा हे राजन्! तिससमयमें परशुरामजी के पितर इस प्रकारवरदेकर प्रसन्न होकर परशुराम जीसे सलाहलेकर तहांहीअन्तर्द्धानहोगये ३६ इसप्रकार महात्मा परशुराम जीके पुण्यकारी कुण्डहुये शुभव्रत करने वाला ब्रह्मचारी परशुराम जी के कुण्डों में स्नानकर ३७ परशुराम जीका पूजनकर बहुत सुवर्ण को पाता है

फिर तीर्थ सेवन करने वाला वंश मूल तीर्थ को प्राप्त होकर स्नान
कर अपने वंश को उद्धार करेगा हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! हे राजन् !
कायशोधन तीर्थको प्राप्तहोकर ३८ । ३९ तिसमें स्नानकर शरीर
की शुद्धिको निस्सन्देह प्राप्त होताहै और शुद्ध देहहोकर अत्युत्तम
शुभलोकों को प्राप्तहोताहै ४० तदनन्तर त्रैलोक्यमें दुर्लभतीर्थको
जावे जहां परविष्णुजी ने पूर्वसमय में लोकों का उद्धार कियाहै ४१
हे राजन् ! त्रैलोक्य में प्रसिद्ध लोकोद्धारको प्राप्तहोकर श्रेष्ठतीर्थ में
स्नानकर अपने लोकोंको उद्धार करताहै ४२ श्रीतीर्थको प्राप्त होकर
उत्तम लक्ष्मीको प्राप्त होताहै फिर एकाग्र चित्त होकर ब्रह्मचारी क-
पिलातीर्थको प्राप्त होकर ४३ तहां स्नानकर देवता और पितरों को
पूजनकर सहस्र कपिलाओं के फलको प्राप्त होताहै ४४ नियतमन
वाला व्रतमें परायण मनुष्य सूर्यतीर्थको प्राप्त होकर पितृ देवता-
ओंका पूजन कर ४५ अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्त होता और
सूर्यलोक को जाताहै तीर्थ सेवन करनेवाला क्रमपूर्व्वक गया भवन
को प्राप्त होकर ४६ तहां अभिषेक करै तो सहस्र गऊके फलको
प्राप्तहोवे हे राजन् ! तीर्थ सेवनेवाला गङ्गातीर्थ को प्राप्त होकर ४७
और केन्यास्तीर्थ में स्नानकर उत्तमवीर्य्य को प्राप्त होताहै हे राजे-
न्द्र ! फिर लवर्णक द्वारपाल को जावे ४८ यह सरस्वती का तीर्थहै
जैसे महात्मा इन्द्रका है तहां स्नान कर मनुष्य अग्निष्टोमयज्ञ के
फलको प्राप्त होताहै ४९ हे धर्मज्ञ राजन् ! तिस पीछे ब्रह्मावर्त
को जावे ब्रह्मावर्त में मनुष्य स्नानकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है
५० फिर अत्युत्तम सुतीर्थक को जावे जहां देवताओं समेत पितर
नित्यही स्थित रहते हैं ५१ तहां पितृ देवताओं के पूजन में रत
अभिषेक करै तो अश्वमेधयज्ञ के फलको पावे और पितृलोक को
जावे ५२ हे धर्मज्ञ ! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! क्रमसे और तीर्थ को
प्राप्त होकर काशीश्वर के तीर्थमें स्नानकर ५३ सब व्याधियों से
छूटकर ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै तहां पर मातृतीर्थ है जहां स्नान
करनेवाले की ५४ प्रजा बढ़ती और स्वर्गको प्राप्त होता है फिर
नियत और नियत भोजन करनेवाला शीतवन को जावे ५५ हे

महाराज! हे मनुष्योंके स्वामी! तहांपर बड़ा और जगह दुर्लभतीर्थ है जोकि दर्शनसे एक दण्डमें पवित्र करता है ५६ तिसमें बालोंको बनवाकर पवित्र होजाता है तहांपर और तीर्थों में श्रेष्ठ स्नातलोकातिह है ५७ हे मनुष्यों में व्याघ्ररूप! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहां पर ब्राह्मण विद्वान् तहांहीं तत्पर स्नानकर श्रेष्ठगति को प्राप्त होते हैं ५८ स्वर्णलोमाप नयनतीर्थ में ब्राह्मणों में उत्तम प्राणायामों से अपने लोमोंको नाश करते हैं ५९ पवित्र आत्मा होकर परमगति को जातेहैं दशाश्वमेधिकतीर्थमें स्नानकर परमगति को जातेहैं तदनन्तर लोकमें प्रसिद्ध मानुषतीर्थको जावे ६०। ६१ हे राजन्! तहां काले मृग बहेलिया के बाणोंसे पीड़ित हुये तिस सरोवर में स्नान कर मनुष्य होगये ६२ तिस तीर्थमें ब्रह्मचारी मनुष्य एकाग्रचित्त कर स्नानकर सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर स्वर्गलोक में प्राप्त होताहै ६३ मानुषतीर्थके पूर्व एक कोसपर सिद्धोंसे सेवित आपगा नाम से प्रसिद्ध नदी है ६४ तहां पर जो मनुष्य देवता पितरों को उद्देश कर सावेंका भोजन देताहै तिसके धर्मका फल बड़ा होता है ६५ एक ब्राह्मण के भोजन कराये करोड़ भोजन कराये का फल होता है तहां स्नानकर देवता पितरों को पूजनकर ६६ एकरात्रि बसकर अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै तदनन्तर ब्रह्माजी के उत्तमस्थान को जावे जोकि पृथ्वी में ब्रह्मानुस्वर नामसे प्रसिद्ध है तहां सप्तर्षि कुण्डोंमें स्नान करनेवाला ६७। ६८ और महात्मा कपिलजी के केदार में स्नानकर्त्ता ब्रह्माजी को प्राप्तहोकर पवित्र प्रयतमन होकर ६९ सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होताहै कपिष्ठल के अत्यन्त दुर्लभ केदारको प्राप्तहोकर ७० तपस्यासे पाप जलकर अन्तर्द्धान को प्राप्तहोताहै हे राजेन्द्र! फिर लोकमें प्रसिद्ध सर्वक को जावे ७१ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में शिवजी को प्राप्त होकर सब कामनाओं को प्राप्त होता और स्वर्ग लोकको जाताहै हे कुरुनन्दन! हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तीनकरोड़ तीर्थोंमें श्रेष्ठतीर्थ है रुद्रकोटी तथा कूपमें कुण्डोंमें समन्तक और तहांहीं इलास्पद तीर्थ है ७२। ७३ तहां स्नान और देवता पितरों को

पूजनकर मनुष्य दुर्गति को नहीं प्राप्तहोता और वाजपेययज्ञ को प्राप्त होताहै ७४ किन्दान और किंजप में मनुष्य स्नानकर अप्रमेयदान और यज्ञको प्राप्त होता है श्रद्धायुक्त जितेन्द्रिय मनुष्य कलशीमें जल स्पर्शकर अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्त होताहै सरक के पूर्व महात्मा नारदजी का ७५ । ७६ शुभतीर्थ रामजन्म नामसे प्रसिद्ध है तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर प्राणों को त्यागकर ७७ नारदजी की आज्ञा पाकर दुर्लभलोकों को प्राप्त होताहै शुक्लपक्षकी दशमी में पुण्डरीक को प्रवेशकरै ७८ तहां स्नानकर मनुष्य पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्तहोता है फिर तीनोंलोक में प्रसिद्ध त्रिविष्टप को जावे ७९ तहांपर पुण्यकारी पाप नाश करनेवाली वैतरणीनदी है तहांहीं स्नानकर वृषध्वज शूल हाथ में लेनेवाले शिवजी को पूजन कर ८० सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर परमगतिको मनुष्य जावे हे राजेन्द्र ! फिर उत्तम फलकी वनको जावे ८१ तहां देवता सदैव आश्रित रहते और बहुतवर्ष सहस्रतक बड़ी भारी तपस्या करते हैं ८२ मनुष्य दृषत्पान में स्नान कर देवताओं को तर्पणकर अग्निष्टोम और अतिरात्र के फलको प्राप्तहोता है ८३ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ ! हे राजेन्द्र ! सब देवों के तीर्थ में स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्त होता है ८४ पाणिख्यात में मनुष्य स्नानकर देवताओंको तर्पणकर राजसूय यज्ञके फलको प्राप्तहोता और ऋषि लोक को जाता है ८५ हे धर्मज्ञ ! हे राजेन्द्र ! फिर लोकमें प्रसिद्ध मिश्रक को जावे तहां तीर्थोंको महात्मा व्यासजीने ब्राह्मणों के अर्थ मिला दिया है यह हमने सुना है सब तीर्थों में स्नानकरै और मिश्रक में जो मनुष्य स्नानकरै ८६।८७ फिर नियत और नियतभोजन कर व्यास वनको जावे मनोजव में मनुष्य स्नान कर सहस्र गऊके फलको प्राप्त होताहै ८८ फिर पवित्र मनुष्य देवी के स्थान मधुवनी को जाकर तहां स्नानकर नियत पवित्रहोकर देवता और पितरों को पूजन करै ८९ वह देवीजीकी कृपासे सहस्रगऊ के फल को प्राप्तहोवे कौशिकी और दृषद्वती के संगम में ९० स्नानकर नियत आहारहो सब पापों से छूटजाताहै फिर व्यासस्थली नामतीर्थ

जिसको पुत्रके शोकसे सन्तप्त बुद्धिमान् व्यासजीने देह छोड़ने के लिये निश्चय कियाथा और देवोंने फिर उत्थापित कियाथा ९१। ९२ व्यासजीकी स्थलीको प्राप्तहोकर मनुष्य सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोता है ऋणान्त कूपको प्राप्तहोकर प्रस्थभर तिल देकर ९३ परम सिद्धिको प्राप्तहोता और ऋणों से छूटजाता है वेदीतीर्थ में मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोता है ९४ हे मनुष्यों में श्रेष्ठ ! हे राजन्! अह और सुदिन दो तीर्थ दुर्लभ हैं तिनमें स्नानकर सूर्यलोकको प्राप्तहोताहै ९५ फिर मनुष्य तीनों लोक में प्रसिद्ध मृगधूमको जावे तहां रुद्रपद में स्नानकर महात्मा शिवजी को पूजनकर अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है कोटि तीर्थ में मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोता है ९६। ९७ तदनन्तर तीनों लोकसे प्रसिद्ध वामनकको जाकर तहां विष्णुपदमें स्नानकर वामनजीको पूजनकर ९८ सब पापोंसे विशुद्धआत्मा होकर विष्णुलोकको प्राप्तहोता है कुलपुनमें मनुष्य स्नानकर अपने कुल को पवित्र करताहै ९९ हे मनुष्यों में व्याघ्र ! पवनके ह्रद मरुतों के उत्तम तीर्थको जाकर तहां स्नानकर वायुलोकमें प्राप्तहोताहै १०० देवों के ह्रद में स्नानकर देवोंके स्वामीको पूजनकर देवों के प्रभाव से स्वर्गलोकमें प्राप्तहोताहै १०१ हे मनुष्य श्रेष्ठों में श्रेष्ठ ! शालिहोत्रके शालिसूर्य्य में विधिपूर्व्वक स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊ के फलको प्राप्तहोताहै १०२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! हे राजन् ! सरस्वतीमें श्रीकुञ्जतीर्थ है तहां स्नानकर मनुष्य अग्निष्टोमके फलको प्राप्तहोताहै १०३ फिर अत्यन्त दुर्लभ नैमिषि कुंजको प्राप्तहो निश्चय नैमिषेय तपस्वी ऋषि १०४ पूर्वसमय में तीर्थयात्रा करते हुये कुरुक्षेत्र में गये और सरस्वती में कुञ्जबनाया १०५ जैसा कि ऋषियों को तुष्टिकरनेवाला बड़ा अवकाशहै तिस कुञ्जमें मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोताहै १०६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डे भाषानुवादेषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

कन्यातीर्थ ब्रह्माजीका स्थान सोमतीर्थ सप्तसारस्वतादितीर्थोंका वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हे धर्म्मजाननेवाले युधिष्ठिर ! फिर अत्युत्तम कन्या तीर्थको जावे कन्यातीर्थ में मनुष्य स्नानकर अग्निष्टोमयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है १ हे मनुष्यों व्याघ्र ! तिसपीछे उत्तम ब्रह्माजी के स्थान को जावे तहांपर शूद्रभी स्नानकर ब्राह्मण भावको प्राप्तहोताहै २ विरुद्ध आत्मावाला ब्राह्मण परमगति को प्राप्तहोताहै फिर उत्तम सोमतीर्थ को जावे ३ तहां स्नानकर मनुष्य सोम लोकको प्राप्त होताहै तदनन्तर सप्त सारस्वत तीर्थको जावे ४ जहां पर लोकमें प्रसिद्ध मंकणक ब्रह्मर्षि सिद्ध हुये हैं हे राजन् ! यह सुना है कि पूर्वसमय में मंकणकजी कुशके अग्रसे ५ हाथमें निश्चय घाव करलेतेभये तिस हाथके घाव से शाक का रस गिरनेलगा तो महातपस्वी शाक के रसको देखकर हर्षितहुये ६ और विस्मय से उत्फुल्ल नेत्रहोकर नाचनेलगे तब तिनके नाचने में स्थावर जंगम ७ दोनों तिनके तेजसे मोहित होकर नाचनेलगे तो ब्रह्मादिक देव और तपस्वी ऋषियों ने ८ महादेवजी से ऋषिका हाल कहा कि हे देव ! जैसे यह ऋषि न नाचे तैसा तुम करने के योग्यहौ ९ तब महादेव जी हर्ष चित्तसे नाचते हुये मुनिको देखकर स्थिरों के हितकी कामनासे मुनिसे बोले १० कि हे महर्षे ! हे धर्मज्ञ ! हे मुनिश्रेष्ठ ! किस लिये आप नाचतेहैं इस समय में तुम्हारी किस लिये प्रसन्नता है ११ तब ऋषि बोले कि हे द्विजश्रेष्ठ ! हे ब्रह्मन् ! धर्म मार्गमें स्थित मुझ तपस्वीके घाव से शाकका रस गिरा १२ जिसको देखकर बड़ेहर्ष से युक्त होकर हम नाचतेहैं तब हँसकर महादेवजी रागसे मोहित ऋषिसे बोले १३ कि हे विप्र ! हम विस्मय को न प्राप्त होंगे हमको देखिये ऐसा कहकर तिस समय महादेवजी ने १४ अंगुली के अग्रसे अपना अंगूठा ताडित किया तो पालाके सदृश घाव से भस्म निकलतीभई १५ तिसको देखकर लज्जित मुनि चरणों में गिरते भये कि हम महादेवजी से श्रेष्ठ महान् और देवको

नहीं मानतेहैं १६ हे शूल धारण करनेवाले! देवता राक्षस सब जगत् के तुम्हीं गतिहो आपका रचाहुआ यह चराचर त्रैलोक्य संसार है १७ हे भगवन्! युगके नाशमें सब तुम में प्रवेश करते हैं आप देवताओं से भी जानबे में समर्थ नहीं हैं फिर हम कैसे जानसकें १८ हे सब के स्वामी! हे पापरहित! तुम्हीं में शक्रादिक देवता दिखाई पड़तेहैं प्रतिदिन लोकों के कर्ता और कारयिता सब आपहीहैं १९ आप के प्रसाद से भय रहित सब देवता आनन्द करते हैं इस प्रकार प्रणत ऋषि महादेवजीकी स्तुतिकर बोले २० कि हे महादेवजी! आपके प्रसाद से हमारा तप न नाशहोवे तब प्रसन्न आत्मा महादेवजी ब्रह्मर्षि से यह बोले २१ हे विप्र! हमारे प्रसाद से तुम्हारा तप सहस्र प्रकार बढ़े हे महा मुनिजी! तुम्हारे साथ हम इस स्थान में बसेंगे २२ सप्त सारस्वत में स्नान कर जे हमको पूजेंगे तिनको इस लोक और परलोक में कुछ दुर्लभ न होगा २३ और निस्सन्देह सारस्वत लोक को जावे ऐसा कहकर महादेवजी तहांहीं अन्तर्द्धान होगये २४ तदनंतर तीनों लोक में प्रसिद्ध औशनस तीर्थको जावे जहां पर ब्रह्मादिक देवता तपस्वी ऋषि २५ और कार्तिकेय भगवान् भार्गवजी के प्रिय करने की कामनासे तीनों संध्याओं में समीपता करते हैं २६ सब पाप नाश करनेवाला कपालमोचन तीर्थ है हे मनुष्यों में व्याघ्र! तहां स्नानकर सब पापों से मनुष्य छूटजाता है २७ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ! फिर अग्नि तीर्थ को जावे वहां स्नानकर अग्निलोक को मनुष्य जाता और कुलको उद्धार करता है २८ तहांहीं विश्वामित्रजी का तीर्थ है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे महाराज! तहां स्नान कर ब्राह्मणताको प्राप्त होता है २९ हे मनुष्यों में व्याघ्र! पवित्र और प्रयतमन होकर ब्रह्मयोनि को प्राप्तहो तहां स्नानकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है ३० और निस्सन्देह सात कुल को पवित्र करता है हे राजेन्द्र! फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध कार्तिकेय के पृथूदक नाम से विख्यात तीर्थ को जावे तहां पितृ और देव पूजन में रत मनुष्य अभिषेक करे ३१।३२ तो अज्ञान से वा ज्ञान से स्त्री पुरुष ने मनुष्य बुद्धि

से जो कुछ अशुभ कर्म्म किया हो ३३ वह सब स्नान मात्रही से नाशहोजावें अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहो और स्वर्ग को जावें ३४ कुरुक्षेत्र को पुण्यकारी कहते हैं कुरुक्षेत्र से सरस्वती और सरस्वती के तीर्थ और तीर्थोंसे पृथूदक पुण्यकारी है ३५ सब तीर्थों के उत्तम में जो अपनी देह छोड़ताहै और पृथूदक में जप करताहै वह जन्म को नहीं प्राप्त होताहै ३६ हे राजन्! सनत्कुमार और महात्मा व्यासजीने गान किया है वेदमें भी नियतहै कि पृथूदक को जावे ३७ पृथूदक से पुण्यकारी और तीर्थ नहीं है यह मेध्य पवित्र और निस्सन्देह पावनहै ३८ पाप करनेवाले भी मनुष्य पृथूदक में स्नान कर स्वर्ग को जाते हैं इसप्रकार बुद्धिमान् कहते हैं ३९ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ! हे राजन्! तहांहीं मधुस्रवतीर्थ है तहां स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके फल को प्राप्त होताहै ४० हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ! फिर क्रमसे देवीके तीर्थ संसार में प्रसिद्ध सरस्वती और आरुणा के संगम को जावे ४१ वहां तीन रात्रि बसकर स्नानकर ब्रह्महत्या से छूटजाताहै अग्निष्टोम और अतिरात्रके फल को प्राप्त होताहै ४२ निस्सन्देह सात कुलको पवित्र करताहै हे कुरुकुलोद्वह! तहांहीं अवकीर्ण तीर्थ है ४३ पूर्वसमयमें विप्रों के ऊपर कृपाकर दर्भीने रचाहै ब्राह्मण व्रत उपनयन वा उपवास ४४ और क्रिया मंत्रोंसे निस्सन्देह संयुक्त होताहै हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! क्रिया मन्त्रसे हीन भी तहां स्नान कर ४५ व्रतयुक्त ब्राह्मणहोता है यह पुरातन देखाहुआहै दर्भीजी ने चारोंसमुद्र लाकर प्राप्तकिये हैं ४६ हे मनुष्यों में व्याघ्र! तहाँ स्नानकर दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है और चारसहस्र गौवों के फल को प्राप्तहोताहै ४७ हे राजेन्द्र! फिर तहांहीं शतसहस्रक और साहस्रक दो तीर्थलोक में प्रसिद्धहैं तहां जावे ४८ दोनों में मनुष्य स्नानकर सहस्र गऊकेफलको प्राप्तहोताहै दान वा उपवास सहस्र गुणाहोताहै ४९ हे राजेन्द्र! फिर उत्तमरेणुकातीर्थ को जावे तहां पितृ और देव पूजन में रतहोकर अभिषेककरै ५० तो सब पापों से विशुद्ध आत्माहोकर अग्निष्टोम के फलको प्राप्तहोवे क्रोध और इन्द्रियजीतकर विमोचन में स्पर्शकर ५१ सबदान लेने के पापोंसे

छूटजाताहै फिर जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी पंचवट में जाकर ५२ बड़े पुण्य से युक्तहोकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै जहां वृषध्वज योगीश्वर शिवजी आपही हैं ५३ तिन देवेशको पूजनकर जानेही से सिद्धिकोप्राप्तहोताहै वरुणका तैजस तीर्थ अपने तेजसे प्रकाशित है ५४ जहाँ ब्रह्मादिक देवता और तपस्वी ऋषियों ने देवताओं के सेनापति में गुहको अभिषेक किया है ५५ हे कुरूद्वह! तैजसके पूर्व कुरु तीर्थ है ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय मनुष्य कुरुतीर्थ में स्नानकर ५६ सब पापों से विशुद्ध आत्मा होकर रुद्रलोक को प्राप्त होता है फिर नियत और नियत भोजन कर स्वर्गद्वार को जावे ५७ तो अग्निष्टोम के फल को प्राप्तहो और ब्रह्मलोक को जावे हे राजन्! फिर तीर्थसेवन करनेवाला अनरक तीर्थको जावे ५८ तहां स्नान कर मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है तहांहीं देवताओं समेत ब्रह्मा अपने आप नित्यही प्राप्त रहते हैं ५९ हे पुरुषों में व्याघ्र! हे राजेन्द्र! हे कुरूद्वह! देवता लोग नारायण में परायण हैं तिनकी रुद्रवेदी में सान्निध्य है ६० तिन देवी को प्राप्त होकर दुर्गति को नहीं प्राप्त होताहै हे महाराज! तहांहीं संसार के ईश्वर पार्वतीजी के पति ६१ महादेवजी को प्राप्तहोकर सब पापों से छूट जाता है हे शत्रुओं के दमन करनेवाले! हे महाराज! हे मनुष्यों के स्वामी! कमलनाभ नारायण जी को प्राप्तहोकर ६२ शोभायमान होकर विष्णु लोकको प्राप्तहोता है सब देवों के तीर्थों में स्नानमात्र कर सब दुःखों से छूटकर सदैव शिवजी की नाईं प्रकाशित होता है हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थसेवन करनेवाला फिर अस्थि पुरको जावे ६३। ६४ हे भरतवंशी! पवित्र तीर्थको प्राप्तहोकर पितृ देवताओं को तर्पण करै तो अग्निष्टोम यज्ञ के फलको प्राप्तहो ६५ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहांहीं गंगाह्रद और कूप है तिस कूप में तीन करोड़ तीर्थ हैं ६६ हे राजन्! तहाँ स्नानकर ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै आपगा में मनुष्य स्नानकर महेश्वर जीको पूजनकर ६७ श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है फिर तीनोंलोकमें प्रसिद्ध स्थाणु वटको जावे ६८ तहाँ स्नानकर रात्रिभर स्थित रहे तो रुद्रलोक

को प्राप्त होवे तदनन्तर वशिष्ठजी के आश्रम बदरीवन को जावे ६९ जहां बेरभक्षण किये जातेहैं वहां मनुष्य तीनरात्रि बसे अच्छी प्रकार जो बारह वर्ष बेरभक्षण करताहै ७० और जो तीनरात्रि बसता है तो दोनों समान होते हैं हे राजन् तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य इन्द्रमार्ग को प्राप्तहो ७१ दिन रात्रि के बसने से स्वर्गलोक में प्राप्त होताहै एकरात्र तीर्थको प्राप्तहोकर एकरात्रि मनुष्य बसकर ७२ नियत और सत्यवादीहो ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है हे राजेन्द्र ! फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध तीर्थको जावे ७३ जहां महात्मा तेजकी राशि सूर्यका आश्रम है तिस तीर्थमें मनुष्य स्नानकर अग्निको पूजनकर ७४ सूर्यलोक को प्राप्त होता और कुलको उद्धार करता है हे कुरूद्वह ! तीर्थसेवन करनेवाला मनुष्य सोमतीर्थ में स्नानकर ७५ निस्सन्देह सोमलोक को प्राप्त होता है हे धर्म्म जाननेवाले ! हे राजन् ! फिर दधीचि के अत्यन्त पुण्यकारी पावन लोक में प्रसिद्ध तीर्थको जावे जहां सारस्वत तपस्वी सिद्धिको प्राप्त हुये हैं ७६ । ७७ तिस तीर्थ में मनुष्य स्नानकर वाजपेययज्ञ के फलको प्राप्त होता है और निस्सन्देह सारस्वती बुद्धिको प्राप्त होता है ७८ हे राजन् ! फिर नियत और व्रत में परायण मनुष्य कन्याश्रमको जाकर ब्रह्मचर्य्य से तीनरात्रि बसकर ७९ दिव्य सौ कन्याओं को पाता और ब्रह्मलोक को जाता है हे धर्मजाननेवाले ! फिर सन्निहिती तीर्थ को जावे ८० जहां ब्रह्मादिक देवता और बड़े पुण्य से युक्त तपस्वी ऋषि महीने महीने में प्राप्त होते हैं ८१ सूर्य ग्रहण में सन्निहिती में जो स्पर्श करता है उसने निरन्तर अश्वमेध यज्ञ सौ करली ८२ हे मनुष्यों के स्वामी ! हे मनुष्यों में व्याघ्र ! हे जनों के ईश्वर ! पृथ्वी में जितने आकाश में प्राप्त तीर्थहैं उदपान ब्राह्मण पुण्यकारी स्थान ये महीने महीने सन्निहिती में अमावास्या में प्राप्तहोते हैं ८३ । ८४ तीर्थों के प्राप्त करने से पृथ्वी में सन्निहिती प्रसिद्ध है तहां स्नान और पानकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है ८५ अमावास्या में सूर्य्य के ग्रहण में जो मनुष्य श्राद्ध करता है तिसके पुण्य फलको सुनिये ८६ अच्छीप्रकार सहस्र अश्वमेधयज्ञ

करनेका जो फल है वह स्नान और श्राद्ध करने से मनुष्य पाताहै ८७ जो कुछ स्त्री वा पुरुषका पापकर्म है वह सब निस्सन्देह स्नान मात्रही से नाश होजाता है ८८ और कमलवर्ण यानसे ब्रह्मलोक को जाता है फिर अचक्रुक नाम द्वारपाल के नमस्कार करै ८९ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! हे धर्मजाननेवाले! तहांहीं गंगाह्रद तीर्थ है तहां एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मचारी स्नान करै ९० तो वह ब्रह्मचारी मनुष्य राजसूय और अश्वमेध के फलको प्राप्तहोवे पृथ्वी में पुण्यकारी नैमिषहै आकाशमें पुष्करहै ९१ और तीनों लोकमें कुरुक्षेत्र श्रेष्ठहै कुरुक्षेत्र में हवासे उड़ीहुई धूलि ९२ पापकरनेवाले को भी निश्चय श्रेष्ठगति को प्राप्त करदेती है सरस्वती के दक्षिण और उत्तर ९३ और जे कुरुक्षेत्र में बसतेहैं वे स्वर्ग में बसते हैं कुरुक्षेत्र को जावेंगे कुरुक्षेत्र में हमबसेंगे ९४ जो एकवार भी ऐसा कहताहै वह स्वर्गलोकको प्राप्त होताहै ब्रह्मवेदी में पुण्यकारी ब्रह्मऋषियों से सेवित कुरुक्षेत्रहै ९५ हे राजन्! तिसमें जे बसते हैं वे कभी शोच करने के योग्य नहीं होते हैं तरंड और कारंडकका जो बीचहै रामह्रद और मचक्रुकका जो अन्तर है यह कुरुक्षेत्र समन्तपंचक ब्रह्माजी का उत्तरवेदि कहाता है ९६ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

पुरानेधर्म तीर्थ कलापवन सौगंधिक वन प्लक्षादेवी और ईशानाध्युषित आदि तीर्थों का वर्णन ॥

नारदजीबोले कि हे धर्मजाननेवाले युधिष्ठिर! तदनन्तर पुराने धर्म तीर्थ को जावे जहां महा भागधर्म जी उत्तम तपकरते हैं १ तिन्हों ने अपने नामसे चिह्नित पुण्यकारी तीर्थ किया है तहां धर्मात्मा एकाग्र चित्तहोकर मनुष्य स्नानकरे २ तो निस्सन्देह सातकुल को पवित्रकरै हे धर्मज्ञ! फिर उत्तम कलापवनको जावे ३ एकाग्र चित्तहो बड़े क्लेश से तहां जा स्नानकरै तो अग्निष्टोमयज्ञके फल को प्राप्तहो और विष्णुलोकको प्राप्तहो ४ हे राजन्! फिर मनुष्य

सौगन्धिक वनकोजावे जहां ब्रह्मादिक देवता तपस्वी ऋषि ५ सिद्धचारण गन्धर्व किन्नर महोरग तिसवन में प्रवेशकरतेहुये सब पापों से छूटजाते हैं ६ फिर नदियों में श्रेष्ठ नदियों में उत्तम नदी महापुण्य कारिणी सरस्वती जिसका प्लक्षादेवी नामहै ७ तहां बांबी से निकले जलमें अभिषेककरै पितृ और देवोंको पूजनकरै तो अश्वमेध यज्ञके फल प्राप्त हो ८ तहां पर अत्यन्त दुर्लभ ईशानाध्युषित नामतीर्थ है और बांबी से निकलकर मिलने में छः गुणाहै यह निश्चयहै ९ हे मनुष्यों में व्याघ्र ! तहां स्नानकर सहस्र कपिलाओं और अश्वमेधयज्ञ के फल को मनुष्य पाताहै यह पुराने ऋषियोंने देखाहै १० हे भरतवंशी ! हे मनुष्यों में श्रेष्ठ ! सुगंधाशत कुम्भा और पंचयज्ञतीर्थ को प्राप्त होकर मनुष्य स्वर्ग लोकमें जाता है ११ तहांहीं दुर्लभ त्रिशूलपात्र तीर्थ को प्राप्तहोकर पितृ और देव पूजन में रत मनुष्य अभिषेक करै १२ तो देह छोड़कर निस्सन्देह गणेशजी के लोक को प्राप्त होवे फिर देवी के अत्यन्त दुर्लभराज गृहस्थान को जावे १३ जो देवी तीनों लोक में प्रसिद्ध शाकंभरी नाम से विख्यात हैं दिव्य सहस्रवर्षतक शाक से १४ महीने महीने आहार किया था तहां देवीजीके भक्त तपस्वी ऋषि आतेभये १५ तब शाकहींसे तिनका देवीजी आतिथ्य करती भई तबसे देवीजीका शाकंभरी नाम प्रतिष्ठित है १६ ब्रह्मचारी एकाग्रचित्त होकर नियत और पवित्र हो शाकंभरी को प्राप्तहोकर तीनरात्रि बस शाक भोजन करै १७ तो बारहवर्ष में अच्छीप्रकार शाकभोजन करने से जो फल है वह फल उसको देवीजी के छन्दसे होताहै १८ फिर तीनोंलोक में प्रसिद्ध सुवर्णाख्य तीर्थको जावे जहाँ पूर्वसमय कृष्णजीने प्रसन्नता के लिये शिवजी को आराधन किया १९ और देवताओं से दुर्लभ वरोंको पाया प्रसन्नहुये महादेवजी बोले २० कि हे कृष्ण ! संसार में तुम्हारा आत्मा अत्यन्त प्याराहोगा और सब संसार निस्सन्देह तुम्हारा मुख होगा २१ हे राजेन्द्र ! तहां प्राप्तहोकर शिवजी को पूजनकर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता और गणेशजी के लोकको प्राप्तहोता है २२ फिर मनुष्य धूमावती को जावे वहां

तीनरात्रि बसकर मनसे प्रार्थित कामोंको निस्सन्देह प्राप्तहोवे २३ हे मनुष्योंके स्वामी! हे धर्म जाननेवाले! देवीजीके दक्षिणार्द्ध से रथावर्त्त है तहां श्रद्धायुक्त जितेन्द्रिय मनुष्य आकर २४ महादेवजी के प्रसादसे परमगतिको प्राप्तहोवे हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! प्रदक्षिण वर्तमान होकर २५ सब पाप नाश करनेवाली धरानामनदीको जावे हे महा बुद्धियुक्त! हे मनुष्यों में व्याघ्र! हे मनुष्यों के स्वामी! तहाँ स्नानकर शोचको न प्राप्तहो २६ हे नरव्याघ्र! फिर महागिरिको नमस्कारकर स्वर्गद्वारके तुल्य निस्सन्देह गङ्गाद्वारहै २७ तहां एकाग्रचित्त होकर कोटि तीर्थ में अभिषेक करै तो पुण्डरीक यज्ञके फल को प्राप्तहो और कुलका उद्धारकरै २८ तहां एकरात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो सप्त गंग त्रिगंग और शक्रावर्तमें तर्पण २९ विधिपूर्वक देवता और पितरोंका करै तो पुण्यलोक में प्राप्तहो फिर कनखल में स्नानकर तीनरात्रि मनुष्य बसकर ३० अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो और स्वर्गलोकको जावे हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थ सेवी मनुष्य कपिलावट को जावे ३१ तहां एकरात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो हे राजेन्द्र! हेकुरुश्रेष्ठ! हेमनुष्योंकेस्वामी! नागराज महात्मा कपिल का तीर्थ सब लोक में प्रसिद्ध है तहां नागतीर्थ में अभिषेक करै तो कपिलाओं के सहस्र के फलको मनुष्य प्राप्तहो ३२। ३३ फिर शन्तनुजी के उत्तम तीर्थ ललितकाको जावे हे राजन्! तहां स्नानकर मनुष्य दुर्गति को नहीं प्राप्तहोताहै ३४॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऽष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

उनतीसवाँ अध्याय॥

यमुनाजीका माहात्म्यवर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ! हे राजन् युधिष्ठिर! फिर उत्तम कालिन्दी तीर्थको जावे तहां स्नानकर मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है १ पुष्कर कुरुक्षेत्र ब्रह्मावर्त्त पृथूदक अविमुक्त और सुवर्णाख्य में जिस फलको मनुष्य प्राप्तहो २ हे मनुष्यों में उत्तम! तिस फलको यमुनाजी में भी पावे जिनके मनमें स्वर्ग भोगका राग

वर्तमान हो ३ यमुनाजी में विशेष कर स्नान दानसे आयुआरोग्य सम्पत्ति रूप और यौवनता गुणमें ४ जिनका मनोरथ हो तिनको यमुनाजल नहीं त्यागना चाहिये जे नरकादि से डरते हैं और दारिद्र्य से जे डरते हैं ५ तिनको सर्वथा प्रयत्नसे तहां स्नान करना चाहिये दारिद्र्य पाप दौर्भाग्य रूप कीचड़ के धोनेके लिये ६ यमुनाजलको छोड़कर और नहीं है श्रद्धाहीन कर्म आधाफल देते हैं यमुनाजी स्नान मात्रही से सम्पूर्ण फल देती हैं ७ कामना रहित वा कामना सहित यमुनाजलमें जो स्नान करता है वह इसलोक और परलोक के दुःखोंको स्नानही से नहीं देखता है ८ दोनोंपक्ष में जैसे चन्द्रमा क्षीण और वृद्धिको प्राप्तहोता है तैसेही तहां पापनाश होता और स्नान से पुण्य बढ़ती है ९ जैसे समुद्र में अनेक प्रकारके रत्न सुख पूर्वक प्राप्तहोते हैं तैसे यमुनाजलमें स्नानसे आयु द्रव्य स्त्रियां और सम्पदा होती हैं १० जैसे कामधेनु कामनाको देतीहै और चिन्तामणि भी विचिन्तित को देती है तैसेही यमुनाजी का स्नान सब मनोरथ को देता है ११ सतयुग में तपस्या श्रेष्ठ ज्ञान है त्रेतायुग में यज्ञ करना द्वापर और कलियुग में दान करना श्रेष्ठ है यमुनाजी सदैव कल्याण कारिणी हैं १२ हे राजन्! सबका सब वर्णों और आश्रमों का यमुनाजी में स्नान धर्म है यह निश्चय धाराओं से बरसता है १३ इस भारत वर्षमें विशेषकर कर्म भूमिमें यमुनाजी में नहीं स्नान करनेवालों का निष्फल जन्म कहाहै १४ जैसे अमावस में आकाश मण्डल में चन्द्रमा में ऐश्वर्य नहीं है तैसेही यमुनाजी के स्नान के विना अच्छा कर्म शोभित नहीं होता है १५ व्रत दान और तपस्याओं से तैसे हरि नहीं प्रसन्न होते हैं जैसे यमुनाजी में स्नानमात्रसे केशवजी प्रसन्न होते हैं १६ सूर्यजी के तेजके समान जैसे कुछ तेज नहींहै तैसेही यमुनास्नानके समान यज्ञकी क्रिया नहीं हैं १७ भगवान् की प्रीतिके लिये सब पापोंके दूरकरने के लिये स्वर्गलाभके लिये मनुष्य यमुनाजी में स्नानकरै १८ रक्षितदेह अत्यन्त पुष्टबली और अध्रुव सुन्दर देहसे क्याहै जोकि यमुना स्नानरहित है १९ हाड़ोंके देहमें खंभेहैं नसें बन्धनहैं मांस और रक्तलेपनहैं चमड़ेसे भी बँधा

हुआ दुर्गन्धयुक्तहै मूत्र और विष्ठासे पूर्ण है २० बुढ़ापा शोक और विपत्ति से व्याप्तहै रोगका मन्दिर आतुर रागका मूल अनित्य सब दोषों के आश्रय २१ परोपकार पापार्ति परद्रोह और पराई ईर्षा करने वाले हैं चंचल चुगुल क्रूर कृतघ्न क्षणिक २२ निष्ठुर दुर्धर दुष्ट तीनों दोषसे विदूषित अपवित्रता दुर्गंधि और तीनों तापों से मोहित २३ स्वभावही से अधर्म में रत सैकड़ों तृष्णाओंसे व्याकुल काम क्रोध महालोभ नरक के द्वारों से स्थित २४ कीड़े विष्ठा और भस्मादि अन्त के गुणों को प्राप्त होनेवाला है इसप्रकारका शरीर यमुना स्नान के विना व्यर्थ है २५ यमुना के स्नान से वर्जित मनुष्य जलों में बुल्लों और पक्षियों में अण्डोंकी नाईं मरणही के लिये उत्पन्न होते हैं २६ वैष्णवहीन ब्राह्मण हत हैं पिण्डों के विना श्राद्ध हत हैं ब्राह्मणका न माननेवाला क्षत्रिय हत है आचार रहित कुल हत है २७ दम्भ सहित धर्म हत है क्रोधसे तप हत है दृढ़तारहित ज्ञान हत है अभिमान से वेदादि और पुराणादि सबका सुनना हत है २८ पराई भक्ति से स्त्री हत है ब्रह्मचारी स्त्री से हत है अप्रकाशित अग्नि में होम हत है मायां सहित भक्ति हत है २९ कन्या कन्या वेचनेवाले से हत है अपनेही लिये रसोई का बनाना हत है शूद्र भोजन से यज्ञ हत है कृपणका धन हत है ३० अभ्यासरहित विद्या हत है विरोध करनेवाला बोध हत है जीवित के लिये तीर्थ हत है जीवन के लिये व्रत हत है ३१ सत्यहीन वाणी हत है और चुगुलखोरी की भी वाणी हत है छःकानों में प्राप्त सलाह हत है व्यग्रचित्त होकर जप हत है ३२ वेद रहित में दान हत है नास्तिक मनुष्य हत है श्रद्धारहित जो कुछ परलोक के लिये किया है वह सब हत है ३३ इसलोक में जैसे दरिद्री मनुष्योंका हत है तैसे यमुना स्नान के विना मनुष्योंका जन्म हत है ३४ हे राजन्! सब उपपातक बड़ेपाप यमुना जी के स्नान से सब भस्म होजाते हैं ३५ यमुनाजी में मनुष्य के प्राप्त होने में सब पाप कांपते हैं कि सब पापों के नाश करनेवाले जलमें यदि स्नान करेंगे ३६ तो यमुनाजी में उत्तम मनुष्य अग्निकी नाईं प्रकाशित होंगे सब पापों से इस

प्रकार छूट जावेंगे जैसे मेघों से चन्द्रमा छूट जाता है ३७ गीले सूखे छोटे मोटे वाणी मन और कर्म्मों से कियेहुये पापों को यमुना स्नान इसप्रकार जलाता है जैसे अग्नि समिधों को जलाता है ३८ हे राजाओं में उत्तम ! अभिमान से जो पापज्ञान और अज्ञान से जो किये पाप यमुनाजी में स्नानमात्रही से नाश होजाते हैं ३९ पापरहित मनुष्य स्वर्ग को जाते हैं और पापिष्ठ शुद्धताको प्राप्त होते हैं यमुनाजी के जलमें स्नान करने में यहां सन्देह करना योग्य नहीं है ४० यहांपर विष्णुभक्ति में सब अधिकारी हैं सबको सब देनेवाली पापनाश करनेवाली यमुना देवी हैं ४१ यही श्रेष्ठ मन्त्र है यही श्रेष्ठ तपहै श्रेष्ठ प्रायश्चित्त है यमुना स्नान उत्तम है ४२ हे राजन् ! मनुष्यों को दूसरे जन्मोंके अभ्यास से यमुनाजीके स्नान में इसप्रकार बुद्धिहोती है जैसे जन्म के अभ्यास से अध्यात्म ज्ञानकी निपुणताहोती है ४३ यमुनाजी का उत्तम स्नान संसाररूपी कीचड़के धोने में चतुर है पवित्रोंका पवित्रहै ४४ हे राजन् ! जे सबकामना के फल देनेवाली तिसमें स्नानकरते हैं वे चन्द्र सूर्य ग्रहों के सदृश शुभ भोगों को भोगते हैं ४५ मथुराजी में प्राप्त यमुनामोक्ष देनेवाली कहाती हैं और अधिकपुण्य बढ़ानेवाली हैं ४६ और जगह भी यमुना पुण्य कारिणी और महापाप हरनेवाली हैं मथुराजी में प्राप्त यमुना देवी विष्णुजी की भक्तिदेनेवाली हैं ४७ भक्तिभाव से संयुक्त यदि यमुनाजी में स्नानकरै तो करोड़कल्प सहस्र हरिजी के समीप में बसे ४८ सांख्यसे वर्जित मनुष्य निश्चय मुक्तिको प्राप्तहोते हैं तिनके पितर तृप्तहोते हैं और सैकड़ों कल्प स्वर्ग में तृप्तहीरहते हैं ४९ हे राजन् ! जे मनुष्य यमुनाजी के शुभजलको पीते हैं उनको सहस्रों पञ्चगव्य सेवनसे क्या प्रयोजनहै ५० और करोड़सहस्र तीर्थ सेवनेसे भी क्या प्रयोजनहै तहां पर दान और होम सब करोड़गुणा होताहै ५१ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेऊनत्रिंशोऽध्यायः२९ ॥

तीसवां अध्याय॥

हेमकुण्डल नाम वैश्यके धर्मकार्यों का वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! यहां पर तुमसे पुरातन इतिहासको वर्णनकरते हैं पूर्वसमय सतयुग में श्रेष्ठ निषधनगर में १ हेम कुण्डल नाम बनियांहुआ जो कि कुबेर की दीप्ति के समान कुलीन अच्छी क्रिया करनेवाला देवता ब्राह्मण और अग्निका पूजनकरनेवाला २ खेती और वाणिज्यका करनेहारा अनेकप्रकार से खरीदने और बेचनेवाला गऊ घोड़ा भैंसी आदि पशुओं के पालने में तत्पर ३ दूध दही माठा गोबर तृण लकड़ी फल मूल नमक अदरख आदि पीपरि ४ धनियां साग तेल अनेक प्रकार के कपड़े धातु और मिठाइयों को सदैव बेंचताभया ५ इस प्रकार अनेक भांतिके और उपायों से सदैव आठकरोड़ अशरफी इकट्ठा करता भया ६ इसप्रकार वह महाधनवान् होगया और कानकेपास बाल पकगये तब अपने चित्तमें संसार का क्षणिकत्व पीछे से विचारकर ७ तिस धनके छठवेंहिस्से से धर्म के कार्य करनेलगा विष्णुजी के मन्दिर और शिवालय बनवाता भया बड़ाभारी समुद्रके सदृश ताल खनवाताभया बावली और छोटी तलैया उसने बहुत बनवाईं ८। ९ बरगद पीपल कंकोल जामुन और नीब आदिके वन और शुभ फूलों के वन अपने बलसे करताभया १० और रात्रि में अन्न जल नहीं खाता पीता दिनमें अन्न खाता जल पीता पुरकेबाहर चारोंदिशाओं में अत्यन्त सुन्दर पौसरे बनवाकर चलवाताभया ११ हे राजन्! पुराणों में जितने दान प्रसिद्ध हैं तिनको नित्यही दान में परायण वह धर्मात्मा देताभया १२ जितने जीवके किये पापहैं तिनका प्रायश्चित्त करताभया नित्यही देवपूजामें परायण और नित्य अतिथियों को पूजन करताभया १३ इसप्रकार वर्तमानहुये तिसके दो पुत्र उत्पन्नहुये तिनके अत्यन्त प्रसिद्ध श्रीकुण्डल और विकुण्डल नाम भये १४ तिनके माथे घरछोड़कर हेमकुण्डल तपस्या करनेकेलिये वनको जाते भये तहांपर श्रेष्ठ देव गोविन्द वर देनेवाले प्रभुजीको

आराधन कर १५ तपसे क्लिष्ट शरीर हो सदैव वासुदेवजी में मन लगाकर विष्णुजी के लोकको प्राप्त हुये जहां जाकर शोच नहीं होता १६ हे राजन् ! फिर तिसके दोनों पुत्र बड़े अभिमान से युक्त युवावस्था वाले रूप समेत धनके अभिमान से अभिमान युक्त १७ दुःशील व्यसन में आसक्त धर्म कर्मादि के न देखनेवाले भये माता और वृद्धों के वचन न मानते भये १८ कुमार्ग चलनेवाले दुरात्मा पिताके मित्रों को निषेध करनेवाले अधर्म में निरत दुष्ट पराई स्त्री से भोग करनेवाले १९ गीत और बाजामें निरत वीणा और बेणु में विनोदयुक्त सौ वेश्याओं से युक्त तिस समय गाते हुये निकलते भये २० चाटुकार जनों से युक्त कुंदुरूके समान ओष्ठवाली स्त्रियों में विशारद सुन्दर वेषवाले अच्छे कपड़े पहने सुन्दर चन्दन लगा ये २१ सुगंधित मालाओं से युक्त कस्तूरी के चिह्न से लक्षित अनेक प्रकारके गहनोंकी शोभा से युक्त मोतियों का हार पहने २२ हाथी घोड़े और रथ समूह से इधर उधर क्रीड़ा करतेहुये मदिरा पान कियेहुये पराई स्त्रीकी रति में मोहित २३ पिता की द्रव्यको नाश करते भये सौ वा सहस्र रुपया देतेभये और नित्यही भोगमें परा- यण अपने सुन्दर घरमें स्थित भये २४ इस प्रकार वह धन तिन्हों ने वेश्या विट् नट पहलवान् चारण और बंदीजनों में असत् खर्चसे खर्च किया २५ कुपात्र में यह धन ऊसरमें बीजकी नाईं दिया स- त्पात्रमें नहीं दिया न ब्राह्मणके मुखमें डाला २६ प्राणियों के पालन करने वाले सब पापों के नाश करनेवाले विष्णुजी को नहीं पूजा दोनों की वह द्रव्य थोड़ेही समयमें नाशको प्राप्त होगयी २७ तब दोनों दुःख को प्राप्त परम कृपण भावको प्राप्त होगये शोचकरते हुये मोहको प्राप्त हुये और भूखकी पीड़ाके दुःखसे पीड़ित भये २८ तिन दोनों के घरमें स्थित हुये जब भोजनको कुछ न रहा तब स्व- जन सब बान्धव सेवक जीविका पानेवालों ने २९ द्रव्यके अभावमें छोड़ दिया तब अपने पुरमें चिन्तना करतेभये और पीछे से नगर में चोरी करते भये ३० फिर राजा और मनुष्यों से डरेहुये अपने पुरसे निकलकर पीड़ित होकर वनवास करतेभये ३१ दोनों मूर्ख

निरंतर विषसे अर्पित तीक्ष्ण बाणों से अनेक प्रकार के पक्षी सुवर हरिणऔर रोहूमछली चौगड़े शल्लक गोह और बहुतसे और जीवों को महाबल युक्त हो भिल्लोंको संगले सदैव शिकारमें भुजावाले होते भये ३२। ३३ हे शत्रुओं के ताप देनेवाले! इस प्रकार मांसके आहार करनेवाले पापही का आहार करते भये किसी समयमें एक पहाड़ पर प्राप्तभया दूसरा वनमें जाताभया ३४ तब ज्येष्ठ को शार्दूल और छोटेको सांपने नाश करदिया हे राजन्! एकही दिनमें दोनों पापी नाश को प्राप्त होगये ३५ तो पापी यमराज के दूतों ने बांधकर यमराज के स्थानमें प्राप्तकर सबों ने यमराज जी से कहा कि हे धर्मराज! ये दो पापी मनुष्य आपकी आज्ञा से लाये हैं अपने नौकर हम लोगों को आज्ञा दीजिये प्रसन्न हूजिये क्या करें ३६। ३७ तब चित्रगुप्त से पूछकर यमराज जी दूतों से बोले कि हे वीर! एक को तीव्र कष्टवाले नरकको लेजाइये ३८ और दूसरे को स्वर्ग में स्थापित कीजिये जहां अत्युत्तम भोग हैं तब यमराज की आज्ञा सुनकर शीघ्र करनेवाले दूतों ने ३९ ज्येष्ठ भाई को घोर रौरवमें डालदिया हे राजन्! उनदूतोंमें एक श्रेष्ठ छोटे भाई से मधुर वचन बोला ४० कि हे विकुण्डल! हमारे साथ आइये तुमको स्वर्ग देंगे अपने कर्म से इकट्ठा किये हुये अत्यन्त दिव्य भोगों को भोगिये ४१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रिंशोऽध्यायः ३०॥

इकतीसवां अध्याय॥

विकुंडल नाम वैश्यका यमुना जीमें दोमाघ स्नानकर स्वर्गप्राप्तहोना॥

नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! तब प्रसन्न मन होकर विकुण्डल राह में यम दूत से पूछने लगा और हृदय में सन्देहकर परम विस्मय को प्राप्तहुआ और हृदय में विचार करता भया कि हमको किस फलसे स्वर्ग हुआ १ विकुण्डल जी बोले कि हे दूतों में श्रेष्ठ! हमतुम से श्रेष्ठ संशयको पूछते हैं कि तुल्य कुलमें हम उत्पन्न हुये हैं और दोनों ने समानही कर्म किये २ दुर्मृत्यु भी तुल्यही हुआ यम-

राज जी को भी तुल्यही देखा तुल्यकर्म करने वाला मेरा बड़ा भाई कैसे नरक में डाला गया ३ और हमको स्वर्ग कैसे हुआ इस हमारे सन्देहको काटिये हे देवदूत! हम स्वर्गका कारण नहीं देखते हैं ४ तब देवदूत बोला कि हे विकुंडल! माता पिता पुत्र स्त्री बहन और भाई यह प्राणी के जन्म हेतु की संज्ञा है कर्म भोग करने के लिये है ५ एकवृक्ष में जैसे पक्षियों का समागम होताहै तैसेही पूर्व भावित पुरुष जोजो समीहित कर्म करता है तिसतिस कर्मकाफलसदैव भोगकरता है यह प्रीतिसे तुमसेसत्य कहते हैं कि मनुष्य शुभ अशुभ कर्म ६।७अपना किया काल कालमें फिर फिर भोग करताहै एक कर्म करताहै एक तिसफलको भोग करताहै ८ हे वैश्य! हे धर्मज्ञ! और के कर्म से और कभी लिप्त नहीं होता है तुम्हारा भाई अत्यन्त दारुण पापों से नरक में गिरा और तुम धर्मसे निरंतर स्वर्ग प्राप्त होगे ९ तब विकुंडल बोला कि हे दूत! बाल्य अवस्था से हमारा मन पापों में रतहै पुण्य में रत नहीं है इस जन्म में मैंने पाप किया है १० हे देवदूत! आत्मा के पुण्य कर्म को नहीं जानताहूं जो हमारे पुण्य को जानते हो तो वह कृपा कर हम से कहो ११ तब देवदूत बोला कि हे वनिज्ञो! सुनो जो तुमने पुण्य इकट्ठा किया है तिस सब को हम जानते हैं तुम अत्यन्य निश्चित नहीं जानतेहो १२ हरि मित्र का पुत्र वेद का पारगामी सुमित्र हुआ तिस का पुण्यकारी स्थान यमुना जी के दक्षिण किनारे था १३ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! तिस वन में तिससे तुम्हारी मित्रता हुई तिस के संग से तुमने दोमाघ के महीने यमुना जी के पुण्य जल में सब पापों के हरनेवाले श्रेष्ठ लोक में प्रसिद्ध पाप प्रणाशन नाम तीर्थ में स्नान किये १४। १५ हे वैश्यों के पति! हे पाप रहित! एक माघ की पुण्य से सब पापों से तुम छूट गये और दूसरे माघ की पुण्य से तुमने स्वर्ग प्राप्त किया १६ तिस के पुण्य के प्रभाव से निरंतर स्वर्ग में आनन्द करो और तुम्हारा भाई नरकों में बड़ी पाप की यातना को प्राप्त है १७ तलवार के समान पत्तों से छेदा गया मुद्गरों से विदारण हुआ शिला की पीठ में चूर्ण किया गया तपे हुये अंगारों में भूजागया १८ ये

दूतों के वचन सुनकर भाई के दुःख से दुःखित पुलकावली से चि-
ह्नित सब अंग वाला दीन नम्रतायुक्त होकर १९ तिस देवदूत से
मधुर निपुण वचन बोला कि हे साधो! सज्जनों की सप्तपदी मित्र-
ता अच्छे फल देनेवाली होती है २० मित्र भाव चिन्तन कर तुम
हमसे उपकार करने के योग्य हो और सुनने की इच्छा करते हैं
क्योंकि हम को तुम सर्वज्ञ हो २१ मनुष्य किस कर्म से यम लोक
को नहीं देखते हैं और जिससे नरक को जाते हैं वह हम से कृपा
करके कहिये २२ तब देवदूत बोला कि हे वैश्य! तुमने अच्छा
प्रश्न किया इस समय तुम पापहीन हो पुरुषों के विशुद्ध हृदय में
बुद्धि कल्याणमें उत्पन्न होती है २३ यद्यपि अवसर नहीं है और तुम
हमारी सेवा में परायण हो तथापि तुम्हारे स्नेह से यथा मति कहते
हैं २४जे कर्म मन वाणी से सदैव सब अवस्थाओं में दूसरों को पीड़ा
नहीं देते हैं ते यमराज के स्थान को नहीं जाते हैं २५ प्राणियों के
मारनेवाले पुरुष वेद दान तप और यज्ञोंसे बड़े कष्टसेभी स्वर्ग नहीं
जातेहैं २६ अहिंसा परमधर्म है अहिंसा परमतप है अहिंसा परम
दान है यह सदैव मुनि कहतेहैं २७ जे दयालु मनुष्य हैं ते मसा
सर्प डांस जुआं और मनुष्यों को अपने सदृश देखते हैं २८ ते
मनुष्य तपेहुये अंगार लोहे के कील मद प्रेतों की तरंगिणी और
यमराजकी दुर्गतिको नहीं देखते हैं २९ जे मनुष्य जीवनके लिये
जल और स्थल के रहनेवाले जीवों को मारते हैं वे कालसत्रनरक
की दुर्गतिको प्राप्त होतेहैं ३० तहांपर कुत्तेके मांसको भोजन करते
पीब और रक्तपीते चरबी के कीचड़ में स्नान करते नीचे को मुख
कियेहुये कीटों से काटे जाते ३१ अन्धकार में परस्पर एक दूसरे
को खाते परस्पर घात को करते हुये अनेकों कल्प दारुण शब्द से
रोतेहुये बसतेहैं ३२ सैकड़ों कृमियोनि में जाकर बहुत कालतक
स्थावर होते फिर वे क्रूर सैकड़ों तिर्यग्योनियों में जाते ३३ पीछे
से प्राणियों की हिंसा करनेवाले उत्पन्न होतेही अन्धे काने कुबड़े
लँगड़े दरिद्री और अङ्गहीन मनुष्यहोते हैं ३४ हे वैश्य! तिस से
परलोक और इसलोक में दोनों लोकोंके सुखकी इच्छा करताहुआ

धर्मजाननेवाला मनुष्य कर्म मन और वाणी से हिंसा न करै ३५ प्राणियों की हिंसा करनेवाले दोनों लोकोंमें सुखोंको नहीं प्राप्तहोते हैं और जो प्राणियों की हिंसा नहीं करते वे कहींनहीं डरतेहैं ३६ जैसे सीधी और टेढ़ी जानेवाली नदियां समुद्रही में प्रवेश करती हैं तैसे सब धर्म अहिंसा में दृढ़ प्रवेश करतेहैं ३७ हे वैश्यों में श्रेष्ठ ! सब तीर्थों में स्नान कियेहुये सब यज्ञों में दीक्षित और इस लोक में जिसने प्राणियोंको अभयदिया ३८ जे नियोग और शास्त्र में कहेहुये धर्म अधर्म मिलेहुओं को पालन करते हैं वे यमराज जी के स्थानको नहीं जाते हैं ३९ ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यासी सब अपने धर्म में निरत स्वर्ग में बसतेहैं ४० सब वर्ण और आश्रम जैसा कहाहुआ है तिसके अनुसार चलनेवाले मनुष्य जितेन्द्रियहुये निरन्तर ब्रह्मलोकको जाते हैं ४१ इष्टापूर्त में जे रत पञ्चयज्ञ में जे रत और जे नित्यही दयायुक्तहैं वे यमराजजी के स्थान को नहीं देखतेहैं ४२ इन्द्रियों के अर्थ से निवृत्त समर्थ वेद कहनेवाले और जे नित्यही अग्नि पूजा में रतहैं वे ब्राह्मण स्वर्ग जाते हैं ४३ दीन वदन होनेवाले शूर शत्रुओं से आच्छादित रणभूमियों में जे प्राप्तहैं तिनका सूर्यलोक में मार्ग है ४४ हे वैश्य ! अनाथ स्त्री और ब्राह्मण के लिये शरणागत पालन में जे प्राणोंको छोड़ते हैं वे स्वर्ग से च्युत नहीं होते हैं ४५ लँगड़े अन्धे बालक बूढ़े रोगी अनाथ और दरिद्रियों को जे सदैव पालन करते हैं वे सदैव स्वर्ग में आनन्द करते हैं ४६ कीचड़ में डूबीहुई गौ को और रोग से ग्रस्त ब्राह्मण को जे मनुष्य उद्धार करते हैं तिनको अश्वमेध यज्ञ करनेवालोंका लोक प्राप्त होताहै ४७ जे गऊको ग्रास देतेहैं जे सदैव गऊ की सेवा करते और जे गौ की पीठपर नहीं चढ़ते हैं वे स्वर्ग लोकमें वास करतेहैं ४८ जे गड़हा खोदतेहैं जहां गऊ प्यास रहित होजाती है वे मनुष्य यमलोक को न देखकर स्वर्ग को जाते हैं ४९ जे ब्राह्मण अग्नि देव गुरु और ब्राह्मणोंकी पूजामें नित्यही रत हैं वे स्वर्ग जातेहैं ५० बावली कुआं और ताल आदि में धर्म का अन्त नहीं है जहां जल और स्थल के रहनेवाले अपनी इच्छा

से जल पीते हैं ५१ और वह पण्डितों से नित्यही दान में परायण कहाता है जैसे जैसे प्राणी पानी पीतेहैं तैसे तैसे धर्म की बुद्धि से नाशरहित स्वर्ग होता है प्राणियों का जीवन जल है प्राण जलमें स्थितहैं ५२।५३ हे वैश्य! जे पापी भी मनुष्य नित्य के स्नानसे पवित्र होतेहैं सबेरे का स्नान बाहर और भीतर के पापों को नाश-करता है ५४ प्रातःकाल के स्नानसे पाप रहित मनुष्य नरक को नहीं जाता है स्नान के बिना जो मनुष्य भोजन करताहै वह सदैव मल भोजन करता है ५५ जो मनुष्य नहीं स्नान करता है तिसके पितृ देवता विमुख रहतेहैं और वह पापी मनुष्य अपवित्र रहता है ५६ बिना स्नान करनेवाला नरक भोगताहै कीटादिकों में उत्पन्न होता है जे फिर पर्व में स्रोत में स्नान करतेहैं ५७ ते नरक को नहीं जाते और कुयोनियों में नहीं उत्पन्न होतेहैं दुःस्वप्न और दुष्ट चिन्ता सदैव वन्ध्या होजाती हैं ५८ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! प्रातःकाल के स्नानसे शुद्ध पुरुषों को तिल तिलकेपात्र विधि पूर्वक एक प्र-स्थतिल देना चाहिये इसके देनेसे मनुष्य कभी यमराजकी भूमिको नहीं जातेहैं पृथ्वी सोना गऊ और सोलह दानोंको देकर ५९।६० हे विकुण्डल! स्वर्ग लोक में जाकर वहां से नहीं लौटते हैं बु-द्धिमान् मनुष्य पुण्य तिथियों में व्यतीपात और संक्रांति में ६१ स्नानकर जो कुछ होसका वह देकर दुर्गति में नहीं डूबता है देने-वाले दारुण रौरव नरक के मार्ग को नहीं जातेहैं इसलोक में धन-हीन कुल में नहीं उत्पन्न होते हैं ६२ सत्यबोलनेवाला सदैव मौन रहनेहारा प्रिय वचन कहनेवाला क्रोध रहित अच्छे आचारवाला बहुत न बोलने वाला निन्दा न करनेहारा ६३ सदैव चतुरता युक्त सदैव प्राणियों पर दयासंयुक्त पराये हालों का छिपानेवाला पराये गुण का कहनेवाला ६४ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! जो मन से भी पराई तृणभर द्रव्यको न चुराता हो ये सब नरक की यातना को नहीं देखते हैं ६५ पराये कलङ्क कहनेवाला पाखण्डी पापों से भी अ-धिक है ऐसा मनुष्य प्रलय पर्यन्त नरक में रहता है ६६ कठोर वाक्यों का कहनेवाला नरक में निस्सन्देह जाता है फिर दुर्गतिको

प्राप्त होता है ६७ तीर्थों और तपस्याओं से उपकार न माननेवाले पुरुष की निष्कृति नहीं है वह मनुष्य नरक में बहुत काल घोर यातना को सहता है ६८ जो जितेन्द्रिय और आहार जीतनेवाला मनुष्य पृथिवी में जितने तीर्थ हैं तिनमें स्नान करता है वह यमराज के स्थान को नहीं जाता है ६९ तीर्थ में पाप न करै जीविका न करै दान न लेवै धर्म को न बेंचै ७० तीर्थ में पाप दुर्जर है तीर्थमें दान लेना दुर्जर है तीर्थमें ये सब दुर्जर हैं इनके करने से मनुष्य नरक जाताहै ७१ पाप समूहों काभी करनेवाला मनुष्य एकबार गंगाजी के जलमें स्नानकर गंगाजी के जलसे पवित्र होकर नरकको नहीं जाता है ७२ व्रत दान तपस्या यज्ञ और और भी पवित्र कर्म गंगाजी के बिन्दुसे अभिषेक किये के समान नहीं हैं यह हमने सुनाहै ७३ हे वैश्य ! जो अधममनुष्य और तीर्थके समान गंगाको कहताहै वह बड़े दारुण रौरव नरकको जाता है ७४ धर्म का द्रव जलोंका बीज भगवान् के चरणों से च्युत महादेवजी से मस्तक में धारण कियाहुआ जो गंगाजीका निर्मल जल है ७५ वह निस्सन्देह ब्रह्मही है निर्गुण और प्रकृतिसे परहै निश्चय ब्रह्माण्ड भरमें गंगाजी की समता को कोई नहीं जाताहै ७६ गंगा गंगा जो मनुष्य सैकड़ों योजनोंसे कहताहै वह नरकको नहीं जाता है तिसके सदृश कौन होताहै शीघ्रही और से नरक देनेवाली क्रिया भस्म नहीं होतीहै ७७ हे वैश्य ! तिससे मनुष्यों को गंगाजल में प्रयत्न से स्नान करना चाहिये जो ब्राह्मण प्रतिग्रहके योग्यभी होकर दान न लेवै वह नक्षत्र रूप होकर बहुत कालतक आकाश में प्रकाशित होताहै ७८ जे कीचड़ से गऊको निकालते जे रोगियों की रक्षा करते जे गऊके घरमें मरते हैं तिनके आकाशमें तारा होतेहैं प्राणायाम में परायण पाप कर्म करने वालेभी मनुष्य यमलोक को नहीं देखते हैं प्राणायामों से पाप नाश होते हैं हे वैश्य ! दिन दिन में सोलह प्राणायाम कियेहुये साक्षात् ब्राह्मण के मारने वाले कोभी पवित्र करते हैं ७९ । ८० जे तपस्या करते व्रत नियम और सहस्र गऊका दान करते तिन्हीं के समान प्राणायाम भी है ८१

जो मनुष्य महीने महीने कुशके अग्रसे जलके बिन्दुको सौवर्ष पीता है तिसी के समान प्राणायाम है ८२ बड़े पाप और छोटे पाप सब को मनुष्य प्राणायामों से क्षणभरमें भस्म करताहै ८३ हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! जे उत्तम मनुष्य पराई स्त्रियोंको माता के समान मानतेहैं वे कभी यमयातनाको नहीं जातेहैं ८४ हे वैश्य! मनसे भी जो मनुष्य दूसरों की स्त्रियों को नहीं सेवन करता तिसके समान धर्मात्मा दो लोकमें नहीं है तिसी ने पृथ्वी धारण की है ८५ तिससे धर्म युक्तों को पराई स्त्रियोंका सेवन त्यागना चाहिये पराई स्त्रियां इक्कीस नरकों को लेजाती हैं ८६ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! जिन मनुष्यों के मनमें पराई स्त्रियों में लोभ नहीं उत्पन्न होता ते स्वर्ग को जाते हैं यमराज के यहां नहीं जाते हैं ८७ निरन्तर क्रोधके आदि कारणोंमें जो क्रोधसे नहीं जीता जाताहै वह क्रोध रहित पुरुष पृथ्वी में स्वर्ग जीतने वाला मानने योग्यहै ८८ जो पुत्र पिता माताको वृद्धावस्था का समय न प्राप्त होनेमें भी देवताके समान आराधन करताहै वह यमराज के स्थान को नहीं जाताहै ८९ हे वैश्यों में श्रेष्ठ जे पिताके अधिक भावसे गुरुजी को पूजते हैं वे ब्रह्माके लोकमें अतिथि होते हैं ९० यहां शीलके रक्षण से स्त्रियां धन्यहैं शीलके भंग होने में स्त्रियों को घोर यमलोक होताहै ९१ दुष्टों के संगके छोड़ने से सदैव स्त्रियों को शीलकी रक्षा करनी चाहिये हे वैश्य! शीलसे स्त्रियों को श्रेष्ठ स्वर्ग निस्संदेह होताहै ९२ शूद्रकी रसोई बनाने से और निषिद्ध आचरण से ब्राह्मणकी दुर्गति होती है और नरक जाताहै ९३ जे शास्त्र को विचार करतेहैं वेदके अभ्यास में जे रतहैं पुराण और संहिता को जे सुनाते और पढ़ाते हैं ९४ जे स्मृति के अनुसार चलते हैं धर्मको जे बोध कराते हैं और वेदान्तों में निपुणहैं तिनसे यह पृथ्वी धारण की हुई है ९५ तिन तिन अभ्यास माहात्म्यों से वे सब पाप हीन हो जाते हैं और ब्रह्माजी के लोकमें जाते हैं जहां मोह नहीं है ९६ ज्ञान को न जानकर भी जो वेद शास्त्र से उत्पन्न ज्ञानको देताहै तिस संसार बंधन को विदारण करने वालेकी वेदभी पूजा करते हैं ९७ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! यह अद्भुत रहस्य सुनिये यह

धर्मराज जीको सम्मत और सब मनुष्यों को अमृत देनेवाली है ९८ वैष्णव मनुष्य न यमराज जीको न यमलोक को और न घोर दर्शन वाले भूतों को निश्चय देखते हैं यह सत्य सत्य मैंने कहाहै ९९ हमसे सदैव वारंवार यमराजने कहाहै कि तुम लोगों से वैष्णव त्यागने योग्यहैं वे हमारे सामने नहीं आवें १०० जे प्राणी प्रसंग से एक वारभी केशवजी को स्मरण करते हैं ते सब पाप समूहों को नाशकर विष्णुजी के परंपद को जाते हैं १०१ जो दुराचारी पापी वा अच्छे आचारवालाभी जो मनुष्य विष्णुजी को भजताहो वह सदैव तुमसे त्याग करने योग्यहै १०२ जिसके घरमें वैष्णव भोजन करताहै और जिनकी वैष्णवों की संगतिहै वैष्णवों के संगसे उनके पाप नाश होजाते हैं इससे इनको भी तुमलोग त्याग करदिया करो १०३ हे वैश्य ! इस प्रकार हमको दंडधारण कर्त्ता यमराज देव सदैव सिखलाते हैं इससे वैष्णव मनुष्य यमराजजी की राजधानी को नहीं जाते हैं १०४ हे वैश्यों में श्रेष्ठ ! पापी मनुष्यों को विष्णु जीकी भक्तिके विना नरक रूपी समुद्र तरनेके लिये और उपाय नहीं है नहीं है १०५ हे वैश्य ! मनुष्योंके इष्ट कुत्तेके खाने वाले वैष्णव कोभी हम नहीं देखते हैं क्योंकि वर्ण से बाहरभी वैष्णव मनुष्य तीनों भुवनको पवित्र करता है १०६ पुरुषों के पाप नाश करने के लिये भगवान् के गुण कर्म और नामों का संकीर्तन ही समर्थ है जिससे मरण के समीप प्राप्त पापी अजामिल नारायण नाम पुत्र को रिसाकर नारायण नामसे बुलाकर मुक्तिको प्राप्त हुआहै १०७ जे दोनों कुलमें पूर्व में बहुत काल नरक में मग्नहैं वे तभी स्वर्गको जाते हैं जब आनन्द से हरिजीको पूजते हैं १०८ हे वैश्य ! जे विष्णु भक्तके दास और जे वैष्णवों के अन्न भोजन करने वाले हैं वे आकुलता रहित हुये यज्ञ करने वालोंकी गतिको प्राप्त होते हैं १०९ चतुर मनुष्य प्रयत्नसे सब पापोंकी शुद्धिके लिये वैष्णव के अन्नको मांगे जो न मिले तो जलपीवै ११० गोविन्द ऐसा मंत्र जपते हुये कहीं जो मनुष्य करे तो वह यमराज जी को न देखे और तिसको हम नहीं देखते १११ अंग मुद्रा ध्यान ऋषि और छंद देवता समेत

द्वादशाक्षर मंत्रको दीक्षासे विधि पूर्वक जपे ११२ जे उत्तम मनुष्य मंत्रों के स्वामी अष्टाक्षर मंत्रको जपते हैं तिनको देखकर ब्राह्मण का मारनेवाला भी शुद्ध होजाता और विष्णुजी के समान आपही प्रकाशित होताहै ११३ शंख चक्र धारण कर ब्रह्मके भीतर जाने वाले विष्णु रूपसे वे मनुष्य वैष्णव लोकमें बसते हैं ११४ हृदय सूर्य जल प्रतिमास्थंडिल में मनुष्य विष्णुजी को पूजनकर वैष्णव पद को जाते हैं ११५ अथवा मुमुक्षुओं को वासुदेव जी सदैव पूज्यहैं हे वैश्य! वज्रकीट विनिर्मित शालग्राम मणि चक्रमें सब पाप नाश करनेवाला सब पुण्य देनेहारा और सबको मुक्ति देनेवाला विष्णुजी का अधिष्ठान है ११६।११७ जो शालग्राम शिलोद्भव चक्रमें हरिजी को पूजताहै उसने प्रति दिनमें सहस्र राजसूय यज्ञ करडालीं ११८ वेदान्त सदैव ब्रह्मनिर्वाण अच्युत को मनन करते हैं सोई प्रसाद मनुष्यों को शालग्राम की मूर्तिके पूजनसे होताहै ११९ जैसे महाकाष्ठ में स्थित अग्नि यज्ञके स्थानमें प्रकाशित होताहै तैसेही व्यापी हरि शालग्राम में प्रकाशित होते हैं १२० हे वैश्य! पाप करनेवाले कर्म में अधिकार न होने वाले यमराज जी के स्थानको नहीं जाते हैं १२१ जैसे शालग्राम शिलाचक्र में हरिजी सदैव रमते हैं तैसे लक्ष्मी जीमें और अपने पुरमें नहीं रमते १२२ तिसने अग्निहोत्र किया और समुद्र पर्यन्त पृथ्वीदी जिसने शालग्राम शिलोद्भव चक्रमें हरिजीको पूजा १२३ भो वैश्य! शालग्राम शिलासे उत्पन्न बारह शिलाहैं जिसने विधि पूर्वक पूजाहै तिसके पुण्यको तुमसे कहते हैं १२४ जो द्वादश कालों में कोटि द्वादशलिंग सोने के कमलों से पूजित होवें उतनाही फल एकदिन में शालग्राम जीके पूजन से होताहै १२५ जो फिर भक्ति से शालग्राम शिला के सैकड़े को पूजताहै वह हरिजी के लोक में बसकर इस लोकमें चक्रवर्ती राजा होताहै १२६ जो अधम मनुष्य काम क्रोध और लोभों से व्याप्त हो वहभी शालग्राम शिलाके पूजन से हरिजी के लोकको जाताहै १२७ जो मनुष्य आनन्द से शालग्राम में गोविन्दजीको पूजताहै वह प्रलय पर्यन्त स्वर्गसे नहीं च्युत होता

है १२८ हे वैश्य! तीर्थ दान यज्ञ और अबुद्धिके विना मनुष्य शालग्राम शिलाके पूजनसे मुक्तिको प्राप्त होते हैं १२९ पापी भी शालग्राम शिलाका पूजन करने वाला नरक गर्भत्रास तिर्यक् योनि और कृमि योनिको नहीं प्राप्त होताहै १३० दीक्षा विधान मंत्रका जाननेवाला जो चक्रमें बलिदान करताहै गंगा गोदावरी नर्मदा नदी और मुक्तिके देनेवाली जो नदियां हैं १३१ वे सब शालग्राम शिला के जलमें बसती हैं नैवेद्य अनेक प्रकारके फल धूप दीप विलेपन १३२ गीत बाजा और स्तोत्रादिकों से भक्तिमें परायण जो मनुष्य कलियुग में शालग्राम शिलाका पूजन करताहै १३३ वह करोड़ सहस्र वर्ष हरिजी के समीप रमण करताहै करोड़ों लिंगों के दर्शन और तिनके पूजनों से जो फल होताहै १३४ वह शालग्राम शिला के एक दिन पूजन से होताहै शालग्राम शिलासे उत्पन्न लिंगके एकबार पूजन में १३५ सांख्य से वर्जित मनुष्य निश्चय मुक्तिको प्राप्त होते हैं शालग्राम शिलारूपी जहां केशवजी स्थित होते हैं १३६ तहां देवता यज्ञ देवता और चौदहों भुवन स्थित रहते हैं शालग्राम शिलामें जो मनुष्य श्राद्ध करता है १३७ तिसके पितर तृप्त होकर सौ कल्प तक स्वर्ग में स्थित होते हैं जे मनुष्य नित्यही शालग्राम शिलाके जलको पीते हैं १३८ उनको सहस्रों पञ्चगव्य सेवनसे और करोड़ सहस्रतीर्थ सेवन से क्या प्रयोजन है १३९ यदि पुण्यकारी शालग्राम शिला के अंगसे उत्पन्न जलको पीता है शालग्राम शिला जहां है तहां तीनयोजन तीर्थहै १४० तहां दान और होम सब करोड़ गुणा होता है जो बिन्दु के बराबर शालग्राम शिला के जलको पीता है १४१ वह विष्णुजीका सेवन करनेवाला मनुष्य फिर माता के दूधको नहीं पीता है शालग्राम के समीप में चारोंओर कोस कोस भर १४२ कीटक भी मरकर श्रेष्ठ वैकुण्ठ स्थान को जाता है जो उत्तम शालग्राम शिला चक्रको दान देता है १४३ उसने पर्वत वन कानन समेत पृथ्वी चक्र देडाला शालग्राम शिलाका जो मनुष्य मूल्यकर्ता १४४ बेंचनेवाला सलाह देनेवाला और परीक्षाओं में जो प्रसन्न

होता है वे सब प्रलय पर्यन्त नरक को जाते हैं १४५ हे वैश्य! तिससे चक्रका खरीदना और बेंचना पापसे डरनेवाले छोड़ देवें बहुत कहने से क्या है १४६ हरि वासुदेवजी का स्मरण सब पाप हरनेवाला है नियतेन्द्रिय मनुष्य वन में घोर तपस्याकर १४७ जो फल पाताहै वह भगवान् का नमस्कारकर पाताहै मोहयुक्त मनुष्य बहुत पापकर १४८ नरकको नहीं जाता है सब पाप हरनेवाले हरिजीके पास जाकर पृथ्वी में जो तीर्थ और पुण्यकारी मन्दिर १४९ तिन सबको विष्णुजीके नामों के कहने से प्राप्त होता है देव शार्ङ्ग धनुष धारण करनेवाले विष्णुजी को जे प्रपन्न और परायण हैं १५० तिनकी यमराज की सालोक्य नहीं है और उनके नरक में स्थान नहीं होतेहैं हे वैश्य! जो वैष्णव मनुष्य शिवजी की निन्दा करता है १५१ वह वैष्णवलोक को नहीं प्राप्तहोता है बड़े नरकको जाता है मनुष्य प्रसंग से एक एकादशी का व्रतकर १५२ यमराज की यातना को नहीं जाता है यह लोमश से सुना है ऐसा पवित्र कोई तीनोंलोक में नहीं है १५३ भगवान् के दोनों दिन पाप नाश करनेवाले हैं हे वैश्यों में श्रेष्ठ! तबतक इसदेह में पाप बसते हैं १५४ जबतक प्राणी शुभभगवान् के दिनका व्रत नहीं करता है सहस्र अश्वमेधयज्ञ और सौ राजसूय यज्ञ १५५ एकादशी के व्रतकी सोलहवीं कला को नहीं प्राप्त होते हैं हेवैश्य! ग्यारह इन्द्रियों से जो मनुष्य ने पाप किये हैं १५६ वे सब एकादशीके व्रत से नाशको प्राप्त होतेहैं एकादशीके बराबर कोई पुण्यकारी लोकमें नहीं है १५७ जिन्हों ने व्याजसे भी एकादशीका व्रत किया है वे यमराज के बशको नहीं प्राप्त होते हैं यह एकादशी स्वर्ग मोक्ष देनेवाली शरीर को आरोग्य देनेहारी १५८ सुन्दरस्त्री देनेवाली जीतेहुये पुत्र देनेहारी है हे वैश्य! गङ्गा गया काशी पुष्कर १५९ वैष्णवक्षेत्र यमुना और चन्द्रभागा नदी एकादशी के तुल्य नहीं हैं १६० जिससे यहां विना परिश्रम वैष्णवपद प्राप्त होता है रात्रि में जागरणकर एकादशी में व्रतकर १६१ दश पिता के पक्षके दश माता के पक्ष के और दशस्त्रीके पक्षके पहले के पु-

रुषों को निश्चय उद्धार करता है १६२ इन्द्र सेम्भ परिश्यक्त ग-
रुड़ से कियेहुये केतनवाले माला पहिने और पीले कपड़े धारण
किये हरिजीके मन्दिर को जाते हैं १६३ हे वैश्योंमें श्रेष्ठ ! पापीभी
मनुष्य बाल्यावस्था वा युवावस्था व वृद्धावस्था में निश्चय एका-
दशी का व्रतकर दुर्गतिको नहीं प्राप्तहोता है १६४ इस लोक में
तीनरात्रि व्रतकर वा तीर्थ में स्नानकर सोना तिल और गौवों को
देकर मनुष्य स्वर्ग कोजाते हैं १६५ हे वैश्य! जे तीर्थ में स्नाननहीं
करते जिन्हों ने सोना नहीं दिया और कुछ तपस्या नहीं की वे सब
जगह दुःखित रहते हैं १६६ संक्षेप से नरकका निरूपणधर्म कहा
गया सब प्राणियों में द्रोह रहित वाणी मन काय कर्मों से १६७इ-
न्द्रियों का निरोध दान हरि जीका सेवन वर्ण और आश्रम कीक्रि-
याओंका विधि से सदैव पालन १६८ स्वर्ग की इच्छा करने वाला
करै तप और दान को न कहै आत्मा के हितकी कामना से जैसी
शक्ति हो तैसा दानदेवै १६९ हेवैश्य !दरिद्र भी जूता कपड़ा अन्न
पत्र मूल फल और जलको नित्य देवै १७० इसलोक और परलोक
में नहीं दिया हुआ नहीं प्राप्तहोताहै देनेवाले तिनतिन यमयात-
नाओं को नहीं देखते हैं १७१ दीर्घआयुवाले और धनवान् फिर
फिर होते हैं यहां बहुतकहने से क्याहै अधर्म से दुर्गति को प्राप्त
होते हैं १७२ और धर्म से सब जगह सदैवस्वर्ग को जाते हैं १७३
तिससे वाल्यावस्था से लेकर धर्म का संग्रह करना चाहिये यह सब
तुमसे कहा और क्या सुनने की इच्छाहै १७४ तब विकुंडल बोले
कि हे सौम्य ! आपके वचन सुनकर हमारा प्रसन्न चित्त है गंगाजी
का जल शीघ्रही पापपाश करनेवाला हैऔर सज्जनों के वचनपाप
हरनेवालेहैं १७५ सज्जनों का स्वाभाविकगुण उपकारकरने और
प्रिय कहने के लियेहै अमृतमण्डलवाला चन्द्रमा किसने शीतल
कियाहै १७६ हे देवदूत ! तिससे दया से पूंछतेहुये हमसे कहियेह-
मारे भाईकी शीघ्रही नरक से निष्कृति कैसे होगी १७७ ये तिसके
वचनसुनकर ध्यान से देखकर क्षणमात्र ध्यानकर तिसकी मैत्रीरूप
रस्सी में बँधाहुआ देवदूत बोला १७८ कि हेवैश्य! जो तुमने आ-

ठवें जन्ममें पुण्य इकट्ठा कियाहै तो सब भाईको दीजिये तिसकेस्वर्ग की जो इच्छा करतेहो १७९ तब विकुंडल बोला कि हे दूत! क्यावह पुण्य है कैसे हुईहै पूर्वसमयमें क्या जन्मथा यहसब कहिये फिर शीघ्रहीं दूंगा १८० तब देवदूत बोला किहे वैश्य ! सुनो हेतुसमेत तिसपुण्य को कहतेहैं पूर्वसमय पुण्यकारी मधुवन से शाकुनिऋषिहुये १८१ वे तपस्या और विद्या के पढ़ाने के काममें युक्त तेज में ब्रह्मा के समान भये तिसके रेवती में नवपुत्र ग्रहों कीनाईं उत्पन्नहुये १८२ ध्रुव, शील, बुध, तार और पांचवां ज्योतिष्मान् ये अग्निहोत्र में रत गृहस्थाश्रम के धर्मों में रमते भये १८३ निर्मोह, जितकाम, ध्यान कोश, गुणाधिक ये चारोब्राह्मणके पुत्र गृहसे विरक्त हुये १८४ संन्यास आश्रम में युक्त सबकामसे वाञ्छा रहित सब एक गांवमें बसते संग रहित स्त्री रहित १८५ निराश प्रयत्न रहित लोष्ट पत्थर और सुवर्ण समान समझने वाले जो कोई कपड़े देवे तो कपड़े पहनने वाले और जो कोई भोजनकरावे तो भोजनकरें १८६ सायंकाल के ग्रहकीनाईं नित्यहीं विष्णु जीके ध्यानमें परायण निद्रा और आहार के जीतने वाले और वात शीत के सहनेवाले हुये १८७ विष्णु रूपसे चराचर सब संसारको देखते हुये लीलापूर्वक पृथ्वी में परस्पर मौन हुयेघूमते भये १८८ देखाहै ज्ञान जिनने संदेह रहित चिद्विकार में विशारद योगी कोई द्रव्यमात्रकी क्रियानकरते भये १८९ इसप्रकार वेयोगी आठवें जन्ममें पूर्वसमयपुत्र स्त्री कुटुम्ब वाले मध्यदेश में स्थित तुम्ह ब्राह्मणके १९० घरमें दो पहर में भूख और प्यासयुक्त आते हुये वैश्वदेवके अन्तर कालमें योगियों को घरके आंगन में तुमने देखा १९१ तो गद्गद वाणी समेत नेत्रों में आंशूसहित हर्ष और संभ्रमसमेत बहुत मानकर दण्डवत् प्रणाम करते भये १९२ चरणों में मस्तक से प्रणामकर दोनों हाथ जोड़कर सत्य वाणीसे सबको तिस समय में अभिनन्दित किया १९३ और बोले कि इस समय हमारा जन्म सफल हुआ जीवन सफल हुआ इस समय विष्णुजी मेरे ऊपर प्रसन्न हुये इसी कालमें सनाथ पवित्र १९४ और धन्य हुआ घर धन्य हुआ कुटुम्बी धन्य हुये

हमारे पितर इस समय धन्य हुये गौवें सुना हुआ और धन धन्य हुये १९५ जिससे तीनों तापके हरनेवाले आपके चरण मैंने देखे जिससे आपके दर्शन भगवान् की नाईं धन्य हैं १९६ हे वैश्यों में श्रेष्ठ! इसप्रकार पांव धोकर पूजनकर श्रेष्ठश्रद्धासे मस्तकमें धारण किया १९७ जहां चरण धोनेका जल श्रद्धासे शिरसे धारण किया गया चन्दन फूल अक्षत धूप दीपसे भावसमेत १९८ पूजन भया और सुन्दर अन्नसे संन्यासियों को भोजन कराया तब वे परमहंस तृप्त हुये रात्रिमें मन्दिर में विश्राम करते भये १९९ जो ज्योतियों को मत ज्योति परब्रह्म है तिसका ध्यान भी करते भये हे वैश्यों में श्रेष्ठ! तिनके आतिथ्य से जो उत्पन्न पुण्य हुई २०० वह निश्चय सहस्र मुखसे कहने को हम नहीं समर्थ हैं भूतोंमें प्राणी श्रेष्ठहैं प्राणियों में बुद्धिजीवी २०१ बुद्धिमानों में मनुष्य मनुष्यों में ब्राह्मण जाति ब्राह्मणों में विद्वान् विद्वानों में कृतबुद्धि कृतबुद्धियों में कर्त्ता कर्त्ताओं में ब्रह्मके जाननेवाले श्रेष्ठहैं २०२ इससे वे अत्यन्त पूज्य हैं तिसीसे तीनोंलोकमें श्रेष्ठहैं २०३ हे वैश्योंमें श्रेष्ठ! तिनकी संगति महापाप नाश करनेवाली है गृहस्थाश्रमी के घरमें विश्रामको प्राप्त संतुष्ट ब्रह्म जाननेवाले २०४ जन्म पर्यन्तके पाप क्षणभरमें नाश करते हैं जो गृहस्थके मरणपर्यन्तके इकट्ठा कियेहुये पापहैं २०५ तिन सबको एक रात्रि बसकर संन्यासी जला देताहै तिसपुण्यको अपने भाईको दीजिये जिससे नरकसे छूटजावे २०६ ये दूतके वचन सुनकर शीघ्रही पुण्य को देतेभये तब प्रसन्न चित्तसे वह भाई नरकसे निकल आया २०७ देवोंने दोनोंके ऊपर फूल वर्षाकर पूजन किया तब वे स्वर्गकोगये तिन दोनोंसे अत्यन्त पूजित दूत जैसे आयाथा वैसेही गया २०८ सब भुवनके बोध करनेवाले वेदके वचनके तुल्य देवदूतके वाक्य सुनकर वैश्य पुत्र अपने किये हुये पुण्य दानसे भाईको तारकर भाईके साथ इन्द्रके श्रेष्ठलोकको जाताभया २०९ हे राजन्! जो इस इतिहासको पढ़ता वा सुनताहै वह शोकरहितहोकरसहस्रगोदानके फलको प्राप्तहोताहै २१०

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय॥

सुगन्ध तीर्थ रुद्रावर्त गंगा सरस्वती संगम कर्णह्रद कुब्जाम्रक और अरुन्धती वटादि तीर्थोंका वर्णन॥

नारदजीबोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ! युधिष्ठिर फिर संसारमें प्रसिद्ध सुगन्ध तीर्थको जावे तो सब पापोंसे शुद्ध आत्मा होकर ब्रह्मलोकमें जावे १ हे मनुष्यों के स्वामी! हे राजन्! फिर तीर्थ सेवन करनेवाला मनुष्य रुद्रावर्त को जावे तहां स्नानकर मनुष्य स्वर्ग लोकमें प्राप्त होताहै २ हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ! गंगा और सरस्वतीके संगम में स्नान कर मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको पाता और स्वर्गलोक को जाता है ३ तहां कर्णह्रदमें स्नानकर शंकरदेवजी को पूजनकर दुर्गति को नहीं प्राप्तहोता और स्वर्ग लोकको जाता है ४ फिर तीर्थ सेवन करनेवाला यथाक्रम कुब्जाम्रक को जावे तो सहस्र गऊके फल को प्राप्तहो स्वर्ग लोकको जावे ५ तीर्थसेवी मनुष्य अरुन्धतीवट को जावे वहां सामुद्रक को स्पर्शकर तीन रात्रिबसकर ६ सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो स्वर्ग लोकको जावे फिर एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मचारी ब्रह्मावर्त को जावे ७ तो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो स्वर्गलोकको जावे फिर यमुना प्रभवतीर्थ को जावे वहां यमुनाजल को स्पर्शकर ८ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध दर्वी संक्रमण तीर्थको पाकर ९ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो स्वर्गलोकको जावे फिर सिद्ध गन्धर्वोंसे सेवित सिन्धु के प्रभव को जावे १० तहां पांचरात्रि बसकर बहुत सुवर्णदेवे तदनन्तर मनुष्य अत्यन्त दुःखसे प्राप्तहोनेवाली देवीको प्राप्तहोकर ११ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो शुक्रजी की गति को प्राप्तहो फिर ऋषिकुल्या को प्राप्तहोकर वसिष्ठजी के यहां जावे १२ वसिष्ठजी के जाने से सब वर्ण ब्राह्मण होजाते हैं ऋषिकुल्या में मनुष्य स्नानकर ऋषि लोकको प्राप्तहोता है १३ हे मनुष्यों के स्वामी! यदि तहां शाक भोजन कर महीनाभर बसे भृगुतुंग को प्राप्तहोकर अश्वमेध यज्ञकेफलको प्राप्तहो १४ वीरप्रमोक्षको जाकर

सब पापोंसे छूटजाता है कार्तिक माघमें दुर्लभ तीर्थ को प्राप्तहोकर १५ पुण्यकर्त्ता अग्निष्टोम और अतिरात्र के फलको प्राप्तहोता है फिर सन्ध्या को अत्युत्तम विद्यातीर्थ को प्राप्तहोकर १६ स्पर्शकरै तो सब विद्याओंका पारगामी होवे सर्वपाप प्रमोचन महाश्रम में रात्रि भर बसे १७ निराहारहोकर एककाल तो शुभलोकों में बसे छःकाल व्रतसे महालय में महीनाभर बसकर १८ तरकर दशपहले के और दशपीछे के प्राणियों को तार देवे पुण्यकारी श्रेष्ठ देवताओं से नमस्कार कियेहुये माहेश्वरजी को देखकर १९ सब कृत्यों में कृतार्थ होकर मरण को कहीं न शोचे सब पापोंसे विशुद्ध आत्मा होकर बहुत सुवर्ण को प्राप्तहोवे २० फिर ब्रह्मासे सेवित वेतसिका को जावे तो अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहो परमगतिको प्राप्तहो २१ तदनन्तर सिद्धोंसे सेवित सुन्दरिका तीर्थको प्राप्तहोकर रूपकाभागी होता है यह पुरातन मुनियों ने देखा है २२ फिर एकाग्रचित्तहोकर ब्रह्मचारी ब्राह्मणिका को जावे तो कमल के वर्णवाले विमानसे ब्रह्म लोकको प्राप्तहोता है २३ तदनन्तर पुण्यकारी ब्राह्मणों से सेवित नैमिषतीर्थ को जावे तहां देवगणों समेत ब्रह्मा नित्यही बसतेहैं २४ नैमिषको जब चले तब आधापाप नाश होजाता है और वहां प्रवेशकर मनुष्य सब पापसे छूटजाताहै २५ हे भरतवंशीयुधिष्ठिर! तीर्थमें तत्पर धीर मनुष्य तहां महीनाभर बसे पृथ्वी में जितने तीर्थ हैं नैमिष में सब हैं २६ तहां नियत और नियत भोजन करनेवाला मनुष्य अभिषेककर राजसूय यज्ञ के फलको प्राप्त होता है २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! और सातकुलको भी पवित्र करता है जो व्रत में परायण मनुष्य नैमिष में प्राणों को छोड़ता है २८ वह स्वर्गलोक में स्थित होकर आनन्द करता है इसप्रकार बुद्धिमान् ऋषि कहते हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! नैमिष नित्यही मेध्य और पुण्यकारी है २९ मनुष्य गङ्गोद्भेद तीर्थको प्राप्तहोकर तीनरात्रि बसकर वाजपेययज्ञ के फलको प्राप्त होता है और सदैव ब्रह्मभूत होता है ३० सरस्वती को प्राप्त होकर पितृ और देवताओं को तर्पणकरै तो सारस्वतलोकों में निस्सन्देह आनन्द करै ३१ हे मनुष्यों के स्वामी! तदनन्तर

तीर्थसेवी मनुष्य बाहुदा को जावे तहां एक रात्रि बसकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है ३२ और देवसत्रयज्ञ के फलको पाता है फिर पुण्य-जनों से युक्त पुण्यकारिणी रजनी को जावे ३३ वहां पितृ और देवपूजन में रत मनुष्य वाजपेय यज्ञ के फलको प्राप्तहोता है विमलाशोक को प्राप्तहोकर चन्द्रमाकी तरह प्रकाशित होता है ३४ तहां एकरात्रि बसकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोता है फिर गोप्रतार उत्तम सरयूतीर्थ को जावे ३५ जहां नौकर सेना और वाहनों समेत रामचन्द्रजी हे राजन्! पूर्व समय में घर छोड़कर तिस तीर्थके तेज से स्वर्गको गये हैं ३६ हे भरतवंशी! हे मनुष्यों के स्वामी! तिस गोप्रतार तीर्थ में मनुष्य स्नानकर तीर्थ के निज रामजी के प्रसाद और व्यवसाय से ३७ सब पापों से विशुद्धआत्मा होकर स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै हे कुरुनन्दन! रामतीर्थ गोमती में मनुष्य स्नानकर ३८ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोता और अपने कुलको पवित्र करता है हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहांपर सौसहस्र तीर्थहैं ३९ हे भरतर्षभ! तहां उपस्पर्शन कर नियत और नियत भोजन मनुष्यकर सहस्रगऊ देने के पुण्यफलको पाता है ४० हे धर्म्मजानने वाले राजन्! फिर अत्युत्तम ऊर्ध्वस्थान को जावे कोटितीर्थ में मनुष्य स्नानकर स्वामिकार्तिक को पूजनकर ४१ सहस्र गऊ देने के फलको प्राप्तहो और तेजस्वीहो फिर काशीजी को जाकर शिवजी को पूजनकर ४२ कपिलों के ह्रदमें स्नानकर राजसूय यज्ञके फलको प्राप्त होता है हे राजाओं में श्रेष्ठ! दुर्लभ मार्कण्डेयजी के तीर्थको प्राप्तहोकर ४३ संसार में प्रसिद्ध गोमती और गंगाजी के संगम में स्नानकर मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्त होता और कुलको उद्धार करताहै ४४॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

काशीपुरीका विस्तार समेत माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे नारदमुनिजी! काशीजी का माहात्म्य आपने संक्षेप से कहा अब विस्तार से कहिये तब मेरा मन प्रसन्न

होगा १ तब नारदजी बोले कि यहांपर काशीजी के गुण के आश्रय इतिहास को कहते हैं जिसके सुननेही से मनुष्य ब्रह्महत्या से छूट जाता है २ पूर्व समय देवासन में बैठीहुई पार्वती देवी मेरुशृंग में देव-ईशान त्रिपुर के वैरी महादेवजी से पूँछतीभई ३ कि हे देवों के देव! हे भक्तोंकी पीड़ाके नाशकरनेवाले! हे महादेवजी! देव आपको कैसे थोड़े समय में देखसके ४ हे शङ्करजी! सांख्ययोग तथा ध्यान कर्मयोग वैदिक और जितने और हैं संसार में बहुत परिश्रमवाले हैं ५ जिससे विश्रांतचित्तवाले योगी कर्मी सबदेहधारियोंको सूक्ष्म भगवान् दिखलाई दें ६ यह अत्यन्त गुह्य गूढ़ इन्द्रादिक देवों से सेवित कायकी अग्निका नाशनेवाला ज्ञान सब प्राणियों के कल्याण के लिये कहिये ७ तब महादेवजी बोले कि यहांपर विज्ञान नहीं कहने योग्यहै ज्ञान न जाननेवालों से बाहर कियाहुआहै जो श्रेष्ठ ऋषियोंने कहाहै वह तुमसे यथा तत्त्व कहते हैं ८ सब प्राणियोंको संसाररूपी समुद्रके तारनेवाली हमारी काशीपुरी श्रेष्ठ अत्यन्त गुह्यक्षेत्रहै ९ हे महादेवि! तहां भक्तिसे हमारे व्रत और श्रेष्ठ नियम में स्थित महात्मा वसते हैं १० सबतीर्थों से उत्तम स्थानों से जो उत्तम ज्ञानों का उत्तम ज्ञान हमारा श्रेष्ठ अविमुक्त है ११ और स्थानों से पवित्र तीर्थ और स्थान श्मशान में स्थित दिव्यभूमि में प्राप्त हैं १२ भूलोक में नहीं संलग्न अन्तरिक्ष में हमारा स्थान है नहीं मुक्तहुये तहां देखते हैं मुक्तहुये चित्तसे देखते हैं १३ यह श्मशान विख्यात अविमुक्त सुना है हे सुन्दरि! यहां पर कालहोकर इस संसारको हम नाशकरते हैं १४ हे देवि! यह सब गुह्यों का स्थान हमारा प्याराहै तहांपर हमारे भक्तही जातेहैं और हम में प्रवेशकरजाते हैं १५ दान जप हवन यज्ञ तपकिया हुआ ध्यान पढ़ना और ज्ञान सब तहां नाश रहित होते हैं १६ और सहस्रों जन्मके पहले के इकट्ठा किये हुये पाप अविमुक्त क्षेत्र में प्रविष्ट हुये पुरुषके सब नाशको प्राप्तहोते हैं १७ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वर्णसंकर स्त्री म्लेच्छ और जे संकीर्ण पाप योनिहैं १८ कीड़े चीं-टियां और जे अन्य मृगपक्षी हैं हे श्रेष्ठ मुखवाली पार्वती! कालसे

अविमुक्तमें नाशको प्राप्तहुये १९ तो आधा चन्द्रमा मस्तकमें धारे तीन नेत्रवाले बड़े बैलको वाहन किये तिस हमारे पुरमें मनुष्य होते हैं २० अविमुक्तमें मराहुआ कोईभी पापी नरक को नहीं जाता है ईश्वरकी दया युक्त होकर सब श्रेष्ठ गतिको प्राप्तहोतेहैं २१ मनुष्य मोक्षको अत्यन्त दुर्लभ और संसारको अत्यन्त भयानक मानकर पत्थरसे चरणोंको मर्दनकर काशीजी में बसै २२ हे परमेश्वरि ! तपसेभी दुर्लभ जहां तहां विपन्न मरेहुयेकी संसार छुड़ाने वाली गति २३ हमारे प्रसादसे अच्छीतरह होतीहै हे हिमवान्की पुत्री ! हमारी मायासे मोहित नहीं प्रवृद्धहुये नहीं देखतेहैं २४ वे वारंवार विष्ठा मूत्र और वीर्य्यों के मध्य में बसतेहैं सैकड़ों विघ्नों से ताड़ित हुआभी जो विद्वान् बसता है २५ वह श्रेष्ठस्थान को जाता है जहां जाकर फिर शोचनहीं होताहै जन्म मृत्यु और बुढ़ापे से मुक्त श्रेष्ठ शिवजी के स्थानको जातेहैं २६ मोक्षकी कांक्षाकरने वाले फिर मरण न होने वालोंकी वह गतिहै जिसको पाकर मनुष्य कृत कृत्य होता है यह पण्डित लोग मानते हैं २७ दान तपस्या यज्ञ और विद्यासे श्रेष्ठ गति नहीं मिलती जो अविमुक्तमें मिलती है २८ अनेक प्रकारके वर्णवाले विवर्ण चांडालादिक निन्दित योनि पापों से पूर्णदेह और विशिष्ट पापों से भी पूर्णदेह वाले जे हैं २९ तिनको अविमुक्त श्रेष्ठज्ञान और परंपद है यह पण्डित लोग कहतेहैं ३० अविमुक्त परंतत्त्व और परमकल्याण है नैष्ठिकी दीक्षा कर जे अविमुक्त में बसते हैं ३१ तिनको अन्त समयमें परमज्ञान और परंपद हम देतेहैं प्रयाग नैमिषारण्य श्रीशैल महाबल ३२ केदार भद्रकर्ण गया पुष्कर कुरुक्षेत्र भद्रकोटि नर्म्मदा आम्रातकेश्वरी ३३ शालग्राम कुब्जाम्र अत्युत्तम कोकामुख प्रभास विजयेशान गोकर्ण और भद्रकर्णक ३४ ये त्रैलोक्यमें प्रसिद्ध पुण्यस्थान हैं काशीजी में जैसे मरेहुये श्रेष्ठ तत्त्वको प्राप्तहोते हैं तैसे अन्य स्थान में नहीं पाते हैं ३५ काशीजी में विशेष कर आकाश पाताल और मृत्यु लोकमें जानेवाली गंगाजी प्रविष्टहैं वे मनुष्यों के सैकड़ों जन्मके कियेहुये पापोंको नाशती हैं ३६ और जगह भी गंगा सुलभहैं

श्राद्ध दान तप जप व्रत सब काशीजी में अत्यन्त दुर्लभ हैं ३७ निरंतर वायु भोजन करताहुआ काशीजी में स्थित मनुष्य जपकरै नित्यही हवनकरै दानदेवै और देवताओं को पूजन करै ३८ यदि पापी मूर्ख वा धार्मिक मनुष्यहो वह काशीजी को प्राप्त होकर सब कुलको पवित्रकरताहै ३९ काशीजी में जे महादेवजी को पूजते और स्तुतिकरते हैं वे सबपापों से छूटकर गणों के ईश्वर होते हैं ४० और जगह योग ज्ञान अथवा संन्यास से सहस्रजन्मसे श्रेष्ठ स्थान प्राप्तहोता है ४१ हे देवदेवोंकी स्वामिनी! जे भक्त काशीजी में बसते हैं वे एकही जन्मसे श्रेष्ठ मोक्षको प्राप्तहोते हैं ४२ जहां योग ज्ञान और मुक्ति एकही जन्मसे मिलती है तिस अविमुक्तको प्राप्तहोकर और तपोवनकी न इच्छाकरै ४३ जहां से हम अविमुक्तहुये तिसी से अविमुक्त कहाताहै सोई गुह्योंका गुह्य यह विज्ञान कहाताहै ४४ हे सुन्दर भौंहवाली! ज्ञान अज्ञानमें निष्ठ परमानन्दकी इच्छाकरने वालों की जो गति विदित है सो अविमुक्त में मरेहुये की होती है ४५ जो अविमुक्तकी देहमें सम्पूर्ण देखेगये हैं काशीपुरी तिन स्थानों से अधिक शुभहै ४६ जहां ईश्वर साक्षात् महादेवजी देहके अन्त में आपही मुक्तिके लिये तारक ब्रह्मको कहते हैं ४७ जो अत्यन्त श्रेष्ठ तत्त्वहै वह अविमुक्तही है यह सुनाहै हे देवि! काशीजी में एक ही जन्मसे सो प्राप्तहोता है ४८ भौंहके मध्यमें तोंदी के बीच में हृदय और मस्तक में जैसे सूर्य में अविमुक्तहै तैसे काशी में स्थित है ४९ वरणा नदी और असीनदी के बीचमें वाराणसी अर्थात् काशीपुरी है तहांपर स्थित तत्त्व इसीप्रकार से नित्यही मुक्तिका करनेवालाहै ५० काशीजी से श्रेष्ठ स्थान न हुआ है न होगा जहां नारायण देव स्वर्ग के ईश्वर महादेवजी हैं ५१ तहां देवता गंधर्व यक्ष सर्प राक्षस और देवोंके देव ब्रह्माजी जिनकी निरन्तर उपासना करते हैं ५२ हे देवि! महापापी और जे तिनसे भी अधिक पापी हैं वे काशीजी में प्राप्तहोकर परमगतिको प्राप्त होते हैं ५३ तिससे नियत मोक्षकी इच्छा करनेवाला मनुष्य काशीजीमें मरणके अन्ततक बसे और महादेवजी से ज्ञानप्राप्त होकर मुक्तहोजावे ५४ किन्तु पाप

से हत चित्तवाले विघ्नहोते हैं तिससे देह मनवाणी से पाप नहीं करै ५५ हे अच्छे व्रतकरनेवाली पार्वती! यह देवता और पुराणों का रहस्यहै अविमुक्त के आश्रय ज्ञान कोई तत्त्वसे नहीं जानताहै ५६ नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! देवता ऋषि और ब्रह्माजी के सुनते हुये देवोंके देवने सब पाप नाश करनेवाले तीर्थको कहाहै ५७ जैसे देवताओंमें पुरुषोत्तम नारायणजी श्रेष्ठहैं ईश्वरोंमें जैसे महादेवजी श्रेष्ठहैं तैसेही स्थानों में यह उत्तमहै ५८ जिन्हों ने पूर्वकाल के एक जन्ममें रुद्रजीको आराधन कियाहै वे श्रेष्ठ शिवजीके स्थान अविमुक्त को प्राप्त होते हैं ५९ कलियुग के पापों से उत्पन्न जिनकी बुद्धिहरी होती है तिनको ब्रह्माजी का स्थान जानने में नहीं सामर्थ्य है ६० जे सदैव इसपुरीको स्मरण करते और कहते हैं तिनके शीघ्रही इस लोक और परलोकके पाप नाश होजाते हैं ६१ काशीजी में स्थान कर इसजन्ममें जो पापकरते हैं तिन सबको कालकी देह देव शिवजी नाश करते हैं ६२ तिससे मोक्षकी इच्छा करनेवालों से सेवित इस स्थानको जावे मरेहुओंका फिर संसाररूपी समुद्रमें जन्म नहीं होता है ६३ तिससे योगी वा अयोगी पापी वा पुण्यात्मा मनुष्य सब यत्नसे काशीजी में बसे ६४ मनुष्योंके वचन से पिता माताके वचन और गुरुजी के कहने से अविमुक्त के जानेकी बुद्धि न फिर जानी चाहिये ६५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

काशीपुरी के माहात्म्य में ॐकारेश्वर कृत्तिवासेश्वर मध्यमेश्वर विश्वेश्वर ॐकार और कंदर्पेश्वरजीका वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे युधिष्ठिर! तहांपर यह निर्मल सुन्दर ॐकार नाम लिंगहै जिसके स्मरणही मात्रसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है १ यह अत्यन्त श्रेष्ठ ज्ञान उत्तम पंचायतन काशीजी में नित्यही मुनियों से सेवित और मोक्षका देनेवाला है २ तहांपर पंचायतन के शरीर प्राणियों के मोक्ष देनेवाले भगवान् रुद्र साक्षात् महादेवजी रमते हैं ३ यह पाशुपत ज्ञान पंचायतन कहाता है सोई

यह विमल लिंग ओंकार उपस्थित है ४ व्यतीत शान्ति, शान्ति, परावर विद्या, प्रतिष्ठा और निवृत्ति यह पञ्चात्मलिंग ईश्वरका है ५ पांच ब्रह्मादिक लिंगोंके आश्रय ओंकार बोधक लिंग पंचायतन कहाता है ६ देहके अन्तमें नाश रहित पञ्चायतन ईश्वर लिंग को स्मरण करै तो बुद्धिमान् मनुष्य परमानन्द ज्योति में प्रवेश कर जावे ७ तहांपर पूर्व समय में देवर्षि सिद्ध और ब्रह्मर्षि ईशान देव की उपासना कर परम्पद को प्राप्तहुयेहैं ८ मत्स्योदरी के पुण्यकारी किनारे अत्यन्त गुह्य शुभ उत्तम गऊके चर्म्मके बराबर ओंकारेश्वर जीका स्थान है ९ हे युधिष्ठिर! कृत्तिवासेश्वर लिंग, उत्तम मध्यमेश्वर, विश्वेश्वर, ओंकार और कन्दर्पेश्वर ये काशीजी में गुह्यलिंग हैं विनाशम्भुजीकी कृपाके कोई नहीं जानताहै १० । ११ हे राजन्! कृत्तिवासेश्वर का माहात्म्य सुनिये पूर्व्वसमय तिस स्थान में दैत्य हाथी होकर शिवजी के समीप १२ ब्राह्मणोंके मारनेके लिये आया जहां नित्यही शिवजी की उपासना होती है तिनके लिंग से तीन नेत्रवाले महादेवजी प्रकट हुये १३ भक्तों के ऊपर कृपा करनेवाले हर महादेव भक्तोंकी रक्षाके लिये अवज्ञा से शूलसे गजके आकार वाले दैत्यको मारकर १४ तिसकेवासः अर्थात् वस्त्रकी कृत्ति करते भये तिसी से कृत्तिवासेश्वर नाम हुआ हे युधिष्ठिर! तहां मुनिश्रेष्ठ सिद्धिको प्राप्तहुये १५ और तिसी शरीरसे तिस परमपद को प्राप्त भये विद्या विद्येश्वर रुद्र जे शिव कहे गये हैं १६ कृत्तिवासेश्वर लिंगको नित्यही आश्रित होकर स्थितहैं मनुष्य अधर्म बहुतवाले घोर कलियुग को जानकर १७ कृत्तिवास को नहीं छोड़तेहैं वे निस्सन्देह कृतार्थ होते हैं जिस तीर्थ में सहस्र जन्मसे मोक्ष मिलता वा नहीं मिलता १८ परन्तु इस कृत्तिवास में एकही जन्मसे मोक्ष मिलताहै मुनिलोग सब सिद्धोंका स्थान इस स्थानको कहतेहैं १९ यह स्थान देव देव शम्भु महादेवजी से रक्षित है युग युगमें तपके क्लेशके सहनेवाले वेदके पारगामी ब्राह्मण २० महात्माजी की उपासनाकरते हैं शतरुद्रिय को जपते हैं निरन्तर तीन नेत्रवाले कृत्तिवासदेवकी स्तुति करतेहैं हृदयमें देव स्थाणु सर्वान्तर शिवको ध्यान

करते हैं २१ काशीजी में जे सिद्ध ब्राह्मण बसते हैं वे निश्चय गीत गाते हैं तिनमें एकसे मुक्ति होती है जे कृत्तिवास की शरणमें प्राप्त हैं २२ अत्यन्त दुर्लभ संसार को अभीष्ट ब्राह्मण कुलमें जन्मपाकर संन्यासी ध्यानमें धारणकर रुद्रजी को जपले चित्तमें महेशजी को ध्यान करते २३ काशीजी के मध्यमें प्राप्त मुनियों में श्रेष्ठ ईश प्रभु को आराधन करते और सन्धिहीन होकर यज्ञों से पूजन करते रुद्र जीकी स्तुति करते शम्भुजी को प्रणाम करते २४ निर्म्मल योगके धामभव महादेवजीके नमस्कार हैं पुराणस्थाणु गिरिश शिवजीकी शरणमें प्राप्तहैं हृदयमें प्रविष्ट रुद्रजीको स्मरण करते हैं अनेक रूप महादेवजी को जानते हैं २५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः३४॥

पैंतीसवां अध्याय॥

काशी के माहात्म्य में व्याघ्रके हाथ से हरिणी का मरकर गणेश्वरी होना और पिशाच मोचनमें एक प्रेत का शंकुकर्ण मुनि के कहने से, स्नानकर शिवजी के समीप जाना और शंकुकर्ण का शिवजीकी स्तुतिकर उन्हीं में लीन होना॥

नारदजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! काशीजीमें और भी उत्तम कपर्दीश्वर लिंग है तहां विधि से स्नान कर पितरों को तर्पणकर १ मनुष्य सब पापों से छूटजाता और भुक्ति मुक्तिको प्राप्तहोता है पिशाचमोचन नाम और तीर्थ तहां स्थित है २ तहां आश्चर्य्यमयदेव मुक्तिके देनेवाले और सब दोष के हरनेवालेहैं कोई दैत्य व्याघ्रका घोर रूप धारणकर एक मृगी के भक्षणकरने के लिये उत्तम कपर्दीश्वरको जाताभया तब हरिणी हृदयमें डरकर प्रदक्षिण करकर ३।४ अत्यन्त संभ्रान्त दौड़ती हुई व्याघ्रके वशमें आगई तब महाबली व्याघ्र तीक्ष्ण नखोंसे तिसको फाड़कर ५ और जनरहितदेशको जाताभया और वह बालाहरिणी कपर्दीशके आगे मरगई ६ तो महाज्वाला दिखाईपड़ी आकाश में सूर्य्य के समान दीप्तिवाली तीन नेत्र युक्त नीलकण्ठ वाली चन्द्रमासे चिह्नित मस्तक युक्त ७ बैलपर चढ़ी और तैसेही पुरुषोंसे आच्छादितथी तब देवता तिसके चारोंओर फूलोंकी वर्षा

करते भये ८ गणेश्वरी आपही होकर तिस क्षणसे तहां न दिखाई पड़ी तिस श्रेष्ठ आश्चर्य को देखकर देवादिक प्रशंसा करतेभये ९ सो महादेवजी का उत्तम कपर्दीश्वरलिंग स्मरणकर सब पाप समूह से शीघ्रही मनुष्य छूटजाताहै १० काशीके बसनेवालोंकेकाम क्रोधादिक दोष और सब विघ्न कपर्दीश्वरजी के पूजनसे नाशहोजाते हैं ११ तिससे सदैव उत्तम कपर्दीश्वर देखने योग्य हैं प्रयत्नसे पूजने योग्यहैं और वैदिक स्तोत्रों से स्तुति के योग्यहैं १२ यहां पर नियत ध्यान करतेहुये शांत चित्तवाले योगियोंकी छः महीने से निस्संदेह योग सिद्धि होजाती है १३ इसके पूजन से ब्रह्महत्यादिक पाप नाश होजाते हैं पिशाचमोचन कुण्ड में स्नान करै जहां से निवृत्ति होतीहै १४ पूर्वसमय तिस क्षेत्रमें व्रतकरनेवाला तपस्वी शंकुकर्ण नामसे प्रसिद्ध महादेवजीको पूजन करता भया १५ और निरंतर फूल धूपादिक स्तोत्र नमस्कार प्रदक्षिणाओं से ब्रह्मरूपी प्रणव रुद्रजी को जपताभया १६ और योगकी आत्मा वह नैष्ठिकी दीक्षाकर उपासना करताभया किसीसमय भूंखसेयुक्त आतेहुये प्रेतको देखताभया १७ जोकि हाड़ और चमड़े से युक्त अंगवाला वारंवार श्वासलेताथा तिसको देखकर बड़ी कृपासेयुक्त मुनिश्रेष्ठ १८ बोला कि आप कौनहैं किसदेशसे इसदेशको आयेहैं तब भूंखसे पीड़ित पिशाच तिससे बोला १९ कि पूर्वजन्म में मैं धन धान्यसेयुक्त पुत्र और पौत्रादिकों से युक्त कुटुम्ब के पालने में उत्साहयुक्त ब्राह्मण था २० महादेव गऊ और अतिथियों को नहीं पूजा कभी थोड़ी वा बहुत पुण्य नहीं की २१ एक समय भगवान् देव वृषभेश्वर वाहन विश्वेश्वरजी को काशीजी में देखा स्पर्श और प्रणाम किया २२ तब थोड़ेही काल से हम नाशको प्राप्त होगये तो हे मुनिजी! महाघोर यमराज के स्थान को नहीं देखा २३ प्यास से इस समय व्याकुल हित अहित को नहीं जानताहूं हे प्रभुजी! जो कुछ उद्धार करने को उपाय देखतेहो २४ तिसको करिये तुम्हारे नमस्कार हैं हम तुम्हारी शरण में प्राप्तहैं ऐसा कहनेपर शंकुकर्ण पिशाच से यह बोला २५ कि इसलोक में तैसा अत्यन्त पुण्यात्मा नहीं विद्यमान

है जैसा तुमने पहले विश्वेश्वर शिव भगवान्‌को देखा है २६ स्पर्श और फिर वन्दना किया है पृथ्वी में तुम्हारे समान और कौन है तिसी कर्म के विपाक से इस देशको प्राप्त हुयेहौ २७ एकाग्रचित्त होकर इस कुण्ड में शीघ्रही स्नान करो जिससे इस कुत्सित योनि को शीघ्रही त्याग करो २८ जब दयालु मुनिने पिशाच से इस प्र-कार कहा तो पिशाच देवों में श्रेष्ठ तीननेत्रवाले स्वामी कपर्दीश्वर को स्मरणकर मन में धारणकर स्नान करता भया २९ तिस समय स्नान करतेही मुनिके समीप में मरजाता भया तब चन्द्रमा के चिह्न से पवित्र मस्तक चिह्नित किये सूर्य के समान विमान में दिखाई दिया ३० स्वर्ग में स्थित रुद्रों सहित प्रकाशित भया यहदेव उपमा रहित बालखिल्यादिक योगियों से युक्तहुआ जैसे उदय में सब के देव सूर्य प्रकाशते हैं तैसेही प्रकाशता भया ३१ स्वर्ग में सिद्ध देवों के समूह स्तुति करते भये मनोहर सुन्दरी अप्सरा नाचती भई गन्धर्व विद्याधर किन्नरादिक जल मिले हुये फूलोंकी वर्षा करतेभये ३२ मुनीन्द्रों के समूहों से स्तुति को प्राप्त और भगवान् के प्रसाद से बोधको प्राप्त होकर त्रयीमय अग्यमण्डल को प्रवेश करतेभये जहां रुद्रजी प्रकाशित होरहे हैं ३३ पिशाचको मुक्तहुआ देखकर प्रसन्न हुये शंकुकर्णमुनि मनसे कवि अग्नि एकरुद्र महादेवजी को चिन्तन प्रणामकर तिन जटाके जूटधारे शिवजी की स्तुति करते भये ३४ कि जटा के जूट धारणकिये रक्षक एक पुरुष पुराण योगे-श्वर मनोवांछित देनेवाले सूर्य्य अग्निरूप बैलपर चढ़हुये शिवजी की शरण में प्राप्तहैं ३५ ब्रह्मके सार हृदय में प्रविष्ट हिरण्मय योगी आदि अन्त स्वर्ग में स्थित महामुनि ब्रह्ममय पवित्र शिवजी की शरण में प्राप्त हैं ३६ सहस्रचरण नेत्र और शिरसे युक्त सहस्ररूप तमसे परे ब्रह्मकेपार हिरण्यगर्भाधिपति नेत्र शम्भुजी को प्रणाम करते हैं ३७ जो संसार के पैदा करनेवाले और नाश करनेहारे हैं जिन शिवजी से यह सब आवृत है तिन ब्रह्मपार भगवान् ईशजी को नित्यही प्रणामकर शरण में प्राप्त हैं ३८ लिंगरहित लोक से हीन रूपवाले स्वयंप्रभु चित्पति एकरूप ब्रह्मपार परमेश्वर तुम्हारे

नमस्कार करते हैं जिससे अन्य नहीं है ३९ परमात्मभूत त्याग किये हुये बीज समेत योगवाले योगी समाधिको प्राप्त होकर जिन देशको देखते हैं तिन ब्रह्मपार परमस्वरूपके प्रणाम करते हैं ४० जहां नामादि विशेषक्लृप्ति नहीं है जिनका स्वरूप दृष्टि में नहीं स्थित होता है तिन ब्रह्मपार स्वयंभुवजी के नमस्कार कर शरण में प्राप्त हूं ४१ वेदके वादमें अभिरत जिन विदेह ब्रह्मविज्ञान समेत भेदरहित एक आपके स्वरूपको अनेक देखते हैं तिन ब्रह्मपार के नित्यही प्रणाम करते हैं ४२ जिससे पुराणपुरुष प्रधान तेजको धारण करते देवता प्रणाम करते तिन ज्योति में प्रविष्ट कालवृद्धि को प्राप्त आपके स्वरूप को नमस्कार करते हैं ४३ गुहेश स्थाणु गिरिशपुराण के नित्यही शरण में प्राप्त हैं शिव हरचन्द्र मौलिकी शरण में प्राप्तहैं पिनाक धारण करनेवाले आपकी शरण में प्राप्त हैं ४४ शंकुकर्णमुनि भगवान् जटाजूट धारणकिये शिवजी की इस प्रकार स्तुतिकर श्रेष्ठ ओंकार को उच्चारणकर पृथ्वी में दण्डकी नाईं गिरते भये ४५ तिसीक्षण से शिवकी आत्मावाला श्रेष्ठलिंग प्रकट हुआ जो कि ज्ञान आनन्द अत्यन्तकरोड़ अग्निकी ज्वालाके सदृश था ४६ मुक्तआत्मावाला तिनकी आत्मा सबमें प्राप्त निर्मल शंकुकर्ण विमल लिंगमें लीन होगया सो अद्भुतहीसा भया ४७ यह जटाजूटधारी शिवजीका रहस्य माहात्म्य तुमसे कहा तमोगुण से कोई नहीं जानता विद्वान् भी इस में मोहको प्राप्त होता है ४८ जो इस पापनाश करनेवाली कथाको नित्यही सुनताहै उसके पाप छूट कर विशुद्धआत्मा होकर रुद्रजी के समीप प्राप्तहोता है ४९ शुद्ध होकर प्रातःकाल और दोपहरके समय निरन्तर ब्रह्मपार महास्तोत्र को पढ़े तो वह श्रेष्ठ योगको प्राप्तहोवे ५० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवाराणसीमाहात्म्ये पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

काशीपुरी के माहात्म्य में मध्यमेशजीकाभी माहात्म्य वर्णन ॥

नारदजी बोले कि हेमहाराज युधिष्ठिर ! काशीजीमें परसेपर मध्य-

मेशजी हैं तिस स्थान में देवीसहित महेश्वर महादेवजी १ भगवान् नित्यही रुद्रों से परिवारित होकर रमण करते हैं तहां पूर्वसमय हृषीकेश विश्वात्मादेवकी के पुत्र २ कृष्णजी सदैव पाशुपतों से युक्त वर्षभरतक बसते भये जो कि कृष्णजी भस्म सब अङ्ग में लगाये रुद्र के पढ़ने में तत्पर ३ हरिजी पाशुपत व्रतकर शम्भुजी को आराधन करते भये तिनके वे ब्रह्मचर्य्य में परायण बहुत शिष्य ४ तिन्हीं के मुखसे ज्ञानपाकर महादेवजीको देखतेभये तिन कृष्णजी को प्रत्यक्ष नीललोहित देव भगवान् वरदेने वाले महादेवजी उत्तमवर देतेभये कि जे मेरेभक्त विधिपूर्वक गोविन्दजी को पूजन करते हैं ५। ६ तिनको वह ईश्वरका जगन्मयज्ञान प्राप्तहोता है हमारे परायण मनुष्यों से कृष्णजी नमस्कार पूजन और ध्यान करने के योग्य निस्सन्देह होंगे हमारे प्रसाद से ब्राह्मण स्नान कर जे यहां देवों के ईश पिनाकधारी देवको देखेंगे ७। ८ तिनके ब्रह्महत्यादिक पाप शीघ्रही नाश होजाते हैं जे पाप कर्म में रतभी मनुष्य प्राणोंको त्याग करते हैं ९ वे तिस श्रेष्ठ स्थान को जाते हैं इस में विचारणा नहीं करने योग्य है गङ्गाजी में तर्पण करनेवाले वे विप्र निश्चय धन्य हैं १० जो कि मध्यमेश्वर ईश्वर महादेवजी को पूजनकर ज्ञान दान तप श्राद्ध में पिण्ड देते हैं ११ एक भी कर्म कियाहुआ सातकुल को पवित्र करता है सूर्यग्रहण में सन्निहत्या में स्नानकर १२ मनुष्य जो फल पाता है तिस से दशगुणा मध्यमेश्वर में पाता है हे महाराज युधिष्ठिर! मध्यमेश्वर में इसप्रकार का माहात्म्य कहा है जो श्रेष्ठभक्ति से सुनता है वह परमपदको प्राप्त होताहै १३॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवाराणसीमाहात्म्ये षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय॥

काशीजीके माहात्म्यमें प्रयागतीर्थ विश्वरूपतीर्थ तालतीर्थ आकाशतीर्थ अर्षभतीर्थ और सुनीलादितीर्थों का वर्णन॥

नारदजीबोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! और पवित्र तीर्थ काशीजी

में स्थित हैं तिनको सुनिये १ प्रयाग से अधिक परम शुभ प्रयाग तीर्थहै विश्वरूपतीर्थ अत्युत्तमतालतीर्थ २ महातीर्थ आकाश नाम श्रेष्ठ अर्षभतीर्थ सुनील महातीर्थ अत्युत्तम गौरी तीर्थ ३ प्राजापत्यतीर्थ स्वर्गद्वार जम्बुकेश्वर उत्तमधर्मतीर्थ ४ श्रेष्ठतीर्थ गयातीर्थ महानदीतीर्थ नारायणपरतीर्थ अत्युत्तम वायुतीर्थ ५ परंगुह्य ज्ञान तीर्थ उत्तम वाराहतीर्थ पुण्यकारी यमतीर्थ शुभ संमूर्तिकतीर्थ ६ हे महाराज ! अग्नितीर्थ उत्तम कलशेश्वर नागतीर्थ सोमतीर्थ सूर्य तीर्थ ७ महागुह्य पर्वततीर्थ अत्युत्तममणिकर्ण्यतीर्थ तीर्थों में श्रेष्ठ घटोत्कच श्रीतीर्थ पितामहतीर्थ ८ देवोंकेईश गंगातीर्थ उत्तमययातिकातीर्थ कापिलतीर्थ सोमेशतीर्थ और अत्युत्तम ब्रह्मतीर्थहैं ९ पूर्वसमय ब्रह्माजीलिंग लाकर जैसे गये कि तिसी समय विष्णुजीने तिस ईश्वर के लिंगको स्थापित किया १० तब ब्रह्माजी स्नानकर हरिजीसे मिलकर बोले कि इसमेरे लायेहुये लिंगको क्यों स्थापित कियाहै ११ तो विष्णुजी ब्रह्माजीसे बोले कि तुमसे भी रुद्रमें हमारी दृढ़ भक्तिहै तिससे लिंगको स्थापित कियाहै तुम्हाराही नाम होगा १२ भूतेश्वरतीर्थ धर्म समुद्भवतीर्थ अत्यन्त शुभ गन्धर्वतीर्थ उत्तम वाह्नेयतीर्थ १३ हे युधिष्ठिर ! दौरवासिक व्योमतीर्थ चन्द्रतीर्थ चितांगदेश्वरतीर्थ पुण्यकारी विद्याधरेश्वरतीर्थ १४ केदारतीर्थ उग्र तीर्थ अतिउत्तम कालंजरतीर्थ सारस्वततीर्थ प्रभासतीर्थ शुभ रुद्रकर्ण ह्रदतीर्थ १५ महातीर्थ कोकिल महालयतीर्थ हिरण्यगर्भतीर्थ अत्युत्तम गोप्रेक्षतीर्थ १६ उपशान्ततीर्थ शिवतीर्थ अत्युत्तम व्याघ्रेश्वरतीर्थ महातीर्थ त्रिलोचन लोकार्कती उत्तराह्वयतीर्थ १७ ब्रह्महत्या नाशकरनेवाला कपालमोचनतीर्थ महापुण्यकारी शुक्रेश्वरतीर्थ उत्तम आनन्दपुरतीर्थ १८ इनको आदिदेकर काशीजीमें स्थिततीर्थ हैं विस्तारसे सैकड़ों करोड़ कल्पोंमें भी कहनेको समर्थ नहींहै १९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवाराणसीमाहात्म्ये सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय॥

गयादिक तीर्थोंका माहात्म्य वर्णन॥

नारदजी बोले कि हे प्रभु युधिष्ठिर! काशीजीका और तिसके तीर्थों का माहात्म्य संक्षेपसे कहा और तीर्थों को सुनिये १ हे भरत वंशी! एकाग्र चित्त होकर ब्रह्मचारी गयाजी में प्राप्तहोकर वहां जानेहीसे अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है २ हे प्रभु! जहां तीनों लोकमें प्रसिद्ध अक्षय्यवट नामहै तहां पितरों का दियाहुआ अक्षय होता है ३ महानदीमें स्नान कर पितृ देवताओंको तर्पणकरै तो अक्षय लोकों को प्राप्त होवे और कुल को उद्धार करै ४ तदनन्तर ब्रह्मारण्यसे सेवित ब्रह्मसर को जावे तो रात्रि जैसे प्रातःकाल को प्राप्तहोती तैसे पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्त होता है ५ ब्रह्मसर में ब्रह्माजी ने श्रेष्ठ यूप ऊंचा करके गाड़ा है यूपकी प्रदक्षिणा कर वाजपेय यज्ञके फल को प्राप्त होता है ६ हे राजाओंमें श्रेष्ठ! फिर लोक में प्रसिद्ध धेनुक तीर्थ को जावे वहां एक रात्रि बसकर तिल धेनु देवे ७ तो सब पापोंसे विशुद्धआत्मा होकर निश्चय सोमलोक को जावे हे महाराज! तहां अबतक निस्संदेह चिह्न है ८ हे भारत वंशी! बछवे समेत कपिला पर्वत में घूमतीहै इस बछवे समेत गऊ के पद अबतक दिखलाई देतेहैं ९ हे राजेन्द्र! हे नृपसत्तम! हे भारत! तिनको स्पर्श कर जो कुछ अशुभ पाप है वह नाश होजाताहै १० तदनन्तर शूल धारण करनेवाले देवजी के स्थान गृध्रवटको जावे तहां शिवजीसे मिलकर भस्म से स्नानकरै ११ ब्राह्मण ने बारह वर्ष का व्रत कियाथा और भी वर्णोंके सब पाप नाश होजातेहैं १२ हे भारतवंशियों में श्रेष्ठ! फिर गीतों का शब्द होनेवाले उद्यन्तपर्वत को जावे तहांपर सावित्रपद दिखाई पड़ता है १३ तहां व्रत करने वाला ब्राह्मण सन्ध्याकरै तो उसने बारहवर्ष की सन्ध्याकर ली १४ हे भारतवंशियोंमें श्रेष्ठ! तहांही प्रसिद्धयोनिद्वारहै तहां पुरुष जाकर योनि के सङ्कट से छूटजाता है १५ शुक्ल और कृष्णपक्ष जो मनुष्य गयाजीमें बसताहै वह निस्सन्देह सातकुलको पवित्रकरता

है १६ बहुत पुत्र होने चाहिये उनमें जो एक भी गयाजीको जावे वा अश्वमेध यज्ञ करै वा नील सांड़ छोड़े १७ हे राजन्! हे मनुष्यों के स्वामी! तीर्थ सेवन करनेवाला मनुष्य फिर फल्गुजी को जावे तो अश्वमेध यज्ञको फल और परम सिद्धिको प्राप्तहोवे १८ हे राजेन्द्र! हे महाराज! हे युधिष्ठिर! फिर एकाग्र चित्त होकर धर्मपृष्ठको जावे जहांपर नित्यही धर्म रहता है १९ तो धर्म को मिलकर अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त हो तदनन्तर हे राजेन्द्र! उत्तम ब्रह्माके तीर्थ को जावे २० तहां नियत व्रत मनुष्य ब्रह्मा जी से मिलकर पूजन करै तो हे भारत! राजसूय और अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्तहो २१ हे मनुष्यों के स्वामी! फिर तीर्थ सेवन करनेवाला मनुष्य राजगृह तीर्थ को जावे तहां स्नानकर कक्षीवान् की नाईं आनन्दकरै २२ फिर अग्निवत् प्रकाशित पुरुष पवित्रहो यक्षिण्यानैत्यक को जावे तो यक्षिणी के प्रसाद से ब्रह्म-हत्यासे छूटजावे २३ तिसपीछे मणिनागको जावे तो सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो जो मनुष्य मणिनाग के नैत्यक को भोजन करता है २४ उसके सर्प काटे का विष नहीं चढ़ता है तहां एक रात्रि बस कर सब पापों से छूटजाता है २५ हे ब्रह्मर्षे! हे राजन्! फिर गौतम के वनको जावे अहल्या के कुण्ड में स्नानकर परमगति को प्राप्त होवे २६ हे राजन्! श्रीतीर्थ को जाकर उत्तम लक्ष्मीको प्राप्तहोवे हे धर्मजाननेवाले! तहां तीनों लोकमें प्रसिद्ध उदपान तीर्थ है २७ तहां अभिषेक करै तो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो फिर देव-ताओंसे पूजित जनकराजर्षिका कूपहै २८ तहां अभिषेककर विष्णु लोक को प्राप्तहो फिर सब पाप नाश करनेवाले विनाशन तीर्थको जावे २९ तो अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो सोम लोकको जावे फिर सब तीर्थों के जलसे उत्पन्न गण्डकी को प्राप्तहो ३० तो वाजपेय यज्ञ के फल को प्राप्तहो तदनन्तर सूर्य्यलोक को जावे हे धर्मज्ञ! फिर ध्रुवके तपोवन में प्रवेशकर ३१ गुह्यकों में निस्सन्देह आनन्द करै हे महाभाग! सिद्धों से सेवित कर्म्मदा नदी को प्राप्त होकर ३२ पुण्डरीक यज्ञ के फलको प्राप्त हो सोमलोक को जावे

फिर त्रैलोक्य में प्रसिद्ध विशाला नदी को प्राप्तहोकर ३३ अ-ग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्त हो स्वर्ग लोकको जावे हे मनुष्यों के स्वामी! फिर माहेश्वरी धाराको प्राप्त होकर ३४ अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्तहो और कुलको उद्धार करै पवित्र मनुष्य देवताओं की पुष्करिणी को प्राप्त होकर ३५ दुर्गति को न प्राप्तहो वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहोकर फिर एकाग्र चित्त होकर ब्रह्मचारी मा-हेश पदको जावे ३६ वहां स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो हे भारतवंशियों में श्रेष्ठ! तहां तीर्थों की कोटि प्रसिद्ध है ३७ हे राजेन्द्र! हे राजन्! उसको कच्छप रूप से दुरात्मा असुर ने हरलिया था तब प्रभविष्णु विष्णु जी ने छीन लिया था ३८ हे मनुष्यों के स्वामी! तहां तीर्थकोटि में अभिषेक करै तो पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्तहो विष्णुलोक को जावे ३९ हे म-नुष्यों में श्रेष्ठ! हे भारतवंशी! फिर नारायण के स्थानको जावे जहां सदैव सन्निहित हरिजी बसते हैं ४० जहां ब्रह्मादिक देवता तपस्वी ऋषि आदित्य वसु और रुद्र जनार्दन जीकी उपासना करतेहैं ४१ अद्भुत कर्मवाले विष्णुजीका शालग्राम नाम से प्रसिद्ध तीर्थ है वहां तीनों लोक के स्वामी वर देनेवाले अच्युत विष्णुजी को प्राप्तहोकर ४२ अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो विष्णुलोक को जावे हे धर्म जाननेवाले! तहां उदपान सब पाप नाश करनेवाला है ४३ तहां चारों समुद्र कूप में सदैव सन्निहित हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! तहां स्नान कर दुर्गति को नहीं प्राप्तहोता है ४४ हे युधि-ष्ठिर! महादेव वर देनेवाले नाशरहित विष्णुजी को प्राप्तहोकर ऋणों से छूटकर चन्द्रमा की नाईं प्रकाशित होवे ४५ जातिस्मर प्रयतमानस पवित्रहो स्नानकर निस्सन्देह जातिस्मर भावको प्राप्त हो ४६ वटेश्वर पुर में जाकर केशवजीको पूजन कर उपवास से निस्सन्देह मनुष्य मनोवाञ्छित लोकों को प्राप्तहो ४७ तदनन्तर सब पाप नाश करनेवाले वामन तीर्थ को जाकर हरिदेवकी वन्दना कर दुर्गति को न प्राप्तहोवे ४८ फिर सबपाप नाश करनेवाले भरत के आश्रमको जाकर तहां महापाप नाश करनेवाली कौशिकी को सेवन

करै ४९ तो मनुष्य राजसूय यज्ञके फलको प्राप्त हो हे धर्मजाननेवाले! फिर उत्तम चम्पकारण्य को जावे ५० तहां एक रात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहोवे तदनन्तर परम सम्मत गोविन्दतीर्थ को प्राप्त होकर ५१ एक रात्रि बसकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहो तहाँ महाप्रकाशित देवीसमेत विश्वेश्वरजीको देखकर ५२ मित्रावरुण के लोकों को प्राप्तहो हे भारतवंशियों में श्रेष्ठ! तहाँ तीन रात्रि बसकर अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहो ५३ हे भरतर्षभ! नियत नियत भोजन कर कन्यावसथतीर्थ को प्राप्तहोकर मनुप्रजापति जीके लोकों को प्राप्तहो ५४ हे भारतवंशी! जे कन्या में थोड़ा भी दान देते हैं तिसको व्रत करनेवाले ऋषि अक्षय यह कहते हैं ५५ फिर तीनों लोक में प्रसिद्ध निष्ठावास को प्राप्तहोकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो विष्णुलोकको जावे ५६ जे मनुष्य निष्ठा के संगम में दान देते हैं वे रोगरहित ब्रह्मलोक को जाते हैं ५७ तहां तीनोंलोकों में प्रसिद्ध वसिष्ठ जीका आश्रम है तहां अभिषेक करनेवाला वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै ५८ फिर देवर्षिगणों से सेवित देवकूट को प्राप्त होकर अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त हो और कुलको उद्धार करै ५९ हे राजाओं में श्रेष्ठ! फिर कौशिकमुनि के ह्रदको जावे जहां कौशिक विश्वामित्रजी श्रेष्ठ सिद्धिको प्राप्त हुये हैं ६० हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! तहाँ धीर मनुष्य कौशिकी में महीना भर बसे तो अश्वमेध यज्ञ का जो फल है वह महीने भरमें प्राप्तहो ६१ जो सब तीर्थों में श्रेष्ठ महाह्रद में बसे वह दुर्गति को न प्राप्तहो और बहुत सुवर्ण को प्राप्तहोवे ६२ फिर वीराश्रम निवासी कुमारतीर्थ को प्राप्त होकर अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्तहो और वह इन्द्रलोक को भी जावे ६३ तिसपीछे देवताओं से सेवित नन्दिनी में कूपको प्राप्त होकर अश्वमेध यज्ञ के पुण्य को प्राप्त हो ६४ फिर विद्वान् मनुष्य कालिका संगम और कौशिकी आरुणके संगम में स्नाकर तीन रात्रि बसकर सब पापों से छूटजाता है ६५ तिसपीछे पण्डित मनुष्य उर्वशी तीर्थ सोमाश्रम और कुम्भकर्ण के स्थान में स्नान कर पृथ्वी में पूजित

होवे ६६ फिर एकाग्र चित्तहोकर ब्रह्मचारी कोकामुख में स्नानकर जातिस्मरभावको प्राप्तहोता है यह पुराने मुनियों ने देखा है ६७ फिर ब्राह्मण सकृन्नदी को प्राप्तहोकर कृतार्थ होजाता है और सब पापों से शुद्ध आत्मा होकर स्वर्ग लोक को जाताहै ६८ फिर सैन्य क्रौंचों के नाश करनेवाले ऋषभ द्वीपको प्राप्तहोकर सरस्वती में स्नानकर विमान में चढ़कर प्रकाशित होता है ६९ हे महाराज! मुनियों से सेवित औद्यानकतीर्थ में अभिषेक करे तो सब पापों से छूट जाता है ७० फिर मनुष्य पुण्यकारी ब्रह्मर्षियों से सेवित ब्रह्म तीर्थ को प्राप्त होकर निस्सन्देह वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्त होता है ७१ तदनन्तर चम्पा में प्राप्त होकर भागीरथी में स्नान कर जलदानकर दण्डार्पण को प्राप्तहोकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो ७२ फिर पुण्यसेवित पुण्यकारिणी लाविढिका को जावे तो वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहो विमान में स्थित होकर पूजित होवे ७३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेगयादितीर्थमाहात्म्यकथनं नामअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उनतालीसवां अध्याय ॥

सविद्या लौहित्य तीर्थ करतोया गंगा और सागर का संगमादि अनेक तीर्थों का वर्णन ॥

नारद जी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! संध्याको प्राप्त होकर उत्तम सविद्या तीर्थ में स्नान कर मनुष्य निस्सन्देह विद्वान् होता है १ रामजी के प्रसाद से पूर्वसमय तीर्थराज कियागया है तिस लौहित्य तीर्थ को फिर प्राप्त होकर बहुत सुवर्ण को प्राप्त होवे २ करतोयाको प्राप्त होकर तीन रात्रि मनुष्य बसकर अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त हो और स्वर्गलोक को जाताहै ३ हे राजाओं में इन्द्र! गंगा और सागर के संगममें अश्वमेधयज्ञ से दशगुणा फल बुद्धिमान् कहते हैं ४ हे भरतवंशी! हे राजन्! जो मनुष्य गंगा जीके श्रेष्ठ द्वीप को प्राप्त होकर तीन रात्रि बसता और स्नान कर

ता है वह सब कामनाओं को प्राप्त होता है ५ फिर पाप नाश क-
रने वाली वैतरणीनदी को प्राप्त होकर विरजतीर्थ में प्राप्त हो
चन्द्रमा की नाईं प्रकाशितहो ६ प्रभाव में कुल पवित्र कर सब
पापों को नाश करै और मनुष्य सहस्र गऊ के फलको प्राप्त होकर
अपने कुल को पवित्र करता है ७ फिर पवित्र मनुष्य शोण और
ज्योतिरथ्या के संगम में बसकर पितृ और देवों को तर्पण कर अ-
ग्निष्टोम यज्ञ के फल को प्राप्त हो ८ हे कुरुवंशियों में श्रेष्ठ ! म-
नुष्य शोण और नर्मदाजीके उत्पन्न में वंशगुल्म में स्नानकर अश्व-
मेध यज्ञके फलको प्राप्त होता है ९ हे मनुष्योंके स्वामी ! कोशलामें
ऋषभ तीर्थ को प्राप्त होकर तीन रात्रि मनुष्य बसकर अश्वमेध
यज्ञ के फलको प्राप्त होताहै १० फिर कोशला में प्राप्त होकर काल
तीर्थ में स्नान करै तो वृषभ से ग्यारहगुणा फल निस्सन्देह प्राप्त होवे
११ मनुष्य पुष्पवती में स्नानकर तीन रात्रि बसकर सहस्रगऊके फल
को प्राप्त हो और कुलको उद्धार करै १२ फिर प्रयत मनहो बदरिका
तीर्थ में स्नान कर दीर्घ आयुको प्राप्तहो और स्वर्ग लोकको जावे १३
फिर मनुष्य परशुरामजी से सेवित महेन्द्र तीर्थ को प्राप्त हो राम
तीर्थ में स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो १४ हे भरत
वंशियों में श्रेष्ठ ! हे राजन् ! तहांहीं मतंगका केदार तीर्थ है तहां
स्नानकर मनुष्य सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो १५ और श्रीपर्वत
को प्राप्तहोकर नदी तीरको स्पर्श करै तो अश्वमेध यज्ञके फलको
प्राप्तहो और श्रेष्ठ सिद्धिको भी प्राप्तहो १६ श्रीपर्वत में देवी समेत
महा प्रकाशित महादेवजी और परम प्रसन्न देवताओं से युक्त ब्रह्मा
जी बसते भये १७ तहां देवह्रदमें पवित्र और प्रयत मानस मनु-
ष्य स्नानकर अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहो और श्रेष्ठ सिद्धिको
प्राप्तहो १८ भाण्डों में देवताओं से पूजित ऋषभ पर्वत में जाकर
मनुष्य बाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहो और स्वर्ग में आनन्द करै १९
तदनन्तर हे राजन् ! मनुष्य अप्सराओं के समूहों से युक्त कावेरी
नदीको जावे तहां स्नानकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो २० तहां
समुद्रके तीर्थ में कन्या तीर्थको स्पर्श करै हे राजाओं में श्रेष्ठ ! तहां

स्पर्श करने से सब पापों से छूटजाता है २१ हे राजेन्द्र! फिर समुद्र के मध्यमें सब मनुष्यों से नमस्कार कियेहुये तीनों लोकों में प्रसिद्ध गोकर्ण को प्राप्तहो २२ जहां ब्रह्मादिक देव तपस्वी मुनि भूत यक्ष पिशाच बड़े नागों समेत किन्नर २३ सिद्ध चारण गंधर्व मनुष्य सर्प नदी समुद्र और पर्वत महादेवजी की उपासना करते हैं २४ तहां ईशान जीको पूजनकर तीन रात्रि मनुष्य बसकर दश अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होकर गणों का पतिहो २५ और बारह रात्रि बसकर मनुष्य कृतार्थ होजाताहै तहांहीं त्रैलोक्य में प्रसिद्ध गायत्री का स्थान है २६ तहां तीन रात्रि बसकर सहस्र गऊके फलको प्राप्तहो हे मनुष्यों के स्वामी! ब्राह्मणों को निदर्शन प्रत्यक्ष है जो योनिसंकर से उत्पन्न ब्राह्मण गायत्री पढ़ता है हे राजन्! तिसकी कथा वा गीत गानेकी वाणी प्राप्तहो जातीहै २७।२८ जो ब्राह्मण नहींहै और गायत्री पढ़ताहै तो उसकी गायत्रीनाशहोजाती है संवर्त विप्रर्षि की दुर्लभ बावली को प्राप्त होकर २९ रूपकाभागी और बड़ाऐश्वर्यवान् होताहै तदनन्तर वेणाको प्राप्तहोकर पितृ देवताओं को तर्पणकरै ३० तो मनुष्य मुरैले और हंसों से युक्त विमान को प्राप्तहो फिर नित्यसिद्धों से सेवित गोदावरीको प्राप्त होकर ३१ गवामय को प्राप्तहो वायुलोक को जावे और वेणा के संगम में स्नानकर वाजपेय यज्ञके फलको प्राप्तहो ३२ वरदासंगमको स्नानकर सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहो ब्रह्मस्थूणा को प्राप्तहोकर तीनरात्रि मनुष्य बसकर ३३ सहस्रगऊ के फलकोप्राप्त हो और स्वर्गलोक को जावे फिर एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मचारी कुब्जावनको प्राप्तहोकर ३४ तीनरात्रिबसस्नानकर सहस्रगऊके फलको प्राप्तहो तदनन्तर कृष्णा वेणा के जलसे उत्पन्न देवहृद में स्नानकर ३५ हे राजन्! ज्योतिर्मात्रहृद और कन्याश्रम में स्नान करै जहां सौ यज्ञोंकोकर इन्द्र स्वर्गको प्राप्त हुये हैं ३६ तहांजानेही से सौ अग्निष्टोम यज्ञों के फलको प्राप्तहो और सर्वदेवहृद में स्नानकर सहस्रगऊके फलको प्राप्तहो ३७ मनुष्य जातिमात्र हृद में स्नानकर जातिस्मर होवे फिर महापुण्यकारिणी बावली और

नदियों में श्रेष्ठ पयोष्णी में ३८ पितृ और देव पूजन में रत मनुष्य स्नान करै तो सहस्र गऊ के फलको प्राप्तहोवे हे महाराज! दण्डकारण्य को प्राप्त होकर स्पर्श करै ३९ शरभंग और महात्मा शुक्र के आश्रम को जाकर मनुष्य दुर्गति को न प्राप्तहो और अपने कुलको पवित्र करै ४० फिर जमदग्निजीसे सेवित सूर्यारक को जावे और रामतीर्थ में मनुष्य स्नानकरै तो बहुत सुवर्णको प्राप्त हो ४१ तिसपीछे नियत और नियत भोजनवाला मनुष्य सप्त गोदावरीमें स्नानकर महापुण्यको प्राप्तहो और देवलोकको जावे ४२ फिर नियत और नियत भोजनवाला मनुष्य देवपथ को जावे तो देवयज्ञ का जो पुण्य है तिस को प्राप्तहो ४३ ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय तुंगकारण्य को प्राप्तहो तहाँ पूर्वसमय सारस्वत जी मुनियों को वेद पढ़ाते भये हैं ४४ हे भरतवंशी! महर्षियों के उत्तरीय में बैठे हुये नष्टहुये वेदों को अंगिरा मुनिके पुत्र सारस्वत जी ने पढ़ाया है ४५ न्यायपूर्वक अच्छेप्रकार ॐकारका उच्चारण कर जिसने जो पहले अभ्यास कियाथा तिसको सो उपस्थितथा ४६ ऋषि देवता वरुण अग्नि प्रजापति हरि नारायण देव महादेव देवताओं समेत महाप्रकाशित ब्रह्मा भगवान् तहाँपर यज्ञ कराने के लिये शुक्रजी को लगाते भये ४७ । ४८ तब शुक्रभगवान् विधिपूर्वक सब ऋषियों का देवदृष्टकर्म से पुनराधान करते भये ४९ तहाँ विधि समेत आज्य भागसे तर्पित देवता और ऋषि सुखपूर्वक त्रिभुवनको प्राप्त भये ५० हे राजाओं में श्रेष्ठ! तिस वन में प्रविष्ट हुये स्त्री वा पुरुष का पाप समूह शीघ्रही नाश होजाता है ५१ हेराजन्! तहां नियत नियत भोजन वाला मनुष्य महीने भर बसे तो ब्रह्मलोक को जावे और अपने कुल को फिर पवित्रभी करै ५२ मेधावनको प्राप्त होकर पितृ और देवों को तर्पण करै तो अग्निष्टोम यज्ञ के फल को प्राप्त हो स्मृति और बुद्धि को भी पावे ५३ तहां कालंजर में जाकर सहस्र गऊ के फलको प्राप्त हो तिस कालंजर पर्वत में आत्मा को साधै ५४ तो निस्सन्देह मनुष्य स्वर्ग लोक में प्राप्त हो हे राजन्! तदनंतर पर्वत श्रेष्ठों में श्रेष्ठ चित्रकूट में ५५ पाप नाश

करने वाली मंदाकिनी को प्राप्त होकर पितृ और दे
हो वहां अभिषेक करै ५६ तो अश्वमेध यज्ञ के फल के
और परम गतिको भी पावै हे राजेन्द्र! तदनन्तर अत्युत्तम
को जावै ५७ हे मनुष्योंमें श्रेष्ठ! हेराजन्! जहां महासेन देव
सन्निहित हैं तहां जानेही से पुरुष सिद्धिको प्राप्त होता है ५८
कोटि तीर्थ में मनुष्य स्नान कर सहस्रगऊ के फलको प्राप्तहो प्र-
दक्षिण वर्तमानहो मनुष्य यशःस्थानको जावै ५९ तो महादेवजी
को प्राप्त होकर चन्द्रमा की नाईं प्रकाशितहो हे भरतवंशियों में
श्रेष्ठ! हे महाराज! तहां कुँवां प्रसिद्धहै ६० हे राजाओंमें श्रेष्ठ! हे
युधिष्ठिर! जहां चारों समुद्र बसते हैं तहां स्पर्श और प्रदक्षिणाकर ६१
नियतात्मा मनुष्य पवित्रहोकर परमगतिको प्राप्त हो हे कुरुश्रेष्ठ!
तिस पीछे बड़ेभारी शृंगबेरपुर को जावै ६२ जहां महाबुद्धिमान् दश-
रथ के पुत्र रामजी पूर्व समयमें तरे हैं ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय मनुष्य
गंगाजीमें स्नानकर ६३ पापरहित होता और वाजपेय यज्ञके फलको
प्राप्त होता फिर बुद्धिमान् देवके मुंजवट स्थानको जावै ६४ हे मनु-
ष्यों के स्वामी! महादेवजी के पास जाकर पूजनकर प्रदक्षिणाकर
गणों का पति होताहै ६५ तदनन्तर हे राजेन्द्र! ऋषियों से स्तुति
को प्राप्त हुये प्रयागजी को जावै जहां ब्रह्मादिक देवता दिशाओं के
ईश्वरों समेत दिशा ६६ लोकपाल सिद्ध पितर सनत्कुमार आदिक
महर्षि ६७ नाग गरुड़ सिद्ध शुक्रधर नदियां समुद्र गन्धर्व अप्सरा
६८ और ब्रह्माजी को आगे कर हरि भगवान्हैं तहां तीन कुण्ड हैं
तिनके मध्यमें गङ्गाजी नहीं हैं ६९ प्रयागसे अच्छेप्रकार अतिक्रान्त
सब तीर्थोंको आगे कियेहुई तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध यमुनाजी हैं ७०
लोकभाविनी यमुनाजी गङ्गाजी के साथ मिली हुई हैं गङ्गा यमुना
के बीचमें पृथ्वी का करिहांव है ७१ ऋषि लोग प्रयाग को करिहांव
का अन्तउपस्थ कहते हैं प्रयाग सुप्रतिष्ठान कंबलाश्वतर दोनों ७२
भोगवती तीर्थ यह तीर्थ ब्रह्मकी वेदी कहाताहै हे युधिष्ठिर! तहां वेद
और यज्ञमूर्ति धारण कियेहुये हैं ७३ हे राजन्! बड़े पाप रहित
ऋषि प्रजापति की उपासना करते हैं तैसेही चक्र धारण करनेवाले

यज्ञों से देवोंको पूजन करते हैं ७४ हे भरतवंशी ! हे प्रभो ! तीनों लोकमें प्रयागसे अधिक पुण्यकारी नहीं है प्रभावसे प्रयाग सब तीर्थों से अधिकहै ७५ तिस तीर्थ के सुनने नाम के कहने और मस्तक के नवानेसे सब पापोंसे मनुष्य छूटजाताहै ७६ तहां संगम में व्रत करनेवाला जो अभिषेक करताहै वह राजसूय और अश्वमेध यज्ञके बड़ेभारी पुण्यको प्राप्त होताहै ७७ हे भरतवंशी ! यह देवताओं के यज्ञकी भूमि है तिसकी कथा यह है कि तहां थोड़ा भी दिया बहुत होताहै ७८ हे तात ! देव वचन वा मनुष्यों के वचनसे प्रयागजीके मरणसे बुद्धि न हटाना ७९ हे कुरुनन्दन ! साठ करोड़ दश सहस्र तीर्थों की सान्निध्य यहां कही है ८० चतुर्विद्यामें जो पुण्य है सत्यवादियोंमें जो पुण्यहै वही पुण्य गङ्गा यमुनाके संगममें स्नान करनेवाला पाताहै ८१ तदनन्तर भोगवती नाम वासुकि का उत्तम तीर्थ है तहां जो अभिषेक करताहै वह अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त होताहै ८२ हे कुरुनन्दन ! तहां तीनों लोकमें प्रसिद्ध हंस प्रपतन तीर्थ है और गङ्गाजी में दशाश्वमेधिकहै ८३ जहां तहां स्नान की हुई गंगाजी कुरुक्षेत्र के समानहैं कनखल में विशेष फल देनेवाली हैं और प्रयागजी बहुत श्रेष्ठहै ८४ जो सैकड़ों अकार्यकर गङ्गाजी का सेवन करै तो गङ्गाजी का जल तिसके सब अकार्यों को इसप्रकार जलाताहै जैसे अग्नि इंधनको जलाताहै ८५ और गङ्गा जल सब पापोंको इसप्रकार भी जलाताहै जैसे अग्निरुई की राशि को जलाताहै सतयुगमें सब पुण्यथे त्रेता युग में पुष्कर पुण्यकारी ८६ द्वापरमें कुरुक्षेत्र और कलियुगमें गंगाजी पुण्यकारिणी अधिक हैं पुष्कर में तपस्या करै महालयमें दान करै ८७ मलयाचल में अग्निको तापै भृगु तुंगमें भोजन न करै पुष्कर कुरुक्षेत्र गंगाजीके जल के मध्यमें प्राप्तों में ८८ प्राणी शीघ्रही सात सात पीढ़ियों को तारता आप पवित्र होता पाप को देखकर पुण्य देता ८९ स्नानकरी और पानकरी गङ्गा सात कुलको पवित्र करती है जबतक मनुष्य के हाड़ गङ्गा जलको स्पर्श करते हैं ९० तबतक वह पुरुष स्वर्गलोकमें रहताहै जैसे पुण्य तीर्थ पुण्य स्थान ९१ की उपासनाकर पुण्यको

प्राप्त होकर परलोक को जाताहै गङ्गाजी के समान तीर्थ नहीं है केशवजीसे श्रेष्ठ देवनहींहै ९२ और ब्राह्मणोंसे श्रेष्ठ कोई वर्ण नहीं है इसप्रकार ब्रह्माजी कहतेहैं हे महाराज! जहां गंगाजी हैं तहां योजनभर देश ९३ गंगाजीके तीर आश्रित सिद्धक्षेत्र जाननेयोग्य है यह ब्राह्मणों और साधुओं के मानसों में सत्यही है ९४ सज्जन पीछे चलनेवाले के कानमें मुक्तिको जपते हैं यह धर्मको देनेवाला मेध्य स्वर्गदेनेहारा सुख रूप ९५ अत्यन्त पुण्यकारी रम्य पावन उत्तम धर्म महाशीर्ष गुह्य और सब पाप नाशकरनेवालाहै ९६ इस को पढ़कर ब्राह्मणोंके बीचमें निर्मलता को प्राप्तहो तीर्थों के वंशका कीर्त्तन लक्ष्मीदेनेवाला स्वर्गदेनेहारा महापुण्यकारी शत्रुओंका नाशकरनेवाला कल्याण रूप बुद्धि का उत्पन्न करनेवाला और अग्र्यहै पुत्र रहित पुत्रको प्राप्तहोता धनहीन धनको पाताहै ९७।९८ राजा पृथ्वीको जीतता बनियांधनको पाता शूद्र मनोवाञ्छित कामनाओं को प्राप्तहोता और ब्राह्मण पढ़तेहुये वेदका पारगामीहोता ९९ जो सदैव पवित्रतीर्थों के पुण्यको नित्यही सुनता है वह जातिस्मर के भावको प्राप्तहोता और स्वर्गमें आनन्द करताहै १०० तीर्थजानेके योग्यहैं और नहीं जानेवाले कीर्त्तन करने के योग्यहैं सबतीर्थों को बुद्धि से मनसेभी जावे १०१ ये सुकृतकी इच्छाकरनेवाले वसु साध्य सूर्य पवन अश्विनीकुमार और देव सदृश ऋषियों से किये हुये हैं १०२ हे कुरुवंशी! हे अच्छे व्रतकरनेवाले! नियत तुमभी इस विधि से तीर्थोंको जावो पुण्यपुण्यही से बढ़ती है १०३ पूर्वसमय भावित करणोंने आस्तिक्य श्रुतिदर्शन से शिष्टानुदर्शी सज्जनों से वे तीर्थ प्राप्तहोतेहैं १०४ हे कुरुवंशी! अकृत अकृतआत्मावाला अपवित्र चोर और वक्रबुद्धि वाला मनुष्य तीर्थों में नहीं स्नान करता है १०५ हे तात! अच्छे वृत्तवाले नित्यही धर्म अर्थ के दर्शी तुमने सब पितृ प्रपितामह ऋषिगणों समेत ब्रह्मादिक देवताओं को तृप्त किया है १०६ वसिष्ठजीबोले कि हे धर्म जाननेवाले दिलीप! तुम ने नित्यही प्रसन्न किये हैं इससे पृथ्वी में शाश्वतीभारी कीर्त्तिको प्राप्त होगे १०७ नारदजी बोले कि भगवान् वसिष्ठ ऋषि इस

प्रकार दिलीपसे कहकर बोध देकर प्रसन्न और प्रसन्न मनसे तहांहीं अन्तर्द्धान होगये १०८ हे कुरु वंशियों में श्रेष्ठ दिलीपजी! शास्त्र के तत्त्व अर्थके दर्शन और वसिष्ठजी के वचनसे पृथिवी में घूमते भये १०९ हे महाभाग ! इसी प्रकार से यह प्रतिष्ठान में प्रतिष्ठित महापुण्यकारिणी सब पापनाश करनेवाली तीर्थ यात्रा है ११० इस विधि से जो पृथिवी को पर्यटन करता है वह मरकर सौ अश्वमेध यज्ञ के फलको भोग करताहै १११ हे युधिष्ठिर ! दिलीप से अठगुना उत्तम धर्म तुम प्राप्तकरोगे जैसे पूर्वसमय राजा दिलीप प्राप्त हुये हैं ११२ जिससे तुम ऋषियों के नेताहौ तिससे तुमको अठगुना फल होगा हेभरतवंशी! ये तीर्थ राक्षसगणों के विकीर्ण हैं ११३ हे कुरुनन्दन ! तुमको छोड़कर औरकी गति नहीं विद्यमान है यह सब तीर्थों के पीछे आश्रित नारदचरित है ११४ जो सबेरे उठकर पढ़ता है वह सबपापों से छूटजाता है जहां सदैव ऋषियों में मुख्य वाल्मीकि कश्यप ११५ आत्रेय कौंडिन्य विश्वामित्र गौतम असित देवल मार्कण्डेय गालव ११६ भरद्वाजजी के शिष्य उद्दालकमुनि शौनक तपस्वियों में श्रेष्ठ पुत्र समेत व्यासजी ११७ मुनियों में श्रेष्ठ दुर्वासा महातपस्वी जाबालि ये सब तपस्वी ऋषि श्रेष्ठ तुमको प्रतीक्ष्य हैं ११८ हेमहाभाग!इन्हों के साथ इनतीर्थों को जावो बड़ी कीर्त्ति को प्राप्त होगे जैसे महाभिष राजा ११९ धर्मात्मा ययाति और राजा पुरूरवा हे कुरुश्रेष्ठ! तैसेही तुमभी अपने धर्म से शोभित होगे १२० जैसे राजा भगीरथ और रामजी प्रसिद्ध हैं जैसे पूर्वसमय में इन्द्र सब शत्रुओं को भस्मकर १२१ ज्वर रहित होकर देवों के राजा त्रैलोक्य को पालन करते भये तैसेही शत्रुओं को नाशकर तुम प्रजाओं को पालन करोगे १२२ हे कमलनयन ! अपने धर्म्म से इकट्ठा की हुई पृथ्वी को प्राप्तहो वीर्य्य से सहस्रबाहुकी नाईं प्रसिद्धता को प्राप्त होगे १२३ सूतजी बोले कि इसप्रकार भगवान् नारदऋषि राजा युधिष्ठिर से कहकर महाराज को बोधकर तहांहीं अन्तर्द्धान होगये १२४ धर्मात्मा अच्छे व्रत करनेवाला राजा युधिष्ठिर ऋषियों समेत आदरसहित सब

तीर्थों को जातेभये १२५ हे सब ऋषियो! हमारीकही हुई तीर्थयात्रा के आश्रय कथाको जो पढ़ता वा सुनता है वह सब पापों से छूट जाता है १२६ मैंने सब तत्त्व कहा अब फिर क्या सुननेकी इच्छा है क्योंकि पुण्ययशवाले ऋषियों से निश्चय कर हमको कुछ नहीं कहने के योग्य नहीं है १२७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेनानाविधतीर्थकथनं नामनवत्रिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय॥

ब्राह्मण तुलसी पीपलकावृक्ष तीर्थोंका संचय विष्णुजी और शिवजीका माहात्म्य वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिक ऋषीश्वरो! हे सुन्दरव्रतवालो! इसप्रकार विष्णुकी देह तीर्थ कहे इनके और संगसे मनुष्य मुक्त होता है १ तीर्थोंका सुनना धन्य है तीर्थोंका सेवन धन्य है पापोंकी राशिके गिराने के लिये कलियुग में और उपाय नहीं है २ हम तीर्थ में वास करेंगे हम तीर्थको स्पर्श करेंगे इसप्रकार जो प्रतिदिन कहता है वह बड़े परमपद को प्राप्त होताहै ३ हे अच्छेव्रत करने वालो! तीर्थों के कहनेहीमात्र से तिसके पापनाश होजाते हैं निश्चय तीर्थ धन्य है सेव्य धन्य हैं ४ तीर्थों के सेवन से प्रभु संसार के करनेवाले नारायण जी सेवित होते हैं तीर्थ से श्रेष्ठ पद नहीं है ५ ब्राह्मण तुलसी पीपलका वृक्ष तीर्थोंका संचय विष्णुजी और शिव जी सदैव मनुष्यों से सेवन करने के योग्यहैं ६ हे मुनिश्रेष्ठो! ब्राह्मणोंका विशेषकर सेवन है आगे के मुनि सब तीर्थों के स्नानादि से अधिक कहते हैं ७ तिससे विद्वान् मनुष्य ब्राह्मण के चरण जोकि साक्षात् सर्व तीर्थ मय और कल्याणरूपहैं तिनको प्रति दिन सेवन करै तो तीर्थोंसे अधिक फलहो ८ पीपलका वृक्ष तुलसी और गौवों की प्रदक्षिणाकरै तो सबतीर्थोंका फल पाकर विष्णुलोकमें प्राप्तहो ९ तिससे पापकर्म्मों को तीर्थों के सेवन से नाश करै और प्रकार से नरकको प्राप्तहोगा कर्म्मभोग से निश्चय शांतिहोगी १० पापियों

का नरक में वास होता है सुकृती स्वर्गभोग करता है तिससे चतुर मनुष्य निश्चय कर पुण्यकारी तीर्थको सेवन करै ११ तब ऋषि बोले कि हे अच्छे व्रत करनेवाले सूतजी ! हम लोगों ने माहात्म्य समेत निश्चयकर तीर्थ सुने अब इस समय में प्रयागका विशेष फल सुननेकी इच्छा है १२ प्रयाग को पहले आपने संक्षेपसे कहा है अब विशेष से सुनने की इच्छा है हे सूतजी ! हम से कहिये १३ तब सूतजी बोले कि हे अच्छेव्रत करनेवाले! हे महाभागो ! प्रयाग का अच्छाप्रश्न किया हम प्रयागका वर्णन कहते हैं १४ जो पूर्व्व समय मार्कण्डेयजी ने युधिष्ठिर से कहा है जब महाभारत होकर युधिष्ठिर को राज्य प्राप्तहुआ १५ इसी अन्तर में भाइयों के शोक से सन्तप्त कुन्ती के पुत्र राजा युधिष्ठिर वारंवार चिन्तना करनेलगे १६ कि ग्यारह चमूका स्वामी दुर्योधन राजा रहा हमको बहुतत-रह से तापदेकर वे सब नाशको प्राप्त होगये १७ वासुदेवजी के आश्रित होकर पाँच पाण्डव शेष रहगये कैसे द्रोणाचार्य्य भीष्म-पितामह महाबली कर्ण १८ और भाइयों के पुत्रों समेत राजा दु-र्योधन और जे और शूरमाननेवाले राजा रहे वे सब नाश को प्राप्त किये १९ इन सब लोगों के विना राज्यभोग और जीने से क्या है धिक्कार हमको है इसप्रकार कष्ट चिन्तनकर राजा विह्वलता को प्राप्त होगये २० चेष्टा और उत्साहहीन भये कुछ नीचेका मुख कर स्थित भये जब राजा होशको प्राप्त भये तब वारंवार चिन्तना करनेलगे २१ कि विधि से योग नियम वा किस तीर्थको जावें जिस से हम शीघ्र महापापों से छूटजावें २२ जहां स्नानकर मनुष्य अत्युत्तम विष्णुलोक को प्राप्त होताहै निश्चयकर कृष्णजी से कैसे पूँछें जिन्होंने यह बड़ाभारी युद्ध कराया है २३ धृतराष्ट्रजी से कैसे पूँछें जिनके सौ पुत्र नाश किये हैं व्यासजी से हम कैसे पूँछें जिस के गोत्रका नाश किया है २४ इसप्रकार धर्मपुत्र युधिष्ठिरजी विह्व-वताको प्राप्त होगये भाई के शोकसे युक्त सब पाण्डव रोनेलगे २५ और जो पाण्डवों के आश्रित महात्मा प्राप्त हुये थे कुन्ती द्रौपदी और जे तहां आये थे २६ सब चारोंओर रोतेहुये पृथ्वी में गिरगये

काशीजी में मार्कण्डेय मुनिने युधिष्ठिर को जाना २७ कि जैसे विक्लवता को प्राप्त भये और अत्यन्तदुःखित रोते हैं थोड़ेही काल में महातपस्वी मार्कण्डेयजी २८ हस्तिनापुर में प्राप्त होकर राजा के द्वार में स्थित भये तब द्वारपाल मुनिको देखकर शीघ्रही राजा से कहता भया २९ कि आपके देखने की इच्छा से मार्कण्डेयमुनि द्वार में स्थित हैं तब युधिष्ठिर जी तिनमें परायणहो शीघ्रही द्वारपर आकर बोले ३० कि हे महामुनि जी! हे महाबुद्धि युक्त! आपका आना अच्छा हुआ अच्छा हुआ इससमय हमारा जन्म सफल हुआ इसी समय कुल पवित्र हुआ ३१ हे महामुनिजी! इसी समय आप के देखने से हमारे पितर तृप्तहुये फिर सिंहासन पर बैठाकर चरण धोकर पूजन आदि से ३२ महात्मा युधिष्ठिरजी ने तिन मुनिको पूजित किया तब मार्कण्डेयजी युधिष्ठिर से बोले कि हे राजन्! तुमने हमारा पूजन किया है ३३ शीघ्रही कहिये कि किसलिये और किस ने शीघ्र विक्लवता युक्त किया है हमारे आगे कहिये ३४ तब युधिष्ठिर बोले कि हे महामुनिजी! हमारा राज्य के लिये जो वृत्त था यह सब जानकर भगवान् आप यहां आये हैं ३५ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे महाबाहु युक्त! हे राजन्! जहां धर्म स्थित है बुद्धिमान् रणभूमि में युद्ध कररहे हैं उनको पाप नहीं दिखाई देता ३६ फिर क्या विशेषकर क्षत्रिय को राजधर्म से युद्धकर पापनहीं होता तिस से इसप्रकार हृदय में कर पापकी चिन्तना न करो ३७ तब राजा युधिष्ठिर शिरसे मुनिको प्रणाम कर सदैव त्रिकालदर्शी मुनि से बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ! आप संक्षेप से कहें जिससे हम पापसे छूट-जावें ३८ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे भरतवंशी! हे राजन् युधिष्ठिर! हे महाभाग! इसप्रकार सांख्ययोग और तीर्थको जो हम से पूंछतेहो वह सुनो ३९ हे विभो! फिर पुण्यकारी ब्राह्मणों से पूर्वसमय कीर्त्तिको क्या कहना है पुण्यकर्मवाले मनुष्यों को प्रयागका जाना श्रेष्ठ है ४० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥
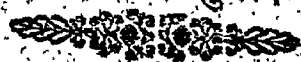
इकतालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजी के माहात्म्यका वर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे भगवन्! मार्कण्डेयजी पूर्व कल्पमें जैसे स्थित है तिसके सुनने की हम इच्छा करते हैं मनुष्यों को कैसा तहां प्रयागका जाना है १ वहां मरनेवालों की क्यागति होती है और स्नान करनेवालों को क्याफल है और जे प्रयाग में बसते हैं तिनको क्या फल है यह सब हम से कहिये हमको बड़ा कौतूहल है २ तब मार्कण्डेय जी बोले कि हे वत्स! प्रयाग का जो फल है तिसको तुम से कहेंगे पूर्वसमय ब्राह्मण ऋषियों के कहते हुये मैंने सुना है ३ प्रयाग से प्रतिष्ठान से धर्मकी वासुकी ह्रद से कम्बल अश्वतर नाग बहुमूलिकनाग ४ ये तीनों लोक में प्रसिद्ध प्रजापति क्षेत्र हैं यहां स्नानकर स्वर्गको जाते हैं और जे वहां मरते हैं तिन का फिर जन्म नहीं होता ५ तहां मिलेहुये ब्रह्मादिक देवता रक्षा करते हैं और बहुत तीर्थ सबपाप नाश करनेवाले हैं ६ हे राजन्! सैकड़ों वर्षों से कहने में समर्थ नहीं हैं प्रयागका कीर्त्तन संक्षेप से कहते हैं ७ गङ्गाजी को एकसहस्र साठ धनुष रक्षा करते हैं यमुना जीको सदैव सातवाहनवाले सूर्य रक्षा करते हैं ८ प्रयाग को विशेष कर इन्द्र आप रक्षा करते हैं अत्यन्त सम्मत मण्डलको देवताओं समेत हरिजी रक्षा करते हैं ९ शूल हाथमें लियेहुये महादेवजी तिस वटकी नित्यही रक्षा करते हैं सब पाप हरनेवाले शुभस्थानकी देवजी रक्षा करते हैं १० हे मनुष्योंके स्वामी! अधर्म से युक्त संसारमें तिस पदको नहीं जाता है जो तिसका थोड़ा पापहो ११ तो प्रयाग का स्मरण करने से सब नाश को प्राप्तहो तिस तीर्थ के दर्शन नाम का कीर्तन १२ और मट्टी लगानेसे मनुष्य पापसे छूटजाताहै हे राजाओं में श्रेष्ठ! पांच कुण्ड हैं जिनके बीच में गंगाजी हैं १३ प्रयाग में प्रवेश कियेहुये के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं सहस्रों योजनों से जो मनुष्य गंगाजी को स्मरण करता है १४ वह पापकर्म करने वाला भी परमगति को प्राप्त होता है कीर्तन करने से पापों से छूट-

जाता है देखकर कल्याणों को देखता है १५ स्नान और पानकर सातकुल को पवित्र करता है सत्यवादी क्रोध जीतनेवाला अहिंसा में स्थित १६ धर्म के पीछे चलनेवाला तत्त्वका जाननेहारा गऊ और ब्राह्मण के हित में रत मनुष्य गंगा और यमुना के बीच में स्नानकर पापसे छूटजाता है १७ मन से चिंतित पुष्कल कामोंको अच्छीतरह से प्राप्त होता है फिर सब देवों से रक्षित प्रयाग को जाकर १८ ब्रह्मचारी महीनाभर बसे पितृ और देवोंको तर्पण करे तो जहां कहीं उत्पन्न हो वहां मनोवाञ्छित कामनाओं को प्राप्तहो १९ सूर्यकी कन्या यमुना देवी तीनोंलोक में प्रसिद्ध हैं जहां महाभागा यमुनानदी प्राप्त हैं २० हे युधिष्ठिर! तहां साक्षात् देव महादेवजी नित्यही सन्निहित हैं मनुष्यों से पुण्यकारी प्रयाग दुःख से प्राप्त होता है २१ हे राजाओं में श्रेष्ठ! देवता दानव गन्धर्व ऋषि सिद्ध और चारण तहां स्नानकर स्वर्गलोक में प्राप्त होते हैं २२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

बयालीसवां अध्याय॥

प्रयाग जी का माहात्म्य वर्णन॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! प्रयाग के माहात्म्य को फिर सुनिये जहांजाकर सब पापों से निस्सन्देह छूटजाता है १ पीड़ित दरिद्र निश्चितव्यवसायियों को प्रयागस्थान छोड़कर कोई नाश रहित नहीं है २ गंगा यमुना को प्राप्तहोकर जो प्राणोंको छोड़ताहै वह प्रकाशित सुवर्णके वर्ण समान दीप्तिवाले सूर्यके समान तेजवाले विमान में ३ गंधर्व और अप्सराओं के मध्यमें स्वर्ग में मनुष्य आनन्दकरताहै और मनोवाञ्छित कामनाओं को प्राप्तहोताहै यहश्रेष्ठऋषि कहते हैं ४ सर्वरत्नमय दिव्य अनेकप्रकार के ध्वजों से समाकुल श्रेष्ठ स्त्रियोंसे युक्त शुभलक्षणों से आनन्दकरै ५ गीत और बाजाओंके शब्दसे सोताहुआ जगपड़े जबतक जन्मका स्मरण न करै तबतक स्वर्गमें प्राप्तरहे जब कर्म्मक्षीणहो तब स्वर्ग से भ्रष्टहो वहांसे च्युतहो सुवर्ण और रत्नों से पूर्ण ऐश्वर्यवान् के कु-

लमें जन्महोइ ७ तिस तीर्थको स्मरणकरै स्मरणहीसे तहां जावे देश वा वन विदेश वा घरमें ८ प्रयागको स्मरणकर जो प्राणोंको छोड़ताहै वह ब्रह्मलोक को प्राप्तहोता है यह ऋषि श्रेष्ठ कहतेहैं ९ और सब कामना के फलसेयुक्त जहां हिरण्मयी पृथ्वी है ऋषि मुनि सिद्ध जिस लोकमें जाते हैं १० सहस्रों स्त्रियों से आकुलरम्य गंगाजी के शुभ किनारे अपने किये हुये कर्म से ऋषियों के साथआनन्दकरै ११ सिद्धचारण गन्धर्व और देवताओं से स्वर्ग में पूजितहो तिस पीछे स्वर्ग से परिभ्रष्टहोकर जम्बूद्वीपका स्वामी हो फिर शुभकर्मों को फिर फिर चिन्तनाकरता हुआ गुणवान् और द्रव्यसंयुक्त निस्सन्देह होवे १२।१३ जो कर्म मन वाणी से सत्यधर्म में स्थितहो गंगा और यमुना के बीचमें दानदेताहै १४ सुवर्ण वा मणि मोती प्रतिग्रहधान्य अपने कार्य में वा पितृ कार्यमें वा देव पूजनमें देताहै १५ तो लेने वाले का वह तीर्थ निष्फल होजाता है जबतक तिसफल को भोग करताहै इसप्रकार तीर्थ और पुण्यकारी स्थानोंमें ग्रहण न करै १६ सब निमित्तोंमें मतवाला ब्राह्मण न हो जो सफेद और लाल रंग मिलीहुई गऊको प्रयाग में देताहै १७ गऊके सोने के सींग मढ़ाकर चांदी के खुर और कपड़ा कंठ में बांधकर दुग्धयुक्त गऊको प्रयाग में विधिपूर्वक वेद पाठी सज्जन सफेद कपड़े पहने शांत धर्म जानने वाले वेद के पारगामी को यमुना और गंगाजी के संगम में देताहै १८।१९ वस्त्रबड़े मोलवाले और अनेक प्रकारके रत्नोंको भी देताहै हे सत्तम! तो तिसगऊ की देहमें जितने रोमहोते हैं २० तितनेसहस्रवर्ष स्वर्गलोक में प्राप्तरहताहै जहां वह जन्मलेताहै तो वह गऊ भी वहांउत्पन्न होतीहै २१ तिसकर्मसे वह घोरनरकको नहीं देखताहै और उत्तर कुरुओंको प्राप्तहोकर नाशरहित कालतक आनन्दकरताहै २२ सैकड़ों सहस्रोंगउओंसे एक दुग्धयुक्त गऊको देवे एकही गऊ पुत्र स्त्री और भृत्योंको तारदेतीहै २३ तिससे सब दानोंमें गोदान श्रेष्ठहै दुर्गमघोरविषम महापाप से उत्पन्न में गऊही रक्षाकरती है तिससे ब्राह्मणको देनीयोग्यहै २४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तेंतालीसवां अध्याय॥

प्रयाग जीका माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिरजीबोले कि हे मुनिजी! जैसे आपने प्रयागका माहात्म्य कहा तैसे तैसे सब पापों से निस्सन्देह हम छूटगये १ हे भगवन्! हे महामुनिजी! धर्मके निश्चय करनेवालों को किस विधिसे जाना चाहिये प्रयाग में जो विधिकही है तिस को हमसे कहिये २ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे वत्स! हे कुरुश्रेष्ठ! तुमसे तीर्थयात्रा विधि का क्रम कहते हैं जो देवसंयुक्त प्रयागमें बैलकी सवारी में जाता है तिसके फलको सुनिये गौवों के अत्यन्तघोर क्रोधसे घोर नरक में बसताहै ३। ४ और तिस देहधारीको पितर जलनहीं ग्रहण करते हैं जो पुत्र और बालकों को स्नान और पान कराता है ५ जैसे अपना तैसे सबको जानता है ब्राह्मणोंमें दान देताहै परन्तु ऐश्वर्य के लोभ व मोह से सवारी में जो मनुष्य जाता है ६ तिसका वह तीर्थ निष्फल होताहै तिससे सवारी को छोड़ देवे गंगा और यमुना के मध्य में जो कन्या को देताहै ७ ऋषियोंकी कहीहुई विधिसे यथाशक्ति द्रव्य भी देताहै वह तिसकर्म से यमराजजी और घोरनरकको नहीं देखता है ८ उत्तर कुरुओं में जाकर नाशरहित काल तकआनन्द करताहै धर्मात्मा और नीति संयुक्त पुत्र और स्त्रियोंको प्राप्तहोताहै ९ तहांपर यथाशक्ति दान देना चाहिये तो तिस तीर्थ के फलसे निस्सन्देह वृद्धिको प्राप्तहो १० हे राजाओंमें श्रेष्ठ! प्रलय पर्यन्त स्वर्ग में स्थित रहे जो मनुष्य बरगदकी जड़को आश्रितहोकर प्राणों को छोड़ताहै ११ वह सब लोकोंको अतिक्रमणकर शिव लोकको जाताहै तहां शिवजी में आश्रितबारहों सूर्य तपते हैं १२ वे सूर्य सब संसारको जलादेते हैं बरगदकी जड़ नहीं भस्महोतीहै चन्द्रमा सूर्य और पवननाश होजाते हैं जब एक समुद्र संसारहोता है १३ यहांहीं विष्णुजी सोते हैं वारंवार उत्पन्नहोते हैं देवता दानव गन्धर्व ऋषि सिद्ध और चारण १४ तिसतीर्थको सदैव सेवन करते हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! गंगा यमुनाके संगममें प्रयागमें जो संयुक्तहैं

तहां जातेहैं १५ तहां ब्रह्मादिकदेव दिशा दिशाओं के स्वामी लोकपाल साध्य लोकों के सम्मत पितृ १६ तैसेही सनत्कुमार इ-त्यादिक परमर्षि अंगिरा इत्यादिक ब्रह्मर्षि १७ नाग सिद्ध गरुड़ पक्षी नदियां समुद्र पर्वत नाग विद्याधर १८ और ब्रह्माजीको आगे कर हरि भगवान् रहते हैं गंगा और यमुनाजी के मध्य में पृथ्वी का कटिहांव कहाहै १९ हे भरतवंशी! हे राजाओं में श्रेष्ठ! तीनोंलोक में प्रसिद्ध प्रयागहै तीनोंलोक में तिससे अधिक पुण्यकारी नहींहै २० तिसतीर्थ के सुनने से नामके संकीर्तन से वा मिट्टी लगाने से मनुष्य पापसे छूटजाताहै २१ जो व्रतकरनेवाला तहां संगम में अभिषेक करताहै वह राजसूययज्ञ और अश्वमेधयज्ञ के समान फल को प्राप्तहोताहै २२ हे तात! वेदके वचन और लोकके वचनसे भी तुम्हा-री प्रयागके जानेकी बुद्धि न बदलनी चाहिये २३ हे कुरुनन्दन! दशसहस्र तीर्थ और साठ कोटी कीर्तन से जिनकी यहांपर सां-निध्यहै २४ जो गतियोगयुक्त सज्जन उठेहुये बुद्धिमान् कीहै वह गति गंगा यमुनाके संगम में प्राणछोड़ने वाले कीहै २५ हे युधिष्ठिर! वे इसलोक में जहांजहां नहीं जीवते हैं जे तीनोंलोक में प्रसिद्ध प्रयागको नहीं प्राप्तहोतेहैं २६ इसप्रकार परमपद तिसतीर्थ प्रयाग को देखकर मनुष्य सब पापों से छूटजाताहै जैसे राहुसे चन्द्रमा छूटजाताहै २७ यमुनाकेदक्षिण किनारेकम्बल अश्वतर नागहैं तहां स्नान और पानकर मनुष्य सब पापों से छूटजाता है २८ तहां बुद्धिमान् मनुष्य महादेव जी के स्थान को जाकर दशबीतेहुये और दशआगे के पुरुषों को तारदेता है २९ मनुष्य अभिषेक कर अ-श्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहोता है और प्रलयपर्यन्त स्वर्गलोक को प्राप्तहोता है ३० हे भरतवंशी! गंगाजी के पूर्व किनारे तीनों-लोकमें प्रसिद्ध सामुद्र प्रतिष्ठान कूपहै ३१ ब्रह्मचारी क्रोध जीतने वाला जो तीन रात्रि वहां रहे तो सब पापोंसे विशुद्ध आत्माहोकर वह अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहो ३२ प्रतिष्ठान से उत्तर और गंगा जीके पूर्व तीनोंलोक में प्रसिद्ध हंसप्रपतननाम तीर्थ है ३३ हे भरत वंशी! तिसमें स्नानमात्रही से मनुष्य अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त

होताहै और जबतक चन्द्रमा और सूर्य हैं तबतक स्वर्गमें रहताहै ३४ उर्वशी के पुलिनरम्य विपुल हंस पांडुर में जो मत्सरहीन मनुष्य जलसे पितरों को तर्पण करताहै ३५ हे मनुष्यों के स्वामी! वह साठसहस्र और साठसौ वर्ष पितरों समेत स्वर्गलोक को सेवन करताहै ३६ और तहां ऋषिगंधर्व किन्नरों से निरंतर पूजितहोताहै फिर जब कर्म क्षीण होतेहैं तब स्वर्गसे परिभ्रष्ट च्युत होता है ३७ हे पृथ्वी के पालनेवाले! तब उर्वशी के सदृश सैकड़ों कन्याओं को प्राप्तहोताहै और सौसहस्र गौवों का भोक्ता होताहै ३८ जंजीर और झिझियों के शब्दसे सोताहुआ भी जगपड़ताहै बहुत भोगोंको भोगकर फिर तिसतीर्थ को प्राप्तहोताहै ३९ नित्यही कुशासन को धारणकर नियत इन्द्रियों को जीतकर एककाल भोजन करै तो महीनेभर भोगका पतिहो ४० सुवर्ण से अलंकृत सौ स्त्रियों को प्राप्तहो समुद्र पर्यन्त पृथ्वी में महाभोग का पतिहो ४१ दशसहस्र गांवोंका भोग करनेवाला राजाहो धनधान्य से युक्त नित्यही दाताहो ४२ वह बहुत भोगोंको भोगकर फिर तिसतीर्थ को स्मरणकरै तिसपीछे जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी तिसरम्य बरगदके समीप ४३ योगयुक्त होकर बसे तो ब्रह्मज्ञान को प्राप्तहो कोटि तीर्थको प्राप्तहोकर जो प्राणों को त्यागदेवे ४४ वहकरोड़ सहस्रवर्ष स्वर्गलोक में प्राप्तरहे फिर कर्मक्षीण हुये स्वर्गसे परिभ्रष्टच्युत होकर ४५ सुवर्ण मणि और मोती से युक्त कुल में रूपवान् होवे फिर वासुकि के उत्तरसे भोगवतीको जाकर ४६ तहां दूसरा दशाश्वमेधकतीर्थ है वहां अभिषेककर मनुष्य अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहो ४७ धनवान् रूपवान् चतुरदानी और धार्मिक होवे चारोंवेदों में जो पुण्यहै सत्यवादियों में जो फलहै ४८ अहिंसा में जो धर्महै वह वहांके जानेसे होताहै जहांतहां स्नानकी हुई गंगा कुरुक्षेत्र के समान हैं ४९ जहां सिंधु में प्राप्तहैं वहां कुरुक्षेत्र से दशगुणा हैं जहां महाभागा गंगा जी हैं जो कि बहुततीर्थ और तपस्वियों समेत हैं ५० तिसको सिद्धक्षेत्र जानना चाहिये इसमें विचारणा न करनी चाहिये पृथ्वी में मनुष्यों को तारती और पाताल में नागों को तारतीहैं ५१ स्वर्ग में देवों को तारतीहैं तिससे गंगा

जी त्रिपथा कहाईं तिसदेह धारीके जितने हाड़ गंगाजी में स्थित रहते हैं ५२ तितने सहस्र वर्ष स्वर्गलोक में प्राप्तहोताहै तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ हैं नदियों में उत्तमनदी हैं ५३ महा पापी भी सब प्राणियोंको मोक्षके देनेवालीहैं गंगाजी सब जगह सुलभहैं तीनस्थानों में दुर्लभहैं ५४ गंगाद्वार प्रयाग और गंगासागर संगम में तहां स्नानकर स्वर्ग को जाते हैं और जे मरतेहैं उनका फिर जन्म नहीं होताहै ५५ गतिके ढूंढ़नेवाले पापसे उपहत चित्तवाले सब प्राणियों को गंगाजी के समान गति नहींहै ५६ जो पवित्रोंका पवित्र मंगलों का मंगल महादेवजी के शिरसे भ्रष्ट सब पाप हरने वाली कल्याण कारिणीहैं ५७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन ॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर! प्रयागजी के माहात्म्यको फिर सुनिये जिसको सुनकर सब पापोंसे निस्संदेह छूटजाताहै १ गंगाजी के उत्तर किनारे मानसनाम तीर्थहै वहां तीनरात्रि बसकर सब कामनाओं को प्राप्त होताहै २ गऊ पृथ्वी और सोना दान से मनुष्य जो फल प्राप्त करताहै इसीफल को वह मनुष्य पाताहै जो तिस तीर्थ को फिर स्मरणकरै ३ कामना रहित वा कामना सहित जो गंगाजी के समीप मरता है वह मरकर स्वर्ग में जाता है और नरक को नहीं देखता है ४ अप्सरा गणोंके गीतों से सोता हुआ जगपड़ता है और हंस सारसयुक्त विमानसे वह जाता है ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ! छःसहस्र वर्ष स्वर्ग भोगकरता है फिर क्षीण कर्महोने पर स्वर्ग से परिभ्रष्ट च्युत होता है ६ तो सुवर्णमणि और मोती से युक्त महाकुल में उत्पन्न होताहै साठसहस्र तीर्थ औरसाठ सौ तीर्थ ७ माघमहीने में गंगा यमुना के संगम मेंजातेहैं सौसहस्र गौवों के अच्छे प्रकार देनेसे जो फलहै ८ वह प्रयागमें तीन दिन

माघमहीने में स्नान करने से फलहोता है जो गंगा और यमुनाके बीच में पंचाग्नि तापताहै ९ वह पांच इन्द्रिययुक्त हीन अंगरहित रोगहीन होताहै और तिसदेह धारीकी देहमें जितने रोमहोते हैं १० तितने सहस्रवर्ष स्वर्गलोक में रहताहै फिर स्वर्ग से परिभ्रष्ट होकर जम्बूद्वीपका स्वामी होताहै ११ वह मनुष्य बहुत भोगों को भोगकर तिसतीर्थ को सेवनकरता है जो लोक में प्रसिद्ध संगम में जलमें प्रवेशकरताहै १२ वहराहुसे ग्रसेहुये चन्द्रमाकी नाईं सब पापों से छूटजाताहै चंद्रलोक को प्राप्त होता है और चन्द्रमा समेत आनन्द करताहै १३ ऋषि और गंधर्वों से सेवित साठसहस्र और साठसौ वर्ष स्वर्गलोकमें प्राप्तरहताहै १४ हे राजाओंमें श्रेष्ठ! स्वर्गसे परिभ्रष्टहोकर ऐश्वर्य युक्त कुलमें उत्पन्नहोताहै जो मनुष्य नीचे को शिर और ऊपर पांवकर ज्वालापीता है १५ वह सौसहस्र वर्ष स्वर्गलोकमें प्राप्तहोताहै वहांसे परिभ्रष्ट होकर अग्निहोत्र यज्ञ करने वाला मनुष्य होताहै १६ और बहुत भोगोंको भोगकर तिसतीर्थ को मनुष्य सेवनकरताहै जो देह को काटकर पक्षियोंको देताहै १७ पक्षियोंसे भोजन किये हुये तिसका जो फलहोताहै वह सुनो सौसहस्रवर्ष सोमलोकमें प्राप्तरहताहै १८ तदनन्तर स्वर्गसे परिभ्रष्ट धर्मात्मा राजाहोताहै जो कि गुणवान् रूपयुक्त विद्वान् और अत्यन्त प्रिय देहवाला होताहै १९ बहुत भोगोंको भोगकर फिर तिसतीर्थ को सेवन करताहै यमुना के उत्तर किनारे प्रयागके दक्षिण में २० ऋण प्रमोचन नाम श्रेष्ठ तीर्थ है वहां एकरात्रि बसकर सब ऋणों से छूटजाताहै २१ सूर्य लोकको प्राप्तहोताहै और सदैव ऋणरहित होताहै २२॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

यमुनाजी का माहात्म्य वर्णन॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे मार्कण्डेयजी! यह प्रयाग का माहात्म्य

जो तुमने कीर्तन किया है प्रयागके कीर्तन से यह हृदय शुद्धहुआहै हे भगवन्! तहां कैसा अनाशकफल होताहै तिसको कहिये १ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन्! हे विभो! प्रयाग में अनाशक फल को सुनिये श्रद्धायुक्त बुद्धिमान् पुरुष जैसे फलको प्राप्त होता है २ हीनांग रहित रोगहीन और पांच इन्द्रियसे युक्त पदपद में जातेहुये तिसको अश्वमेधयज्ञ का फलहोता है ३ हे राजन्! दश पहले के और दश पीछे के कुलों को तारदेता है सब पापों से छूटजाता और परमपदको जाताहै ४ तब युधिष्ठिर बोले कि हे धर्म जाननेवाले! हे प्रभो! तुम महाभागहो हमसे दान कहिये जिस में थोड़े प्रधानसे बहुत धर्मोंको प्राप्त होवे ५ इसलोक में अश्वमेधयज्ञ बहुत सुकृतों से प्राप्त होतीहै इस हमारे संशयको कहिये हमारे बड़ाकौतूहल है ६ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे महावीर! हे राजन्! सुनिये जो पूर्वसमय में ब्रह्माजीने ऋषियों के समीप में कहाथा तिसको मैंने सुनाथा ७ पांच योजन विस्तृत प्रयाग का मण्डल है तिसके तिस भूमिमें प्रवेश करते हुये पदपद में अश्वमेधयज्ञ का फल होताहै ८ मनुष्य सात व्यतीत और चौदह भविष्यपुरुषों को सबको तार देताहै जो प्राणों को वहां छोड़ता है ९ हे राजाओं में श्रेष्ठ! ऐसा जानकर सदैव श्रद्धामें परायण होवे श्रद्धारहित पापसे उपहत चित्तवाले पुरुष देवों के रचेहुये तिस स्थानप्रयाग को नहीं प्राप्त होते हैं १० तब युधिष्ठिर बोले कि हे महामुनिजी! स्नेह से वा द्रव्य के लोभसे जे कामके वश में प्राप्त हैं तिन को तीर्थ का फल कैसा और कैसे पुण्य को प्राप्तहोते हैं ११ सब भांड़ों के बेचने और कार्य अकार्य को न जानते हुये तिस पुरुषकी प्रयाग में क्या गति होती है इसको कहिये १२ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन्! हे राजाओं में श्रेष्ठ! सब पाप नाश करनेवाले महागुह्य को सुनिये नियतेन्द्रिय प्रयाग में महीने भर बसते हुये १३ सब पापों से छूटजाता है जैसे ब्रह्माजी ने कहा है पवित्र प्रयत हिंसारहित और श्रद्धायुक्त १४ सब पापों से छूटजाता है और वह परमपद को जाता है विश्वास-

घात करनेवालोंका प्रयाग में जो फल होता है तिसको सुनिये १५ त्रिकाल स्नान करै भिक्षाको भोजन करै तो प्रयाग से निस्सन्देह तीन महीनों में पापसे छूटजावे १६ जिसकी इसलोक में अज्ञान से तीर्थ यात्रादिक होती है वह सब कामनाओं से समृद्ध स्वर्गलोक में प्राप्त होता है १७ और नित्यही धन धान्य से युक्त स्थानको प्राप्त होता है इसप्रकार ज्ञान से पूर्ण सदैव भोगयुक्त होता है १८ हे तत्त्व के जाननेवाले! तिसने नरक से पितर और प्रपितामह तार दिये हैं धर्म के अनुसार में वारंवार पूँछते हुये तुमसे तुम्हारे प्रिय के लिये यह सनातन गुह्य कहा १९ तब युधिष्ठिर बोले कि हे धर्मात्मन्! इससमय मेरा जन्म सफल हुआ इसी समय मेराकुल सफल हुआ आपके दर्शन से मैं इस समय प्रसन्न और अनुगृहीत हूं आपके दर्शनही से सब पापों से मैं छूटगया हूं २० तब मार्कण्डेय जी बोले कि बड़ी भाग्य है कि तुम्हारा जन्म सफल हुआ तुम्हारी बड़ी भाग्य है कि कुलतार दिया कीर्तन से पुण्य बढ़ता है सुनने से पापनाश होता है २१ तब युधिष्ठिर बोले कि हे महामुनिजी! यमुना जी में क्या पुण्य और क्या फल है जैसा देखा और जैसा सुनाहो यह सब मुझसे कहिये २२ तब मार्कण्डेयजी बोले कि सूर्यकी पुत्री देवी तीनों लोक में प्रसिद्ध महाभागा यमुनानदी जहां प्राप्त हैं २३ जिससे गंगाजी निकली हैं तिसी से यमुनाजी भी आई हैं सहस्रों योजनों में कीर्तन से पाप नाश करनेवाली हैं २४ हे युधिष्ठिर! तहां यमुनाजी में स्नान पानकर कीर्तन से पुण्य को प्राप्त होता है देखने से कल्याणों को देखता है २५ स्नान और पान करने से सातकुल को पवित्र करती हैं जो तहांपर प्राणों को त्यागता है वह परमगति को प्राप्त होताहै २६ यमुनाजी के दक्षिण किनारे अग्नितीर्थ प्रसिद्ध है पश्चिम में धर्म्मराजका तीर्थ हरवर है २७ तहां स्नानकर स्वर्ग को जाते हैं और जो मरते हैं तिनका फिर जन्म नहीं होता है इस प्रकार सहस्रतीर्थ यमुनाजी के दक्षिण किनारे हैं २८ उत्तर में महात्मा सूर्यजीके विरज नाम तीर्थको कहते हैं जहां इन्द्रसहित देवता २९ नित्यकाल सन्ध्या को करते हैं देवता और विद्वान् मनुष्य

तिसतीर्थ को सेवन करते हैं ३० श्रद्धा में परायण होकर तीर्थका स्नान करो और बहुत तीर्थ सब पाप हरनेवाले शुभ हैं ३१ तिनमें स्नानकर स्वर्गको जाते हैं और जो मरते हैं तिनका फिर जन्म नहीं होता है गंगा और यमुना दोनों तुल्य फल देनेवाली हैं ३२ केवल श्रेष्ठ भावसे गंगा सबओर पूजित हैं हेयुधिष्ठिर! इसप्रकार स्वर्गतीर्थका स्नान करो ३३ जीवन पर्यन्त के पाप तिसी क्षणसे नाश होजाते हैं जो सबेरे उठकर इसको पढ़ता वा सुनता है ३४ वह सब पापों से छूट जाता है और स्वर्गलोक को जाता है ३५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेयमुनामाहात्म्ये पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजी का माहात्म्य वर्णन ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे मार्कण्डेयजी! मैंने ब्रह्माजीकेकहेहुये पुराण में पुण्य सम्मित तीर्थों के सहस्र सैकड़ा और लाख तीर्थ सुने हैं १ सब पुण्यकारी और पवित्रहैं परमगति कहाती है पृथ्वीमें पुण्यकारी नैमिषहै अंतरिक्षमें पुष्करहै २ लोकोंका प्रयाग और कुरुक्षेत्र श्रेष्ठ है सबको छोड़कर कैसे एक की प्रशंसाकरतेहो ३ यह प्रमाण रहित श्रद्धारहित अत्युत्तमहै परमगति दिव्य भोग यथेप्सितहै ४ किसलिये थोड़े योग से बहुत धर्म की प्रशंसाकरतेहो इस मेरे जैसे देखे और जैसे सुने संशयको कहिये ५ तब मार्कण्डेयजी बोले कि श्रद्धा युक्त पापसे उपहत चित्तवाले मनुष्यको श्रद्धा रहित नहीं कहने के योग्यहै वह प्रत्यक्षहोताहै ६ श्रद्धा रहित अपवित्र दुष्ट बुद्धि और मंगलहीन ये सब पापी हैं तिससे इसमेरे कहे हुये ७ जैसे देखे और जैसे सुनेहुये प्रयागमाहात्म्यको सुनिये प्रत्यक्ष परोक्ष जैसे और से होताहै ८ जैसे पूर्वसमय और मैंने देखा और जैसे सुनाहै शास्त्र प्रमाण कर आत्माका योग पूजितहै ९ और तहां क्लेशको प्राप्त योगको नहीं प्राप्त होताहै सहस्रों जन्मोंसे मनुष्योंको योग प्राप्त होताहै १० जैसे सहस्रयोगसे मनुष्योंसे योग प्राप्तहोताहै जो सब रत्न ब्राह्मणोंको देता

है ११ तिस दियेहुये दानसे मनुष्यों से योग प्राप्तहोताहै प्रयागमें मरेहुयेको यह सब होताहै और तरह नहीं होताहै १२ हे भरतवंशी! श्रद्धायुक्तों में प्रधान हेतुको कहते हैं जैसे सब प्राणियों में सब जगह दिखाई १३ ब्रह्मही देताहै और नहीं कुछ दिखाता जिसके कहने को यह कहते हैं जैसे सब प्राणियों में सब जगह ब्रह्मपूजा जाता है १४ इसीप्रकार सब लोकों में पण्डितों से प्रयाग पूजित होता है हे युधिष्ठिर! यह तीर्थोंका राजा सत्यही पूजितहोताहै १५ ब्रह्मभी उत्तम प्रयाग तीर्थको नित्यही स्मरण करताहै प्रयागको पाकर और नहीं कुछ इच्छा करताहै १६ हे युधिष्ठिर! देव भावको पाकर कौन मनुष्य भावकी इच्छा करताहै इसी अनुमान से तुमजानो १७ जैसे पुण्य वा अपुण्य तैसे मैंने कहा तब युधिष्ठिर बोले कि जो आपने कहा वह मैंने सुना वारंवार मैं विस्मितहूं १८ कैसे योग कर्म से स्वर्गलोक मिलताहै तब तिसकर्मों के फल भोगों और पृथ्वीको प्राप्तहोताहै १९ तिनकर्मों को पूंछते हैं जिनसे फिर पृथ्वी को प्राप्तहोताहै तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे महाबाहो! हे राजन्! यथोक्त कर्म से पृथ्वी २० गऊ अग्नि ब्राह्मण शास्त्र सोना जल स्त्रियां माता और पिताकी जो निन्दा करताहै २१ इनका ऊर्ध्वगमन नहीं होता है इसप्रकार प्रजापति कहते हैं परम दुर्लभ स्थान इसीप्रकार अच्छे योगसे प्राप्तहोताहै २२ जो पाप करनेवाले मनुष्यहैं वे घोर नरकको जाते हैं हाथी घोड़ा गऊ बैल मणि मोती आदि और सोने को २३ जो परोक्ष हरता और पीछे से दानदेता है वे स्वर्गको नहीं जाते हैं जहां देनेवाले भोगी पुरुषजाते हैं २४ इस कर्म से युक्त अधम नरकमें पचते हैं हे युधिष्ठिर! इसी प्रकार योग धर्म दाता २५ जैसे सत्य वा असत्य है नहीं है यह जो फल निरुक्तहै तिसको कहते हैं जैसे जिसको आपही प्राप्तहोताहै २६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजीका माहात्म्य वर्णन ॥

मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर ! प्रयाग के माहात्म्य को फिर सुनिये नैमिष पुष्कर गोतीर्थ सिंधु सागर १ कुरुक्षेत्र गया गंगासागर ये और बहुत पुण्यकारी पर्वत २ और तीर्थ दश सहस्र और तीनसौ कोटी प्रयागमें नित्यही स्थितहैं इस प्रकार बुद्धिमान् कहते हैं ३ तीन अग्नि के कुण्डहैं जिनके बीच में प्रयागसे निकली सबतीर्थोंको आगे किये गंगाजी हैं तीनों लोकमें प्रसिद्ध सूर्यकी पुत्री लोक भाविनी देवी यमुनाजी गंगाजी के साथ स्थित हैं ४ । ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ ! गंगा और यमुनाजी के बीच में प्रयाग पृथ्वीका करिहांवहै उसकी सोलहवीं कलाको और नहीं पहुंच सक्ते ६ वायुजी साढ़ेतीनकरोड़ तीर्थकहतेहैं ये सब स्वर्ग पृथ्वी और आकाशमें हैं और गंगाजीमें भी सबहैं ७ प्रयागमें सब स्थितहैं कंबल और अश्वतर ये दोनों और भोगवती जो प्रजापतिकी वेदि है ८ हे युधिष्ठिर ! तहां पर मूर्तिधारे देवता यज्ञ और तपस्वी ऋषि प्रयागको पूजते हैं ९ हे भरतवंशी ! बहुत धनीराजा यज्ञोंसे देवताओंको पूजनकरतेहैं तिससे अधिक पुण्य युक्त तीनोंलोकमें नहींहै १० हेराजन्! प्रभाव से सबतीर्थों से अधिक है तीन करोड़ दश सहस्र तीर्थ हैं ११ जहां महाभागा गंगाजी हैं वह देश तपोवन और गंगाजीके तीर आश्रित सिद्धक्षेत्र जानने योग्यहै १२ यह सत्यहै ब्राह्मणों साधुओं वा पुत्र मित्रों शिष्य वा पीछे चलनेवाले के कानमें सुनादेवे १३ यह धन देनेवाला स्वर्गदेनेहारा सेवन करने योग्य शुभ पुण्य सुन्दर पवित्र उत्तमधर्म १४ महर्षियोंका यह गुह्य सब पापनाशकरने वालाहै ब्राह्मण पढ़ ध्यानकरे तो निर्मलताको प्राप्तहो १५ जो सदैव पवित्र इस पुण्यकारी तीर्थको नित्यही सुने वह जातिस्मरत्वको प्राप्तहो और स्वर्गमें आनन्दकरै १६ वे तीर्थ अच्छे अर्थके देखनेवाले सज्जनोंसे प्राप्तहोसक्केहैं हे कुरुवंशी ! तीर्थोंमें स्नानकरो वक्र बुद्धि न हो १७ हेराजन्! तुमने अच्छे प्रकारसे पूछा और मैंने कहा सब पितर और

पितामह तुमने तार दिये १८ हे युधिष्ठिर ! वे सब प्रयागकी सोलहवीं कलाको नहीं पहुंचते इस प्रकार ज्ञान योग तीर्थ १९ बहुत क्लेशसे मिलते हैं फिर परमगतिको जाते हैं मनुष्य प्रयाग के स्मरण से स्वर्गलोकको जाताहै २० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

प्रयागजीका माहात्म्यवर्णन ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे मार्कण्डेयजी ! प्रयागकी सब कथा आपने कही इसीप्रकार हम से सब कहिये जैसे हमको तारदीजिये १ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे राजन् युधिष्ठिर ! सबइस संसारको कहतेहैं सुनिये ब्रह्मा विष्णु और देवताओंके प्रभु नाश रहित शिवजी हैं २ ब्रह्मा स्थावर जंगम सब प्राणियों को उत्पन्न करते हैं तिन सब प्रजाओं को विष्णुजी पालन करते हैं ३ तिस सब संसार को कल्पके अन्त में शिवजी संहार करते हैं न देते न प्राप्त होते न कभी नाश होते ४ सब प्राणियों के ईश्वर हैं जो देखता है वही देखता है इस समय में प्रतिष्ठान से उत्तर ब्रह्म स्थित है ५ महेश्वर परमेश्वर वट में होकर स्थित हैं तब देवता गन्धर्व सिद्ध परमर्षि ६ नित्यही पाप कर्म में परायणों की रक्षा करते हैं और जो और स्थित हैं वे परमगतिको नहीं प्राप्त होते हैं ७ तब युधिष्ठिर जी बोले कि हम से जैसा तत्त्व है वैसा कहो जैसे इनका सुना हुआ स्थित रहे किसकारण से लोक सम्मत स्थित रहते हैं ८ तब मार्कण्डेयजी बोले कि हे युधिष्ठिर प्रयाग में ये ब्रह्मा विष्णु और महादेवजी बसते हैं कारण को कहते हैं तत्त्वको सुनिये ९ पांच योजन विस्तृत प्रयागका मण्डल है रक्षा के लिये पापकर्म के निवारण करनेवाले स्थित हैं १० तहांपर थोड़ा पाप नरक में गिरादेता है प्रयाग में इसी प्रकार ब्रह्मा विष्णु महादेवजी ११ पृथ्वीतलमें सातोंद्वीप समुद्र और पर्वत धारण किये प्रलय पर्यन्त स्थित रहते हैं १२ हे युधिष्ठिर ! जो और बहुत

हैं वे सब स्थित रहते हैं पृथ्वी का स्थान तीन देवताओं से रचा हुआहै १३ प्रजापतिका यहक्षेत्र प्रयाग प्रसिद्धहै यह पुण्यकारी और पवित्र प्रयाग है १४ हे राजाओं में श्रेष्ठ! भाइयोंसमेत होकर अपना राज्य कीजिये १५॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्ये ऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय ॥

प्रयागजी का माहात्म्य वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिक ऋषियो! धर्म में निश्चय करने वाले भाइयों समेत सब पाण्डव ब्राह्मणों के नमस्कार कर गुरु देवों को प्रसन्न करते भये १ तहांपर क्षणमात्र में वासुदेवजी आते भये तब सब पाण्डवों ने लक्ष्मी के पतिकी पूजाकी २ कृष्ण समेत सब महात्माओं ने फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर को अपने राज्य में अभिषेक किया ३ इसी अन्तर में महात्मा मार्कण्डेयजी क्षणमात्र में स्वस्ति कहकर युधिष्ठिर के स्थान में प्राप्त हुये ४ भाइयों समेत धर्मात्मा धर्मपुत्र युधिष्ठिर जी महादान देतेभये ५ जो सबेरे उठकर इसको पढ़ता व सुनता है वह सब पापों से छूटजाता और विष्णुलोक को जाताहै ६ वासुदेवजी बोले कि हे राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर! हमारे वचन करनेयोग्य हैं तुम्हारे स्नेह से हम कहते हैं ज्वर रहित हो हम समेत प्रयाग में यज्ञ में रत होकर नित्यही प्रयाग को स्मरण करो तो आपही शाश्वत स्वर्गलोक को प्राप्त होगे ७।८ जो मनुष्य प्रयाग में जाता वा बसता है वह सब पापों से विशुद्धआत्मा होकर स्वर्गलोक को जाता है ९ जो दान नहीं लेता सन्तुष्ट नियत पवित्र १० और अहंकार से निवृत्त है वह तीर्थ के फलको भोगकरता है हे राजेन्द्र! क्रोध रहित सत्यबोलनेवाला दृढ़व्रत करनेहारा प्राणियों में आत्मा के समान समझनेवाला तीर्थ के फलको भोगकरता है ११ हे पृथ्वी के स्वामी! देवता और ऋषियों ने यथाक्रम यज्ञ कहे हैं वे यज्ञ दरिद्र से नहीं प्राप्त होसक्ते हैं १२ यज्ञ से अनेकप्रकार

की बहुत सामग्री लगती हैं और अनेक प्रकार के द्रव्ययुक्त धन-वान् मनुष्यों से कहीं प्राप्त होसक्ता है १३ हे मनुष्यों के स्वामी! जो दरिद्र पण्डित से प्राप्त होसक्ता है पुण्यकारी यज्ञ के फलको पाता है तिसको जानिये १४ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ! ऋषियों का यह परमगुह्य है कि तीर्थ के जानेका पुण्य यज्ञों से भी श्रेष्ठ है १५ हे मनुष्यों के स्वामी! तीसकरोड़ दशसहस्र तीर्थ माघमास में गंगा जीमें जाते हैं १६ हे महाराज! हे राजाओंमें श्रेष्ठ! अकण्टकराज्य भोगकर स्वस्थहो फिर विशेषकर पूजन करते हुये तीर्थको देखोगे १७॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेप्रयागमाहात्म्येनाम ऊनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

पचासवां अध्याय॥

विष्णुभक्ति की प्रशंसा॥

ऋषिबोले कि हे महा बुद्धियुक्त सूतजी! जो कुछ पूछा वह सब आपने कहा इस समय में भी पूछते हैं एकको कहिये १ निश्चय इन तीर्थों के सेवनसे जो फल मिलताहै निश्चय सबोंको एकमें कर कर्म किससे मिलताहै २ हे सब जानने वाले! कर्म इसी प्रकार जो वर्तमानहै यह सब कहिये तब सूतजी बोले कि हे महाभाग ब्राह्मणो! अनेकप्रकारके कर्म योग ब्राह्मणादिवर्णों के निश्चयकर कहे गये तहां एक श्रेष्ठहै जिसने मन वचन वाणी से भगवान् की भक्तिकी है ३। ४ तिसने जीता तिसने जीता इसमें सन्देह नहीं है जीतही लिया सब देवोंके ईश्वरोंके ईश्वर भगवान् आराधन करने के योग्य हैं ५ हरिनाम महा मंत्रों से पापरूपी पिशाचनाश होजाते हैं निर्मल अन्तःकरणवाले एकवार भी भगवान् की प्रदक्षिणाकर ६ सबतीर्थ के स्नानको प्राप्तहोते हैं इसमें सन्देह नहीं है भगवान् की मूर्तिदे-खकर सबतीर्थ के फलको प्राप्तहोताहै ७ श्रेष्ठ विष्णुनाम जपकर सब मंत्रके फलको प्राप्तहोताहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो! विष्णुजी के प्रसाद तुलसी को सूंघकर ८ प्रचण्ड विकराल यमराजजी के मुखको नहीं देखताहै एकवार भी कृष्णजीका प्रणाम करनेवाला माताका दूध

नहींपीताहै ६ भगवान्के चरण में जिनका मनहै तिनके नित्यही नमस्कार हैं पुल्कस वा चाण्डाल वा और म्लेच्छजाति १० भगवान् के चरणों के एक सेवक महाभागवे भी वन्दना करनेकेयोग्यहैं फिर पुण्यात्मा भक्त ब्राह्मणराजर्षियों को क्या कहनाहै ११ भगवान् में भक्तिकर गर्भवासको नहीं देखताहै भगवान् का नाम करनेवाला मनुष्य भगवान् के आगे नाचकर ऊंचे स्वरसे भगवान् का नाम लेताहै १२ वह गंगादिकके जलकी नाईं लोक को पवित्र करता है तिसके भक्तिसे दर्शन स्पर्शन और बोलने से १३ ब्रह्महत्यादिक पापों से निस्सन्देह छूटजाताहै भगवान्का नाम करनेवाला मनुष्य ऊंचे स्वरसे नामले और भगवान् की प्रदक्षिणाकरै १४ करताल आदिक लेकर अच्छे स्वरसे उनको बजावे तो उसने ब्रह्महत्यादिक पापको नाशकरदिया १५ हरिभक्तिकी कथा को कहकर आख्यायिकाको जो सुनताहै तिसके दर्शन से मनुष्य पवित्रहोता है १६ हे मुनि श्रेष्ठो ! हे महर्षियो ! फिर तिसके पापोंकी क्याशंकाहै कृष्णजी का नाम तीर्थोंमें श्रेष्ठ तीर्थ है १७ जिन्होंने कृष्णजी का नाम ग्रहण कियाहै वे पृथ्वीको पवित्र करते हैं हे मुनि श्रेष्ठो ! तिससे पुण्य श्रेष्ठ नहीं है १८ विष्णुजी के प्रसाद निर्माल्यको भोजनकर मस्तक में धारणकर मनुष्य यमराजके शोकका नाश करनेवाला विष्णुही होताहै १९ हरिजी निस्सन्देह पूजन और नमस्कार करने के योग्यहैं जे अव्यक्त महा विष्णु वा महेश्वर देवको २० एक भाव से देखते हैं उनकी फिर उत्पत्ति नहींहोती है तिससे आदि और नाश रहित विष्णुजी और नाश रहित आत्मा २१ और हरिजीको एकही देखो और तैसेही पूजनकरो जे हरिजी वा और देवताओं को समान देखते हैं २२ वे घोर नरकों को जाते हैं तिनको हरिजी नहीं गिनते हैं मूर्ख वा पण्डित ब्राह्मण केशवजी के दोनों प्यारे हैं २३ प्रभु नारायणजी आपही चाण्डाल को भी मुक्त करदेते हैं पापकी राशि का अग्निनारायण से श्रेष्ठ नहीं है २४ घोर पाप भी कर कृष्णजी के नाम से छूटजाताहै आपही नारायण देव संसार के गुरु अपने नाम में आत्मा से अधिक शक्ति को स्थापित करतेभये हैं यहां जे

परिश्रम थोड़े के दर्शन से विवाद करते हैं २५। २६ वा फलों के गौरव से वे बहुत नरक को जाते हैं तिससे हरिजी में भक्तिमान् और हरिजी के नाम में परायण होवे २७ प्रभुजी पूजाकरनेवाले की पीठसे रक्षाकरते हैं नामलेनेवालेकी छाती से रक्षाकरते हैं पाप रूपी पर्वत के विदारण करने में हरिजी का नाम महावज्र है २८ तिसके चरण सफल हैं तिसी के अर्थ चलते हैं जो पूजाकरने वाले हाथ हैं वही हाथ हैं २९ शिर वही है जो हरिजी में नम्रहै वही जीभ है जो हरिजी की स्तुति करती है सोई मनहै जो भागवान् के चरणों के पीछे चलताहै ३० वही रोम कहाते हैं जो हरिजी के नाम में खड़े होजाते हैं और भगवान् के प्रसंग से नेत्रों में जलकरते हैं ३१ आश्चर्य है कि मनुष्य अत्यन्त दैवके दोषसे वंचितहैं मुक्तिके देने वाले को नामके उच्चारण मात्र से निश्चय नहीं भजते हैं ३२ वे वं-चित और स्त्रियोंके संग प्रसंगसे कलुष हैं जिनके कृष्णजी के शब्द कहने में रोम नहीं खड़े होते हैं ३३ वे मूर्ख अकृतात्मा पुत्रशोक आदिसे विह्वल बहुत आलापों से रोते हैं पर कृष्णजी के अक्षर का कीर्तन नहीं करते हैं ३४ इसलोक में जीभ पाकर भी कृष्णजी के नाम नहीं जपते हैं वे मुक्ति रूपी सीढ़ी पाकर निन्दा से गिरप-ड़ते हैं ३५ तिससे मनुष्य यत्नसे कर्मयोग से विष्णुजी को पूजे कर्म योग से पूजितहुये विष्णुजी प्रसन्नहोतेहैं और प्रकार नहीं ३६ तीर्थ से भी अधिक तीर्थ विष्णुजी का भजन कहाहै निश्चय सब तीर्थों के स्नान पान और अवगाहनों से ३७ जो फल मनुष्य पाता है वह फल कृष्णजी के सेवनसे पाताहै कर्मयोग से मनुष्य हरिजी को पूजते हैं वे मनुष्य धन्य हैं ३८ तिससे हे मुनियो! परम मंगल कृष्णजी को भजो ३९॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेविष्णुभक्तिप्रशंसनंनाम पंचाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

कर्मयोग का वर्णन ॥

ऋषिबोले कि हे महाभाग ! हे कहनेवालों में श्रेष्ठ सूतजी ! कर्म योग कैसाहै जिससे आराधित हरिप्रसन्नहोजाते हैं हमसे कहिये १ जिससे यह ईश भगवान् मोक्षकी इच्छा करनेवालों से आराधन करने योग्यहैं तिसको कहिये सब मनुष्यों का रक्षण धर्मका संग्रह है २ हे सूतजी ! तिस कर्म योगको हमसे कहिये जो मूर्तिमयहै यह सुनने की इच्छा करनेवाले ब्राह्मण आपके आगे स्थितहैं ३ तब सूतजी बोले कि पूर्व्वसमय इसी प्रकार सत्यवती के पुत्र व्यासजी अग्निके सदृश ऋषियों से पूंछेगये थे तब व्यासजी तिनसे कहते भये सो सुनो ४ व्यासजीबोले कि हे सब ऋषियो ! सनातन कर्मयोग ब्राह्मणों के अत्यन्त फलके देनेवाले कहेहुये को सुनिये ५ जोकि शास्त्र सिद्ध सब ब्राह्मणार्थ प्रदर्शितहै ऋषियों के सुनतेहुये पहले प्रजापति मनुजी ने कहाहै ६ सब रोग हरनेवाला पुण्यकारी ऋषि समूहों से सेवितहै तुम सब एकाग्रचित्त होकर हमारे कहतेहुये सुनिये ७ उत्तम ब्राह्मणगर्भसे आठवें वा जन्मसे आठवें वर्षमें अपने सूत्रके कहेहुये विधानसे जनेऊकर वेदोंको पढ़ै ८ दण्ड मेखलासूत्र कृष्णाजिन धारे मुनि भिक्षाका आहार करनेवाला गुरुका हितकरने हारा गुरुजी का मुखदेखे ९ पूर्व्वसमय में ब्रह्माजी ने जनेऊ के लिये कपासरचा ब्राह्मणों को त्रिवृत्सूत्र और रेशमी वस्त्र रचा १० ब्राह्मण सदैव जनेऊ धारे और सदैव शिखाबांधे और प्रकार जो कर्म कियाजाताहै वह ठीक नहीं होताहै ११ अविकृत वस्त्र कपास वा कषाय धारणकरै उत्तम श्वेत डोरा पहने १२ उत्तरीय वस्त्र धारै शुभ काला मृगछाला वा गावय वा रुरुनामक हरिणोंकी छाल धारै १३ दहिना भुजा उठाकर बायें भुजा में नित्यही जनेऊ धारेरहे कंठ सज्जन में निवीत १४ बायां भुजा उठाकर दहिने में धारै यही प्राचीनावीत कहाता है पितृकर्म्म में युक्तकरै १५ अग्नि के स्थान में गोशाला में होममें तप्य में पढ़ने में नित्यही भोजन में ब्राह्मणों के

समीप में १६ गुरुओं की संध्याकी उपासना में साधुओं के संगम में नित्यही जनेऊ धारे यह सनातन विधि है १७ मौंजी त्रिवृतसमान मनोहर ब्राह्मणकी मेखलाकरै मौंजी मूंजके अभाव में कुशकी कहीगई है एक ग्रंथि वा तीन ग्रंथिबनावे १८ ब्राह्मण बांस और ढाकका दण्ड बालोंतक धारे वा यज्ञके कामवाले वृक्षका दंड सुन्दर व्रण रहित धारे १६ ब्राह्मण सायंकाल वा प्रातःकाल एकाग्रचित्त होकर संध्याकरै कामलोभ भय और मोहसे संध्या छोड़ने से पतित होताहै २० फिर प्रसन्नबुद्धि संध्या और सबेरे अग्निका कार्यकरै स्नानकर देवता ऋषि और पितृगणों को तर्पणकरै २१ पुष्प पत्र यव और जलसे देवताओं का पूजनकरै धर्म से नित्यही वृद्धों के नमस्कारकरै २२ तन्द्रादिक से वर्जित होकर उमर और आरोग्य की सिद्धि के लिये मैं हूं अपना नाम अच्छीतरह नम्रतापूर्वक नमस्कार में लेवे २३ तब ब्राह्मण नमस्कार में हे सौम्य! बड़ी उमर वाले हो यह वचनकहे इसनामके अन्त में आकार पहले का अक्षर प्लुत कहने योग्यहै २४ जो ब्राह्मण नमस्कार का अभिवादन नहीं जानताहै वह विद्वान् से नमस्कार करने योग्य नहीं है जैसे शूद्र तैसेही वहहै २५ व्यत्यस्त पाणिसे गुरुजी के चरण छूने चाहिये बायें से बायां और दहनेसे दहना छूना चाहिये २६ प्रयत होकर लौकिक वैदिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होकर गुरुजी के पहले नमस्कारकरै २७ जल भिक्षा पुष्प और समिधोंको न धारण करै इसप्रकार की और देवताके कर्मों में न धारणकरै २८ ब्राह्मण से मिलकर कुशल क्षत्रियसे अनामय वैश्य से क्षेम और शूद्र से आरोग्य पूंछे २६ पढ़ानेवाला पिता ज्येष्ठ भाई भयसे रक्षाकरने वाला मामा श्वशुर नाना बाबा ३० वर्णों में श्रेष्ठ चचा ये पुरुष के गुरुहैं माता नानी गुरु की स्त्री पिता और माता के भाई ३१ सास आजी ज्येठी और दूधपिलानेवाली स्त्री के गुरु हैं हे ब्राह्मणो! यह माता और पितासे गुरु वर्ग जानने योग्यहै ३२ मन वचन देह और कर्मों से इनका अनुवर्तन करै गुरुओंको देखकर उठकर हाथ जोड़कर नमस्कार करै ३३ इनके साथ बैठे नहीं आत्मकारण से

विवाद नहीं करे जीवितके लिये भी द्वेषसे गुरुओं से नहीं बोले ३४
और गुणोंसे युक्त भी गुरुद्वेषी नरक में गिरता है सब गुरुओं में
पांच विशेषकर पूज्य हैं ३५ तिनमें पहले की तीन श्रेष्ठहैं तिनमें
माता अत्यन्त पूजित है जो पालन करता है जिस माताने उत्पन्न
कियाहै जिनने विद्या उपदेशकरी है ३६ ज्येठा भाई और स्वामी
ये पांच गुरुहैं आत्माके सब यत्नसे फिर प्राणत्याग से भी ३७ क-
ल्याण की इच्छा करनेवाले से ये पांच विशेषकर पूजने चाहिये
जबतक पिता और माता ये दोनों विकाररहितहों ३८ तबतक सब
को छोड़कर पुत्र तिनमें परायणहो यदि पुत्रके गुणोंसे पिता और
माता अत्यन्त प्रसन्नहों ३९ तो तिस कर्म से पुत्र सब धर्मों को
प्राप्तहो माताके समान देवता नहीं है पिताके समान गुरु नहींहै४०
तिनका प्रत्युपकार कभी नहींहै कर्म मन वाणीसे तिनका नित्यही
प्रियकरै ४१ तिनकी विना आज्ञाके और धर्म न करै मुक्ति फल
तथा नित्यनैमित्तिकको वर्जितकरै ४२ यह धर्मसार कहाहै मरनेपर
अनन्त फलका देनेवालाहै वक्ताकी अच्छेप्रकार आराधनाकर तिस
की आज्ञासे विसृष्ट ४३ शिष्य विद्याके फलको भोग करता है मरने
पर स्वर्गको प्राप्त होताहै जो मूर्ख पिताके समान ज्येष्ठ भाईहै तिसका
अपमान करता है ४४ तो तिस दोषसे मरकर घोर नरकको जाता
है पुरुषों को निसृष्टमार्ग से स्वामी सदैव पूज्य है ४५ निश्चयकर
इस माताके लोकमें उपकार से गौरवता है मामा चचा श्वशुर ऋ-
त्विज गुरु ४६ इनको ये हमीं हैं यह कहे उठकर नमस्कारकरै दीक्षा
युक्त वृद्धभीहो उसको गुरुजी नाम लेकर नहीं बुलाने चाहिये ४७
धर्मका जाननेवाला भो और भवत्पूर्वक इनसे बोले लक्ष्मीकी काम-
नावाले ब्राह्मण और क्षत्रियादिकों से आदरसमेत सदैव गुरु अभि-
वादन पूजन और शिरसे नमस्कार करने योग्य हैं ब्राह्मण से ज्ञान
कर्म गुणोंसे युक्त यद्यपि बहुत कथादिक सुननेवाले भी क्षत्रियादिक
कभी नमस्कार करने के योग्य नहीं हैं ब्राह्मण सब वर्णोंका कल्याण
करता है यह श्रुतिहै ४८।५० सवर्ण से सवर्णोंको नमस्कार करना
चाहिये द्विजाति वर्णों के अग्नि और ब्राह्मण गुरुहैं ५१ स्त्रियों का

एक पतिही गुरुहै सब जगह अभ्यागत गुरुहै विद्या कर्म उमर बन्धु और पांचवां द्रव्य ५२ ये पांच मान्यके स्थान कहेहैं पीछे से पहले के गुरुहैं तीनों वर्णोंमें पांचोंकी अधिकता और बल ५३ जहां होंगे सोई मानके योग्यहै शूद्र भी दशमी को प्राप्तहै ब्राह्मण स्त्री राजा नेत्रहीन वृद्धभार से भग्न रोगी और दुर्बलको राह देना चाहिये प्रयत होकर नित्यही सज्जनों के घरसे भिक्षा मांगकर ५४। ५५ गुरुजी को निवेदनकर उनकी आज्ञासे मौन होकर भोजनकरै जनेऊ धारण कियेहुये ब्राह्मण भवत् शब्द पहले कहकर भिक्षामांगे ५६ क्षत्रिय भवत् शब्द मध्यमें और वैश्य भवत् शब्द अन्तमें कहे माता वा बहन वा अपनी माताकी बहन से ५७ पहले भिक्षामांगे जो इसको अपमान न करै सजातीय घरों में वा सब वर्णों में ५८ भिक्षा मांगना कहाहै पतित आदि वर्जितहैं वेद यज्ञोंसे हीन न हों अपने कर्मों में श्रेष्ठहों ५९ तिनके घरोंसे प्रयत ब्रह्मचारी प्रतिदिन भिक्षा मांगे गुरुजीके कुल जाति कुल बन्धुओं में न मांगे ६० और घरोंके न मिलने में पहले पहले को वर्जितकरै वा पहले कहेहुओं के असंभव में सब गांवमें भिक्षा मांगे ६१ प्रयत होकर मौनहो दिशाओंको न देखकर मायारहितहो जितना अर्थहो उतना भिक्षाके अन्न को इकट्ठाकर ६२ नित्यही भोजन करै मौन और अन्य में मनन होकर व्रत करनेवाला नित्यही भिक्षासे भोजनकरै एकही अन्न न खावे ६३ भिक्षा मांगकर खानेकी वृत्ति व्रतके समान है नित्यही भोजनको पूजनकर इनको विना निन्दाके देवे ६४ देखकर हर्षित प्रसन्न और सब ओरसे प्रशंसाकरै बहुत भोजन रोग करते उमर कम करते स्वर्ग न देते ६५ पुण्यहीन करते मनुष्यों में वैर करते तिससे बहुत अन्न वर्जितकरै पूर्व वा सूर्यके सम्मुख अन्नोंको भोजन करै ६६ नित्यही उत्तर मुख होकर न भोजनकरै यह सनातन विधि है हाथ पांव धोकर भोजनकर दोको स्पर्शकरै ६७ शुद्धदेश में बैठ भोजनकर दोको स्पर्शकरै ६८॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेकर्मयोगकथनंनामएक पंचाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

बावनवां अध्याय ॥

कर्मयोगका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि भोजनकर पानकर सो स्नानकर राहचलनेमें ओठके चाटने से स्पर्शकर वस्त्र पहनकर १ वीर्य्य मूत्र और विष्ठाके त्याग में झूंठ बोलने में थूककर पढ़ने के प्रारंभमें खांसी और श्वास के आनेमें २ चौराहा वा श्मशान में चढ़कर ब्राह्मण दोनों संध्याओं में आचमन किये भी हो पर फिर आचमन करै ३ चण्डाल और म्लेच्छ से बोलनेमें स्त्री और शूद्रके उच्छिष्ट बोलनेमें उच्छिष्ट पुरुष को देखकर उच्छिष्ट भोजन देखकर ४ आचमनकरै आंसू वा रक्तके गिरने में संध्याओंके भोजनमें स्नान पानकर मूत्र और दिशा फिर कर ५ और जगह से आकर सोकर एकबार आचमनकरै अग्नि और गौवोंके आलंभ में वा प्रयतको स्पर्शकर ६ स्त्रियों और अपने स्पर्श में वा नीलीको पहनकर जलको स्पर्शकरै वा दुःखी तृण वा भूमिको स्पर्शकरै ७ बालों के आत्माकेस्पर्श में छूटेहुये कपड़ेकेस्पर्श में धर्मसेनहीं दुष्ट गर्मी रहित बालोंसे ८ शौचकी इच्छा करनेवाला सदैव आचमनकरै पूर्व वा उत्तर मुख बैठे शिर खोलकर वा कण्ठ भी खोलकर वा बाल और शिखाखोलकर ९ पांवों के विना धोये राहसे पवित्र नहीं होताहै जूता वा खड़ाऊं पहनकर पण्डित विना पगड़ी के आचमनकरै १० वर्ष की धाराओं में उद्धृत जलोंमें न खड़ाहो एक हाथके अर्पित जलोंसे स्नान न करै वा फिर विना सूत्रके न नहावे ११ खड़ाऊं और आसनपर बैठकर न नहावे वा बाहर गांठरहे कहते हँसते देखते शय्यामें सोते १२ न अविक्षित फेनादिक से युक्त शूद्र के अपवित्र हाथों से छूटेहुए नक्षारों से १३ न अन्यमें मन होकर अंगुलियों से शब्दकरै न वर्णरसदुष्टों से न प्रदरके जलों से १४ न हाथसे क्षुभितोंसे वा बाहर गन्धहोकर नहीं हृदयमें प्राप्तोंसे ब्राह्मण पूजित होताहै कण्ठमें प्राप्तोंसे क्षत्रिय पवित्र होताहै १५ प्राशितोंसे वैश्य पवित्र होताहै स्त्री और शूद्रस्पर्शसे पवित्र होते हैं अंगुष्ठ मूल के भीतर से रेखामें ब्राह्म कहाताहै १६ अन्तर अंगुष्ठ देशमें पित-

रोंका तीर्थ कहाताहै कनिष्ठा मूलसे पीछे प्राजापत्य कहाताहै १७ अंगुल्यग्र में दैव और आर्षकहाहै मूलसे दैव और आर्ष होताहै मध्यसे आग्नेय होताहै १८ सोई सौमिक तीर्थ है यह जानकर मोहको न प्राप्तहो ब्राह्मतीर्थ से ब्राह्मण नित्यही स्पर्शकरै १९ हे ब्राह्मणो! दैवसे होमकरै पितृसे न करै तीनबार भोजनकरै पहले तीन बार जलको पीवे फिर ब्राह्मसे प्रयत २० शुद्धहो अंगुष्ठ मूलसे मुख को स्पर्शकरै अंगुष्ठ और अनामिका से दोनों नेत्रोंको स्पर्शकरै २१ तर्जनी और अंगुष्ठके योगसे दोनों नासिका के पुटस्पर्शकरै कनिष्ठा और अंगुष्ठके योगसे कानस्पर्शकरै २२ सबके योगसे हृदय और शिरस्पर्शकरै अंगुष्ठसे दोनों कांधा स्पर्शकरै २३ जो जल तीनबार पियागयाहै तिससे इसके ब्रह्मा विष्णु महेश देवता प्रसन्न होते हैं यह सुनाहै २४ परिमार्जन से गङ्गा और यमुना प्रसन्न होती हैं नेत्रों के स्पर्श से चन्द्रमा और सूर्य प्रसन्न होते हैं २५ नासिका के दोनों पुटके स्पर्श से नासत्य और दस्र ये दोनों अश्विनीकुमार प्रसन्न होते हैं कानों के स्पर्श से पवन और अग्नि प्रसन्न होते हैं २६ हृदयके स्पर्श से इसके सब देवता प्रसन्न होते हैं मस्तक के स्पर्श से एक सो पुरुष प्रसन्न होताहै २७ जो बिन्दु अंगमें लगते हैं वे मुखमें जूंठन नहीं करते दांतों में लगने में दांतों की नाईं जीभके स्पर्श में पवित्र होताहै २८ जो दूसरों को आचमन कराता है तब जो बिन्दु चरणोंको स्पर्श करते हैं वे पृथ्वीकी धूलिके समान जानने योग्यहैं तिनसे अशुद्धता नहीं होती है २९ मधुपर्क में सोममें पान के खाने में फल मूल और ईखमें मनुजी दोष नहीं कहते हैं ३० अन्न और पानों में जो मनुष्य हाथमें द्रव्य लियेहो तो उस द्रव्य को पृथ्वी में धर आचमनकर भोजनकर फिर आचमन करके ग्रहण करै ३१ तैजस को लेकर जो ब्राह्मण उच्छिष्टहो तो उस द्रव्य को पृथ्वी में धर आचमनकर फिर द्रव्यको ग्रहणकरै ३२ जो जो द्रव्य लेकर उच्छिष्टता से युक्त होताहै तिस द्रव्यको पृथ्वी में विना धरे अपवित्रता को प्राप्त होताहै ३३ वस्त्रादिकों में विकल्पहो तो उसको स्पर्शकर वहां आचमनकरै मनुष्यहीन वनमें रात्रिमें चोर और व्याघ्र

से व्याकुल राहमें ३४ द्रव्य हाथमें लियेहुये मूत्र और विष्ठाकरै तो अशुद्ध नहीं होताहै दहिने कानमें जनेऊ चढ़ाकर उत्तर मुखहो ३५ दिनमें विष्ठा और मूत्रकरै रात्रिमें दक्षिण मुख होकरकरै पृथ्वी को काष्ठ पत्ता लोष्ट और तृणसे आच्छादितकर ३६ शिरको ढककर विष्ठा और मूत्रकरै छाया कुंवां नदी गोशाला स्थान जल राह भस्म ३७ अग्नि श्मशान गोबर लकड़ी महावृक्ष और हरितमें विष्ठा और मूत्र न करै ३८ न स्थितहो वस्त्रहीन न हो पर्वतमण्डल में पुराने देवस्थान में बेमौरि में कभी मूत्र और विष्ठा न करै ३९ जीवयुक्त गड़हों में न जावे न मूत्र और विष्ठाकरै भूसी अंगार कपालों में राज मार्गमें ४० खेत बिल तीर्थ चौरहा वन जलके समीप ऊसर गुहामें ४१ जूता वा खड़ाऊ वा छतुरी लिये अन्तरिक्ष में स्त्रियोंके सम्मुख गुरु ब्राह्मण और गौवोंके सम्मुख ४२ देवता और देवस्थानमें जल में कभी न ज्योतियों को देखतेहुये वा सम्मुख ४३ सूर्य अग्नि और चन्द्रमा के सम्मुख मूत्र और विष्ठा न करै किनारे से लेप गन्ध के दूर करनेवाली मिट्टीको लेकर ४४ अतन्द्रितहो विशुद्ध उद्धृत जलों से शौचकरै ब्राह्मण धूलि और कीचड़समेत मिट्टीको न लेवे ४५ राहसे ऊसर से मिट्टी न लेवे दूसरेके शौचसे बचीहुई न लेवे देवता के स्थान से कुवांसे धाम और जलसे मिट्टी न लेवे ४६ फिर नित्यही पहले कहेहुये विधान से स्पर्शकरै ४७ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेकर्मयोगकथनेद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

कर्मयोगका वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि इसप्रकार दण्डादिकों से युक्त शौचाचारसमेत बुलायाहुआ गुरुजीका मुख देखतेहुये पढ़े १ नित्यही उद्यतपाणिहो अच्छे आचारवालाहो अत्यन्त संयतहो बैठजावो ऐसा कहनेपर गुरुजीके सम्मुख बैठजावे २ प्रतिश्रवण संभाषण में सोतेहुये न करै बैठेहुये भोजन करतेहुये न स्थितहो न पराङ्मुखहो ३ नीचलोग

सदैव गुरुजीके समीप शय्या और आसन करते हैं गुरुजीकी नजर के सामने यथेष्ट आसन न होवे ४ और परोक्षमें भी केवल गुरुजी का नाम न लेवे और चाल भाषण और चेष्टितके अनुसार न चले ५ गुरुजीका जहां परीवाद वा निन्दा होतीहो वहां कान मूंदलेवे वा वहांसे अलग चलाजावे ६ दूरमें स्थितहोकर गुरुजी को न पूजे न क्रुद्ध होकर न स्त्रीके समीप में पूजै गुरुजीको उत्तर न कहै समीप में स्थित न हो ७ उदकुंभ कुश फूल और लकड़ी सदैव लावे नित्यही अंगोंका मार्जन और लेपनकरै ८ गुरुजीका निर्माल्य शयन खड़ाऊं जूता आसन और छायादिकों को कभी आक्रमण न करै ९ दतूनि लावे जो कुछ मिलै गुरुजी को देवे विना पूंछे न जावे प्रिय हितमें रतहो १० गुरुजी के समीप कभी पांव न फैलावे जँभाई लेना हँसना कण्ठप्रावरण ११ और अंग स्फोटनको गुरुजीके समीपमें नित्यही वर्जितकरै यथाकालपढ़े जबतक गुरुजी विमन न हों १२ एकाग्र चित्त होकर गुरुजी के समीप नीचे बैठकर सेवाकरै आसन शयन और सवारी में कभी स्थित न हो १३ गुरुजीके दौड़तेहुये पीछेदौड़े चलतेहुये पीछे चले बैल घोड़ा ऊंट सवारी महल नीचे के बिछौनों में १४ शिला फलक नावोंमें गुरुजीके साथ बैठे सदैव जितेन्द्रियहो आत्माको वशरक्खे क्रोधरहित और पवित्रहो १५ सदैव हितकरने वाली मधुरवाणी बोले गन्धमाला रसकल्प शुक्ति प्राणियों का मारना १६ अभ्यंजन अंजन उन्मर्द छत्र धारण काम लोभ भय निद्रा गीत बाजा नाच १७ आतर्जन परीवाद स्त्रियोंसे दिल्लगी आलंभन पराया उपघात और चुगुलीको यत्न से वर्जितकरै १८ उदकुंभ फूल गोबर मिट्टी कुश और जितने अन्नहैं वे लावे प्रतिदिन भिक्षामांगे १९ घी नमक लावे और सब बासी वर्जितकरै निरन्तर नृत्य न देखे गीतादिकमें निस्पृहहो २० निश्चय सूर्यकी चेष्टा न करै दतूनि न करै एकान्तमें अपवित्र स्त्रियों और शूद्रादिकों से न बोले २१ गुरुजी का जूंठा औषध अन्न कामसे न युक्त करै मलका अपकर्षण स्नान कभी न करै २२ ब्राह्मण गुरुजी के त्याग में बड़े कष्टसे भी मन न करै मोह से वा लोभसे जो छोड़े तो पतित होता है २३ लौकिक

वैदिक वा आध्यात्मिक जिनसे ज्ञान पाया है तिनसे कभी द्रोह न करै २४ अवलिप्तकार्य अकार्य के न जाननेवाले उत्पथ में प्रतिपन्न भी गुरुजी का त्याग मनुजीने नहीं कहा है २५ गुरुजी के गुरु समीपहों तो गुरुजी के तुल्य वृत्तिकरै नमस्कारकर गुरुजी से छोड़ा हुआ अपने गुरुओं के नमस्कारकरै २६ विद्याके गुरुओं में ऐसेही करै अधर्म से मना करनेवाले हितकेउपदेश करनेवाले नित्यकी वृत्ति वाले योगियों में २७ नित्यही अपने गुरुजी के तुल्य वृत्तिकरै यही कल्याणकारकहै गुरुजी के पुत्रों स्त्रियों अपने बंधुओं में २८ यदि कर्ममें शिष्टहो तो बालक मान्योंका मानकरै गुरुजीके पुत्रको पढ़ाते हुये भी गुरुजीके समान मानकरै २९ देहोंका चापना स्नानकराना जूंठा भोजन करना पांवों का धोना गुरुजी के पुत्रका न करै ३० सवर्णा गुरु की स्त्रियां गुरुजी के समान पूज्यहैं असवर्णा उठकर नमस्कारों से पूज्य हैं ३१ अंजन स्नान देहचापना बालोंका प्रसाधन गुरुजीकी स्त्रीके नहीं करनेयोग्य हैं ३२ गुरुजीकी स्त्री जवानहोतो पांवछूकर नहीं प्रणामकरै मैंहूं ऐसाकहकर पृथ्वीमेंवंदन करै ३३ गुरुजीकी स्त्रियों में सज्जनोंका धर्मस्मरणकर चरण ग्रहणपूर्वक नमस्कार करै ३४ मौसी माईं सास फूफू गुरुजीकी स्त्रीके समान पूज्य हैं ये गुरुजीकी स्त्रीही के समान हैं ३५ भाईकी स्त्रियां सवर्णा दिन दिन में ग्रहणकरने योग्य हैं जाति और संबधकी स्त्रियां भी ग्रहण करने योग्य हैं ३६ फूफू मौसी बड़ीवहन ये माताके समानवृत्ति में स्थितहैं तिनसे माता श्रेष्ठहै ३७ इसप्रकार आचारयुक्त आत्मवान् दम्भरहितको वेदपढ़ावे धर्म और पुराणके अंग नित्यही पढ़ावे ३८ सालभर शिष्य गुरुजी के यहां बसे तो गुरुजी ज्ञान सिखलाकर बसते हुये शिष्यका पाप नाशकरदेतेहैं ३९ आचार्यका पुत्र सुननेकी इच्छा करनेवाला ज्ञानका देनेवाला धर्मात्मा पवित्र समर्थ अन्नका देनेवाला जलका देनेहारा और साधु ये दशधर्मसे पढ़ाने योग्य हैं ४० कंठ करनेवाला द्रोह न करनेहारा बुद्धिमान् गुरुजीका कियाहुआ मनुष्य आप्तप्रिय ये छः ब्राह्मण विधिपूर्वक पढ़ाने चाहिये ४१ इनमें ब्राह्मणमें दानहै और में यथोचितहै आचमनकर संयतमनुष्य नित्यही

उत्तरमुख होकर पढ़ै ४२ गुरुजीके चरणछूकर गुरुजीका मुखदेखता हुआ जब गुरुजी कहैं कि पढ़ो तब पढ़े जब कहें कि अब बन्दकरो तब बन्दकरदे ४३ पूर्वकूलों को उपासनाकरे पवित्रों से पवित्र तीन प्राणायामों से पवित्र फिर ओंकारके योग्य होताहै ४४ ब्राह्मण अन्तमें भी विधिपूर्वक ओंकार पढ़े ब्रह्मांजलि पूर्वक नित्यही पढ़े ४५ सब प्राणियोंका सनातन वेद नेत्र है वेदको नित्यही पढ़े न पढ़े तो ब्राह्मणत्वसे हीन होताहै ४६ नित्यही ऋग्वेद पढ़े दूधकी आहुतिसे कामों से बुलाये हुये देवता प्रसन्न होते हैं ४७ निरन्तर यजुर्वेद पढ़े दहीसे देवता प्रसन्न होते हैं सामवेदको पढ़े प्रतिदिन घीकी आहुति से देवता प्रसन्न होते हैं ४८ नित्यही अथर्वण वेदको पढ़े शहद से देवता प्रसन्न होतेहैं धर्मके अंग पुराण हैं मांसों से देवताओंको तृप्त करते हैं ४९ प्रातःकाल सायंकाल प्रयत नित्यकी विधिमें आश्रित वन में जाकर एकाग्रचित्त होकर गायत्री को पढ़े ५० सहस्र परम देवी शतमध्या दशावरा गायत्रीको नित्यही जपै यह जप यज्ञ कहाहै ५१ गायत्री और वेदको प्रभुजी तराजूपर तौलते भये एक ओर चारों वेदोंको और एक ओर गायत्री को रखते भये ५२ एकाग्रचित्त होकर श्रद्धायुक्त ओंकारको आदिमें कर तिस पीछे व्याहृती को फिर गायत्री को पढ़े ५३ पूर्वसमय कल्प में सनातन भूर्भुवःस्वः और सब अशुभ दूरकरने वाली तीन महा व्याहृती उत्पन्नहुई ५४ प्रधान पुरुष काल विष्णु ब्रह्म महेश्वर सत्त्व रज तम तीनों क्रमसे व्याहृती कहाती हैं ५५ ॐकार परं ब्रह्महै सावित्री तिसके उत्तरहै यह महायोग मन्त्रहै सारसे सार उदाहृत है ५६ जो ब्रह्मचारी अर्थको जानकर प्रतिदिन वेद माता गायत्री को पढ़ताहै वह परमगतिको प्राप्त होताहै ५७ गायत्री वेदकी माताहै गायत्री लोकको पवित्र करतीहै गायत्री से श्रेष्ठ जपने यो- ग्यनहीं है यह विज्ञान कहाताहै ५८ हे उत्तम ब्राह्मणो! श्रावण मासकी पौर्णमासीमें आषाढ़ीमें भदईं पूर्णमासी में वेदका उपाकरण कहाहै ५९ जो सूर्य दक्षिण गमन करते हैं उनमें साढ़ेपांच महीने ब्रह्मचारी एकाग्रचित्त होकर पवित्र देशमें पढ़ै ६० ब्राह्मण पुष्पमें

वेदोंका वहिरुत्सर्जन करै शुक्लपक्ष के प्राप्तहोने में पूर्वाह्नमें प्रथम दिनमें ६१ ब्राह्मण मनुष्य वेदका अभ्यास करै वेदांग और पुराणों को कृष्णपक्ष में अभ्यास करै ६२ इन अनध्यायोंको नित्यही पढ़ताहुआ और पढ़ाताहुआ यत्नसे वर्जित करै ६३ रात्रिमें अधिक आंधी आई हो दिनमें धूलिकी अधिकाई हो बिजलियों का गर्जना वर्षाहो बड़े उल्कापातहों ६४ इनमें प्रजापतिजी अकालिक अनध्याय कहतेहैं इनको जब प्रादुष्कृत अग्नियों में उदित जाने ६५ तब अनध्यायको जानेविना ऋतुके मेघोंके दर्शनमें निर्घातमें पृथ्वी के हालनेमें ज्योतियोंके उपसर्जनमें ६६ इनको अकालिक अनध्याय जाने ऋतुमें जोहों प्रादुष्कृत अग्नियों में बिजलीके गर्जने में ६७ शेष रात्रिमें जैसे दिनहो वह ज्योतिः अनध्याय है ग्राम और नगरोंमें नित्य अनध्यायहै ६८ धर्म नैपुण्यकामोंको नित्यही दुर्गंध में ग्राममें भीतर मुर्दा प्राप्तहो शूद्रके समीप में ६९ अनध्याय मेघके रुध्यमान समयमें आधीरात्रि में जलहो विष्ठा और मूत्रकी वर्षाहो ७० उच्छिष्ट श्राद्धका भोक्ता मनसेभी न चिन्तनाकरै विद्वान् ब्राह्मण एकोद्दिष्ट का वेतन ग्रहणकर ७१ राजा और राहुके सूतकमें तीनदिन ब्रह्मका कीर्तन न करै जबतक एक अन्नमें निष्ठा हो स्नेहालोप स्थितहो ७२ विद्वान् ब्राह्मणकी देह में तबतक ब्रह्मकीर्तन न करै सोताहुआ प्रौढ़पाद अवसकिथकाको कर ७३ मांस खाकर शूद्रकी श्राद्धका अन्न खाकर न पढ़े दोनों संध्याओं में कुहिरा के पड़ने में बाण के शब्दमें ७४ अमावास्या चतुर्दशी पौर्णमासी अष्टमी उपाकर्म उत्सर्ग में तीन रात्रि क्षपण कहाहै ७५ अष्टका श्राद्धों में रात्रि दिन ऋतुके अंतकी रात्रियों में अगहन पौष और माघ मासमें ७६ कृष्णपक्षमें विद्वानोंने तीन अष्टका कही हैं लसोढ़ा सेमर और महुआकी छायामें ७७ कचनार और कैथाकी छायामें कभी न पढ़े समान विद्या वालेके तथा ब्रह्मचारी के मरनेमें ७८ आचार्यके संस्थित में तीन रात्रि क्षपणहै ये छिद्र ब्राह्मणों के अनध्याय कहे हैं ७९ तिनमें राक्षस हिंसा करते हैं तिससे इनको वर्जित करै नैत्यक में अनध्याय नहीं है संध्योपासन

करै ८० उपाकर्म में होमके अंतमें होमके मध्यमें एक ऋचा यजुर्वेद सामवेद की ८१ अष्टकाओं में न पढ़े पवन अधिक चलताहो तब अंगोंसे अनध्याय नहीं है इतिहास पुराणों में ८२ और धर्म शास्त्रोंमें इन सबको वर्जित करै यह धर्म संक्षेपसे ब्रह्मचारी का कहा है ८३ भावितात्मा ऋषियों से ब्रह्मा जीने पूर्वसमय में कहाहै कि जो ब्राह्मण वेद न पढ़कर और जगह यत्न करताहै ८४ वह मूर्ख संभाषण के योग्य नहीं है ब्राह्मणों से वेदबाह्य है वेदके पाठमात्र से ब्राह्मण संतुष्ट नहीं होताहै ८५ पाठमात्रही से कीचड़में गऊकी नाई कष्ट पाताहै जो विधिपूर्वक वेदको पढ़कर वेदके अर्थ को नहीं विचारता है ८६ वह मूर्ख शूद्रके सदृशहै पात्रताको नहीं प्राप्त होताहै यदि गुरुजी के यहां अधिक दिनतक वास करनेकी इच्छाहो ८७ तो युक्त होकर जबतक शरीर न छूटै तबतक बसे वनमें जाकर विधिपूर्वक अग्निमें हवनकरै ८८ नित्यही ब्रह्ममें निष्ठ एकाग्रचित्त कर गायत्री शतरुद्री और विशेषकर वेदांतों को निरंतर अभ्यासकरै भिक्षाके भोजनमें परायणहो ८९ यह विधान परम पुराणहै वेदके आगममें अच्छी प्रकार यहां तुमसे कहाहै पूर्व समय महर्षि श्रेष्ठोंसे पूंछेहुये मनुदेव स्वायम्भुवजी ने जो कहाहै९०॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेकर्मयोगकथनं नामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय॥

ब्रह्मचारीको गुरुजीके पाससे विद्या प्राप्तकर उसके नियमोंका वर्णन॥

व्यासजी बोले कि हे ब्राह्मणो! वेद और वेदांगोंको पढ़कर उत्तम ब्राह्मण अधिगम्यके लिये फिर स्नानकरै १ गुरुजीको धन देकर तिनकी आज्ञासे स्नान करै व्रतको पूराकर युक्तात्मा वा समर्थ स्नान करने के योग्य होता है २ वैष्णवी लाठी धारण कर भीतर बाहर के वस्त्रधार दो जनेऊ जल समेत कमंडलु ३ छतुरी निर्म्मल पगड़ी खड़ाऊँ जूता और सुवर्णके कुण्डल धारण करने योग्य हैं बाल और नहों को कटाकर पवित्र हो ४ सुवर्ण से अन्यत्र ब्राह्मण लाल माला

न धारणकरै नित्यही श्वेत वस्त्र धारणकर सुगन्ध प्रिय दर्शनवाला ५ विभव होने में पुराने मैले कपड़े न धारे न लाल उल्बण और के धारण किये कपड़े पहने न कुण्डल धारे ६ न जूता पहने माला और खड़ाऊं पहने जनेऊ गहने को दिखलाता हुआ कृष्णमृगछालाधारे ७ अपसव्य होकर न धारण करै विकृत वस्त्र न धारे विधिपूर्वक अपने सदृश शुभ स्त्रियों को लावे ८ रूप लक्षण संयुक्त योनि दोषसे वर्जित पिताके गोत्रसे उत्पन्नमन हो अन्य मनुष्यके गोत्र से उत्पन्न ९ शील शौच से युक्त स्त्रीको ब्राह्मण लावे और ऋतुकालमें उसके पास जावे जबतक पुत्र उत्पन्न हो १० यत्नसे निन्दित दिनोंको वर्जित करै छठि अष्टमी पूर्णमासी द्वादशी चतुर्दशी को त्याग देवे ११ नित्यही ब्रह्मचारी तैसेही तीन जन्म के दिन में हो विवाह की अग्निजात वेदसको धारणकर हवनकरै १२ स्नातक नित्यही इन पवित्रों को पवित्रकरै नित्यही अतंद्रित होकर वेदमें कहेहुये अपने कर्म करै १३ कर्म न करै तो शीघ्रही अत्यन्त भयानक नरकों में गिरै प्रयत होकर वेदको अभ्यास करै महायज्ञोंको न छोड़े १४ घरके कामोंको करै संध्योपासन करै समान और अधिकों से मित्रता करै सदैव ईश्वरको प्राप्त रहे १५ देवताओं के यहां जावे स्त्रीका पालन करै विद्वान् धर्म को न कहे और पाप को न छिपावे १६ सब प्राणियों के ऊपर दयाकर नित्यही अपना कल्याण करै उमरकर्म द्रव्यश्रुत और भाई बन्धुओं का १७ देशवाग् बुद्धिसारूप्य सदैव करतेहुये विचरै वेद और स्मृति में कहेहुये अच्छीप्रकार कर्म करै जो साधुओंसे सेवित हैं १८ तिस आचारको सेवन करै और कुछ आचारकी चेष्टा न करै जिससे इसके पितृपितामह गये हैं १९ तिससे सज्जनोंकी मार्ग को जावे तिसमें जातेहुये दूषित नहीं होता है नित्यही पढ़ने में शीलहो नित्यही यज्ञोपवीत धारे २० सत्य बोले क्रोध जीते लोभ और मोहसे वर्जितहो गायत्री के जाप में निरत श्राद्धका करनेवाला गृहस्थ मुक्त होजाता है २१ माता पिताके कल्याण में युक्त ब्राह्मण के कल्याण में रत दाता देव पूजा करनेवाला देवोंका भक्त ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै २२ निरन्तर धर्म अर्थ कामको सेवन करै प्रतिदिन देवताओं का पूजन करै प्रयत

होकर नित्यही देवताओं के नमस्कार करै २३ निरन्तर विभाग में शील हो क्षमायुक्त दयालु हो ऐसा गृहस्थ कहाता है घरसे गृहस्थ नहीं होता है २४ क्षमा दया विज्ञान सत्य दम शम अध्यात्म नित्यता ज्ञान ये ब्राह्मण के लक्षण हैं २५ इनसे विशेषकर उत्तम ब्राह्मण प्रमाद न करै यथाशक्ति धर्म करै निंदितों को वर्जित करै २६ मोह के समूह को दूरकर उत्तम योग को प्राप्त होकर गृहस्थ बन्धन से छूट जाता है इसमें विचारणा नहीं करने योग्य है २७ निन्दित जयक्षेपहिंसा बन्धवधात्माओंको और के क्रोध से उठेहुये दोषों का मर्षण क्षमा २८ अपने दुःखों में दया पराये दुःखोंमें मित्रता इसको मुनि दया कहते हैं साक्षात् धर्मका साधन है २९ परार्थ से चौदह विद्याओंकी धारणा तिसको विज्ञान् कहते हैं जिससे धर्म बढ़ता है ३० विधिपूर्वक विद्या को पढ़कर द्रव्य मिलताहै द्रव्यसे धर्मकार्य करै यह विज्ञान् कहाता है ३१ सत्यसे लोकको जीतता है वह सत्यही परमपदहै जैसे बुद्धिमान् प्राणी सत्यको प्रमाद कहते हैं ३२ दम शरीरोपरति प्रज्ञा के प्रसाद से शम अध्यात्मअक्षर विद्याहै जहां जाकर शोच नहीं होता है ३३ जिसविद्यासे परदेव साक्षात् हृषीकेश भगवान् प्राप्त होते हैं वह ज्ञान कहाताहै ३४ तिनमें निष्ठा तिनमें परायण विद्वान् नित्यही क्रोध रहित पवित्र महायज्ञमें परायण ब्राह्मण तिस अत्युत्तमको प्राप्त होता है ३५ धर्म के स्थान शरीर को यत्नसे पालन करै देह के विना परविष्णु पुरुषों से नहीं प्राप्त होते हैं३६ नियत ब्राह्मण नित्यही धर्म अर्थ कामों में युक्तहो धर्म से हीन काम वा अर्थको मनसेभी न स्मरण करै ३७ धर्म से कष्टपाता हुआ भी अधर्मको न करै धर्मदेव भगवान् हैं सब प्राणियों में गति है३८ प्राणियोंका प्रिय करनेवाला हो पराये द्रोह कर्म में बुद्धि न हो वेद और देवताओंकी निन्दा न करै तिनके साथ भी न बसे ३९ जो नियत मनुष्य पवित्र होकर इस धर्माध्याय को पढ़ताहै पढ़ाता वा सुनाताहै वह ब्रह्मलोकमें प्राप्त होता है ४० ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

ब्राह्मणादिकों के उत्तम करने योग्य और नहीं करने योग्य कार्यों का वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि सब प्राणियोंकी हिंसा न करै कभी झूंठ न बोले अहित और अप्रिय न कहे कभी चोर न हो १ तृण वा साग वा मिट्टी वा जल दूसरेका चुराता हुआ प्राणी नरक को प्राप्त होता है २ न राजा से न शूद्र पतितसे न औरही से दान लेवे अशक्त भी पण्डित निन्दितों को वर्जित करै ३ नित्यही मांगनेवाला न हो फिर तिससे नहीं मांगे इस प्रकार मांगने वाला तिस दुर्बुद्धि के प्राणोंको हरलेता है ४ उत्तम ब्राह्मण विशेषकर देवता की द्रव्य न चुरावे कभी आपदा में भी ब्राह्मण की द्रव्य न चुरावे ५ विष विष नहीं कहाता है ब्राह्मणका द्रव्य विष कहाता है फिर यत्नसे देवता की द्रव्य को सदैव त्याग करै ६ फूल साग जल काष्ठ मूल फल तृण ये नहीं दिये हुये भी चोरी नहीं हैं यह प्रजापति मनु कहते हैं ७ ब्राह्मण देवता की पूजा विधिमें फूलों को ग्रहण करै केवल विना आज्ञा लिये निरन्तर एकहीजगह से न लेवे ८ पण्डित मनुष्य तृण काष्ठ फल फूलोंको प्रकाशमें चुरावे केवल धर्मार्थ कहते हैं और प्रकारसे पतित होता है ९ तिल मूंग यवादिकोंकी मुष्टिमार्ग में स्थित भूखे हुये ग्रहण करैं और प्रकारसे न करैं धर्मादिकों की यह स्थिति है १० धर्म के बहानेसे पापकर व्रत न करै व्रतसे पापको छिपाकर स्त्री और शूद्र का दम्भन करै ११ मरनेपर यहां ऐसा ब्राह्मण ब्रह्मवादियों से निन्दित होता है छद्म जो व्रत किया जाता है वह राक्षसों को प्राप्त होता है १२ जो अलिंगी लिंगि वेषसे वृत्ति में स्थित है वह लिंगी के पापको हरलेता और तिर्यग्योनि मेंउत्पन्न होता है १३ याचन योनि सम्बन्ध सहवास और नित्यही भाषण करता हुआ पतित होजाताहै तिससे यत्नसे वर्जित करै १४ देवता और गुरुजी से द्रोह न करै देवता के द्रोहसे गुरुजीका द्रोह करोड़ करोड़ गुण अधिक है १५ मनुष्यों का कलङ्क नास्तिकता तिससे भी करोड़गुणा अधिकहै गऊ देवता

ब्राह्मण खेती और राजाकी सेवा से १६ जो धर्मसे हीन कुल हैं वे अकुलताको प्राप्त होते हैं कुविचार क्रियाके लोप और वेदके न पढ़नेसे १७ कुल अकुलताको प्राप्त होते हैं ब्राह्मण के अतिक्रम से झूंठसे पराई स्त्री से अभक्ष्य के भक्षण से १८ विना गोत्र के धर्म आचरण से शीघ्रही निश्चय कुल नाश होजाता है विना वेद पढ़े हुये शूद्रों में विहित आचारहीनों में दानसे शीघ्रही कुल नाश हो जाताहै धर्महीनोंसे युक्त गांवमें बहुत रोगवालेमें न बसै १९। २० शूद्रकी राज्यमें न बसे पाखण्डी मनुष्योंसे युक्त में न बसे हिमवान् और विन्ध्याचल का मध्य पूर्व पश्चिम में शुभ है २१ समुद्र के देशको छोड़कर और जगह ब्राह्मण न बसै जहां नित्यही स्वभाव से कालामृग चलता हो पुण्यकारिणी प्रसिद्ध नदियां हों तहां ब्राह्मण बसे उत्तम ब्राह्मण आधाकोस नदी के किनारे को छोड़कर २२। २३ और जगह न बसे चांडालों के गांवके समीप में पतित चांडाल पुल्कसों में न बसै २४ मूर्ख अवलिप्तों और अन्य जायावसायियों के यहां न बसे एक शय्या आसन में पंक्तिहो भांड में पक्कान्न मिश्रणहो २५ पूजन और पढ़ाने में योनिहो तैसेही साथ भोजनहो दशवां साथ में पढ़ना साथ में यज्ञ कराना २६ ग्यारह दोष सांकर्य संस्थित हैं स्थान ते समीप में मनुष्यों को पाप संक्रमण करता है २७ तिससे सब यत्न से शंकरभाव को वर्जित करै एक पंक्ति में जे बैठे हैं और परस्पर नहीं छूते हैं २८ भस्मसे चौका अलगहैं तिनको सङ्करभाव नहीं होताहै अग्नि से भस्मसे जलसे लिखने से २९ द्वारसे स्तम्भमार्गसे छःसे पंक्ति अलग होजाती है सूखा वैर विवाद और चुगली न करै ३० पराये खेतमें चरतीहुई गऊको कभी न हांके चुगलके साथ न बसे मर्म में जलको न स्पर्शकरै ३१ सूर्यके मण्डल और तीसरे पहर के इन्द्रधनुषको चन्द्रमा वा सुवर्णको विद्वान् दूसरेसे न कहे ३२ बहुत बन्धुओं से विरोध न करै शत्रुओं को अपने प्रतिकूल न करै ३३ पक्षकी तिथि को न कहै नक्षत्रोंको भी न कहे उत्तम ब्राह्मण रजस्वला स्त्री वा अपवित्रसे न बोले ३४ देवता गुरु और ब्राह्मणों के देतेहुयेको न मनाकरै

अपनी प्रशंसा न करै पराई निन्दाको वर्जितकरै ३५ वेदनिन्दा और देवनिन्दाको यत्नसे वर्जितकरै जो ब्राह्मण देवता ऋषि और वेदोंकी निन्दा करताहै ३६ हे मुनीश्वरो! शास्त्रों में तिसकी निष्कृति नहीं देखी है वा गुरुदेव और उपबृंहण समेत वेदकी जो निन्दा करताहै ३७ वह मनुष्य अन्न समेत सौकरोड़ कल्प रौरव नरकमें गिरताहै निन्दा में चुपरहे कुछ उत्तर न देवे ३८ कान मूंदकरजावे इसको देखे नहीं पण्डित मनुष्य रहस्य और दूसरोंकी निन्दाको वर्जितकरै ३९ कभी बन्धुओं से विवाद न करै उत्तम ब्राह्मण पापियों के पाप वा धर्मको न कहै ४० दोष सत्यसे तुल्य होताहै झूंठ से दोषयुक्त होताहै झूंठ बोलनेवाले मनुष्यों के रोनेसे आंशू गिरते हैं ४१ तिन झूंठ बोलने वालोंके आंशू पुत्र और पशुओंको नाशते हैं ब्राह्मणकी हत्या मदिरा पीने और गुरुजी की स्त्री से भोगमें ४२ वृद्धोंने प्रायश्चित्त देखाहै झूंठ बोलनेमें नहीं है सूर्य वा चन्द्रमाके उदय होतेमें विना निमित्त से न देखे ४३ न अस्त होतेहुये न जलमें स्थित न मध्य में प्राप्त अन्तर्द्धान होतेहुये न सीसे आदिमें प्राप्तहुयेको देखे ४४ नग्न स्त्री वा पुरुषको कभी न देखे मूत्र विष्ठा और मैथुन त्यागनेवाले को न देखे ४५ पण्डित मनुष्य अपवित्र होकर सूर्य और चन्द्रादिक ग्रहों को न देखे उच्छिष्ट वा अवगुंठित दूसरे से न बोले ४६ प्रेतों के स्पर्शको न देखे क्रोधयुक्त गुरुजी के मुखको न देखे तैल और जल की छायाको न देखे भोजन होतेमें पंक्तिको न देखे ४७ छूटे बन्धन वाले और मतवाले हाथीको न देखे स्त्री के साथ न खावे और खाती हुई स्त्री को न देखे ४८ छींकतीहुई जँभाई लेतीहुई सुखपूर्वक आ-सनमें न बैठीहुई स्त्री को न देखे जलमें शुभ वा अशुभ अपने रूपको न देखे ४९ बुद्धिमान् मनुष्य न लंघनकरै न कभी स्थितहो न शूद्र को बुद्धिदेवे कृसर खीर दही ५० जूंठा वा शहद घी काला मृगछाला और हवि जूंठी न खावे पण्डित मनुष्य इसको व्रत और धर्म्म न बतावे ५१ क्रोधके वश न प्राप्तहो द्वेष और रागको वर्जितकरै लोभ दम्भ मूर्खता निन्दा ज्ञान कुत्सन ५२ ईर्ष्या मद शोक और मोहको वर्जितकरै किसीको पीड़ा न देवे पुत्र और शिष्यको ताड़नादेवे ५३

हीनोंका सेवन न करै तृष्णामें बुद्धि कभी न हो आत्माका अपमान न करै दीनताको यत्नसे वर्जितकरै ५४ पण्डित मनुष्य सज्जन को दुर्जन न करै आत्माको वासना से असत् न करै नहँ से पृथ्वीको न लिखे बैठीहुई गऊको न उठावे ५५ नदियोंमें नदी न कहे पर्वतोंमें पर्वत न कहे बसने और भोजन में साथजानेवाले को न छोड़े ५६ नग्नहोकर जलमें न पैठे तैसेही अग्नि में न पैठे शिरके लगाने से बचेहुये तेलको अङ्गों में न लगावे ५७ सर्प शस्त्रों से क्रीड़ा न करै अपने अपने रोम और रहस्यों को न स्पर्शकरै दुर्जन के साथ न जावै ५८ हाथ पाँव वाणी और नेत्रोंकी चापल्यताको न आश्रयकरै लिङ्ग पेट और कानोंकी चपलता कभी न करै ५९ अंग और नहों को बाजा न करै अंजलिसे न पीवे पांवों वा हाथसे कभी जलको न ताड़ितकरै ६० ईंटोंसे मूल और फलोंको न गिरावे म्लेच्छ भाषण न सीखे पांवसे आसनको न खींचे ६१ बुद्धिमान् मनुष्य नखों का विदारण बजाना काटना लिखना विमर्दन अकस्मात्ही निष्फलको न करै ६२ कोड़ा में बैठकर भक्ष्य न भोजन करै वृथा चेष्टा न करै न नाचे न गावे न बजाओंको बजावे ६३ संहत हाथों से अपने शिर को न खुजलावे न लौकिक स्तोत्रोंसे ब्रह्मा और देवताओंको प्रसन्न करै ६४ पांसा न खेले दौड़े नहीं जलमें विष्ठा और मूत्र न करै जूंठा नित्यही न प्रवेशकरै नग्न होकर स्नान न करै ६५ जातेहुये न पढ़े अपने शिरको न स्पर्शकरै दांतों से नहँ और रोवों को न काटे सोते हुयेको न जगावै ६६ दुपहर के घामको न सेवनकरै प्रेतके धुयेंको वर्जितकरै शून्य घरमें न सोवे अपने आपजूता न चुरावे ६७ विना कारण से थूंके नहीं भुजाओं से नदीको न पैरे पांवसे पांव कभी न धोवे ६८ पण्डित मनुष्य अग्निमें पांव न तपावे न कांस्यमें धोवे देवता ब्राह्मण और गऊके सम्मुख पांव न फैलावे ६९ वायु अग्नि राजा ब्राह्मण वा सूर्य चन्द्रमा के संमुख पांव न फैलावे अशुद्धहोकर शयन पान पढ़ना स्नान भोजन ७० और बाहर निकलना कभी न करै सोना पढ़ना स्नान उबटन भोजन और चलनेको ७१ नित्यही दोनों संध्याओं में और दोपहर में वर्जितकरै जूंठा ब्राह्मण हाथ से

गऊ ब्राह्मण और अग्निको न छुये ७२ वा पांवसे चलावे नहीं देवता की मूर्त्तिको न छुये अशुद्धहोकर अग्निको सेवन न करै न देवता ऋषियोंको अशुद्धमें कीर्तनकरै ७३ अथाह जलमें न पैठे विना निमित्त के दौड़े नहीं न बायें हाथसे उठाकर मुखसे जलको पीवे ७४ विना स्पर्श किये पैरे नहीं जलमें वीर्यको न गिरावे जोकि अपवित्र अलिप्त वा अर्द्द वा लोहित वा विषाणिहै ७५ गऊका अपमान न करै जल में मैथुन न करै स्थानके वृक्षको न काटे जल में कुल्ला न करै ७६ हाड़ भस्म मूड़ बाल कांटा भूसी अङ्गार और करीषमें कभी न चढ़े ७७ बुद्धिमान् अग्निको लंघन न करै कभी नीचे न धरै पांवसे इसको न छुये बुद्धिमान् सूपसे अग्निको न धौंके ७८ वृक्षपर न चढ़े अपवित्र होकर कहीं न देखे अग्निमें अग्निको न छोड़े जलसे अग्निको शांत न करै ७९ मित्रका मरणमात्र आपही दूसरों को न सुनावे अपण्य वा कूटपण्यको बेंचने से युक्तकरै ८० अपवित्र बुद्धिमान् अग्निको मुखके निःश्वासों से न प्रकाशितकरै पुण्यस्थान जलस्थानमें सीमा के अन्तको न लेजावे ८१ प्राप्तहुये पूर्व समयको कभी न काटे पशु व्याघ्र और पक्षियोंको परस्पर न लड़ावे ८२ जल वात और घाम आदिकोंसे दूसरेको बाधा न करै अच्छे कर्मोंको कराकर पछिसे गुरुओंको न छले ८३ सायंकाल प्रातःकाल रक्षाके लिये घरके द्वारोंको मूँदलेवे बाहर माला वा सुगन्धिको स्त्री समेत भोजनको ८४ ग्रहण कर बादकर प्रवेशको वर्जितकरै बुद्धिमान् ब्राह्मण खातेहुये न खड़ा हो न बातकरै वा हँसे ८५ अपनी अग्निको हाथसे छुये बहुतकाल जलमें न बसे न पखनों न सूप और हाथसे अग्निको धौंके ८६ बुद्धिमान् मनुष्य मुखसे अग्निको फूंके क्योंकि मुखही से अग्नि उत्पन्न है पराई स्त्री से न बोले विना पूजाके योग्यको न पूजाकरावे ८७ ब्राह्मण सदैव अकेलाजावे समूहको वर्जितकरै देवता के स्थान में कभी अप्रदक्षिण न जावे ८८ कपड़ोंको पीड़ित न करै देवताके स्थान में न सोवे अकेला राहमें न जावे न अधर्मी मनुष्यों के साथ ८९ न रोग से दूषितों के साथ न शूद्रों के साथ न पतित के साथजावे जूताहीन न हो जलादिरहित न हो ९० ब्राह्मणमार्ग में बांई चिताको

कभी न नांघे योगी सिद्ध व्रत करनेवाले वा यतियों की न निन्दा करै ९१ बुद्धिमान् देवताओं के स्थान यज्ञवाले देवताओं को न नांघे काम से ब्राह्मणों और गऊकी छाया को न नांघे ९२ अपनी छाया को न नांघे पतितादिक रोगियों के साथ न जावे अङ्गार भस्म और बाल आदिकों में कभी न चढ़े ९३ बढ़नी की धूलि को वर्जितकरै स्नान कपड़े घड़ा और जल को भी वर्जितकरै ब्राह्मण अभक्ष्यों को न भक्षण करै अपेय को न पीये ९४ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

भक्ष्य और अभक्ष्य नियमों का वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि ब्राह्मण शूद्र के अन्नको न खावे यदि मोहसे वा काम से विना आपदा के भोजनकरता है वह शूद्र की योनि को प्राप्त होता है १ जो ब्राह्मणछःमही ने शूद्र के निन्दित अन्न को खाता है वह जीवते ही शूद्र होताहै और मरकर कुत्ता होताहै २ हे मुनीश्वरो ! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र जिसके पेट में स्थित अन्न से ब्राह्मण मरता है तिसी योनि को प्राप्त होता है ३ राजा नाचनेवाले नपुंसक चमार गण और वेश्या इन छः के अन्नको वार्जितकरै ४ कुम्हार धोबी चोर ध्वजी गानेवाले लोहार इन के अन्न और मृतक के अन्नको वर्जितकरै ५ कुम्हार चित्रकार व्याजसे जीवनेवाला पतित उढ़रीका लड़का क्षत्रिय शापयुक्त ६ सोनार नट बहेलिया बांझ रोगी वैद्य छिनारस्त्री दण्डक ७ चोर नास्तिक देवताकी निन्दाकरनेवाला सोमबेंचनेवाला और विशेषकर कुत्तापकानेवाले के अन्न वर्जितकरै ८ स्त्री जितका अन्न जिसका दूसरा पतिघरमें हो त्याग कियाहुआ कायर जूँठखानेवाला ९ पापीका अन्न समूहका अन्न शस्त्रसे जीविका करनेवाले डरपोक रोनेवालेका अन्न अवकुष्ट परिक्षत १० ब्राह्मणसे वैरकरनेवाले पापमें रुचिवाले श्राद्धके अन्न मृतकका अन्न वृथा पाककरनेवालेका अन्न बालकका अन्न रोगीका अन्न ११ विनापुत्रवाली स्त्रियों का कृतघ्नका विशेषकर कारुकका अन्न शस्त्र

बेंचनेवालेका १२ मतवालेका अन्न घण्टाबजानेवालेका अन्न वैद्योंका अन्न विद्धप्रजनन का अन्न परिवेत्तका अन्न १३ विशेषकर उढ़री उढ़री के पतिका अन्न अवज्ञात अवधूत रोष और विस्मययुक्त १४ संस्कार वर्जित गुरुजी का भी अन्न नहीं खानेयोग्य है मनुष्य का सब पाप अन्न में स्थितहोता है १५ जो जिसके अन्नको भोजन करताहै वह तिसके पापको भोजनकरताहै अर्द्धका कुल मित्र अहीर वाह और नाई १६ ये शूद्रोंमें अन्न भोजन करनेके योग्य हैं जो आत्माको निवेदित करता है कुशील कुम्हार खेतके कर्मका करनेवाला १७ पण्डितों ने थोड़ागुण देखकर ये भी शूद्रोंमें अन्न भोजन करने के योग्यहैं खीर तेलसे पकीहुई वस्तु गोरस सत्तू १८ तिलकी खरी और तेल ये ब्राह्मणों करके शूद्र से लेजाने के योग्य हैं बैंगन नारी का साग कुसुंभ भस्मक १९ प्याज लहसुन शुक्त और निर्यास को वर्जितकरै छत्राक विष्ठाखानेवाला सुअर स्विन्न पीयूष २० विलय विमुख और कोरकों को वर्जित करै गाजर किंशुक कुम्हड़ा २१ गूलर और अलावु को खाकर निश्चय ब्राह्मण पतित होताहै कृसर हलुवा खीर पुवा २२ विना बलिदान का मांस देवों के अन्न हवि यवागू मातुलिंग अनुपाकृत मछली २३ कदम्ब कैथा और पीपर को यत्न से वर्जित करै तिलकी खरी उद्धृत स्नेह देवोंका धान्य २४ दही और रात्रि में तिल के सम्बन्ध को यत्न से छोड़दे दूधसे माठा को न खाय अभक्ष्यों को न खाय २५ कीड़ापड़ेहुये भाव से दुष्ट मिट्टी के संसर्ग को वर्जित करै कृमि और कीट से युक्त और सुहृत् छेद को नित्यही छोड़े २६ कुत्तेके सूंघे हुये फिर पकाये गये चंडाल के देखेहुये रजस्वला पतितों से देखेहुये गऊसे सूँघेहुये २७ असङ्कृत बासी और पर्यस्तअन्न को नित्यही छोड़े कौवा और मुर्गासे छुवाहुआ कीड़ोंसे युक्त २८ मनुष्यों से सूँघाहुआ कोढ़ीसे छुवाहुआ इनको छोड़दे रजस्वला रोगसहित छिनारिस्त्री के दियेहुये को त्याग दे २९ मलिन वस्त्रसे वा दूसरेके वस्त्रको वर्जित करै विना बछवेकी गऊका दूध दशदिन के भीतर ब्याईहुई बकरी का दूध ३० भेड़ और सन्धिनी के दूधको मनुजी नहीं पीनेयोग्य कहते हैं बलात्

हंस कालाकौवा गौरवा सुवा ३१ कुरर चकोर जालपाद कोकिल कौवा खड़रैचा बाज गृध्र ३२ घुग्घू चकवा चकई भास पारावत कबूतर टिट्टिभ गांवकामुर्गा ३३ सिंह व्याघ्र बिलार कुत्ता सुवर सियार बन्दर और गदहेको न भक्षणकरै ३४ सर्पहरिण मुरैला और वनके घूमनेवाले जल और स्थलके रहनेवाले जीव नहीं खानेयोग्य हैं यह धारणा है ३५ हे श्रेष्ठो! गोह कछुवा चौगड़ा खङ्ग सेह इन पंचनखों को मनुप्रजापति नित्यही खानेके योग्य कहते हैं ३६ सशल्क मछलियों और रुरुसंज्ञक हरिणका मांस देवता और ब्राह्मणों को निवेदनकर खाने योग्यहै और प्रकार नहीं खानेयोग्य है ३७ मुरैला तीतर कबूतर कपिंजल वार्ध्रीणस बकुला मीन और पराजित हंस ३८ मछली सिंहतुण्ड पढ़िना लालहरिण हे उत्तम ब्राह्मणो! ये खाने के योग्यहैं ३९ ब्राह्मण की कामना से इनके प्रोक्षित मांसको जोकि विधिपूर्वक प्रयुक्तहो तिसको प्राणों के नाशहोने में खावे ४० मांसों को नहीं खावे शेषभोजी नहीं लिप्तहोता है औषधके लिये वा अशक्त नियोगसे यज्ञकारण से ४१ जो दैवश्राद्ध में आमन्त्रित है मांसको त्यागही करै जितने पशुके रोम होते हैं तितने समयतक नरकको प्राप्तहोता है ४२ ब्राह्मणों को नहीं देनेयोग्य नहीं पीनेयोग्य नहीं छूने योग्य और नित्यही नहीं देखनेयोग्य मदिरा है यह स्थिति है ४३ तिससे सब यत्नसे नित्यही मदिरा को वर्जितकरै ब्राह्मण पानकर कर्मोंसे, पतित होजाता है और नहीं बोलने के योग्य होता है ४४ ब्राह्मण अभक्ष्योंको भोजनकर अपेयोंको पानकर तबतक अधिकारी नहीं होताहै जबतक तिसको नीचे न त्यागदे ४५ तिससे ब्राह्मण नित्यही अभक्ष्यों और अपेयों को यत्नसे त्यागदे न त्यागे तो रौरव नरकको जाताहै ४६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेभक्ष्याभक्ष्यनियमो नामषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवाँ अध्याय ॥

गृहस्थोंके धर्मका निर्णयवर्णन ॥

व्यासजी बोले कि अब अत्युत्तम दानधर्म्मको कहते हैं पहले ब्रह्मवादी ऋषियों से ब्रह्माजीने कहाहै १ द्रव्योंका पात्रमें श्रद्धासे प्रतिपादन उचित है यह भुक्ति मुक्ति फलका देनेवाला दान कहाता है २ जो श्रेष्ठ श्रद्धासे युक्त सज्जनों को दान देताहै वही दान हम मानते हैं शेष किसकी रक्षा करता है ३ नित्य नैमित्तिक काम्य तीन प्रकारका दान कहाता है चौथा सब दानोंसे उत्तमोत्तम विमल कहाताहै ४ दिन दिनमें जो कुछ उपकारहीन ब्राह्मणको दियाजाता है तिससे नित्य अनुद्दिश्य फल होताहै ५ जो पापकी शान्ति के लिये विद्वानों के हाथमें दियाजाता है उसको सज्जन अत्युत्तम नैमित्तिक दान कहते हैं ६ पुत्रके विजय ऐश्वर्य सुखके लिये जो दान दियाजाता है तिसको धर्मकी चिन्ता करनेवाले ऋषि काम्यदान कहते हैं ७ जो ईश्वरकी प्रीतिके लिये धर्मयुक्त चित्तसे वेदवेत्ता को दियाजाता है वह दान विमल शिव कहाताहै ८ पात्रको पाकर शक्तिसे दान धर्मको सेवन करै तिस पात्रकी उपासना करैं जो सबसे तारता है ९ कुटुम्ब भुक्तिवसन से जो दियाजाता है वह अधिक फल देता है और प्रकार से जो दियाजाता है वह दान फलदेनेवाला नहीं होताहै १० वेदका जाननेवाला कुलीन नम्र तपस्वी व्रतमें स्थित और दरिद्रको भक्तिपूर्वक देना चाहिये ११ जो आहित अग्निवाले ब्राह्मण को भक्तिसे पृथ्वी देताहै वह परम स्थान को जाताहै जहां जाकर नहीं शोच करता है १२ जो ईखों से संयुक्त पृथ्वी को यव और गेहूं युक्तको वेदके जाननेवाले को देताहै वह फिर नहीं उत्पन्न होताहै १३ जो गऊके चमड़ेमात्र भी पृथ्वीको दरिद्र ब्राह्मण को देताहै वह सब पापोंसे छूटजाता है १४ पृथ्वीके दान से श्रेष्ठ दान कुछ नहींहै अन्नका दान तिसके समान है विद्याका दान तिससे अधिक है १५ जो शांत पवित्र धर्ममें शीलवाले ब्राह्मण को विधि से विद्या देताहै वह ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै १६ जो श्रद्धासे प्रति

दिन ब्रह्मचारी को सोना देताहै वह सब पापों से छूटकर ब्रह्माके स्थान को प्राप्त होताहै १७ गृहस्थको अन्नके दानसे मनुष्य फल को प्राप्त होताहै इसको अन्नही देने योग्यहै देने से श्रेष्ठगति को प्राप्त होताहै १८ वैशाखी पूर्णमासी में सात वा पांच ब्राह्मणों को विधिसे व्रत कराकर शांत पवित्र प्रयत मानस १९ काले तिलों और विशेषकर शहद से पूजनकर धर्मराज प्रसन्नहों जो मनमें वर्तमान है २० जीवन पर्यन्तका जो पाप है वह तिसी क्षणसे नाश होजाता है काले मृगछाला में तिल कर सोना शहद और घी को २१ जो ब्राह्मण को देताहै वह सब पापसे तरजाता है घी अन्न उदकुम्भ वैशाखी पूर्णमासी में विशेषकर २२ धर्मराजकी प्रसन्नता के लिये ब्राह्मणों को देवे तो भयसे छूटजावे सोना और तिलयुक्त जलके पात्रों से सात वा पांच ब्राह्मणों का तर्पणकरै तो ब्रह्महत्या दूर हो-जावे माघमासके कृष्णपक्ष में द्वादशी में व्रतकर २३ । २४ श्वेत कपड़े धारणकर एकाग्रचित्तहो काले तिलों से अग्निको हवनकर ब्राह्मणों को तिल देताहै २५ तो निश्चय ब्राह्मण जन्मपर्यन्त सब किये हुये पापसे तरजाता है अमावास्या को प्राप्त होकर तपस्वी ब्राह्मण को २६ जो कुछ देवदेवेश केशवजीका उद्देश कर देवे कि ईश्वर सनातन हृषीकेश विष्णुजी प्रसन्नहों २७ तो सात जन्मके कियेहुये पाप तिसी क्षणसे नाश होजावें जो कृष्णपक्षकी चतुर्दशी में स्नानकर देव शिवजीको २८ ब्राह्मणके मुखमें आराधन कराता है तिसका फिर जन्म नहीं होताहै कृष्णपक्षकी अष्टमी में विशेषकर धर्मात्मा ब्राह्मणको २९ स्नानकर न्यायपूर्वक पादप्रक्षालन आदि-कोंसे पूजनकर मेरे ऊपर महादेवजी प्रसन्नहों ऐसा कह अपना द्रव्यदेवे ३० तो सब पापों से छूटकर परमगतिको प्राप्तहो ब्राह्मणों करके कृष्णपक्षकी चतुर्दशी और कृष्णपक्षकी अष्टमी में विशेषकर ३१ और अमावास्या में भक्तों से भगवान् पूजने योग्य हैं एका-दशी में निराहार होकर द्वादशी को भगवान् का ३२ ब्राह्मण के मुखमें पूजन करै तो परमपद को जावे यह शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि वैष्णवी है ३३ तिसमें यत्नसे जनार्दनदेवजी का आराधनकर

जो कुछ ईशानदेवको उद्देशकर पवित्र ब्राह्मण ३४ और विष्णुजी को दियाजावे वह अनन्त फल होताहै जो मनुष्य जिस देवता के आराधन की इच्छाकरै ३५ तौ ब्राह्मणों का यत्नसे पूजनकरै तब भगवान् तिससे प्रसन्न होतेहैं ब्राह्मणोंकी देह धरकर नित्यही देवता स्थित रहते हैं ३६ और ब्राह्मणके न मिलने में तिनसे मूर्ति आदि-कों में कहीं पूजे जातेहैं तिससे फलकी इच्छा करनेवाले से यत्नसे मूर्ति आदिकों में पूजे जातेहैं ३७ ब्राह्मणों में देवता नित्यही विशे-षकर पूजने योग्य हैं ऐश्वर्यकी कामनावाला निरन्तर इन्द्रका पूजन करै ३८ ब्रह्मवर्चस और ज्ञानकी कामनावाला ब्रह्माको पूजै आरो-ग्यकी कामनावाला सूर्यको पूजै धनकी कामनावाला अग्निको पूजै ३९ कर्मोंके सिद्धिकी कामनावाला निश्चय गणेशजी का पूजनकरै भोगकी कामनावाला चन्द्रमाका पूजनकरै बलकी कामनावाला प-वनको पूजै ४० सब संसारसे मोक्षकी इच्छा करनेवाला यत्नसे भग-वान्का पूजनकरै जो योग मोक्ष और ईश्वरके ज्ञानकी इच्छाकरै ४१ तो यत्नसे देवताओं के ईश्वर विरूपाक्ष का पूजनकरै जे बड़े भोग और ज्ञानों की इच्छा करते हैं वे महादेव ४२ भूतों के स्वामी की पूजा करते हैं भोगकी इच्छावाले केशवजी की पूजा करते हैं जलका देनेवाला तृप्तिको प्राप्त होताहै इससे जलका दान अधिक है ४३ तैलका देनेवाला इष्ट पुत्रको दीपका देनेवाला उत्तम नेत्रको भूमिका देनेवाला सबको सुवर्णका देनेवाला बड़ी उमर को पाताहै ४४ घरका देनेवाला श्रेष्ठस्थानों को चांदी का देनेवाला उत्तमरूप को वस्त्रका देनेवाला चन्द्रसालोक्य को घोड़ेका देनेवाला उत्तमयान को ४५ अन्नका देनेवाला अपनी इष्ट लक्ष्मी को गऊका देनेवाला ब्राह्मण विष्टपको यान और शय्याका देनेवाला स्त्रीको अभय का देने वाला ऐश्वर्यको ४६ धान्यका देनेवाला निरन्तर सुखको ब्रह्मका देने वाला ब्रह्म शाश्वत को पाताहै यथाशक्ति धान्यों को ब्राह्मणों में देवे ४७ जोकि वेदविद्यामें निपुणहो तो मरकर स्वर्गको प्राप्त होताहै गौवों के अन्न देनेसे सब पापोंसे छूटजाताहै ४८ इंधनों के देने से दीप्तअग्नि वाला मनुष्य उत्पन्न होताहै फल मूल पान अनेक प्रकारके शाक ४९

ब्राह्मणों को देवे तो सदैव आनंदयुक्त होवे औषध तेल भोजन रोग की शान्तिके लिये रोगी को ५० देवे तो रोगरहित सुखी और दीर्घ उमरवाला होवे असिपत्रवन छूरेकी धारासे युक्त मार्ग ५१ और तीक्ष्ण तापको छतुरी और जूताका देनेवाला मनुष्य तरताहै जो जो संसारमें अत्यन्त इष्ट और इसको घरमें अपेक्षित हो ५२ तो उसी को नाशरहित होनेकी इच्छासे तिस तिसको गुणवान्में देवे अयन में विषु व संक्रांति में चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहणमें ५३ संक्रांति आदिक कालोंमें दियाहुआ नाश रहित होताहै प्रयागादिक तीर्थों में पुण्यस्थानों में ५४ नदीके झरनों में देनेसे अक्षयको प्राप्त होता है दान धर्म से श्रेष्ठ धर्म प्राणियों को यहां नहीं विद्यमान होताहै ५५ तिससे ब्राह्मणों करके स्वर्ग ऐश्वर्यकी कामना और पापकी शांति के लिये वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको देना चाहिये ५६ मोक्ष की इच्छा करनेवाले करके प्रतिदिन ब्राह्मणों को देना चाहिये गऊ ब्राह्मण अग्नि और देवताओं में देतेहुये को जो मोहसे ५७ मना करताहै वह अधर्मात्मा तिर्यग्योनिको प्राप्त होताहै जो द्रव्य इकट्ठा कर ब्राह्मण और देवताओं का नहीं पूजन करताहै ५८ उसका सब द्रव्य छीनकर राजा राज्यसे निकाल देवे जो ब्राह्मण दुर्भिक्षकी वेला में मरतेहुये को अन्नादिक नहीं देताहै वह निन्दित है तिससे दान न लेवें और तिसके साथ न बसें ५९ । ६० राजा तिसके चिह्न कराकर अपने राज्यसे निकाल देवे पीछे से धर्म्म के साधन करनेवाले अपने द्रव्य को सज्जनों को देवे ६१ वह पहले से अधिक पापी मनुष्य नरकमें गिरताहै जे ब्राह्मण स्वाध्यायवन्त विद्यावन्त जितेन्द्रिय ६२ और सत्य संयम संयुक्त हैं तिनको देवे अभुक्त विद्वान् धर्मात्मा ब्राह्मणको भोजन करावे ६३ दशरात्रिके व्रत किये हुये अवृत्तमें स्थित मूर्खको न भोजन करावे जो वेदके जाननेवाले समीपही में स्थितको अतिक्रमण कर औरको देताहै ६४ वह पापी तिस कर्मसे सात कुलको जलाताहै यदि ब्राह्मण शील और विद्यादिकों से अपने आप अधिकहो ६५ तिसको समीपवाले को अतिक्रमण कर यत्नसे देना चाहिये जो पूजितको ग्रहण करताहै पूजित

को देताहै ६६ वे दोनों स्वर्गको जातेहैं उलटाकरने में नरक को जाते हैं नास्तिकहे तुकमें भी जल तक न देवे ६७ धर्म का जानने वाला सब पाखंडों में और वेदके न जानने वाले में न देवे चांदी सोना गऊ घोड़ा पृथ्वी तिलोंको ६८ मूर्ख ग्रहण करै तो काष्ठकी नाईं भस्महो उत्तम ब्राह्मण प्रशस्त ब्राह्मणोंसे धनलेवे ६९ क्षत्रिय और वैश्यसे भी लेवे शूद्रसे कभी न लेवे जीविकाके संकोच की इच्छा करै धनके विस्तार की चेष्टा न करै ७० धनके लोभ में प्रसक्त ब्राह्मणत्वसे हीन होजाताहै सब वेदोंको पढ़कर और सब यज्ञोंको कर ७१ तिस गतिको नहीं प्राप्त होताहै संतोष से जिस को प्राप्त होताहै दान लेने में रुचि न हो शूद्रसे न लेवे ७२ पालन के अर्थ से अधिक ग्रहण करताहुआ ब्राह्मण नरकको जाता है जो संतोषको नहीं प्राप्त होताहै वह स्वर्ग का भाजन नहीं है ७३ प्राणियों को कँपाताहै जैसे चोर तैसेही वहहै गुरु और भृत्योंके हरनेकी इच्छा करनेवाला देवता और अतिथियों को तर्पण कर ७४ सबसे ग्रहण करै तो आपही न तृप्तहो इस प्रकार युक्तात्मा गृहस्थ देवता और अतिथियों की पूजा करनेवाला ७५ वर्तमान संयतात्मा तिस परम पदको प्राप्त होताहै तत्त्वका जाननेवाला पुत्रों में स्त्रीको छोड़कर वनमें जाकर ७६ अकेला उदासीन एकाग्रचित्त कर नित्यही विचरे हे उत्तम ब्राह्मणो ! यह गृहस्थों का धर्म तुम लोगों से कहा इसको जानकर नियत स्थितहो और तैसेही ब्राह्मणों को स्थित करावे ७७ इस प्रकार देव आदि रहित एक ईशको गृहके धर्म से निरन्तर पूजन करै तो सब प्राणियों की योनिको अतिक्रमण कर श्रेष्ठ प्रकृति को प्राप्त होताहै जन्मको नहीं प्राप्त होताहै ७८ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेगृहस्थधर्मनिर्णयो नामसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

वानप्रस्थ आश्रम के आचार धर्म का वर्णन ॥

व्यासजी बोले कि इस प्रकार उमरके द्वितीयभाग को गृहस्था-

श्रममें स्थित होकर स्त्री और अग्नि समेत वानप्रस्थ आश्रम को जावे १ वा पुत्रोंमें स्त्रीको छोड़कर वनको जावे वा पुत्रके पुत्रको देखकर जर्जर देहवाला २ प्रशस्त उत्तरायण शुक्लपक्ष के पूर्वाह्न में नियम युक्त एकाग्र चित्तकर वनमें जाकर तपस्या करै ३ पवित्र फल मूलों को नित्यही भोजन करने के लिये लावे जो भोजन हो तिससे पितृ और देवताओं को पूजन करै ४ नित्यही अतिथि को पूजन करै स्नान कर देवताओंको पूजन करै एकाग्रचित्त होकर घर से आठ ग्रासों को लेकर भोजन करै ५ नित्यही जटाधारण करै नख और रोमों को न त्याग करै सर्वथा पढ़ा करै और जगह से वाणी को रोंके रहे ६ अग्निहोत्र हवन करै अनेकप्रकार की पवित्र उत्पन्न हुई वस्तु वा शाक मूल फल से पंचयज्ञोंको करै ७ नित्यही चीर वस्त्र धारण करै त्रिषवण स्नान करै पवित्र सब प्राणियों के ऊपर दयाकर दान लेनेसे अलग रहे ८ ब्राह्मण अमावास्या और पूर्णमासी से नियत पूजन करै ऋत्विष्ट्याग्रयण में चातुर्मास्यों को करावै ९ उत्तरायण दक्षिणायन पवित्र उत्पन्न अपने आप आहृतों से १० पृथक् विधिपूर्वक पुरोडाशचरुओंकी करै देवता पितरों को अत्यन्त पवित्र हवि देकर ११ शेष को आप भोजन करै अपना किया हुआ नमक मद्य मांस और पृथ्वीके कवकोंको वर्जित करै १२ जलके खर शष्पक लसौढ़े के फलोंको भी छोड़ देवे फालसे जोती हुई को न भोजन करै किसीसे त्यागकी हुई को न भोजन करै १३ आर्त भी होकर गांव में उत्पन्न पुष्प और फलोंको न खावे श्रावण की विधि से सदैव अग्नि को सेवन करै १४ सब प्राणियों से वैर न करै निर्द्वन्द्व निर्भय होवे रात्रिमें कुछ न खावे रात्रि में ध्यानमें परायण हो १५ इन्द्रिय जीतनेवाला क्रोध जीतनेहारा तत्त्व ज्ञानकी चिन्तना करनेवाला ब्रह्मचारी नित्यही होवे स्त्रीको भी आश्रय न करै १६ जो ब्राह्मण स्त्री समेत वनमें जाकर कामसे मैथुन करै तो वह व्रत तिसका लोप होजाता है और प्रायश्चित्त करना योग्य है १७ तहां जो गर्भ उत्पन्न होता है वह ब्राह्मणोंसे नहीं स्पर्श करने योग्य होता है इसका वेद में अधिकार और तिस वंश में भी अधिकार

नहीं है १८ निरन्तर पृथ्वी में शयन करै गायत्री के जपमें तत्परहो
सब प्राणियों को शरणमें रखकर रक्षाकरै सदैव सद्विभाग में परा-
यण हो १९ परिवाद मिथ्यावाद निद्रा और आलस्य को वर्जित
करै एकाग्नि स्थान रहितहो प्रोक्षित भूमिको आश्रय करै २० दांत
होकर मृगों के साथ घूमै मृगों के साथही बसै एकाग्रचित्त होकर
शिला या शर्करा में सोवै २१ शीघ्रही प्रक्षालक हो वा मास संच-
यिक हो छः महीने वा सालभर में प्रक्षालक हो २२ दिनमें शक्ति
से इकट्ठा कर रात्रि में अन्न भोजन करै चतुर्थकालिक वा अष्टमका-
लिकहो २३ वा चांद्रायण विधानों से शुक्ल और कृष्णपक्षमें वर्जित
करै पक्ष पक्षमें एकबार की चुरई हुई यवागूको भोजन करै २४ वा
केवल फूल मूल फलों से सदैव भोजन को करै जो कि स्वाभाविक
अपने आप शीर्णहों तपस्वीके मतमें स्थित २५ भूमि में वा प्रप-
दोंसे दिनमें स्थितहो स्थान और आसनोंसे विहरै कहीं धैर्य को न
छोड़े २६ गर्मीमें पंचाग्नितापे वर्षामें बूंदें मेघोंकी सहै हेमन्तऋतु
में गीले कपड़े धारे क्रमसे तपस्या बढ़ावे २७ त्रिषवण को स्पर्श करै
पितृ और देवों को तर्पण करै एक पांवसे स्थितहो वा सदैव मरीचि
को पीवे २८ पंचाग्नि के धुयें से प्राप्त वा गर्मी में प्राप्त सोमका
पीनेवाला शुक्लपक्ष में पानी और कृष्णपक्ष में गोबर पीवे २९ वा
पके पत्तोंका भोजन करै वा सदैव कृच्छ्रोंसे वर्ताव करै योगाभ्यासमें
रतहो रुद्राध्यायी सदैवहो ३० अथर्व शिरसका पढ़नेवाला वेदांत
के अभ्यास में तत्पर निरन्तर यमों को सेवन करै और अतंद्रित
होकर नियमों को सेवन करै ३१ काला मृगछाला उत्तरीय समेत
धारै शुक्ल यज्ञोपवीत पहने अपनी आत्मामें अग्नियोंको आरोपित
कर ध्यान में तत्पर हो ३२ अग्नि वा स्थान रहित मुनि मोक्ष में
परायण हो तपस्वी ब्राह्मणों में यात्रिक भिक्षा को मांगे ३३ और
गृहस्थ वनचारी ब्राह्मणों में गांवसे लाकर वनमें बसतेहुये आठ
ग्रासोंको भोजन करै ३४ पुटसे हाथसे वा खंडसे अनेक प्रकार
की उपनिषदों को आत्म संसिद्धि के लिये जपै ३५ विद्या
विशेषों को गायत्री रुद्राध्याय को महा प्रस्थानिक को पढ़े भोजन

हीनहो अग्निमें प्रवेश वा और ब्रह्मार्पण विधिमें स्थित हो ३६॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेवानप्रस्थाश्रमाचार धर्मोनामाष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

उनसठवां अध्याय॥

संन्यासी के धर्म का निरूपण॥

व्यासजी बोले कि इस प्रकार उमरका तीसराभाग वनके आश्रममें स्थित होकर चौथे उमरके भागको क्रमसे संन्याससे व्यतीतकरै १ ब्राह्मण आत्मा में अग्नियों को स्थापित कर संन्यासी होवे योगाभ्यास में रत शांत ब्रह्मविद्यामें परायण हो २ जब मनमें सब वस्तुओं में वैराग्य संपन्नहो तब संन्यास की इच्छा करै उलटा करने में पतित होताहै ३ प्राजापत्य इष्टि निरूपणकर अथवा फिर आग्नेयीको निरूपणाकर दांत शुद्ध कषायहोकर ब्रह्माश्रमको आश्रय करै ४ कोई ज्ञान संन्यासी और वेद संन्यासी अन्य कर्म संन्यासी हैं तीन प्रकारके संन्यासी कहे हैं ५ जो सब जगहसे विनिर्मुक्त निर्द्वन्द्व निर्भय हो वह आत्मामें स्थित ज्ञान संन्यासी है ६ नित्यही वेदको अभ्यास करै भोजन और स्त्रीसे हीनहो वह मोक्षकी इच्छा करनेवाला इन्द्रिय जीतनेहारा वेद संन्यासी कहाताहै ७ जो ब्राह्मण अग्निको आत्म सात्कर ब्रह्मार्पण में परायणहो वह महा यज्ञ में परायण कर्म संन्यासी जानने योग्यहै ८ इन तीनोंमें ज्ञानी अधिक है तिस ज्ञानी का कार्य वा लिंग नहीं विद्यमानहै ९ ममता हीन निर्भय शांत निर्द्वन्द्व पत्ता भोजनकर पुराना कौपीन वस्त्र हो वा नग्न ध्यान में तत्पर १० ब्रह्मचारी आहार जीतकर गांवसे अन्नको लावे अध्यात्म में रतिहो अपेक्षा रहित आशिष हीनहो ११ आत्मा के सहायसे सुखके लिये यहां विचरे मरण और जीवन दोनोंकी प्रशंसा न करै १२ मृतककी नाईं निर्देश कालही को परखे न पढ़े न वर्तित हो न कभी सुने १३ इस प्रकार ज्ञानमें परायण योगी ब्रह्ममें मिल जाने के लिये कल्पितहै अथवा विद्वान् एकही वस्त्र धारणकर वा

कौपीन धारणकर १४ मूंड़ मुड़ाकर शिखा हीनहो तीन दंड धारण कर स्त्री हीनहो निरंतर काषाय वस्त्रधारे ध्यान योगमें परायण हो १५ गांवके अन्तमें वा वृक्षकी जड़में वा देवता के स्थानमें बसे शत्रु मित्र मान और अपमान में समानहो १६ नित्यही भिक्षासे भोजन करै कभी एकही अन्न न खायाकरै जो संन्यासी मोहसे वा और से एकही अन्न खायाकरै १७ तो उसकी धर्म शास्त्रों में कोई निष्कृति नहीं दिखाईपड़ती राग और द्वेष से आत्मा वियुक्तहो लोष्ट पत्थर और सोना समानहो १८ प्राणियोंकी हिंसासे निवृत्तहो मौनहो सबमें निस्पृहहो दृष्टिसे पूत पांवधरे वस्त्रसे पूत जल पीवे १९ सत्यसे पूत वाणी बोले मन पवित्र होकर विचरे भिक्षुक वर्षा को छोड़कर और महीनोंमें एकही जगहमें न बसे २० स्नानकर नित्यही शौचयुक्त कमंडलु हाथमें ले पवित्र नित्यही ब्रह्मचर्य में रत और वनवास में रतहो २१ मोक्ष शास्त्रों में निरत जनेऊ धारे जितेन्द्रिय दंभ अहंकार से निर्मुक्त निन्दा और चुगुली से वर्जितहो २२ आत्मज्ञान गुण से युक्त यदि मोक्ष को प्राप्तहो तो निरन्तर सनातन ॐकार देवको अभ्यास करै २३ स्नानकर विधानसे आचमन कर पवित्र देवता के स्थान आदिकों में रहे यज्ञोपवीत धारे शांत आत्माहो कुश हाथमें ले एकाग्रचित्त हो २४ धोये काषाय वस्त्रधार तिसमें रोमको आच्छादित कर अधियज्ञ अधिदैविक ब्रह्मको जपै २५ निरंतर आध्यात्मिक और वेदांतके जो अभिहित है तिसको जपै पुत्रों में वसते हुये ब्रह्मचारी संन्यासी मुनि २६ नित्यही वेद को अभ्यास करै तो वह परम गतिको प्राप्तहो अहिंसा सत्य चोरी से हीन ब्रह्मचर्य्य २७ क्षमा दया संतोष इसके विशेषकर व्रतहैं वा वेदान्त ज्ञानमें निष्ठ एकाग्रचित्त हो पंच यज्ञोंको २८ प्रतिदिन करै स्नानकर भिक्षाके तिस द्रव्यसे एकाग्रचित्त हो काल कालमें होम मंत्रोंको नित्यही जपकर हवन करै २९ प्रतिदिन पढ़े दोनों संध्याओं में गायत्री को जपै एकान्त परमेश्वर देवको निरंतर ध्यानकरै ३० नित्यही एक अन्नको वर्जित करै काम क्रोध और स्त्रीको त्यागे एक वा दो वस्त्रधारे शिखाहीन यज्ञोपवीत धारे कमंडलु हाथमें

ले विद्वान् तीन दण्डवाला तिस श्रेष्ठ परमेश्वरको प्राप्त होता है ३१॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेयतिधर्मनिरूपणं नामैकोनषष्टितमोऽध्यायः ५६ ॥

साठवां अध्याय॥

संन्यासी के धर्म का निरूपण॥

व्यासजी बोले कि इसप्रकार आश्रम निष्ठ नियतात्मा संन्यासियोंका भिक्षासे वा फल मूलों से वर्तन कहाहै १ एक काल भिक्षा मांगे विस्तार भिक्षा मांगने में न करै भिक्षामें प्रसक्त संन्यासी विषयों में फँस जाता है २ सात स्थानों में भिक्षा मांगे न मिलने में फिर न मांगे संन्यासी नीचेका मुखकर गऊके दुहनेमात्र समयतक ठहरा रहै ३ एकबार भिक्षा ऐसा कहकर चुपचाप वाग्यत पवित्र हो हाथ पांवों को धो विधिपूर्वक आचमन कर ४ सूर्य को अन्न दिखाकर मनुष्य पूर्वमुख हो अन्नको भोजन करै एकाग्रचित्त होकर पांच प्राणाहुती हवनकर आठ कौर खावे ५ फिर आचमन कर देव ब्रह्मा परमेश्वर को ध्यान करे आलाबु काष्ठका बर्तन मिट्टी और बांसका बर्तन ६ इन चार संन्यासियों के पात्रों को मनुप्रजापति जीने कहा है पूर्वरात्र में मध्यरात्र में पररात्र में ७ संध्याओं में उक्ति विशेषसे नित्यही ईश्वरको चिन्तन करै हृदयरूपी कमलस्थान में विश्वाख्य विश्व संभवको करै ८ जोकि सब प्राणियों के आत्मा तमके परस्तात् स्थित सबके आधार अव्यक्त आनन्द ज्योति नाश रहित ९ प्रधान पुरुषातीत आकाश अग्नि शिव तिसके अन्त सब भावोंके ईश्वर ब्रह्मरूपी को करै १० ॐकारके अन्तमें अथवा आत्माको परमात्मा में समाप्तकर आकाशमें आकाश के मध्य में प्राप्त ईशान देवको ध्यान करै ११ सब भावों के कारण आनन्द एकमें आश्रय करनेवाले पुराण पुरुष विष्णुको ध्यान करतेहुये बन्धन से छूट जाता है १२ यद्वागुहा की आदिमें प्रकृति में जगत्संमोहन स्थानमें परमव्योम सब प्राणियोंके एक कारणको चिन्तनाकरै १३ जोकि सब प्राणियों के जीवन हैं जहां लोक लीन होता है ब्रह्मका

आनन्द सूक्ष्म जिसको मोक्षकी इच्छा करनेवाले देखते हैं १४ तिसके मध्यमें निहित ब्रह्म केवल ज्ञान लक्षण अनन्त सत्य ईशान को चिन्तनाकर मौन रहे १५ गुह्यसे अत्यन्त गुह्यज्ञान यतियोंका यह कहा है जो सदैव इससे स्थित होता है वह ईश्वर के योग को प्राप्त होता है १६ तिससे नित्यही ज्ञानमें रत आत्मविद्या में परायण हो ब्रह्मज्ञान को अभ्यास करै जिससे बन्धन से छूट जावे १७ केवल आत्माको सबसे अलग मानकर आनन्द अक्षर ज्ञानको तिसको पीछे ध्यान करै १८ जिससे प्राणी होते हैं जिसको जानकर यहां नहीं उत्पन्न होता सो तिससे ईश्वर देवहै जो पीछे स्थित है १९ जिसके अन्तर में तिसका गमन है शाश्वत शिव अव्यय है जो अपने परोक्ष है वह महेश्वर देवहै २० जौन संन्यासियोंके व्रत हैं तैसेही और व्रत हैं एक एकके अतिक्रमण से प्रायश्चित्त होता है २१ कामसे स्त्रीको प्राप्त होतो एकाग्रचित्त होकर प्रायश्चित्त करै प्राणायाम समेत पवित्र होकर सांतपन करै २२ फिर नियम से संयतमानस तन्द्राहीन संन्यासी कृच्छ्रको करै फिर आश्रममें आकर विचारै २३ धर्मयुक्त झूंठ बुद्धिमान् को नाश नहीं करता है तिस पर भी झूंठ न बोले यह प्रसङ्ग दारुण है २४ धर्मात्मा संन्यासी को झूंठ बोलकर एकरात्र व्रत सौ प्राणायाम करने चाहिये २५ आपत्ति में प्राप्तको भी और जगह चोरी न करनी चाहिये चोरीसे अधिक कोई अधर्म नहीं है यह स्मृति है २६ हिंसा तृष्णा आत्मा के ज्ञानकी नाश करनेवाली यांचा जो ये द्रविण नाम हैं ये प्राण बाहर चरनेवाले हैं २७ जो जिसके धनको हरता है सो तिसके प्राणोंको हरताहै इसप्रकार कर वह भिन्नवृत्त व्रतसे च्युत दुष्टात्मा २८ फिर निर्वेदको प्राप्त अतंद्रित संन्यासी विचरे जो संन्यासी अकस्मात् हिंसाको करै २९ तो कृच्छ्र अतिकृच्छ्र वा चांद्रायण व्रतको करै यदि संन्यासी स्त्रीको देखकर इन्द्रिय की दुर्बलता से वीर्यपात करदे ३० तो वह सोलह प्राणायाम करै दिनमें वीर्यपात होनेमें त्रिरात्र व्रत करै सौ प्राणायाम करै यह पण्डित लोग कहते हैं ३१ एक अन्न खानेमें मदिरा और मांस खाने में नव श्राद्धमें और प्र-

त्यक्ष नमक खानेमें प्राजापत्य व्रत करै ३२ निरन्तर ध्यानमें निष्ठ के सब पाप नाश होजाते हैं तिससे नारायण जीको ध्यानकर तिन के ध्यानमें परायण होवे ३३ जो ब्रह्मकी श्रेष्ठ ज्योति प्रविष्ट अक्षर नाश रहित है जोकि अन्तरात्मा परम्ब्रह्म है सोई महेश्वर जानने योग्य है ३४ यह देव महादेव केवल परम शिव सोई अक्षर अद्वैत नित्य परम्पद है ३५ तिससे महेश्वरदेव अपने धाम ज्ञानसंज्ञित आत्मयोग से परतत्त्व में महादेव कहाता है ३६ महादेव से व्य-तिरिक्त और देवको न देखे तिस आत्माको जो प्राप्त होता है वह परम्पद को प्राप्त होता है ३७ जे अपनी आत्माको परमेश्वर से विभिन्न मानते हैं वे तिस देवको नहीं देखते हैं तिनका परिश्रम वृथाहै ३८ एकही तत्त्व नाश रहित परम्ब्रह्म जानने योग्य है सो देव महादेव यह जानकर नहीं बँधते हैं ३९ तिससे संयत मानसज्ञान योगमें रतशान्त महादेव में परायण संन्यासी नियत होकर प्रयत्न करै ४० हे ब्राह्मणो! यह संन्यासियों का शुभ आश्रम तुम लोगों से कहा जिसको विभुमुनि ब्रह्माजीने पूर्वसमय में कहा था ४१ इसप्र-कार अत्युत्तम संन्यासियोंके धर्मके आश्रय कल्याणरूप ब्रह्माजीके कहेहुये ज्ञानको पुत्रहीन शिष्य और योगियों को न देवे ४२ यह संन्यासियों के नियमों का विधान कहा जो देवताओं में श्रेष्ठ भग-वान् के प्रसन्न होनेमें एक हेतु होता है फिर इनकी उत्पत्ति वा नाश नहीं होता है जे मन लगाकर नित्यही करते हैं ४३॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेषष्टितमोऽध्यायः ६०॥

इकसठवां अध्याय॥

हरिभक्ति का माहात्म्य वर्णन॥

सूतजी बोले कि हे शौनकादिक ब्राह्मणो! इस प्रकार अमित तेजवाले व्यासजी ने पूर्वसमय में कहा है ऐसा कहकर सत्यवती के पुत्र भगवान् व्यासजी १ सब मुनियों को समझाकर जैसे आये थे वैसे चलेगये मैंने वर्ण आश्रम विधान को तुमलोगों से कहा २ ऐसा करके विष्णुजी का प्रियहोता है और प्रकार से नहीं होता

है हे श्रेष्ठब्राह्मणो ! तहांपर रहस्य कहते हैं सुनिये ३ जे वर्णाश्रमके निबन्धन यहां धर्म कहेगये हैं हे ब्राह्मणो ! वेहरिभक्ति की कलाके अंशांश के समान नहीं हैं ४ पुरुषोंको कलियुग में एक हरिभक्तिही साधन करनेयोग्य है मनुष्यसे और युगमें धर्म्म सेवन करनेयोग्य हैं ५ कलियुग में दामोदर हृषीकेश पुरुहूत सनातन नारायण देवको जो पूजता है वह धर्मका भागीहोता है ६ हृदय में पर शान्त भगवान्‌कोकर तीनोंलोकको जीतलेता है कलिकाल रूप सांपके काटने से पापसे कालकूट से ७ हरिभक्तिरूप अमृतपीकर ब्राह्मण उल्लंघन करने के योग्य होताहै जपोंसे क्या है यदि मनुष्योंने श्रीहरिजीका नाम ग्रहण कियाहै ८ स्नानों से क्या है जिसने विष्णुजी के चरण जलको माथेमें धारण किया है यज्ञसे क्याहै जिसने हरिजीकेचरण कमल को हृदयमें धारण किया है ९ दानसे क्या है हरिजी के कर्म जो सभामें प्रकाशित करता है हरिजीके गुणसमूहों को सुनकर जो वारंवार प्रसन्न होता है १० समाधि में प्रसन्नकी जो गतिहोती है सोई कृष्णमें चित्तवालेकी होतीहै तहां पाखण्ड के बोलने में निपुण विघ्न करनेवाले कहातेहैं ११ स्त्रियां और तिसके सङ्गी हरिभक्ति के विघ्न करनेवाले हैं स्त्रियोंके नेत्रोंकाआदेश देवताओंको भी दुःखसे जीतने योग्यहै १२ सोजिसने संसारमें जीताहै वहहरिभक्त कहाताहै यहांपर स्त्रियोंके चरितमें चञ्चल मुनिलोगभी प्रसन्न होतेहैं १३ हे ब्राह्मणो ! स्त्रियोंकी भक्ति सेवन करनेवालों को हरिभक्ति कहांहै संसारमें स्त्रियोंके वेषवाली राक्षसियां विचरती हैं वे निरन्तर मनुष्यों की बुद्धिको कौरकरती हैं १४ तबतक विद्या होती है तबतक ज्ञानवर्तमान रहता है तबतक सब शास्त्रों के धारण करनेवाली अत्यन्त निर्मल बुद्धि रहती है १५ तबतक जपतप तीर्थोंका सेवन गुरुकी सेवा तरनेमें बुद्धि १६ प्रबोध विवेक सज्जनों के संगकी रुचि और पुराण में लालसा होतीहै १७ जबतक स्त्रीके चञ्चल नयनों का आन्दोलन नहीं होता है हे ब्राह्मणो ! मनुष्य के ऊपर सब धर्मका विलोपन गिरता है १८ तहां जे हरिजी के चरणकमलके मधुके लेशसे प्रसाद युक्तहैं तिनको स्त्रीके चंचल नेत्रोंका क्षेपण समर्थ नहीं

होताहै १९ हे ब्राह्मणो ! जिन्होंने जन्म जन्ममें हृषीकेशजीका सेवन कियाहै ब्राह्मण में दानदिया है अग्नि में हवन कियाहै तहां तहां विरति है २० निश्चय स्त्रियों का क्या नाम सौन्दर्य कहाताहै वह गहनों और कपड़ोंका चाकचक्य कहाताहै २१ स्नेहसे आत्मज्ञान रहित स्त्रीका रूप कैसे कहाता है पीब मूत्र विष्ठा रक्त त्वचा मेदा हाड़ और वसासे युक्त २२ तिसका देह नामहै इसमें कहांसे सुन्दरताहै तिसको इसीप्रकार चिन्तनकर स्पर्शकर स्नान करनेसे पवित्र होता है २३ तिन्हों से युक्त शरीर मनुष्यों से सुन्दर देखाजाता है आश्चर्य है हे ब्राह्मणो ! दुर्दैवसे घटित अत्यन्त दुर्दशा मनुष्यों की है २४ पुरुष कुचोंसे युक्त अंगमें स्त्रीकी बुद्धिसे वर्त्तताहै कौनस्त्री या कौनपुरुष है विचार होनेमें क्याहै २५ तिससे साधुसर्वात्मा से स्त्री संगको छोड़देवे पृथ्वीमें स्त्रीको प्राप्तहोकर किसनामवाली सिद्धिको प्राप्तहोता है २६ स्त्री और स्त्रीके संगियों का संग छोड़देवे तिनके संगसे साक्षात् रौरव प्रतीत होताहै २७ अज्ञान से चंचल मनुष्य तहां दैवसे ठगगये हैं मनुष्य साक्षात् नरकके कुण्ड स्त्रीकी योनिमें पचता है २८ जहांसे पृथ्वीमें आयाहै तिसीमें फिर रमताहै जहांसे नित्यही मूत्र और मलसे उठाहुआ रेतगिरताहै २९ तहांहीं मनुष्य रमता है तिससे कौन अपवित्र होताहै तहां इस लोकमें बड़ाकष्टहै आश्चर्य है कि दैवकी विडम्बना है ३० वारंवार तहांहीं रमता है आश्चर्य की बातहै कि मनुष्योंकी निर्लज्जता कैसीहै तिससे बुद्धिमान् मनुष्य स्त्रीके बहुत दोष समूहोंको विचारकरते हैं ३१ मैथुनसे बलकी हानिहोती है नींद अधिक लगतीहै नींदसे ज्ञान नाश होता है और थोड़ी उमरवाला मनुष्य होताहै ३२ तिससे बुद्धिमान् यत्नसे स्त्रीको अपनी मृत्युकी नाईं देखे और गोविन्दजीके चरण कमलमें निश्चय मनको रमावै ३३ इसलोक और परलोक में सोई सुखहै कि गोविन्दजीके चरणोंका सेवनकरै तिन गोविन्दजी के चरणों की सेवाको छोड़कर कौन महामूर्ख स्त्रीके चरण को सेवताहै ३४ जनार्दनजीके चरणोंकी सेवा मोक्षके देनेवाली है स्त्रियोंके योनिकी सेवा योनिके संकटके करनेवाली है ३५ फिर फिर योनिमें गिरै जैसे यंत्र

में पचायाहुआ गिरताहै फिर तिसही की अभिलाषाकरै इसके वि-
डम्बनको प्राप्तहो ३६ ऊपरको भुजा उठाकर हम कहते हैं हमारे
सुन्दर वचनको सुनो गोविन्दजी में हृदयको धारणकरो तो योनिकी
यातना न हो ३७ जो मनुष्य स्त्री के संगको छोड़कर वर्तता है वह
पद पदमें अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ३८ कुलकी स्त्री
दैवयोग से यदि मनुष्योंकी पतिव्रताहो तो जो तिसमें पुत्रको उत्पन्न
कर तिसके संगको छोड़देताहै ३९ तिसके ऊपर जगन्नाथजी प्रसन्न
होतेहैं इसमें सन्देह नहींहै स्त्रीकासंग धर्म जाननेवालोंने असत्संग
कहाहै ४० तिसके होनेमें भगवान्में भक्ति अत्यन्त दृढ़ नहीं होतीहै
सब संग छोड़कर हरिजीमें भक्तिकरै ४१ इसलोकमें हरिभक्ति दुर्ल-
भहै हरिजी में जिसकी भक्ति होती है वह निस्सन्देह कृतार्थहोताहै ४२
तिसतिस कर्मकोकरै जिससे हरिजी प्रसन्न होतेहैं भगवान् के प्रसन्न
होनेमें संसारप्रसन्नहोताहै तृप्त होनेमें संसार प्रसन्न होताहै ४३ हरिजी
में भक्तिकेविना मनुष्योंका जन्म वृथा कहाहै जिसकीप्रीतिके हेतु ब्रह्मा
ईशादिक देवता पूजन करते हैं ४४ नारायणमें मनवाला कौन मनुष्य
तिस अव्यक्त को न सेवन करै तिसकी माता महा भाग्यवाली है तिस
का पिता महान् कुशली है ४५ जिसने भगवान् के दोनों चरणोंको
हृदयमें धारण कियाहै हे जनार्दन ! हे जगद्वंद्य ! हेशरणागत वत्सल!
४६ ऐसा जे मनुष्य कहते हैं तिनकी नरक में गति नहीं होती है
ब्राह्मण विशेषकर प्रत्यक्ष हरिरूपी हैं ४७ यथा योग पूजते हैं तिन
के ऊपर हरिजी प्रसन्न होते हैं विष्णुजी ब्राह्मण रूपसे इस पृथ्वीमें
विचरते हैं ४८ ब्राह्मण के विना कर्म सिद्धि को नहीं प्राप्त होता है
ब्राह्मण के चरणजल को भक्तिसे जिन्होंने पानकर शिर में लगायाहै
४९ तिसने पितर तृप्त किये निश्चय आतमा भी तार दिया ब्राह्मणों
के मुखमें जिसने पूजित मीठे को दिया ५० साक्षात् कृष्णजी के मुख
में दिये हुये को हरिजी निश्चय आपही भोजन करते हैं आश्चर्य है
कि अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य प्रत्यक्ष केशव ब्राह्मणमें ५१ मूर्तिआदिकों
में सेवन करते हैं तिनके अभावमें सो क्रिया होती है ब्राह्मणों के अ-
धिष्ठानसे पृथ्वी धन्यहै यह गान कियागयाहै ५२ तिनके हाथ में जो

दियाजाताहै वह हरिजी के हाथ में दिया होता है तिनसे किये हुये नमस्कार से पापियों का तिरस्कार होताहै ५३ ब्राह्मण के वन्दन से ब्रह्म हत्यादि पापोंसे छूटजाताहै तिससे विष्णुजीकी बुद्धि से ब्राह्मण सज्जनोंको आराधन करने योग्यहै ५४ यदि भूखेहुये ब्राह्मणकेमुख में जो कुछ दियाजाताहै तो मरकर देनेवाला अमृत की धाराओं से करोड़ कल्प तक सींचाजाताहै ५५ ब्राह्मण का मुख ऊसरहीन कांटा रहित बड़ा खेतहै यदि तहां कुछ बोयाजाताहै तो करोड़ करोड़ फल को प्राप्त होताहै ५६ घी समेत भोजन ब्राह्मणको देकर देनेवाला कल्प पर्यन्त आनन्द करताहै जो अनेक प्रकारके मीठे अन्नको ब्राह्मणकी प्रसन्नता के लिये देताहै ५७ तिसके महा भोगवाले लोक करोड़ कल्पांत तक मुक्ति के देनेवाले हैं ब्राह्मण को आगेकर ब्राह्मण से अनुकीर्तित ५८ महा पापको अग्निरूप पुराण को नित्यही सुनताहै जो पुराण सब तीर्थोंमें अधिक तीर्थ कहाताहै ५९ जिसके एक चरण के सुनने से हरिजी प्रसन्न होते हैं जैसे सूर्य का देहधारणकर प्रकाश करने के लिये हरिजी विचरते हैं ६० सब संसारों के हरिजी देखने के हेतुहैं तैसेही भीतर प्रकाशके लिये पुराणके अङ्ग हरिजी हैं ६१ यहां प्राणियों में पर पावन पुराण विचरताहै तिससे यदि हरिजीकी प्रीति के उत्पाद में बुद्धि धारण करै ६२ तो निरन्तर कृष्ण रूपी पुराण पुरुषोंसे सुनने योग्यहै शान्त विष्णुजीके भक्तसेभी सुनने के योग्य दुर्लभहै ६३ पुराणका आख्यान निर्मल निर्मल करनेवाला और श्रेष्ठहै जिसमें व्यासरूपी हरिजीने वेदके अर्थ को लाकर ६४ पुराणरचाहै हे ब्राह्मण! तिससे सोई श्रेष्ठहोताहै पुराणमें धर्म निश्चित है धर्म केशवजी आपही हैं ६५ तिससे कियेहुये पुराणके सुनने में विष्णुही होताहै ब्राह्मण साक्षात् आपही हरि हैं तैसेही पुराणहै ६६ इन दोनों के संगको प्राप्त होकर मनुष्य हरिही होताहै तैसेही गंगाजी के जलके सींचने से अपना पाप नाश होजाताहै ६७ केशवजी द्रव रूपसे पापसे पृथ्वीको तारदेते हैं वैष्णव विष्णुजी के भजन का यदि आकांक्षा करनेवाला वर्तमानहो ६८ तो निर्मल निर्मल करने वाले गङ्गाजी के जलको सेक करै विष्णुजी के भक्ति की देनेवाली देवी

गङ्गा पृथ्वी में गानकी जाती है ६९ लोकके विस्तार करनेवाली विष्णुरूप गंगाहैं ७० ब्राह्मणों में पुराणों में गंगाजी में गौवों में पीपर में नारायण की बुद्धि से पुरुषों करके अहैतुकी भक्ति करने योग्य है ७१ जो कि प्रत्यक्ष विष्णुरूपिणी और तत्त्व के जाननेवालों से यह निश्चितहो तिससे निरन्तर विष्णु भक्तिके अभिलाषी से पूजनेयोग्य है ७२ विष्णुजी में भक्ति के विना मनुष्यों का जन्म निष्फल कहाता है कलिकाल रूप जलकी राशि पापरूपी मगरसे व्याकुल ७३ विषयरूप मज्जन भँवर रूप दुर्बोध श्रेष्ठ फेनायुक्त महा दुष्टजन रूप सर्पोंसे महाभीम भयंकर ७४ दुस्तरको हरिभक्तिरूप नावमें स्थित तरजाते हैं तिससे मनुष्य विष्णुभक्ति के प्रसाधनमें यत्नकरै ७५ प्राणी असत् वार्ता के अवधारणमें क्या सुखको प्राप्त होताहै अद्भुत लीलावाले हरिजीकी लीलाख्यानमें जो नहीं लगताहै ७६ संसार में नानाप्रकार के विषयों से मिलीहुई भगवान् की विचित्र कथा निश्चय मनुष्योंको सुनने योग्यहै विषयमें मन लगाहुआ है ७७ हे ब्राह्मणो ! मोक्षमें यदि चित्तहो तब भी सुनने योग्यहैं स्त्रियों के हाव से सुनने से भी तिसके ऊपर हरिजी प्रसन्न होजाते हैं ७८ निष्क्रिय भी हृषीकेश अनेकप्रकारके कर्म करते हैं भक्तवत्सल भगवान् भक्तों के कल्याण के लिये भक्तों की शुश्रूषा करते हैं ७९ कर्म से सैकड़ों वाजपेय यज्ञ और दशसहस्र राजसूय यज्ञसे भगवान् नहीं प्राप्त होते हैं जैसे भक्तिसे प्राप्त होते हैं ८० जो पद सज्जनों से चित्तसे सेवन करने योग्य वारंवार आचरित संसाररूपी समुद्र के तरण में सार ऐसे हरिजी के पदको आश्रयकरो ८१ रे रे विषयमें लोभी पामर निष्ठुर मनुष्यो ! आत्मासे आत्माको रौरव नरकमें क्यों डालतेहो ८२ यदि विना परिश्रमही दुःखों के तरणकी वाञ्छा हो तो गोविन्दजी के सौम्यचरणों का सेवनकरो ८३ मोक्ष कारणमें कृष्णजी के चरणोंको भजो मनुष्य कहां से आया और कहां फिर जाताहै ८४ ऐसा विचारकर बुद्धिमान् धर्म के संग्रहको करै अनेकप्रकारके नरकोंके गिरने से यदि पुरुष उठै ८५ तो स्थावर आदिक देहको प्राप्त होकर यदि भाग्य के वशसे फिर मनुष्य जन्म को प्राप्तहो तहां गर्भका

वास अत्यन्त दुःख देनेवाला है ८६ हे ब्राह्मणो! फिर कर्मके वशसे प्राणी यदि पृथ्वी में उत्पन्नहो तो बाल्यादि बहुत दोषसे पीड़ित होता है ८७ फिर युवावस्था पाकर दारिद्र्य से पीड़ित होता है वा भारी रोग से अनावृष्टि आदि से ८८ वृद्धावस्था में इधर उधर नहीं कहनेवाली पीड़ाको प्राप्त होता है मनके चलन से रोग से फिर मरण को प्राप्त होताहै ८९ तिससे संसार में अधिकदुःखको पाता है फिर कर्म के वश से प्राणी यमलोक में पीड़ित होता है ९० तहां अत्यन्त यातनाको भोगकर फिर उत्पन्न होता है प्राणी उत्पन्न होता मरता, मरता फिर उत्पन्न होता है ९१ विना गोविन्द जी के चरणों की आराधना किये ऐसी दशा है विना परिश्रम से मरण और विना परिश्रम के जीवन ९२ गोविन्दजी के चरणकी आराधना न करनेवाले के नहीं होता है यदि घरमें धन हो तो तिसके रक्षा करनेसे क्याफल होताहै ९३ जब यह यमराजके दूतोंसे खींचा जाताहै तो क्या धनपीछे जाताहै तिससे ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला द्रव्य सबसुख देता है ९४ दान स्वर्गकी सीढ़ी है दान पापनाश करनेवाला है गोविन्दजी की भक्तिका भजन है महापुण्यका बढ़ानेवाला है ९५ यदि मनुष्य में बलहो तो वृथा द्रव्यका खर्च न करै अतंद्रित होकर हरिजी के आगे नाच और गाना करै ९६ जो कुछ पुरुषों में विद्यमानहो वह कृष्णजी में अर्पण करदेवे कृष्ण जी में अर्पित कुशलका देनेवाला है अन्य में अर्पित सुखका देने वाला नहीं है ९७ नेत्रों से श्रीहरिजी की मूर्त्ति आदिका निरूपण करै कानों से रात्रि दिन कृष्णजी के गुण नामों को सुनै ९८ जीभ से चतुरों करके भगवान् के चरणजलका स्वाद लेना चाहिये नाक से गोविन्दजी के चरणकमल का तुलसीदल सूंघ ९९ त्वचा से हरिजी के भक्तको स्पर्शकर मन से तिनके पदको ध्यानकर प्राणी कृतार्थ होजाता है इस में विचारणा नहीं करनी चाहिये १०० बुद्धिमान् भगवान् में मनलगावे भगवान् में अन्तःकरण लगावे मनुष्य अन्त में भगवानही को प्राप्तहो इस में विचारणा नहीं करने योग्य है १०१ चित्त से ध्यानकिया गया जो अपने पदको

देता है ऐसे आदि और अन्तरहित नारायण को कौन मनुष्य न सेवन करै १०२ निरन्तर विष्णुजी के चरणकमल में चित्त लगावे भगवान् की प्रीतिके लिये यथाशक्ति दानकरै भगवान् के दोनों चरणोंमें नमस्कारके बुद्धिकी रतिकोकरै सो निश्चय मनुष्यलोकमें पूज्यताको प्राप्तहो १०३ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेभाषानुवादेएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

पद्मपुराण और स्वर्गखण्डकी प्रशंसा वर्णन ॥

सूतजी बोले कि हे ऋषियो! इसप्रकार जिसकी महिमा संसारमें है लोकके निस्तारका कारण तिसपरेश अनेकप्रकार के शरीरधारी विष्णुके १ एक पुराणरूपहै तहां निश्चयकरके बड़ा श्रेष्ठ पद्मपुराण है हरिजीके ब्रह्मपुराण मस्तक है पद्मपुराण हृदयहै २ विष्णु पुराण दहना भुजाहै शिवपुराण महेशजीका बायां भुजाहै जंघा भागवत कहाहै नारदीय पुराण तोंदी है ३ दहना चरण मार्कण्डेय है बायां चरण अग्निपुराण है भविष्यपुराण दहिनी गांठ विष्णु महात्मा की है ४ ब्रह्मवैवर्तपुराण बाई गांठ कहाहै लिंगपुराण दहना गुल्फ है वाराहपुराण बायां गुल्फहै ५ स्कन्दपुराण लोमहैं त्वचा वामनपुराण है कूर्मपुराण पीठ कहाहै मत्स्यपुराण मेदा कहाहै ६ गरुड़पुराण मज्जा कहाहै ब्रह्माण्ड हाड़ कहाहै एक पुराणके अंग हरि विष्णुजी हुयेहैं ७ तहां निश्चय पद्मपुराण हृदयहै जिसको सुनकर अमृतको भोग करता है यह पद्मपुराण आपही देवहरिजी हुयेहैं ८ जिसके एक अध्याय को पढ़कर सब पापों से छूटजाता है तहां आदि स्वर्ग खण्ड यह सब पद्मपुराणके फलका देनेवाला है ९ स्वर्गखण्ड को सुनकर जे महापापी भी हैं वे भी पापों से छूटजाते हैं पुरानी खाल से जैसे सांप छूटजाते हैं १० निश्चय यदि अत्यन्त दुराचार सब धर्मों से बाहर कियाहुआ आदि स्वर्गखण्डको सुनकर जिस फलको प्राप्त होताहै ११ इस आदिस्वर्गखण्ड को सुनकर मनुष्य तिसी फलको प्राप्त होताहै माघ महीने में प्रयाग में मनुष्य प्रति दिन

स्नानकर १२ जैसे पापसे छूटजाताहै तैसेही सुनने से होताहै तिसने सुवर्णकी तुलादी सम्पूर्ण पृथ्वीदी १३ दरिद्र में जो ऋण कियाथा वह दानकिया हरिजीके सहस्रनाम वारंवार पढ़ने चाहिये १४ सब वेद तैसेही पढ़े तीन तीन कर्मकरै वृत्तिके दानसे बहुत पढ़ानेवाले स्थापितकरै १५ हे ब्राह्मणो! तिसने मनुष्योंको अभय दिया गुणवान् ज्ञानवान् और धर्मवानों को पूजा १६ मेष और कर्कके मध्य में अत्यन्त शीतल जलदिया ब्राह्मणके अर्थ और गऊके लिये भी तिसने प्राण छोड़े १७ और अच्छे कर्म तिस बुद्धिमान्नेकिये जिसने सभामें आदिखंडसुना तथा सुनाया १८ स्वर्गखंड को पढ़कर अनेक प्रकारके भोगोंको भोगकरताहै सुखसे सोयाहुआ स्थानमें प्राप्तस्त्रियों को जगाताहै १९ किङ्किणी के शब्दके अच्छे शब्दों से तथा मीठे भाषणोंसे इन्द्रके अर्द्धासनको भोगता और इन्द्रलोकमें बहुत समय तक बसता है २० फिर सूर्यके स्थान फिर चन्द्रलोकको जाता फिर सप्तर्षि स्थानमें भोगोंको भोगकर फिर ध्रुवके स्थानको जाताहै २१ तदनन्तर ब्रह्माके लोकको प्राप्तहो तेजोमय देहधार तहांहीं ज्ञानको प्राप्तहोकर श्रेष्ठमोक्षको प्राप्तहोताहै २२ बुद्धिमान् मनुष्य सज्जनोंके साथ बसे अच्छे तीर्थमें स्नानकरै अच्छे आलापकोकरै और अच्छे शास्त्रको सुनै २३ तहां पद्मपुराण महावेद शास्त्र सबके फलका देने वालाहै तिसके मध्यमें स्वर्गखण्ड महापुण्य फलका देनेवालाहै २४ गोविन्दजीको भजो देवताओं में श्रेष्ठ एक हरिजी के नमस्कार करो अत्यन्त विमल भोगवाले लोकोंको जावो हे मनुष्यो! हरिजीके एक अतुलनामों को सुनो और कहो जो वीचियों के सुखसे तरने की इच्छाहो तो मनोवाञ्छित को प्राप्तहो २५ ॥

इति श्रीपाद्मेमहापुराणेस्वर्गखण्डेरामविहारीसुकुलकृतभाषानुवादेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

सम्पूर्णमिदमादिखण्डापरनामकमादिस्वर्ग खण्डंस्वर्गखण्डंवा ॥

अनेकप्रकारकी पुस्तकें इस यन्त्रालय में मुद्रित हुई हैं उनमें से जितने पुराणहैं उनसे चुनकर कुछ पुस्तकें नीचे लिखीजाती हैं ॥

देवीभागवत भाषा क़ी० ३) पु०

इसका उल्था पण्डित महेशदत्त सुकुल ने कियाहै—इसमें मुख्य करके श्रीदेवीजी के पाठ आदिक का विस्तार और सर्व प्रकारकी शक्तियों का कथन और उनके अवतार, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, स्तोत्र, माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमहिमा, गायत्री और देवियों के पुरश्चरण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि अनेक तन्त्र मन्त्ररूप विषय हैं भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारणलोग भी समझसक्ते हैं ॥

लिङ्गपुराण क़ी० ॥।≈)

इसका उल्था छापेखाने के बहुतखर्च से जयपुरनिवासि पण्डित दुर्गाप्रसादजी ने भाषामें कियाहै-जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास सूर्यवंश, चन्द्रवंश का वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोल का कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नागादिकी उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

विष्णुपुराणभाषा वार्तिक क़ी० ॥।) पु०

इसका पण्डित महेशदत्त सुकुल ने भाषान्तर कियाहै जिसमें जगदुत्पत्ति, स्थिति, पालन, ध्रुव, पृथु आदि राजाओं की कथा, भूगोल, खगोल वर्णन, धर्मशास्त्र, मन्वन्तरकथा, सूर्य और सोमवंशी राजाओं का कथन इत्यादि बहुतसी कथायें संयुक्त हैं ॥

विष्णुपुराणभाषाश्रीराजाअजीतसिंहदेकुण्ठवासीकृत क़ी० १॥) पु०

जिसको श्रीराजाप्रतापबहादुरसिंह ताल्लुक़दार व आनरेरी मजिस्ट्रेट व प्रेसीडेण्टप्रतापगढ़ ने छपवायाहै इसमें सम्पूर्ण विष्णुपुराण दोहा चौपाई इत्यादि अनेकप्रकार के ललित छन्दों में वर्णित है कागज़ सफ़ेद है ॥

भविष्यपुराण क़ी० १≈)

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासीकृत भाषाहै-इस में पौराणिक इतिहास, चारोंवर्णों के धर्म, स्त्रीशिक्षा व परीक्षा, व्रतोंके उद्यापन, शाकद्वीपीय ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, होनेवाले राजाओंका राज्यसमय, गर्भिणी के धर्म, धेनुदानविधान, जलाशय, देवालय बनाने और वृक्ष लगाने का फल और सब प्रकारके दानोंका माहात्म्य आदि वर्णन किये गये हैं ॥

शिवपुराण भाषा क़ी० १॥)

इसका पण्डित प्यारेलालजी ने उर्दू से हिन्दीभाषा में भाषानुवाद कियाहै इसमें शिवजी के निर्गुण व सगुण स्वरूप का वर्णन, सतीचरित्र, गिरिजाचरित्र, स्कन्दकथा, युद्धखण्ड, काश्युपाख्यान, शतरुद्रिखण्ड, लिङ्गखण्ड, रुद्राक्ष व भस्ममाहात्म्य, व्रतविधि, भूगोल, खगोल व आदि में छवों शास्त्रों के मतकी भूमिका भी संग्रहकीगई है ॥

स्कन्दपुराणका सेतुमाहात्म्यखण्ड क़ी० ।≈)

पण्डित दुर्गाप्रसाद जयपुरनिवासी का भाषा है इसमें सेतुबन्ध का माहात्म्य वहां के सब तीर्थों का वैभव, महालयश्राद्ध का माहात्म्य, नरकों व रामेश्वर महादेव का वर्णन इत्यादि बहुत सी कथायें हैं ॥